जहाँ चाह
वहाँ राह

जहाँ चाह वहाँ राह

उज़बेक लोक-कथाएं

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
5—ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली—110055
फोन : 23523349, 23529823
ई—मेल : pph5e@bol.net.in

प्रथम भारतीय संस्करण : जुलाई, 2010

मूल्य : रु. 170.00 (साधारण)
रु. 200.00 (सजिल्द)

प्रस्तुत लोक कथाओं में उज़बेक लोगों के चरित्र, उनके रहन—सहन, रीति—रिवाज़ों, भावनाओं और आकांक्षाओं की झलक मिलती है। इन कहानियों में बुराइयों पर व्यंग्य किया गया है।

Printed at CAXTON PRESS,Delhi. Ph.: 011-41540645, 9818430022

विषय-सूची

तीन बहादुर

हां, तो सुनो! पुराने ज़माने में एक आदमी रहता था। वह न बहुत अमीर था न बहुत ग़रीब। उसके तीन बेटे थे। तीनों चाँद-से सुन्दर थे, पढ़े-लिखे थे। सब समझदार थे और बुरे लोगों के पास भी नहीं फटकते थे।

बड़ा बेटा – तोंगूच बातिर* इक्कीस साल का था, मँझला – ओरतानचा बातिर अठारह साल का था और सबसे छोटा – केंजा बातिर सोलह साल का था।

एक बार उनके पिता ने तीनों बेटों को बुलाकर अपने पास बिठाया और प्यार से उनके सिरों पर हाथ फेरकर कहा :

"मेरे बेटो, मैं धनवान नहीं हूँ, मेरे मरने के बाद थोड़ी-बहुत जायदाद बचेगी ज़रूर, मगर तुम लोग उसके सहारे ज़्यादा दिन गुज़ारा नहीं कर सकोगे। इससे ज़्यादा की तुम मुझसे आशा भी मत करो। मैंने तुम्हें दो गुण सिखाये हैं : पहला – तुम्हें तन्दुरुस्त बनाया, जिससे तुम कुशल योद्धा बने ; दूसरा – तुम्हें किसी भी चीज़ से न डरना सिखाया, जिससे तुम बहादुर बने। इसके अलावा मैं तुम्हें तीन सीखें और दे रहा हूँ। इन्हें ध्यान से सुनो और हमेशा याद रखो : ईमानदारी से रहना, तभी तुम चैन से जी सकोगे ; कभी डींग मत हाँकना, तब तुम्हें

---

* बातिर – बहादुर।

कभी शरमिन्दा नहीं होना पड़ेगा; कभी आलस मत करना – तभी सौभाग्यशाली बन सकोगे। और बाक़ी बातों का खयाल तुम खुद रखना। मैं तुम्हें तीन घोड़े दे रहा हूँ: एक मुश्की, एक लाखी और एक धूसर रंग का। मैंने तुम्हारे थैले खाने की स्वादिष्ट चीजों से भर दिये हैं। खुशक़िस्मती तुम्हारी बाट जोह रही है। तुम जाओ और जाकर दुनिया देखो। बिना दुनिया देखे तुम अपने पैरों पर खड़े न हो सकोगे। अपनी क़िस्मत आजमाओ। खुदा हाफ़िज़, मेरे बेटो!"

तीनों भाई सफ़र की तैयारी करने लगे। वे सुबह जल्दी ही घोड़ों पर सवार होकर रवाना हो गये। वे दिन भर चलते रहे और बहुत दूर पहुँच गये। शाम को ही उन्होंने आराम करने का फ़ैसला किया। उन्होंने घोड़ों से उतरकर खाना खाया, पर सोने के पहले आपस में यह तय किया:

"चूँकि यह जगह सुनसान है, इसलिए हमें एक-साथ नहीं सोना चाहिए। हम तीनों बारी-बारी से जागकर बाक़ी दो सोनेवालों की रक्षा करेंगे।

उन्होंने जैसा तय किया; वैसा ही किया।

पहले तोंगूच पहरा देने लगा और बाक़ी दोनों सो गये। तोंगूच बातिर काफ़ी देर तक बैठा-बैठा तलवार से खेलता चाँदनी रात में चारों ओर देखता रहा...

सन्नाटा छाया हुआ था। हर चीज़ गहरी निद्रा में मग्न थी।

अचानक जंगल की तरफ़ से शोर सुनाई दिया। तोंगूच बातिर तलवार खींचकर तैयार हो गया।

जहाँ तीनों भाई रुके थे, वहाँ से थोड़ी दूरी पर एक शेर की माँद थी। आदमी की गंध पाकर शेर स्तेपी में निकल आया।

तोंगूच बातिर को अपने पर विश्वास था कि वह शेर का मुक़ाबला अकेला ही कर सकता है। भाइयों की नींद खराब न हो, इस लिए वह एक ओर को भागा। शेर भी उसके पीछे लपका।

तोंगूच बातिर ने मुड़कर शेर के बायें पंजे पर तलवार से वार करके उसे घायल कर दिया। घायल शेर उस पर टूट पड़ा, पर उसने एक ओर हटकर शेर के दायें पंजे पर वार किया। शेर पूरे ज़ोर से फिर तोंगूच बातिर पर झपटा, पर उसने शेर के सिर पर एक ज़ोरदार वार किया। शेर वहीं ढेर हो गया।

तोंगूच बातिर ने शेर की पीठ पर बैठकर उसकी खाल की एक पट्टी काटी और अपनी क़मीज़ के नीचे बांध ली। फिर वह अपने सोये हुए भाइयों के पास लौट आया, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

इसके बाद ओरतानचा बातिर ने उठकर पहरा दिया। उसकी पहरेदारी के दौरान कोई घटना नहीं घटी।

उसके बाद केंजा बातिर ने दिन निकलने तक अपने भाइयों की रखवाली की।

इस तरह पहली रात बीत गयी।

सुबह उठकर भाई फिर सफ़र पर चल पड़े। वे चलते चलते बहुत दूर पहुंच गये और शाम को एक बड़े पहाड़ के नीचे रुके। उस पहाड़ की तलहटी में पोपलर का एक घना पेड़ था, जिसके नीचे ज़मीन में से एक चश्मा फूट रहा था। उस चश्मे के पास एक गुफ़ा थी, जिस में साँपों का राजा अजगर सुलतान रहता था।

बहादुरों को इसकी कोई खबर न थी। उन्होंने आराम से घोड़े बाँध दिये, उन्हें खरहरा करके चारा दिया और खुद खाना खाने बैठ गये। सोने से पहले उन्होंने पहली रात की तरह पहरा देने का फ़ैसला किया। पहले तोंगूच बातिर ने पहरा दिया, उसके बाद ओरतानचा बातिर की पहरा देने की बारी आयी।

चाँदनी रात थी, सन्नाटा छाया हुआ था। अचानक कहीं से शोर आता सुनाई पड़ा। थोड़ी देर बाद गुफ़ा में से देग जैसे सिरवाला और लम्बे लट्ठे जैसे धड़वाला अजगर-सुलतान रेंगता हुआ चश्मे की ओर बढ़ा।

ओरतानचा बातिर ने अपने भाइयों की नींद खराब नहीं करनी चाही, इस लिए वह चश्मे से दूर स्तेपी में भागा।

आदमी की गंध पाकर अजगर-सुलतान उसके पीछे लपका। ओरतानचा बातिर ने एक ओर हटकर साँपों के राजा की पूँछ पर तलवार चलायी। अजगर-सुलतान वहीं छटपटाने लगा। बहादुर ने मौक़ा देखकर उसकी पीठ पर वार किया। साँपों का राजा बुरी तरह घायल होकर ओरतानचा बातिर पर उछला। तब बहादुर ने आखिरी वार से उसका काम तमाम कर दिया।

इसके बाद उसने अजगर की खाल की एक पतली पट्टी काटकर अपनी क़मीज़ के नीचे बाँध ली और अपने भाइयों के पास आकर बैठ गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। फिर केंजा बातिर की पहरा देने की बारी आयी। जब सुबह हुई, तीनों भाई फिर सफ़र पर चल पड़े।

उन्होंने दिन भर चलते चलते कई ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों और स्तेपी को पार किया। सूर्यास्त के समय वे एक अकेली पहाड़ी के पास पहुँचे और घोड़ों से उतरकर आराम करने लगे। उन्होंने आग जलाकर खाना खाया और फिर बारी-बारी से पहरा देने लगे: पहले तोंगूच बातिर की, फिर ओरतानचा बातिर की और सबसे आखिर में केंजा बातिर की बारी आयी।

केंजा बातिर बैठा हुआ अपने सोये हुए भाइयों की रखवाली करता रहा था। आग कब बुझ गयी, उसे पता भी नहीं चला।

"हमारे लिए बिना आग के रहना खतरनाक होगा," केंजा बातिर ने सोचा।

वह पहाड़ी के ऊपर चढ़कर चारों ओर देखने लगा। उसे कहीं दूर एक दीया टिमटिमाता हुआ नज़र आया।

केंजा बातिर घोड़े पर सवार होकर उसी ओर चल पड़ा।

वह काफ़ी देर चलता रहा और अंत में एक अकेले घर तक पहुँच गया।

केंजा बातिर निःशब्द घोड़े से उतरकर दबे पाँव खिड़की के पास आया और अन्दर झाँकने लगा।

कमरे में रोशनी थी और चूल्हे पर देगची में शोरबा पक रहा था। चूल्हे के चारों ओर

लगभग बीस आदमी बैठे थे। उन सब के चेहरे डरावने थे और आंखें निकली हुई थीं। उन लोगों के इरादे नेक नहीं लगते थे।

केंजा बातिर ने सोचा: "अच्छा, यहां चोरों का गिरोह बैठा है। इन्हें यों ही छोड़कर चला जाना एक ईमानदार आदमी के लिए अच्छा नहीं होगा। मैं इनको बेवक़ूफ़ बनाऊंगा। इनका विश्वास प्राप्त करके, मौक़ा मिलते ही अपना इरादा पूरा कर लूंगा।"

वह दरवाज़ा खोलकर अन्दर घुसा। चोरों ने उचककर अपने-अपने हथियार संभाल लिये।

"उस्ताद," केंजा बातिर चोरों के सरदार से बोला, "मैं दूर शहर से आया आपका एक तुच्छ सेवक हूँ। अभी तक मैं छोटे-मोटे काम ही करता रहा हूँ। मैं बहुत दिनों से किसी गिरोह में शामिल होना चाहता था। जब मैंने सुना कि आप यहां मौजूद हैं, तो मैं फ़ौरन यहां दौड़ा आया। आप मेरी छोटी उम्र पर मत जाइये। मुझे आपसे पूरी आशा है। आप ही मुझे अपने गिरोह में शामिल कर सकते हैं। मैं हर तरह के काम में निपुण हूँ। मुझे सेंध और सुरंग लगाना और टोह लेना आता है। मैं आपके काम का आदमी हूँ।"

इस तरह केंजा बातिर ने बड़ी चतुराई से उनसे बात की।

चोरों के सरदार ने जवाब दिया:

"तुमने आकर बहुत अच्छा किया।"

केंजा बातिर ने सीने पर हाथ रखकर सादर सिर नवाया और आग के पास आकर बैठ गया।

शोरबा पक चुका था। सब ने खाना खाया।

उस रात चोरों ने बादशाह का ख़ज़ाना लूटने की ठानी। खाने के बाद वे सब घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। केंजा बातिर उनके साथ हो लिया। थोड़ी देर बाद वे शाही महल के बाग़ के पास पहुंचकर घोड़ों से उतर गये। महल में कैसे घुसें — वे इसके बारे में आपस में सलाह करने लगे।

अंत में उन्होंने यह फ़ैसला किया: पहले केंजा बातिर दीवार फांदकर अन्दर जायेगा और पता लगायेगा कि पहरेदार सो रहे हैं या नहीं। फिर सब एक-एक करके दीवार फाँदकर बाग़ में इकट्ठे हो जायेंगे और फ़ौरन महल में घुस जायेंगे।

चोरों ने केंजा बातिर की दीवार पर चढ़ने में मदद की। वह बाग़ में कूदा और इधर-उधर घूमकर उसने पता लगा लिया कि सब पहरेदार सो रहे हैं। वहाँ उसे एक घोड़ागाड़ी खड़ी मिली, जिस को वह दीवार के पास खींच लाया।

इसके बाद घोड़ागाड़ी पर चढ़कर उसने कहा: "मौक़ा बहुत अच्छा है।"

सरदार ने चोरों को एक-एक करके दीवार पार करने का हुक्म दिया।

पहले चोर ने पेट के बल दीवार पर लेटते ही सिर झुकाया और गाड़ी पर उतरने ही वाला था कि उसी क्षण केंजा बातिर ने उसकी गरदन पर तलवार चला दी। चोर का कटा सिर नीचे लुढ़क गया।

"उतरो," केंजा बातिर ने कहा और चोर की लाश खींचकर नीचे फेंक दी।

संक्षेप में, केंजा बातिर ने एक के बाद एक सभी चोरों के सिर काट डाले और उसके बाद महल की ओर चल दिया।

सोये हुए पहरेदारों के पास से चुपचाप गुज़रकर केंजा बातिर तीन दरवाज़ोंवाले कक्ष में पहुँचा। वहाँ दस दासियों का पहरा था, पर वे भी सो रही थीं।

उस पर किसी की नज़र न पड़ी। केंजा बातिर पहले दरवाज़े में घुसा और उसने अपने आपको एक बहुत सजे कमरे में पाया। उसकी दीवारों पर रेशम के परदे लटके थे, जिन पर काकरेज़ी फूल कढ़े हुए थे।

इस कमरे में चाँदी के पलंग पर सफ़ेद पोशाक में लिपटी एक सुन्दरी सोयी हुई थी, जिसकी ख़ूबसूरती के आगे दुनिया के सभी फूल फीके लगते थे। केंजा बातिर ने दबे पांव उसके पास पहुंचकर, उसके दाहिने हाथ से सोने की अंगूठी उतारकर अपनी जेब में रख ली। फिर वह कक्ष में लौट आया।

"अब ज़रा दूसरा कमरा देखूँ, वहाँ क्या है?" केंजा बातिर ने अपने मन में कहा।

उसने दूसरा दरवाज़ा खोला, तो सामने एक बहुत ही शानदार ढंग से सजा कमरा देखा, जिसकी दीवारों पर लटके रेशमी परदों पर तरह-तरह की चिड़ियाओं की तस्वीरें कढ़ी हुई थीं। कमरे के बीचोंबीच दस दासियों से घिरी एक सुंदर युवती चाँदी के पलंग पर सोयी हुई थी। उसको लेकर चाँद और सूरज में बहस होती थी कि उनमें से वह किस पर गयी है।

केंजा बातिर ने चुपचाप उस युवती के हाथ से कंगन उतारकर अपनी जेब में डाल लिया। फिर वहाँ से वह उसी कक्ष में लौट आया।

"अब तीसरे कमरे में जाना चाहिए," उसने सोचा।

वहाँ तो इतनी शानदार सजावट थी कि बस पूछिये मत। कमरे की दीवारें गहरे लाल रंग के रेशमी परदों से सजी थीं।

वहाँ सोलह सुन्दर दासियों से घिरी एक सुंदरी चाँदी के पलंग पर सोयी हुई थी। यह लड़की इतनी आकर्षक थी कि स्वयं तारों की रानी, सुबह का तारा, भी उसकी चाकरी करने के लिए तैयार थी।

केंजा बातिर ने धीरे से इस लड़की के दाहिने कान से सोने की बाली उतारकर अपनी जेब में डाल ली।

फिर उसने महल से निकलकर दीवार पार की और घोड़े पर सवार हो अपने भाइयों के पास रवाना हो गया।

दोनों भाई अभी गहरी नींद सो रहे थे। इस प्रकार सूर्योदय तक केंजा बातिर तलवार से खेलता बैठा रहा।

सुबह उठकर बहादुरों ने नाश्ता किया, अपने घोड़ों की ज़ीनें कसीं और उन पर सवार होकर सफ़र पर चल पड़े।

थोड़े समय बाद तीनों भाई एक शहर में पहुँचे और एक सराय में ठहरे। अपने घोड़ों को सायबान में बांधकर वे चायख़ाने में जाकर बैठे। चाय की चुसकियाँ लेते हुए तीनों भाई

इधर-उधर की बातें करने लगे कि अचानक बाहर से ढिंढोरची की आवाज़ आयी।

"खल्क खुदा की, मुल्क बादशाह का! कल रात को किसी ने शाही महल के बाग़ में बीस चोरों के सिर काट डाले और हर शाहज़ादी का सोने का एक-एक गहना उठा ले गया। हमारे बादशाह चाहते हैं कि शहर का हर छोटा-बड़ा उन्हें इस घटना का रहस्य समझाये और बताये कि वह आदमी कौन है, जिसने इतनी बहादुरी का काम किया है। अगर किसी के घर में परदेसी लोग हों, तो वह उन्हें फ़ौरन महल में लेकर आये।"

सराय के मालिक ने अपने मेहमानों को बादशाह के सामने हाज़िर होने के लिए कहा।

तीनों भाई उठकर धीरे-धीरे महल की ओर चल दिये।

बादशाह को जब मालूम पड़ा कि वे विदेशी हैं, तो उसने उन्हें एक शानदार ढंग से सजे हुए खास कमरे में बिठाने का हुक्म दिया और वज़ीर को उनका भेद लेने का काम सौंपा।

वज़ीर बोला:

"अगर उनसे सीधे ही पूछा गया, तो वे शायद ही कुछ बतायें। बेहतर होगा कि हम छिपकर उनकी बातें सुनें।"

जिस कमरे में भाई बैठे थे, वहाँ उनके अलावा और कोई नहीं था।

उनके आगे दस्तरखान बिछा दिया गया और तरह-तरह के खाने परोस दिये गये। भाइयों ने खाना शुरू किया।

बादशाह और वज़ीर पास के कमरे में चुपचाप बैठे उनकी बातें सुनने लगे।

"हमें मेमने का गोश्त परोसा गया है," तोंगूच बातिर बोला, "लेकिन लगता है, इसे कुत्ते के दूध पर पाला गया था।"

"आप ठीक कह रहे हैं," ओरतानचा बातिर ने उसका समर्थन किया, "बादशाहों को कुत्तों के गोश्त से भी नफ़रत नहीं होती। मुझे तो इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि इस मुरब्बे में से आदमी की बू आ रही है।"

"बिल्कुल ठीक है," केंजा बातिर बोला, "सारे बादशाह खून पीनेवाले होते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुरब्बे में आदमी का खून मिला हो। मुझे तो इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि थाल में रोटियाँ इस ढंग से सजायी गयी हैं, जिस ढंग से सिर्फ़ एक अच्छा नानबाई ही सजा सकता है।"

तोंगूच बातिर बोला:

"ऐसा ही होना चाहिए। देखो, हमें यहाँ यह मालूम करने के लिए बुलाया गया है कि शाही महल में क्या हुआ था। इसमें कोई शक नहीं कि हमसे भी इसके बारे में पूछा जायेगा। हम क्या बतायें?"

"हम झूठ नहीं बोलेंगे," ओरतानचा बातिर बोला। "हम सब सच-सच बता देंगे।"

"हाँ, अब हमें तीन दिनों में हुई बातों के बारे में एक दूसरे को बताने का समय आ गया है," केंजा बातिर ने कहा।

तोंगूच बातिर ने बताया कि वह पहली रात को शेर से कैसे लड़ा था। फिर उसने शेर

की खाल की पट्टी निकालकर भाइयों के सामने रख दी। उसके बाद ओरतानचा बातिर ने भी जो कुछ दूसरी रात को उसके साथ हुआ था, बताया और साँपों के राजा की खाल की पट्टी निकालकर भाइयों को दिखा दी। इसके बाद केंजा बातिर ने तीसरी रात का सारा क़िस्सा सुनाकर भाइयों को गहने भी दिखाये।

अब बादशाह और वज़ीर सारा रहस्य समझ गये, पर भाइयों ने गोश्त, मुरब्बे और रोटियों के बारे में जो कहा, वह उनकी समझ में नहीं आया। इस लिए उन्होंने पहले गड़रिये को बुलवाया। गड़रिया आया।

"सच-सच बता!" बादशाह ने कहा। "कल तू ने जो मेमना भेजा था, उसे क्या कुतिया के दूध पर पाला था?"

"हुज़ूर," गड़रिया गिड़गिड़ाने लगा, "अगर मेरी जान बख़्शें, तो अर्ज़ करूं।"

"हमने तेरी जान बख़्शी, सच-सच बता," बादशाह ने कहा।

गड़रिया बोला:

"जाड़े में मेरी भेड़ मर गई थी। मुझे मेमने पर दया आयी और मैंने उसे कुतिया के थनों के लगा दिया। उसी ने मेमने को दूध पिलाकर बड़ा किया। कल मैंने आपको वही मेमना भेजा था, क्योंकि दूसरा मेरे पास था ही नहीं, आपके नौकरों ने पहले ही मेरी सारी भेड़ें छीन ली थीं।"

उसके बाद बादशाह ने माली को बुलाने का हुक्म दिया।

"सच-सच बता," बादशाह ने उससे कहा, क्या मुरब्बे में आदमी का ख़ून मिला था?"

"हुज़ूर," माली बोला, "एक ऐसा क़िस्सा हुआ था, अगर मेरी जान बख़्शें, तो मैं आपको सब कुछ सच-सच बता दूंगा।"

"अच्छा बता, हम तुझ पर रहम करते हैं," बादशाह ने कहा।

तब माली बोला:

"पिछली गर्मियों में कोई रोज़ाना मेरे बाग़ के सबसे अच्छे अंगूर चुराने लगा। मैं वहां छिपकर पहरा देने लगा। एक दिन मैंने देखा कि कोई आ रहा है। मैंने चोर के सिर पर ज़ोर से लाठी मारी। इसके बाद मैंने अंगूर की बेल के नीचे एक गहरा गढ़ा खोदकर उसकी लाश उसमें गाड़ दी। अगले साल बेल बहुत फैल गयी और इतनी अच्छी फ़सल हुई कि अंगूर ज़्यादा और पत्ते कम नज़र आते थे। पर अंगूर का स्वाद कुछ अजीब-सा था। इसीलिए मैंने आपको ताज़ा अंगूर न भेजकर उसका मुरब्बा बनाकर भेजा।"

जहाँ तक रोटियों का सवाल था, तो उन्हें ख़ुद बादशाह ने थाल में सजाया था। मालूम पड़ा कि बादशाह का पिता नानबाई था। बादशाह बहादुरों के कमरे में आया और दुआ-सलाम करके बोला:

"आप लोगों ने जो कुछ एक दूसरे से कहा, वह सब सच है और इस लिए आप मुझे और भी ज़्यादा अच्छे लगे। मेरी आपसे एक दरख़ास्त है, मेरे बहादुर मेहमानो, इसे सुन लीजिये।"

"फ़रमाइये," तोंगूच बातिर बोला, "हमसे जैसे बन पड़ेगा, हम आपकी मदद करेंगे।"

"मेरी तीन बेटियाँ हैं, मगर बेटा कोई नहीं। आप यहीं बस जाइये। मैं अपनी तीनों बेटियों की शादी आप लोगों के साथ कर दूंगा, शादी का जश्न मनाऊँगा और शहर के सारे लोगों को बुलाकर सबको चालीस दिन तक पुलाव खिलाऊँगा।"

"बात तो आपकी बहुत अच्छी है," तोंगूच बातिर ने जवाब दिया, "पर हम आपकी बेटियों से शादी कैसे कर सकते हैं, जब कि हम न किसी बादशाह के बेटे हैं और न ही हमारे पिता धनवान हैं? आपने अपनी दौलत हुकूमत करके जमा की है, और हम लोगों ने मेहनत करके जीना सीखा है।"

बादशाह ने हठ किया:

"आख़िर आपके पिता किस बात में मुझसे कम हैं? वास्तव में तो वह मुझसे भी ज़्यादा दौलतमंद है। और इस वक़्त मैं, उन लड़कियों का पिता, जिनके आगे बड़े-बड़े देशों के बादशाह रो चुके हैं, आपसे हाथ जोड़कर मिन्नत कर रहा हूँ कि आप मेरी बेटियों को अपनी पत्नियों के रूप में स्वीकार कर लें।"

भाई राज़ी हो गये। बादशाह ने दावत दी। चालीस दिनों तक दावतें होती रहीं और इसके बाद नवविवाहित बहादुर शाही महल में रहने लगे। बादशाह को छोटा दामाद केंजा बातिर सबसे प्यारा था। इस लिए वह अक्सर उसके पास आया करता था। एक दिन बादशाह छाया में लेटा आराम कर रहा था। अचानक नहर में से एक ज़हरीला सांप निकल आया और बादशाह की ओर लपका। वह उसे डसने ही वाला था कि तत्क्षण केंजा बातिर वहाँ दौड़ा आया। उसने म्यान से तलवार निकालकर साँप के दो टुकड़े कर डाले और एक ओर फेंक दिये।

अभी केंजा बातिर अपनी तलवार म्यान में डाल भी न पाया था कि बादशाह की नींद खुल गयी। उसके दिल में शक पैदा हो गया। "इसे इस बात से संतोष नहीं कि मैंने अपनी बेटी की शादी इससे कर दी," बादशाह ने सोचा। "यह सब इसके लिए काफ़ी नहीं। लगता है, इसका इरादा मुझे मारकर ख़ुद बादशाह बनने का है।"

बादशाह ने जाकर वज़ीर को सारा क़िस्सा सुनाया। वज़ीर बहुत दिनों से अपने दिल में इन बहादुरों के प्रति वैर भाव छिपाये हुआ था और ऐसे मौक़े की तलाश में ही था। वह बादशाह के कान भरने लगा।

"आपने मुझसे सलाह किये बग़ैर अपनी प्यारी बेटियों की शादी ऐरे-ग़ैरे नत्थू ख़ैरों से कर दी है। और अब आपका चहेता दामाद आपकी हत्या करना चाहता है। आप सावधान रहिये, वरना वह चालाकी से किसी न किसी तरह आपकी हत्या कर देगा।"

बादशाह ने वज़ीर की बात पर विश्वास कर लिया और हुक्म दिया: "केंजा बातिर को जेल में डाल दिया जाये।"

केंजा बातिर को क़ैद कर लिया गया। केंजा बातिर की पत्नी, छोटी शाहज़ादी उदास

रहने लगी। वह दिन-रात रोती रहती। उसके गुलाबी गालों का रंग उड़ गया। एक बार उसने अपने पिता के पैरों में गिरकर पति को मुक्त करने की विनती की।

तब बादशाह ने केंजा बातिर को जेल से लाने का हुक्म दिया।

"तुम कितने मक्कार निकले," बादशाह ने कहा, "तुमने क्यों मेरा क़त्ल करने की सोची?"

इसके जवाब में केंजा बातिर ने बादशाह को तोते की कहानी सुनायी।

तोते की कहानी

किसी ज़माने में एक बादशाह रहता था। उसका एक तोता था। बादशाह अपने तोते को इतना प्यार करता था कि उसके बग़ैर एक घड़ी भी नहीं रह सकता था।

तोता बादशाह के साथ मीठी-मीठी बातें करके उसका मन बहलाता था। एक बार तोते ने विनती की:

"मेरे माँ-बाप, भाई-बहन मेरे देश हिन्दुस्तान में हैं। मैं बहुत दिनों से पिंजरे में क़ैद हूँ। आप कृपा करके मुझे बीस दिन की छुट्टी दे दीजिये। मैं अपने देश हो आऊँगा, बारह दिन मुझे जाने-आने में लगेंगे, आठ दिन मैं घर रह लूँगा और अपने माँ-बाप, भाई-बहनों से मिल लूँगा।"

"नहीं," बादशाह ने जवाब दिया, "अगर मैं तुझे छोड़ दूँ, तो तू वापस नहीं आयेगा और मैं ऊबने लगूँगा।"

तोता विश्वास दिलाने लगा:

"हुज़ूर, मैं वादा करता हूँ और उसे निभाऊँगा।"

"अच्छा, ठीक है, अगर तू यही चाहता है, तो मैं तुझे सिर्फ़ दो हफ़्ते की छुट्टी दूंगा, बादशाह बोला।

"ख़ुदा हाफ़िज़, मैं किसी न किसी तरह दो हफ़्ते बाद वापस लौट आऊँगा," तोता खुश होकर बोला।

वह पिंजरे से निकलकर दीवार पर बैठा, और सब लोगों से विदा लेकर दक्षिण की ओर उड़ चला। बादशाह खड़ा-खड़ा उसे उड़कर दूर जाते देखता रहा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि तोता लौटकर आयेगा।

तोता छः दिन में अपने वतन हिन्दुस्तान पहुँच गया और उसने अपने माँ-बाप को ढूँढ़ लिया। बेचारा बड़ा खुश था, एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी पर, एक डाल से दूसरी डाल पर, एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ने-फुदकने लगा, हरे-भरे जंगलों में अपने रिश्तेदारों, जान-पहचानवालों के यहाँ गया और उसे पता भी न चला कि दो दिन कब बीत गये। वापस पिंजरे में जाकर क़ैद होने का वक़्त आ गया। माँ-बाप और भाई-बहनों से बिछुड़ते समय तोते को बड़ा दुःख हुआ।

सुख के क्षण बीत गये और दुःख की घड़ी आ पहुँची। पंख लटक गये। कौन जाने वह फिर कभी वापस आ भी पाये या नहीं।

रिश्तेदार और जान-पहचान के लोग इकट्ठे हो गये। सबको तोते पर तरस आ रहा था और सब उसे बादशाह के पास न लौटने की सलाह देने लगे। पर तोता बोला :

"नहीं, मैंने वायदा किया है। क्या मैं अपना वचन तोड़ सकता हूँ?"

"तूने कभी किसी बादशाह को अपना वायदा निभाते देखा है?" एक तोता बोला। "अगर तेरा बादशाह न्यायप्रिय होता, तो क्या वह कभी तुझे चौदह साल क़ैद रखता? क्या तू दुनिया में इसी लिए आया है कि क़ैद में बंद रहे? क्या आज़ाद रहने का यह मौक़ा हाथ से सिर्फ़ इसी लिए जाने देगा कि तुझे किसी का दिल बहलाना है? तेरा बादशाह दयावान कम और निर्मम ज़्यादा है। बादशाह और शेर के पास रहना कभी ख़तरे से ख़ाली नहीं होता है।"

पर तोते ने किसी की सलाह नहीं मानी और जाने की तैयारी करने लगा।

तब तोते की माँ बोली :

"ऐसी हालत में मैं तुझे एक सलाह देती हूँ। हमारे यहाँ कायाकल्प के फल होते हैं। जो एक भी फल खायेगा, फ़ौरन जवान हो जायेगा, बूढ़ा नौजवान बन जायेगा, और बुढ़िया – जवान लड़की। तू ये बहुमूल्य फल बादशाह को ले जाकर दे और उससे तुझे आज़ादी देने की प्रार्थना कर। शायद उसमें न्यायप्रियता जाग उठे, और वह तुझे आज़ाद कर दे।"

सबने इस सलाह का समर्थन किया। तुरंत कायाकल्प के तीन फल लाये गये। तोते ने अपने रिश्तेदारों और जान-पहचानवालों से विदा ली और उत्तर की ओर उड़ चला। सब अपने दिलों में बड़ी-बड़ी उम्मीदें लिये उसे उड़कर दूर जाते देखते रहे।

तोता छः दिन में वापस पहुँच गया और उसने बादशाह को फल भेंट करके उनके गुणों का बखान किया। बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने तोते को आज़ादी देने का वायदा किया, एक फल अपनी पत्नी को दे दिया और बाक़ी दो प्याले में रख दिये।

वज़ीर को बहुत ईर्ष्या हुई। वह गुस्से से काँपने लगा और उसने मामला बिगाड़ने की ठानी।

"इस चिड़िया के लाये हुए फल खाने से पहले इन्हें आज़मा लेना चाहिए: अगर ये अच्छे हुए, तो इन्हें कभी भी खाया जा सकता है," वज़ीर ने कहा।

बादशाह ने उसका सुझाव मान लिया। और वज़ीर ने मौक़ा पाकर कायाकल्प के फलों में तेज़ ज़हर मिला दिया।

इसके बाद वज़ीर बोला :

"अच्छा लाइये, अब इन्हें आज़माया जाये।"

दो मोर लाये गये और उन्हें ये फल खाने के लिए दिये गये।

दोनों मोर वहीं मर गये।

"अगर आप ये फल खा लेते तो आपका क्या हाल होता?" वज़ीर ने पूछा।

"मैं भी मर गया होता!" बादशाह कह उठा। उसने बेचारे तोते को पिंजरे में से नि-

2—231

काला और उसकी गरदन मरोड़ दी। इस तरह बेचारे तोते ने बादशाह से अपना "इनाम" पा लिया।

कुछ दिन बाद बादशाह ने एक बूढ़े किसान से नाराज़ होकर उसे मौत की सज़ा देने का फ़ैसला किया। बादशाह ने उसे कायाकल्प का बचा हुआ फल लाकर खिलाने का हुक्म दिया। जैसे ही बूढ़े ने वह फल खाया, उसके बाल काले हो गये, दाँत नये निकल आये, आंखों में जवानी की चमक आ गयी और वह बीस साल का नौजवान बन गया।

बादशाह समझ गया कि उसने तोते को बेकार ही मार डाला, पर अब पछताये क्या होता था।

"अच्छा, अब मैं आपको बताता हूँ कि जब आप सोये हुए थे, तो क्या हुआ था," केंजा बातिर ने अंत में कहा।

वह बाग़ में गया और वहाँ से साँप के दोनों टुकड़े लाकर दिखा दिये। बादशाह केंजा बातिर से माफ़ी माँगने लगा।

केंजा बातिर ने उससे कहा:

"हुज़ूर मुझे भाइयों के साथ अपने देश जाने की इजाज़त दीजिये। बादशाहों के साथ कभी सुख-चैन से नहीं जिया जा सकता।"

बादशाह ने उन्हें कितना ही मनाया, कितना ही गिड़गिड़ाया, पर बहादुर नहीं माने।

"हम आपके दरबारी बनकर शाही महल में नहीं रह सकते। हम अपनी मेहनत के बल पर जियेंगे," वे बोले।

"अच्छा, फिर मेरी बेटियों को मेरे पास ही छोड़ दो," बादशाह ने कहा।

पर उसकी बेटियाँ बीच में ही बोल पड़ीं:

"हम अपने पतियों से अलग नहीं होंगी।"

बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ और न चाहते हुए भी उसे उन्हें जाने देना पड़ा।

नौजवान बहादुर अपनी पत्नियों के साथ अपने पिता के पास लौट आये और सुख-चैन से रहने लगे।

नेकी कर, दरिया में डाल

बहुत दिन हुए नूराता पहाड़ों की तलहटी में बसे एक शहर में, जिस का नाम आज की पीढ़ी को याद नहीं रहा, लोहारों की बस्ती में एक माहिर लोहार रहता था। लेकिन लोगों की याददाश्त बहुत कमज़ोर होती है, और अब अन्दाज़ लगाना भी मुश्किल है कि उस ग़रीब पर सुयोग्य आदमी का नाम क्या था।

उस वर्ष भीषण सूखा पड़ा था। आम तौर पर गरमियों में पानी से भरी रहनेवाली नदी सूख चुकी थी। नहरें सूख गयी थीं। पेड़ों के पत्ते झड़ चुके थे। रेगिस्तान की निर्मम साँसों ने उस साल की फ़सल बरबाद कर दी थी। अकाल मुंह बाये खड़ा था।

पर गरम से गरम हवा से भी बेकों* और ख़ानों के बाग़ों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा, न ही सूखे की छाया फलों से लदे उनके पेड़ों और अंगूर की बेलों पर पड़ी। क्योंकि पहाड़ों की तलहटी में से जाड़े और गरमी में सदैव फूटते रहनेवाले चश्मों का पानी सूखता नहीं। वे बाग़ और चश्मे शहर के सबसे धनी, सबसे ज़्यादा लोभी आदमियों की जायदादें थीं।

कड़ी ग़रमी के कारण तालाब सूख चुके थे और माँएं प्यास के मारे तड़प रहे बच्चों को छाती से चिपटाये शहर की तपती हुई गलियों में भटक रही थीं, बाग़ों के मालिक उनके दु:ख और आँसुओं को बेपरवाही से देख रहे थे।

असहाय औरतें निराश होकर रो रही थीं, चिल्ला-चिल्लाकर बच्चों के गले बैठ गये थे।

लोगों के असंतोष की लहर शासक के ऊँची पहाड़ी पर बने महल तक पहुँचने लगी।

लोग नगर के शासक के पास गये और उन्हें अपनी मुसीबतों से बचाने में उनकी सहायता करने का अनुरोध किया। लोगों ने कहा: "हमारे बच्चे मर रहे हैं। आपके पास शक्ति है, पानी है और दौलत भी – हमारी मदद कीजिये।"

पर उसने साफ़ इनकार कर दिया: "तुम्हारी तक़दीर में यही बदा है। अगर अल्लाह यह जुल्म सह रहा है, तो तुम नाशवानों को भी सहना चाहिए। जो शिकायत करेगा, वह काफ़िर होगा!"

शहर के लोग क्रोधित हो उठे। लोगों की भीड़ गलियों और मैदानों में मारी-मारी फिरने लगी। लोग चिल्लाने लगे: "कहाँ है पानी?"

जनता में रोष बढ़ने लगा। पर धनवानों के बाग़ों की दीवारें ऊँची और अगम्य थीं। जनता के क्रोध का आवेग दीवारों के पत्थरों से टकराकर ठंडा पड़ गया। बहुत-से ताक़तवर

---

* बेक – ज़मींदार, सामंत।

और साहसी आदमी शासक के सैनिकों की तलवारों से मौत के घाट उतर गये। स्तेपी में दूर फेंकी गयी लाशों पर कौवों और गिद्धों के झुंड बहुत दिनों तक मंडराते रहे।

सारे शहर में मायूसी छा गयी, बाज़ार सुनसान हो गये, केवल तपती हवा गलियों में बहती रही।

और लोहार, गुस्से में भरा, पहाड़ों में चला गया।

लोहारखाने में सन्नाटा छा गया। लोहे पर हथौड़े की आवाज़ें गूँजनी बन्द हो गयीं, भट्टियों में आग ठंडी पड़ गयी।

भटकते हुए लोहार को पहाड़ों में एक सफ़ेद दाढ़ीवाला गड़रिया मिला, जिसने उसे अपने यहाँ शरण दी। पत्थर के चूल्हे पर रूखा-सूखा खाना पक रहा था, इस बीच लोहार अपने दुःख के बारे में और घाटी के लोगों की दर्द भरी ज़िन्दगी के बारे में गड़रिये को बताने लगा।

बूढ़ा चूल्हे की आग को ताकता हुआ सोचता रहा।

फिर वह तनकर खड़ा हो गया, गुफ़ा की छत की ऊँचाई से चमक रही उसकी आंखों में ख़ून उतर गया।

"मैं पानी का देवता हूं, उस नदी के उद्गमों का रक्षक हूँ, जो घाटी की जीवनदाता है। मैं जानता हूँ," वह बोला, "किस तरह घाटी के लोगों को सुखी बनाया जा सकता है, मैं जानता हूँ, कैसे उनके हाथों में महाशक्ति दी जा सकती है। मैं तुम्हें नीचे घाटी में जाने की आज्ञा देता हूँ... गाँव और शहर के लोगों को इकट्ठा करो और उन्हें कुदालें लेकर यहाँ आने को कहो।"

जब सूरज रेतीले मैदान के ऊपर आसमान पर चढ़ रहा था, लोहार तेज़ क़दमों से शहर की ऊँची मीनारों की ओर बढ़ता जा रहा था।

लोहार ने रास्तों, गाँवों, बाज़ारों के मैदानों, हमामों और मसजिदों के दरवाज़ों पर लोगों को आवाज़ें दे-देकर मुनादी की। हज़ारों आदमी पहाड़ों की ओर चल पड़े।

पानी के देवता ने उन्हें इकट्ठा करके कहा: "तुम्हारी मुसीबतों का कारण सूखा है। घाटी में बाँध बना दो। पानी का भंडार बना लो, फिर तुम्हें भीषण से भीषण सूखे में भी रेगिस्तान की गरम हवाओं से कोई ख़तरा नहीं रहेगा।"

लोग फ़ौरन बाँध बनाने में जुट गये।

उधर धनवानों और बाग़ों के मालिकों ने रेगिस्तान में रहनेवाले दुष्ट जादूगर अजरूब के पास अपना एक वफ़ादार आदमी यह सन्देश देकर भेजा: "ऐ ज़िन्दा और मरों के मालिक! छोटे लोग आपकी ताक़त के ख़िलाफ़ पत्थरों का क़िला खड़ा कर रहे हैं। आप पहाड़ों पर उड़कर जायें और अपनी आंखों से देख लें।"

दुष्ट अजरूब पहाड़ों की ओर उड़ा। आसमान में ऊँचाई तक इतनी धूल और मिट्टी छा गयी कि तारे भी छिप गये।

ग़ुस्से से पागल हुए अजरूब ने पहाड़ी घाटी में कुदालें चलानेवाले हज़ारों लोगों पर आग का तूफ़ान भेजा। बहुत-से लोग जल गये, बहुतों का दम घुट गया, लगता था कि घाटी में
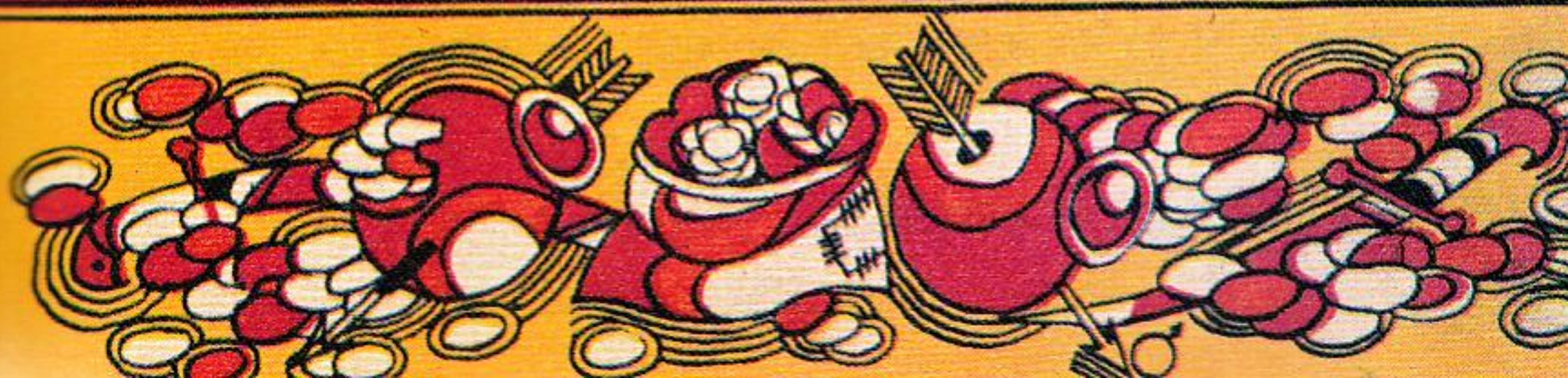
इकट्ठे हुए सारे लोग मर जायेंगे। पर पानी के देवता ने आग पर पहाड़ी झील का पानी छिड़क दिया और बर्फ़ीले पानी से चट्टानें ठंडी हो गयीं, गरम हवा हमाम की हवा जैसी सुहानी हो गयी। क्रोध से काँपता हुआ अजरूब वहाँ से चला गया।

लोग फिर ज़मीन खोदने, चट्टानें तोड़ने, बाँध बनाने लगे, पर उन पर एक और मुसीबत आनेवाली थी।

धरती डोलकर काँपने लगी। छत की ज़ंजीर से लटके दीये की तरह चाँद इधर-उधर डोलने लगा। धरती की छाती में से एक चीख़ निकली। पहाड़ों की चोटियाँ आपस में टकराकर पाताल में गिरने लगीं। चट्टानों का समूह तेज़ी से घाटी में नीचे की ओर लुढ़कने लगा।

पर पानी के देवता ने हाथ के एक इशारे से बाँध बनानेवालों को पहाड़ों की ढलान पर ला खड़ा किया। और लोगों को गिरनेवाले पत्थरों से कोई नुक़सान नहीं हुआ, बल्कि उनसे बाँध बनने में आसानी हो गयी।

अजरूब हार नहीं माननेवाला था। उसने सारे पहाड़ों और घाटियों के ख़ूँख़्वार शेरों, आग उगलनेवाले अजदहों, तेंदुओं, जंगली भेड़ियों, लकड़बग्घों, गीदड़ों, ज़हरीले साँपों, बिच्छुओं को इकट्ठा करके लोहार और उसके साथियों पर हमला कर दिया। अंधेरी रात में, जब हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था, जंगली जानवरों और कीड़ों की फ़ौजें ख़ामोश छावनी पर टूट पड़ीं, जहाँ मिट्टी की झोंपड़ियों और तंबुओं में थके-हारे बाँध बनानेवाले सोये हुए थे। इस संकट और भगदड़ में लोहार घबराया नहीं। उसने जंगली आर्चा* की रालदार डालों की सैकड़ों मशालें जलाने का हुक्म दिया। उनकी लाल-लाल लपटों से सारे जंगली जानवर और कीड़े डरकर भाग गये।

लोहार अपने लोगों के साथ मिलकर पाँच पोपलरों जितना ऊँचा बाँध बना रहा था। ऐसी पानी के देवता की आज्ञा थी। जिन शिलाखंडों को काट और तराशकर बाँध बनाया जा रहा था, उनमें से हर एक घर के बराबर था। और शिलाखंडों को एक दूसरे से जोड़ने के लिए लोहार वहीं आस-पास के पहाड़ों से सीसा निकालकर और उसे पिघलाकर दरारों में भर रहा था।

जादूगर चुप नहीं बैठा। वह समझ गया कि बाँध में बंधी नदी लोगों की सेवा करेगी, सूखी हुई धरती को ख़ूब पानी देगी, जिससे लोगों का हौसला बढ़ जायेगा और वे उसके क़ाबू से निकल जायेंगे।

उसने बाँध बनानेवालों पर गरज के साथ बिजली गिरायी। पर लोहार और उसके साथी डटे रहे।

एक हज़ार दिनों तक लोग चट्टानें तोड़ते हुए नहर खोदते रहे।

जादूगर ने खुदे हुए ग़ार में लोगों को कुचला, उनके सिरों के ऊपर पत्थर गिराये। ज़हरीले

---

* आर्चा – मध्य एशिया का नुकीले पत्तोंवाला एक सदाबहार पेड़।

साँप उन्हें डसकर मारते रहे। पर रात-दिन लोहा ठोका-पीटा जाता रहा। लोग जब पहाड़ का सीना फोड़ते, तो वह काँपकर कराह उठता।

और अंततः खुशी का दिन भी आ गया।

बाँध में बँधी नदी शांत हो गयी। पानी पहाड़ी सुरंग में से होकर धीरे-धीरे नहर में बहने लगा और शीतल जल की धारा ने गरमी से तपी धरती की प्यास बुझा दी।

झुँझलाया अजरूब ऊँचे काले पहाड़ की चोटी पर बैठा गुस्से में दाँत पीसता रहा।

लोग खुशी-खुशी शहर लौट रहे थे। उस दिन दावत हुई, नाच-गाने हुए। धनवान और बाग़ों के मालिक लोहार के आगे सिर झुकाने दौड़े-दौड़े आये। बड़े अभिमानी लोग लोहार के पाँव पड़कर ज़ोर से कहने लगे: "तुम महान हो!"

लोहार के हृदय में उनके प्रति दया जाग उठी। उसने उन्हें कोई सज़ा नहीं दी, बल्कि उन अभिमानियों को क्षमा कर दिया और अपने हाथों ही अपनी बरबादी के बीज बो दिये। वह ज्ञानियों की सीख भूल गया: "दुश्मन मरा ही भला।"

पर बाग़ों के मालिकों के दिल में घोर घृणा छुपी हुई थी। धनवानों ने लोहार को बरबाद कर डालने की क़सम खायी।

कई सालों तक अजरूब रेगिस्तान में निर्वासित-सा भटकता रहा और उसमें गौरैया जितनी ताक़त रह गयी।

उधर बाग़ों के मालिकों और अमीरों ने दुष्ट जादूगर को चोरी से शहर बुलवाया। वे लोग उसके साथ षड्यंत्र रचते रहे। अजरूब दूर के एक देश चला गया और उसने वहाँ रहनेवाले असभ्य और ख़ौफ़नाक घुड़सवार लुटेरे लोगों को इस शहर की सुख-समृद्धि के बारे में बताया।

उन लोगों ने लालच में आकर इस शहर के लिए कूच कर दिया। उन काले कौवों-से लोगों की सेना ने शहर का घेरा डाल दिया। घेरा बहुत दिन तक चला। बड़ी घमासान लड़ाई हुई। बहादुर लोहार ने दुश्मनों के बादशाह के साथ हुए मरणांतक द्वन्द्व में उसे मार डाला। विजय द्वन्द्व-युद्ध के नियमानुसार नगरवासियों की हुई। यही परम्परा थी।

दुश्मन थककर कमज़ोर हो गया, लड़ाकू घुड़सवार लुटेरों के हाथ ढीले हो गये। उन्होंने अपनी स्तेपी में लौट जाना चाहा।

पर बेईमान अमीरों ने अपने एक सेवक के साथ असभ्य ख़ानाबदोशों की छावनी में सन्देश भेजा:

"यहाँ से थोड़ी दूर एक बाँध है, जिससे शहर को पानी और जीवन मिलता है। बाँध पत्थरों और सीसे से बना है। और सीसे की दुश्मन आग है।"

हज़ारों घुड़सवार घाटी में दौड़ पड़े। उन्होंने लकड़ियाँ, सूखी टहनियाँ और कंटीली झाड़ियाँ इकट्ठी कीं। आग की लपटें आसमान को छूने लगीं, गरमी से सीसा पिघल गया और पत्थर कोई सहारा न होने के कारण खिसककर नीचे बिखर गये। पानी की दीवार तेज़ी से घाटी में बढ़ने लगी, खेत और बाग़ डूब गये, शहर बह गया, बहुत-से नगरवासी और दुश्मन के सारे सैनिक मारे गये। दुष्ट जादूगर अजरूब भी मारा गया।

बहुत थोड़े नगरवासी जिन्दा बच पाये, पर वे भी यह स्थान छोड़कर चले गये। उस समय से यह शहर खंडहर पड़ा है।

यह बिल्कुल सत्य घटना है, और अगर किसी को इसकी सचाई में संदेह हो, तो वह स्वयं उस घाटी में जाकर देख ले। वहाँ अब भी वे सीसे के अंशवाले पत्थर दिखाई देंगे, जिनसे लोहार ने बाँध बनाया था।

तीन झूठ और हर झूठ में चालीस गप्पें

बहुत दिन हुए एक बादशाह था। उसकी बेटी शादी के लायक़ हो गयी थी। बहुत-से देशों के बादशाहों और ख़ानों के बेटे उसके साथ शादी करने के इरादे से आये, पर शाहज़ादी बड़ी तुनुकमिज़ाज थी और वह किसी से शादी करने के लिए तैयार नहीं हुई।

एक बार बादशाह ने अपनी बेटी को बुलाया और बोला: "ऐ, मेरी आंखों का तारा! सारे बादशाहों से मैंने कह रखा है कि मैं तेरे लिए दूल्हा ढूँढ़ रहा हूँ, एक से एक बहादुर नौजवान आ रहे हैं, पर तू सबको मना कर रही है। आखिर इसकी वजह क्या है?"

"पिता जी!" बेटी ने जवाब दिया, "मैं शादी उसी के साथ करूँगी, जो मुझे तीन झूठ गढ़कर सुनाये और हर झूठ में चालीस गप्पें हों, बशर्ते उन्हें वह दिलचस्प ढंग से सुना सके।"

बादशाह ने चारों ओर मुनादी करवाने का हुक्म दिया।

"जो कोई तीन झूठ गढ़ेगा और हर झूठ में चालीस गप्पें सुनायेगा, उसी के साथ मैं अपनी बेटी की शादी कर दूँगा।"

लोग चारों ओर से शाहज़ादी के साथ शादी की तमन्ना लिये आने लगे और गप्पें गढ़ने लगे। बादशाह ने देश के सारे विद्वानों को इकट्ठा करके उनसे कहा:

"अगर कोई तीन झूठ सुनाये और हर झूठ में चालीस गप्पें हों और वह बिल्कुल सफ़ेद झूठ हो, तो कहिये कि यह झूठ है, अगर सच हो, तो कहिये सच है। अगर आप ने सच को झूठ बताया, तो आपके सिर कटवा दूँगा और आपकी जायदाद लुटवा दूँगा।"

हर नौजवान अपनी-अपनी गप्पें सुनाने लगा। हर बार, जब भी बादशाह ने विद्वानों से पूछा:

"यह सच है या झूठ?"

"ऐसा तो होता रहता है," उसे जवाब मिला।

बहुत-से बादशाह और शाहज़ादे आये और खाली हाथ लौट गये।

उस शहर में एक ग़रीब नौजवान रहता था। एक बार वह सूखी टहनियाँ इकट्ठी करने पहाड़ों में गया, तो उसने बादशाह की यह मुनादी सुनी:

"जो तीन झूठ और हर झूठ में चालीस गप्पें गढ़कर सुनायेगा उसकी शादी शाहज़ादी के साथ कर दी जायेगी।"

"अहा," ग़रीब नौजवान ने सोचा, "बोलने का यह बड़ा अच्छा मौक़ा मिला है।" और वह महल की ओर चल दिया।

"ओ, बदबू मारनेवाले भिखारी, तू यहाँ किस लिए आया है?" पहरेदार उस पर बरस पड़े और उसे महल के दरवाज़े में नहीं घुसने दिया।

"मैं बादशाह से एक दरख़ास्त करने आया हूँ," नौजवान बोला।

"भिखारी कौन-सी दरख़ास्त करेगा। चल भाग यहाँ से, यहाँ मत खड़ा हो।"

"मैं यह बताने आया हूँ कि मेरे मालिक के पास दो सौ भेड़ें हैं, जिन्हें बादशाह को महसूल के तौर पर देना है," नौजवान ने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर कहा।

एक पहरेदार फ़ौरन दौड़कर बादशाह के पास पहुँचा और बोला:

"शहंशाह, एक भिखारी आया है, कहता है, उसके मालिक के पास बादशाह के लिए दो सौ भेड़ें हैं।"

बादशाह बहुत खुश हुआ:

"उसे मेरे सामने पेश करो!"

नौजवान को पेश किया गया। बादशाह चिल्लाकर बोला:

"ऐ ग़ुलाम, बता कहाँ हैं तेरी भेड़ें?"

ग़रीब लड़का बोला:

"ऐ शहंशाह, मुझे बोलने की इजाज़त दीजिये। मैं ग़रीब और अनाथ हूँ। मैं अपने बाप का इकलौता बेटा था, मेरे भाई मर रहे थे, पर हम तीन बच गये। हम तीनों भाइयों ने न एक दूसरे को देखा था और न ही पहचानते थे। एक दिन हम अचानक मिल गये, दुआ-सलाम हुआ। मैंने देखा – हममें से एक के चोग़े में गरेबान नहीं है, दूसरे के में आस्तीन नहीं है और तीसरे के में – पल्ला नहीं है। जिस तरह 'अंधा अंधे को अंधेरे में भी ढूंढ़ लेता है,' हम तीनों मिले और दोस्त बन गये। हम चल पड़े, न हमने रास्ते पर क़दम रखा और न ही रास्ते के किनारे चले। हमें ज़मीन पर तीन सिक्के पड़े दिखाई दिये; उनमें से दो बिल्कुल घिसे हुए थे और एक पर कुछ भी नहीं लिखा था। हमने वह सिक्का उठा लिया, जिस पर कुछ नहीं लिखा था और आगे चल पड़े। रास्ते-रास्ते चलते रहे, चलते रहे और बहुत दूर पहुँच गये। चलते रहे, चलते रहे, फिर घाटी में उतरे। हमने नदी में तीन मछलियाँ देखीं। दो मरी हुई थीं, और एक बेजान थी। हमने बेजान मछली उठा ली और उस भाई के पल्ले में डाल दी, जिसके चोग़े में पल्ला नहीं था। आगे चले। चलते-चलते हमने अपने सामने तीन घर देखे: दो बिना छत के थे और एक पर छत बिल्कुल नहीं थी। हम उस घर में घुसे, जिस

पर छत नहीं थी, वहाँ हमने तीन देग देखे : दो में छेद ही छेद थे और एक बिना पेंदे का था। हमने बेजान मछली बिना पेंदे के देग में डाल दी और पानी डालकर उसे पकाने की तैयारी करने लगे। सूखी टहनियाँ ढूँढ़ीं, पर एक टहनी भी नहीं ढूँढ़ पाये। बिना आग के ही मछली पकायी। आँच में कोई कमी नहीं रखी, सारी हड्डियाँ गल गयीं, पर गोश्त कच्चा रह गया। खाते-खाते हम तीनों के पेट भर गये और इतने मोटे हो गये कि जब हमने बाहर निकलना चाहा, तो दरवाज़े में से नहीं निकल पाये। हमें दीवार में एक छोटी-सी दरार दिखाई दी और हम उसी में से बाहर निकलकर आगे चल पड़े। रास्ते-रास्ते चलते रहे, चलते रहे, बहुत दूर निकल गये और स्तेपी में आ पहुँचे। हमने देखा घास पर बिना पैदा हुए ख़रगोश का बच्चा पड़ा है। हमने बिना रोपे गये पोपलर की बिना तोड़ी हुई डाल का डंडा बनाकर ख़रगोश के बच्चे को मारा। उसने तीन कलाबाज़ियाँ खायीं और ढेर हो गया। हमने उसके टुकड़े कर दिये। ख़रगोश में से तीन मन चरबी निकली और तीन मन गोश्त। गोश्त को हमने न उबाला, न सुखाया और जल्दी से उठाकर उसे खा लिया, पर पेट नहीं भरा, भूखे रह गये। मेरे दोनों बड़े भाई गुस्सा हो गये और मुझसे नाराज़ होकर वहाँ से चले गये। 'चरबी मेरे लिए बच गयी,' मैं बड़ा ख़ुश हुआ। अपने जूते उतारकर मैं उनपर चरबी मलने लगा। सारी चरबी मैंने एक ही जूते पर लगा दी और दूसरे के लिए कम पड़ गयी। मैं बुरी तरह थककर सो गया। अचानक मैंने शोरगुल सुना। मैं फ़ौरन बिस्तर से उठा तो देखा – जिस जूते पर मैंने चरबी मली थी, वह बिना चरबी मले जूते से लड़ रहा है। मैंने दोनों जूतों के जबड़ों पर घूंसे मारे और फिर सो गया। आधी रात में मैं ठंड से काँपता हुआ उठा, तो देखा – जिस जूते पर मैंने चरबी मली थी, वह मेरा चोग़ा ओढ़कर सो रहा है, और जिस जूते पर मैंने चरबी नहीं मली थी, वह नाराज़ होकर कहीं भाग गया है। मैंने चरबी मले हुए जूते को जगाकर उसे पहन लिया। बिना पल्ले के चोग़े का पल्ला उठाकर पीछे पेटी में उड़स लिया और घर आ गया। जब मैं गया था, तो घर में मेरी बुढ़िया माँ और मुर्ग़ा बचे थे। और जब घर लौटा, तो देखा न बुढ़िया घर में है, न मुर्ग़ा। मैंने मुड़कर देखा तो दूसरा जूता भी नदारद था। 'क्या मुसीबत है! मैं उन्हें कहाँ ढूँढूँगा?' मैं दुःखी होकर आपके महल में आया। मैं आप से मिलना चाहता था। पर दरवाज़े पर खड़े आपके नौकरों ने मुझे किसी भी तरह अन्दर नहीं घुसने दिया।"

ग़रीब नौजवान सिर झुकाकर चुप हो गया।

बादशाह ने हैरत में पड़कर अपने विद्वानों की ओर देखा।

वे खड़े हुए और सिर झुकाकर बोले :

"ऐ, बादशाह, इस कुत्ते के बच्चे ने जो कुछ कहा है, वह सब झूठ है। ऐसे ही यह अपने मालिक की भेड़ों के लिए भी कहेगा कि वे खो गयीं।"

बादशाह चिल्लाया :

"मैं तुझसे पूछता हूँ, भेड़ें कहाँ हैं?"

"शहंशाह, मुझे अपनी बात कहने की इजाज़त दीजिये। जब आपके पहरेदारों ने मुझे

दरवाज़े में नहीं घुसने दिया, तो मैं बहुत दुःखी होकर अपनी बुढ़िया माँ, मुर्गे और दूसरे जूते को ढूँढ़ने निकला। मैं चलते-चलते बहुत दूर पहुँच गया और एक गाँव में जा पहुँचा। मैंने लोगों से पूछताछ करके अपने मुर्गे को ढूँढ़ लिया। वह ज़मींदार की ज़मीन जोत रहा था। हम गले मिले, दुआ-सलाम हुआ। छः महीनों में मुर्गे को तनख्वाह में बोरी सीने की एक सूई मिली और उसे भी उसका मालिक अपने पास रखे हुआ था। मैं मालिक से लड़ा और शोर मचाकर उससे सूई छीन ली। 'मेरे साथ चल', मैंने मुर्गे से कहा। 'नहीं,' वह बोला, 'मुझे छः महीने नौकरी करनी है; तीन महीने हो चुके हैं, मियाद पूरी होने पर मुझे पैसा मिलेगा और मैं खुद आ जाऊँगा।' मैंने सूई लेकर मुर्गे से विदा ली और घर पहुँचा, पर घर नदारद था, बिल्कुल ग़ायब हो गया था। मैं बहुत दुःखी हुआ और अपनी बुढ़िया माँ और दूसरे जूते को ढूँढ़ने निकल पड़ा। मैंने टीले पर चढ़कर देखा, कोई दिखाई नहीं दिया। पहाड़ी पर चढ़कर देखा – कोई दिखाई नहीं दिया। मैं घाटी में लौट आया। सूई को मैंने ज़मीन में गाड़ दिया और उस पर चढ़कर देखा, तो मेरी बुढ़िया माँ सिर-दरिया के घाट पर कपड़े धोती नज़र आयी। मैं सूई उठाकर चल पड़ा। माँ तक पहुँचने के लिए न जाने मैंने कितने पहाड़ और नदियाँ पार कीं। मालूम पड़ा, मुझसे बिछुड़ने के बाद वह एक आदमी के घर में नौकरी करने लगी थी। 'चलो,' मैंने कहा। 'तनख्वाह के पैसे मिलने तक मैं नहीं जाऊँगी,' वह बोली। 'तीन साल काम करके मैंने तीन महीने खाने लायक़ पैसा कमाया है। तू जा, मुझे तीन महीने और काम करना है, मैं खुद आ जाऊँगी।' मैंने बिना पल्ले के चोग़े का पल्ला कमर में उड़सा और मुड़कर चल दिया। थोड़ी दूर चलने के बाद मैंने देखा, नदी में बाढ़ आयी हुई है और पुल बह गया है। गरमी के दिन थे, मैं प्यास के मारे तड़प रहा था। मैंने पानी पीना चाहा, पर नदी तो जम गयी थी। मैंने बर्फ़ तोड़नी चाही, लेकिन पथरीली ज़मीन पर एक पत्थर भी नहीं मिला, इस लिए अपने सिर से ही बर्फ़ तोड़ी। गढ़े में सिर डालकर पानी पिया और आगे चल पड़ा। रास्ते में मुझे सूई की याद आयी। मैं किनारे पर लौट आया। देखा, मेरी सूई ग़ायब थी। 'मेरी सूई भी चली गयी,' मैं दुःखी होकर माँ के पास आया। उसकी नौकरी के आखिरी तीन महीने खत्म हो चुके थे। पर जब उसने तनख्वाह माँगी, तो मालिक चिल्लाया: 'तुझे तनख्वाह भी दूँ क्या!' उसने माँ को इतने ज़ोर से मारा कि वह वहीं मर गयी। 'मेरी ज़िन्दगी में कितना दुःख है?' मैं परेशान होकर आपके महल में आया, शहंशाह, आपसे मिलने के लिए। पर मुझे दरवाज़े के अन्दर क़दम नहीं रखने दिया गया।"

यह कहकर ग़रीब नौजवान ने सिर झुका लिया।

बादशाह और ज़्यादा हैरत में पड़कर अपने विद्वानों की ओर देखने लगा।

विद्वानों में जो सबसे ज़्यादा बुद्धिमान था, वह खड़ा हुआ और सिर झुकाकर बादशाह से बोला:

"बादशाह सलामत, इस पिल्ले पर विश्वास मत कीजिये और इससे भेड़ें तलब कीजिये। यह आवारा झूठ बोलता है। अब यह कहेगा कि इसकी भेड़ें चुरा ली गयीं।"

ग़रीब नौजवान तीसरी बार बोला:

"ऐ शहंशाह, मुझे बोलने की इजाज़त दीजिये। जब मुझे महल में नहीं घुसने दिया गया, तो मैंने उस मालिक के पास जाकर हल्ला मचाने की सोची, जिसने मेरी बूढ़ी माँ को मार डाला था। 'बुढ़िया की तनख्वाह मुझे दे, उसके ख़ून के बदले में रुपया दे,' मैं उस पर चिल्लाया। मालिक का गरेबान पकड़कर मैं उसे बाहर घसीट लाया। लोग इकट्ठे हो गये और उन्होंने फ़ैसला मेरे हक़ में किया। मालिक ने मुझे एक गधा दिया। मैं गधे पर बैठकर घर चल दिया। चलता रहा, चलता रहा, रास्ते में मुझे चालीस कारवाँ दिखाई दिये। कारवाँ के सरदार ने मुझे आवाज़ दी, 'ऐ, सुन, तेरे गधे की पीठ पर से काठी सरक गयी है! उतरकर ज़ीन के नीचे की गद्दी ठीक कर ले।' मैंने उतरकर देखा, गधे की पीठ पर घाव हो गया था: 'अरे सुनना, इसकी क्या दवा करूँ?' मैंने उससे पूछा। कारवाँ के सरदार ने जवाब दिया, 'यह अख़रोट ले और इसे जलाकर, इसकी राख घाव पर लगा दे, ठीक हो जायेगा।' मैंने अख़रोट जलाकर राख गधे के घाव पर बुरक दी। जैसे ही मैंने ज़ीन के नीचे की गद्दी ठीक करनी चाही, मुझे घाव में से अख़रोट का पेड़ उगता हुआ दिखाई दिया। पलक झपकते पेड़ बड़ा हो गया और उसमें फूल आ गये। थोड़ी देर बाद देखा, अख़रोट पक भी गये। 'क्या करूँ?' मैंने सोचा। 'अगर मैंने पेड़ पर चढ़कर उसे हिलाया, तो गधे की कमर टूट जायेगी, बेहतर यही रहेगा कि अख़रोट पत्थर मारकर ही तोड़ूँ।' मैं गधे को खेत में ले आया, जहाँ पत्थर नहीं थे। मैंने आस्तीनें ऊँची करके अख़रोट के पेड़ पर पत्थर मारने शुरू किये। न तो कोई पत्थर ही वापस गिरा और न ही कोई अख़रोट ज़मीन पर गिरा। मैं पत्थर फेंकता रहा, पूरी ताक़त लगाकर फेंकता रहा। देखा, पत्थर भी ख़त्म हो गये। 'अब और कोई चारा नहीं रहा, मैं ख़ुद ही चढ़ता हूँ! मैंने फ़ैसला किया। अख़रोट के पेड़ पर चढ़ा तो वहाँ ख़रबूज़ों और तरबूज़ों का खेत दिखाई दिया और उसके एक किनारे पर नहर में पानी कलकल करता बहता नज़र आया। 'यह तरबूज़ बोने के लिए सबसे अच्छी जगह है,' मैंने सोचा और तरबूज़ के बीज बो दिये। और पलक झपकते तरबूज़ पक गये। वे इतने बड़े थे कि दोनों हाथों में नहीं समा रहे थे। मैंने नहर के किनारे बैठकर जैसे ही तरबूज़ में चाक़ू की नोक घुसेड़ी, तरबूज़ कट गया और चाक़ू तरबूज़ के अन्दर गिर गया। मैंने झुककर उसे निकालना चाहा, पर मैं ख़ुद भी उसके अंदर गिर पड़ा। अंदर चाक़ू ढूँढ़ता रहा। एक आदमी मिला, मैंने उससे पूछा, 'भाई, आपने मेरा चाक़ू तो नहीं देखा?' 'आप बस चाक़ू ही खोज रहे हैं?' बूढ़े ने पूछा। 'हमारे चालीस कारवाँ थे और हर कारवाँ में चालीस ऊंट थे। हम सब बिछुड़ गये, मैं किसी को भी नहीं ढूँढ़ पाया।' ऐ, बादशाह, मैं अपनी इस बदक़िस्मती के बारे में बताने आपके महल आया।"

ग़रीब नौजवान ने यह कहकर सिर झुका लिया।

बादशाह सोच में पड़ गया। विद्वानों में से एक खड़ा हुआ और सिर झुकाकर बोला:

"शहंशाह, आप इस पिल्ले को दो मोहरें देकर यहाँ से भगा दीजिये।"

पर दरवाज़े की आड़ में खड़ी बादशाह की बेटी ने सारी बात सुन ली थी। वह अपने पिता के पास दौड़ी आयी और बोली:

"इसने मेरी तीनों शर्तें पूरी कर दीं। चाहे यह ग़रीब भी क्यों न हो, मैं शादी इसके साथ ही करूँगी।"

ग़रीब नौजवान ने सिर झुकाकर बादशाह को सलाम किया:

"शहंशाह, मैं कुछ सालों से पहाड़ों में अपने मालिक की भेड़ें चरा रहा हूँ। मालिक से मेरी दो सौ भेड़ें निकलती हैं। उसने मुझे भेड़ें नहीं दीं और नौकरी से निकाल दिया।

आप मेरे मालिक से दो सौ भेड़ें वसूल कीजिये, मैं शादी के मौक़े पर उन्हें आपको नज़र करता हूँ।"

बादशाह ने अपनी बेटी की शादी ग़रीब नौजवान के साथ कर दी और इस मौक़े पर बड़ी शानदार दावत दी।

हमने भी दावत में छककर खाया-पिया और अपनी मूंछों और दाढ़ी पर ख़ूब घी मला।

ज़ियाद बातिर

बहुत दिन हुए एक सुलतान नाम का बादशाह था। उसकी बेटी सुंदर, सुशील, बुद्धिमान और विद्वान थी। उसका नाम क़मरख़ान* था।

तीर, बरछी और तलवार चलाने में कोई शाहज़ादी का मुक़ाबला नहीं कर सकता था।

बादशाह अपनी बेटी को बेटे से भी ज़्यादा प्यार करता था। क़मरखान से शादी के इच्छुक नौजवानों की कोई गिनती नहीं थी। बहुत-से देशों के बादशाहों और ज़मींदारों के बेटे उससे शादी करने आये, पर सबको उसने बस एक ही जवाब दिया:

"मेरा शादी करने का कोई इरादा नहीं है।"

बादशाह के महल में एक बूढ़ा दस्तकार काम करता था। वह सब हुनरों में माहिर था। उसकी बनायी चीज़ें बादशाह को बहुत पसन्द आती थीं और उसने बूढ़े दस्तकार को सब दस्तकारों का सरदार बना दिया।

उस दस्तकार का एक बीस साल का बेटा था, जो सुगठित और सुन्दर होने के साथ-साथ बहादुर और बुद्धिमान भी था। उसका नाम ज़ियाद बातिर था। दूसरे बहादुरों में उसका नाम बड़ा मशहूर था।

---

* ख़ान – उज़बेक स्त्रियों व पुरुषों के नामों के साथ लगाया जानेवाला आदरसूचक सम्बोधन।
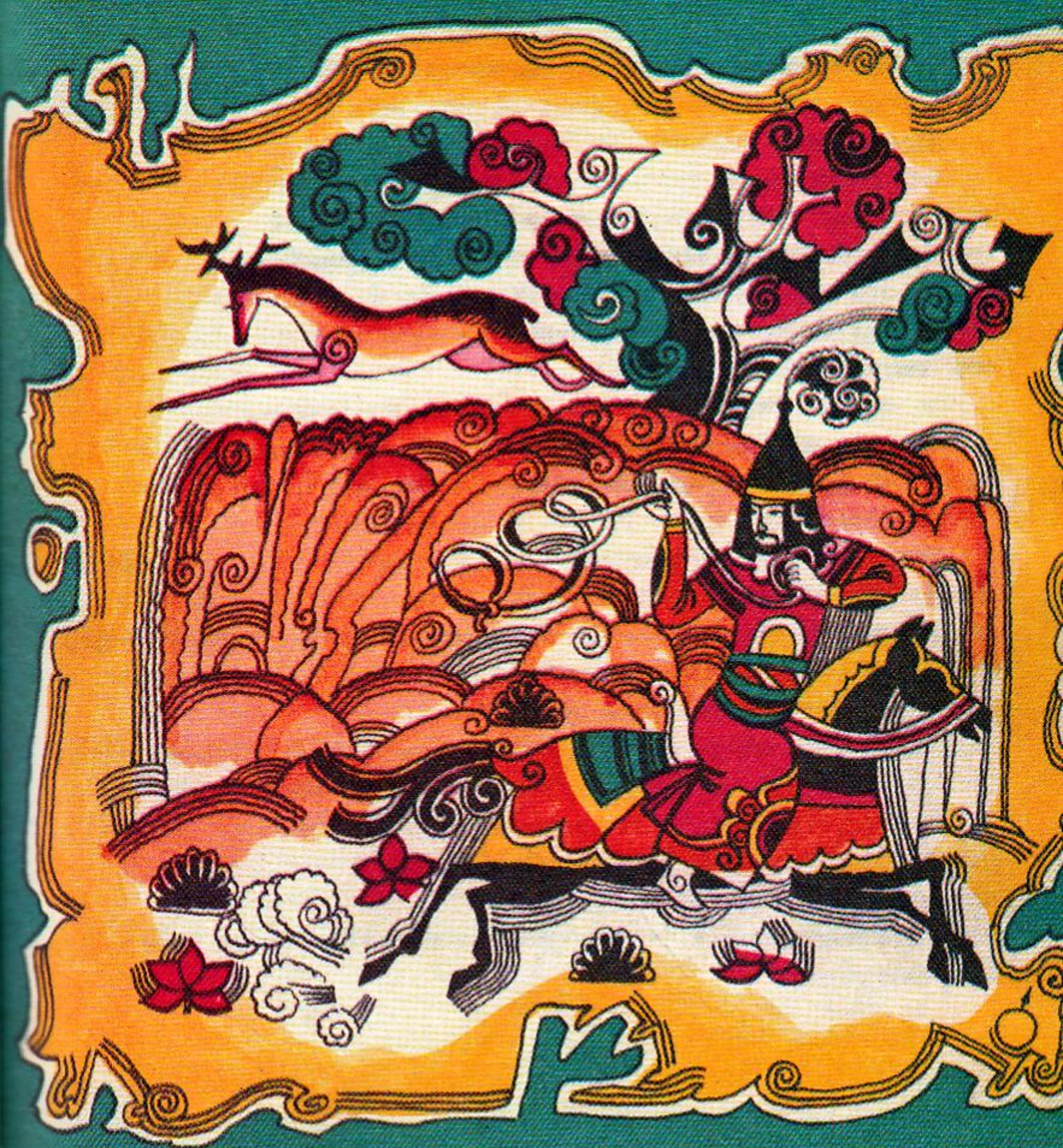
दस्तकार ने अपने बेटे को अपना हुनर सिखाना चाहा और बोला:
"मेरे बेटे, हुनर सीख ले: बड़ा होने पर तेरे काम आयेगा।"
थोड़े समय में ही बेटे ने अपने पिता से सभी हुनर सीख लिये।
पिता अपने पुत्र को देखकर खुश होता, पर उसे यह पता न था कि ज़ियाद बातिर सुन्दर शाहज़ादी के प्यार में तड़पता है, रात भर सोता नहीं, आहें भरता है।
एक बार क़मरख़ान ने दस्तकार को एक धनुष बनाने का हुक्म दिया। बूढ़े ने काम शुरू कर दिया और कुछ दिनों में ही धनुष बना डाला।
पर ज़ियाद बातिर भी धनुष बनाने लगा। काम समाप्त करने के बाद उसने यह धनुष अपने पिता को दिखाया।
उस धनुष पर बेलबूटेदार लिखावट में दो पंक्ति की एक प्रेम-कविता लिखी थी।
दस्तकार ने धनुष देखा और हैरत में पड़ गया। ज़ियाद बातिर का धनुष लाजवाब था। इस धनुष को हाथ में लेने के बाद कोई उसकी सराहना किये बग़ैर नहीं रह सकता था।
बूढ़ा दस्तकार बहुत खुश हुआ और अपने बेटे का माथा चूमकर बोला:
"शाबाश, मेरे बेटे! तू इतनी अच्छी तरह मेरे सारे हुनर सीख गया, अब तू जिन्दगी में कभी ग़रीब नहीं रहेगा।"
दस्तकार ने शाहज़ादी को ज़ियाद बातिर का बनाया हुआ धनुष भेजा। शाहज़ादी को धनुष बड़ा पसंद आया। वह ऐसा ही धनुष पाना चाहती थी।
शाहज़ादी ने दस्तकार को क़ीमती तोहफ़े भेजे।
कुछ समय बाद दस्तकार की मृत्यु हो गयी। बादशाह ने ज़ियाद बातिर को बुलवाया और उसे सब दस्तकारों का सरदार बना दिया।
एक बार बादशाह अपनी बेटी के पास आया और उसने वहाँ दीवार पर बेहद खूबसूरत धनुष टँगा हुआ देखा। बादशाह ने धनुष को दीवार से उतारकर देखा, उसकी बनावट देखकर बहुत खुश हुआ और हैरत में पड़ गया।
अचानक बादशाह ने धनुष पर लिखी हुई कविता देखी और पढ़ी। उसने ज़ियाद बातिर को बुलाकर पूछा:
"यह कविता धनुष पर किस ने लिखी है?"
"मैंने," ज़ियाद बातिर ने जवाब दिया।
"नमकहराम, तेरे लिए यह क्या कम है कि मैंने तुझे सब दस्तकारों का सरदार बना दिया? और तू मेरी बेटी के लिए प्रेम-कविता लिखता है।"
बादशाह आग-बबूला हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर ज़ियाद बातिर को मौत की सज़ा देने का हुक्म दिया।
पर एक वज़ीर ने बादशाह के पैरों में गिरकर नौजवान दस्तकार को माफ़ कर देने और उसकी जान बख़्शने की प्रार्थना की। बादशाह ने वज़ीर की बात मान ली, पर फिर भी उसने ज़ियाद बातिर को शहर से निकाल देने का हुक्म दिया।

ज़ियाद बातिर लंबे सफ़र पर निकल पड़ा। वह बहुत दिनों तक स्तेपी और पहाड़ियों में चलता रहा और बहुत-से रास्तों पर भटकता हुआ अंत में पहाड़ों के पास पहुँचा। उसे जगह बहुत अच्छी लगी। चारों ओर हरी-भरी घास थी, साफ़ हवा थी, जिसको देखकर उसका दिल खुश हो उठा और उसने वहीं आराम करने की ठानी। ज़ियाद बातिर को पास ही एक बूढ़ा चरवाहा घोड़े चराता नज़र आया। उसने चरवाहे के पास पहुँचकर सलाम किया।

बूढ़े ने देखा कि नौजवान बुरी तरह थक गया है, उसने मशक में से निकालकर एक प्याला क़िमिज़* उसे दिया।

"कहाँ से आ रहे हो, बेटा?" चरवाहे ने पूछा।

ज़ियाद बातिर ने सारा क़िस्सा चरवाहे को बता दिया। बूढ़े को उस पर दया आयी और उसने सहानुभूतिपूर्वक पूछा:

"और अब कहाँ जा रहे हो, बेटा?"

"मैं कहाँ जाऊँगा, अब्बा? बेघर कहाँ जा सकता है? जाऊँगा, जहाँ मेरे पैर मुझे ले जायें।"

बूढ़ा बोला:

"मैं यहाँ के लोगों के घोड़े चराता हूँ। मैं ख़ानदानी चरवाहा हूँ। अगर तुम्हें यह ज़िंदगी पसंद हो, तो तुम मेरे बेटे की तरह रहो।"

ज़ियाद बातिर को चरवाहे की बात अच्छी लगी।

"अब्बा, अगर आप मुझे पनाह दे रहे हैं और इसके अलावा मुझे अपना बेटा समझकर रखना चाहते हैं, तो मैं तहेदिल से आपके साथ रहने को तैयार हूँ।"

इस तरह ज़ियाद बातिर चरवाहे के पास रहकर घोड़े चराने लगा। वह अच्छी तरह गुलेल चलाना भी सीख गया।

जब कभी जंगली जानवर घोड़ों के झुंड पर हमला करते, ज़ियाद बातिर गुलेल से पत्थर का अचूक निशाना लगाकर उन्हें खदेड़ देता।

बूढ़ा चरवाहा बहुत खुश था। पहले जंगली जानवर उसे काफ़ी नुक़सान पहुँचाते थे, पर ज़ियाद बातिर के आने के बाद से घोड़े चैन से चरने लगे।

ज़ियाद बातिर की ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी।

ज़ियाद बातिर को अपने धर्मपिता के साथ घोड़े चराता छोड़कर अब आप बादशाह की बेटी शाहज़ादी क़मरख़ान का हाल सुनिये।

क़मरख़ान ने किसी को नहीं बताया कि वह ज़ियाद बातिर को प्यार करती है, पर उसने अपने दिल में बहुत पहले ही फ़ैसला कर लिया था:

"अगर मेरे पिता मेरा विवाह करना चाहेंगे, तो मैं केवल ज़ियाद बातिर से ही विवाह करूँगी।"

---

* क़िमिज़ – घोड़ी के दूध से बना एक प्रकार का पेय।

3—231

बादशाह ने जब ज़ियाद बातिर को शहर से बाहर निकाल दिया, तब क़मरख़ान की ज़िन्दगी में अंधेरा छा गया। वह दिन-रात ज़ियाद बातिर के बारे में सोचती रहती और रोती रहती।

काफ़ी समय तक शाहज़ादी ने अपने दिल का दुःख किसी को नहीं बताया।

उसकी चालीस दासियाँ थीं। उनमें से सबसे बड़ी का नाम हुमायुं था।

क़मरख़ान तड़पती रही, तड़पती रही और अंत में उसने अपने दिल के दुःख के बारे में हुमायुं को बता ही दिया। अपना ग़म भुलाने के लिए क़मरख़ान अक्सर शिकार पर जाने लगी।

वसंत के एक दिन क़मरख़ान अपने पिता से इजाज़त लेकर दासियों के साथ मर्दाने कपड़े पहने शिकार पर गयी। उन्होंने जंगल में पहुँचकर कई चकोर और दूसरी चिड़ियाँ मारीं। इसके अलावा उन्हें और कोई शिकार नज़र नहीं आया।

क़मरख़ान घोड़ा दौड़ाकर आगे बढ़ी और उसने दूर आसमान को छूता एक ऊँचा पहाड़ देखा। क़मरख़ान पहाड़ की ओर बढ़ी। अचानक तंग घाटी में से एक भेड़िया उसकी ओर लपका। क़मरख़ान ने तीर चलाकर भेड़िये को मार दिया और उसकी खाल उतारकर अपनी दासियों में से एक को दे दी।

क़मरख़ान अपनी दासियों के साथ आगे बढ़ी, तो उसे जंगल में एक हिरण चरता हुआ नज़र आया। हिरण के कानों में सोने की बालियाँ थीं, सींगों पर सोने की मुहरें लटक रही थीं और गरदन पर बेशक़ीमती हार थे। क़मरख़ान को हिरण बहुत अच्छा लगा और उसने उसे पकड़ना चाहा।

"इस हिरण को पकड़कर मेरे पास ला दो," उसने दासियों को आज्ञा दी, "पर उस पर तीर मत चलाना, कमंद से पकड़ना। देखना, कोई हिरण को छोड़े नहीं, और अगर किसी ने उसे छोड़ किया, तो मैं उसे शिकार से निकाल दूँगी और सारी दुनिया के सामने उसकी बेइज़्ज़ती करूँगी।"

दासियों ने कमंद संभाल कर हिरण को घेरना शुरू किया। हुमायुं ने कमंद फेंकी, पर निशाना चूक गया। हिरण शाहज़ादी के सामने से भागा। क़मरख़ान ने एक के बाद एक तीन बार कमंद फेंकी, पर हिरण को न पकड़ पायी। उसे अपनी दासियों के सामने बड़ी शरमिन्दगी महसूस हुई और दुःख भी हुआ। इस लिए उसने हिरण के पीछे घोड़ा दौड़ाया।

हिरण तीर की तरह भागा जा रहा था।

शाहज़ादी का घोड़ा भी हवा से बातें कर रहा था, पर वह हिरण के पीछे ही दौड़ता रहा। अंत में, हिरण और घोड़ा दोनों ही थक गये। हिरण हाँफता हुआ एक गुफ़ा में घुस गया।

शाहज़ादी खुश हुई, उसने सोचा, "अब इसे ज़रूर पकड़ लूँगी।" वह भी गुफ़ा में घुसी, पर गुफ़ा का एक और रास्ता भी था और हिरण उसमें से निकलकर भाग गया।

क़मरख़ान ने फिर घोड़ा हिरण के पीछे दौड़ाया। वह घोड़ा दौड़ाती रही, दौड़ाती रही और उस पहाड़ के पास आ पहुँची, जहाँ ज़ियाद बातिर घोड़े चरा रहा था।

ज़ियाद बातिर ने जब देखा कि कोई घुड़सवार हिरण का पीछा कर रहा है, तो उसने

निशाना लगाकर गुलेल से पत्थर मारा। पत्थर निशाने पर लगा और हिरण का एक सींग टूट गया। हिरण ज़मीन पर गिर पड़ा।

क़मरख़ान आग-बबूला हो गयी और तलवार निकालकर बोली:

"ऐ, गुस्ताख़ चरवाहे! अगर मैं हिरण को मारना चाहती, तो मैंने उसे बहुत पहले ही मार दिया होता। मैं उसे ज़िंदा पकड़ना चाहती थी। दूसरे के शिकार पर निशाना लगाने की तेरी मजाल कैसे हुई?"

अचानक चट्टान के पीछे से एक बहुत बड़ा शेर निकलकर उस पर झपटा।

शाहज़ादी का घोड़ा डरकर पीछे भागा। क़मरख़ान घोड़े से गिर पड़ी और अपनी ही तल-वार से उसका हाथ घायल हो गया।

ज़ियाद बातिर ने शेर को देखते ही गुलेल में पत्थर लगाकर निशाना साधा।

जैसे ही शेर ने शाहज़ादी पर छलाँग लगानी चाही, वैसे ही पत्थर उसके सिर में लगा। शेर वहीं ढेर हो गया।

ज़ियाद बातिर दौड़कर शाहज़ादी के पास पहुँचा, उसने देखा एक नौजवान बेहोश पड़ा है और उसके चेहरे पर नक़ाब है।

ज़ियाद बातिर ने तुरंत अपनी क़मीज़ उतारी और एक आस्तीन फाड़कर क़मरख़ान की मरहम-पट्टी की।

"बेचारे नौजवान की जान बचानी चाहिए," उसने सोचा, "अगर यह बेकार ही मर गया, तो बहुत बुरा लगेगा।"

ज़ियाद बातिर ने पानी लाकर घायल के चेहरे पर उसके छींटे दिये, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। "नक़ाब हटाना चाहिए," ज़ियाद बातिर ने सोचा, "जिससे यह थोड़ा बहुत पानी पी सके।"

उसने नौजवान का नक़ाब हटाया, तो काले-काले घुंघराले बाल बिखर गये और ज़ियाद बातिर ने देखा कि सामने उसकी प्यारी क़मरख़ान बेहोश पड़ी है।

इस अप्रत्याशित बात और दुःख के मारे ज़ियाद बातिर बेहोश होते-होते बचा।

"मेरी प्यारी, आंखें खोलो, मुझे मत तड़पाओ। तुम मुझे मार डालना चाहती थीं, मार डालो। पर ऐसे बेजान मत पड़ी रहो, आँखें खोलो," ज़ियाद बातिर मन-ही-मन यह कहता हुआ माफ़ी माँगता रहा।

थोड़ी देर बाद लड़की को होश आने लगा। उसने आंखें खोलकर देखा – चरवाहे की आंखों से आँसू बह रहे हैं, ध्यान से देखा, तो अपने प्यारे ज़ियाद बातिर को पहचान गयी और फिर बेहोश हो गयी।

एक-एक करके दासियाँ वहाँ पहुँचने लगीं। उन्होंने देखा एक शेर मरा पड़ा है, शाहज़ादी बेहोश पड़ी है और कोई चरवाहा उसके ऊपर झुका हुआ उसके चेहरे पर पानी के छींटे दे रहा है।

लड़कियाँ जल्दी से घोड़ों से उतरीं। हुमायुं शाहज़ादी का सिर अपनी गोदी में रखकर

रोने लगी, उसे होश में लाने की कोशिश करने लगी और घाव पर दवाई लगाने लगी। क़मर-ख़ान को होश आया।

लड़कियाँ फ़ौरन शाही महल लौट जाना चाहती थीं, पर क़मरख़ान तैयार नहीं हुई:

"जब तक मेरा घाव ठीक नहीं हो जाता, मैं यहाँ से कहीं नहीं जाऊँगी।"

वहाँ एक चश्मा था और चश्मे के पास दो छायादार पेड़ थे।

दासियों ने शाहज़ादी को पेड़ों के नीचे लिटा दिया। शाहज़ादी सोचने लगी, "ज़ियाद बातिर ने मुझे पहचाना या नहीं?"

उसने कटाक्ष भरी आवाज़ में पूछा:

"आप कब से यहाँ चरवाहे का काम कर रहे हैं?"

ज़ियाद बातिर सोचने लगा, "मुझे मार डालना चाहती है, चाहे मार दे, कुछ भी हो, मैं सच ही कहूँगा," और बोला:

"उस समय से जब से आपके पिता ने मुझे देशनिकाला दिया था।"

शाहज़ादी ज़ियाद बातिर से माफ़ी माँगने लगी:

"ग़लती मेरी थी। मैं अपने पिता को रोक नहीं सकी।"

ज़ियाद बातिर बहुत ख़ुश हुआ और अपने धर्मपिता को बुलाने गया।

"हमें अपने प्यारे मेहमानों की अच्छी ख़ातिरदारी करनी चाहिए," बूढ़े चरवाहे ने कहा।

वह गाँव से एक बड़ा देग लेकर आया। पाँच भेड़ें काटकर उसने पुलाव पकाया, सारी लड़कियों को खिलाया और उनको क़िमिज़ भी पिलाया।

इस तरह पन्द्रह दिन बीत गये। शाहज़ादी का घाव ठीक होने लगा।

अब शाहज़ादी के पिता का हाल सुनिये।

क़मरख़ान को शिकार पर गये एक महीना बीत चुका था, पर उसकी कोई ख़बर नहीं थी।

बादशाह ने एक बहादुर को बुलाया और बोला:

"शाहज़ादी की एक महीने से कोई ख़बर नहीं मिली है, तुम जाकर पता लगाओ, वह कहाँ है। उसे ढूँढ़कर महल में लाओ।"

यह बहादुर काफ़ी पहले से शाहज़ादी से शादी करना चाहता था इसी लिए वह ईमानदारी से बादशाह की सेवा कर रहा था। ऐसा हुक्म मिलने पर वह बड़ा ख़ुश हुआ, और फ़ौरन यात्रा के लिए तैयार हो गया। उसने अपने साथ कुछ सैनिक लिये, शराब ली और सफ़र पर चल पड़ा।

पाँच दिनों की यात्रा के बाद उसने शाहज़ादी को ढूँढ़ लिया और देखा – वह पेड़ के नीचे बैठी ज़ियाद बातिर के साथ बातें कर रही है। यह देखकर बहादुर को बड़ा दु:ख हुआ।

पर अपशब्द कहकर शाहज़ादी को नाराज़ करने की उसे हिम्मत नहीं हुई। वह घोड़े से उतरा और अभिवादन करके बोला:

"आपके पिता बहुत परेशान हो रहे हैं, उन्होंने मुझे आपको ढूँढ़ने के लिए भेजा है।"

उसे खाना परोसा गया। बहादुर ने शराब की सुराही निकाली। लड़कियों ने शराब ढाली।

शराब के दो प्याले पीते ही बहादुर को नशा चढ़ गया, उसकी आंखें लाल हो गयीं, नसों में खून उबलने लगा। वह ज़ियाद बातिर को चिढ़ाने लगा, उसकी हर बात में मीन-मेख निकालने लगा।

"तुम मेरी बात क्यों काट रहे हो?" झगड़ालू बहादुर कहने लगा और उसने उठकर ज़ियाद बातिर के एक घूंसा मारा। ज़ियाद बातिर को बड़ा बुरा लगा, उसने ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

बहादुर के मुँह से झाग निकलने लगे और वह वहीं ढेर हो गया।

सैनिक ज़ियाद बातिर पर टूट पड़े और जमकर लड़ाई शुरू हो गयी।

ज़ियाद बातिर ने सबको मार भगाया और शाहज़ादी से कहा:

"अब मेरे लिए यहाँ रहना ख़तरे से खाली न होगा। चलो किसी दूसरे देश भाग चलें।"

शहज़ादी ने दासियों को बादशाह के पास लौट जाने का हुक्म दिया और कहा:

"अगर पिता जी मेरे बारे में पूछें, तो कह देना कि क़मरख़ान दूसरे देश चली गयी।"

सारी लड़कियाँ रोती हुई शहर वापस आयीं।

उधर ज़ियाद बातिर और शाहज़ादी चरवाहे धर्मपिता से विदा लेकर घोड़ों पर सवार होकर सफ़र पर चल पड़े। वे रास्ते में पड़ाव डालकर शिकार करते और फिर आगे बढ़ते।

इस तरह कुछ दिनों बाद वे हिरात नाम के शहर पहुँचे। वहाँ बादशाह हुसैन मिर्ज़ा राज करता था।

वे एक सराय में ठहरे। ज़ियाद बातिर एक लोहारख़ाने में काम करने लगा। कुछ दिनों बाद उन दोनों ने शादी कर ली।

एक बार एक अमीर आदमी ज़ियाद बातिर के पास आया और बोला:

"आप लोगों को सराय में रहने की क्या जरूरत है, मैंने आपके लिए अपने मोहल्ले में एक मकान ढूँढ़ लिया है।"

ज़ियाद बातिर को मकान पसंद आ गया। अपनी तनख़्वाह में से बचे पैसे ज़ियाद बातिर ने उस आदमी को दिये और अपनी पत्नी के साथ नये घर में रहने लगा।

उस अमीर का एक नौकर डाकू था। अमीर ने उसको बुलाया और बोला:

"आज शाम को कहीं मत जाना, मुझे तुमसे काम है।"

और आधी रात को वह डाकू को लेकर ज़ियाद बातिर के घर आया। अमीर ने ज़ियाद बातिर के सो जाने के बाद उसकी हत्या करके क़मरख़ान को उड़ा ले जाने की योजना बनायी।

पर क़मरख़ान ने क़दमों की आहट सुनकर ज़ियाद बातिर को जगा दिया। ज़ियाद बातिर ने अपने घर के सामने दो आदमियों को खड़े देखा।

वह अपने तकिये के नीचे से खंजर निकालकर डाकू से भिड़ गया। और क़मरख़ान ने लपककर अमीर के मुंह पर ऐसा घूंसा मारा कि उसका गाल ही सूज गया। ज़ियाद बातिर ने नौकर को मार डाला, उधर शाहज़ादी अमीर को जमीन पर गिराकर उसका गला घोंटने लगी।

अमीर प्राणों की भीख माँगने लगा :

"मुझे छोड़ दो, रहम करो!"

शाहज़ादी ने सोचा, "इसे मार डालना चाहिए," पर ज़ियाद बातिर बोला :

"ठीक है, छोड़ दो इस नीच को। भाग यहां से और फिर कभी ऐसी हरकत मत करना।"

अमीर सिर पर पाँव रखकर भागा। घर पहुँचते ही उसके दिमाग़ में ख्याल आया : मैं क्यों न बादशाह के पास जाकर शिकायत करूँ? अपने सूजे हुए गाल पर पट्टी बाँधकर वह महल में पहुँचा।

बादशाह हुसैन मिर्ज़ा दरबारियों से घिरा हुआ अपने तख़्त पर बैठा था।

अमीर ने आकर शिकायत की :

"शहंशाह, कुछ दिन हुए नीच खानदान का एक आदमी एक लड़की लेकर अपने शहर में आया है। मैंने उसे ईमानदार आदमी समझकर उसके लिए एक मकान का बंदोबस्त कर दिया। पर उसने मुझे बुरी तरह पीटा और घायल कर दिया... हुज़ूर, आप उस नीच और आवारा आदमी को सज़ा दीजिये, उसे शहर से निकाल दीजिये।"

हुसैन मिर्ज़ा ग़ुस्सा होकर बोला :

"ऐसे आदमी को शहर से निकाल देना कम होगा, उसे मौत की सजा मिलनी चाहिए।" और उसने अपने सैनिकों को ज़ियाद बातिर को पकड़कर लाने भेजा।

सैनिकों ने जाकर ज़ियाद बातिर व क़मरखान को पकड़ लिया और उनके हाथ-पैर बाँधकर महल में घसीट लाये। क़मरखान को देखते ही हुसैन मिर्ज़ा दुनिया में सब कुछ भूल गया और ज़ियाद बातिर से बोला :

"तुम इतनी खूबसूरत लड़की को कहाँ से ले आये? तुम जरूर इसे कहीं से उड़ाकर लाये हो।"

"आप उसी से पूछिये," ज़ियाद बातिर ने जवाब दिया।

"इस खूबसूरत लड़की को यहीं छोड़ दो और तुम यहाँ से चले जाओ," उसने ज़ियाद बातिर से कहा।

पर ज़ियाद बातिर जाने के लिए तैयार नहीं हुआ।

बादशाह आग-बबूला हो गया। उसने जल्लादों को बुलाया और ज़ियाद बातिर को मौत की सज़ा देने का हुक्म दिया।

जल्लाद ज़ियाद बातिर को मौत की सजा देने ले गये। रास्ते में उसने कंधों को झटका देकर रस्सी तोड़ दी और सारे सैनिकों को मारकर अपने मालिक लोहार के पास भाग गया।

ज़ियाद बातिर ने उसे सारा क़िस्सा सुनाया। लोहार ने कहा :

"यहाँ से थोड़ी दूर एक गुफ़ा है, तुम उसमें छिप जाओ और मैं शहर जाकर पता लगाता हूँ, लोग क्या बातें कर रहे हैं। कल मैं तुम्हारे पास आकर तुम्हें सब कुछ बताऊँगा।"

अब शाहज़ादी का हाल सुनिये।

पहले बादशाह उसके साथ ढंग से बातें करता रहा, उसे सब्ज़ बाग़ दिखलाता रहा :

"मैं तुम्हें सोने में पीली कर दूँगा। तुम्हारे पास सारी शाहज़ादियों से ज़्यादा धन-दौलत होगी। तुम मेरी चौथी बीवी बनकर मेरे महल में रहो।"

पर क़मरख़ान टस से मस न हुई।

बादशाह और ज़्यादा गुस्सा हुआ। उसके बाग़ में ज़मीन के नीचे एक चोर-जेल थी, जिसके बारे में किसी को पता नहीं था।

बादशाह ने क़मरख़ान को उस जेल में क़ैद कर दिया। जब बादशाह ने सुना कि ज़ियाद बातिर भाग गया है, तो उसने शहर के सारे दरवाज़े बन्द कर देने और उसको ढूँढ़कर पकड़ लाने का हुक्म दिया। ज़ियाद बातिर को कोने-कोने में खोजा गया, पर वह कहीं नहीं मिला।

शाम होते ही लोहार गुफ़ा में आया, जहाँ ज़ियाद बातिर छिपा था और वे सलाह करने लगे कि आगे क्या किया जाये। लोहार थोड़ी देर सोचकर बोला:

"बादशाह का अलीशेर नवाई नाम का एक वज़ीर है। तुम्हें उसके पास जाकर अपनी मुसीबतों के बारे में बताना चाहिए। वह न्यायप्रिय आदमी है, मुसीबत में तुम्हारी मदद करेगा।"

"अच्छा," ज़ियाद बातिर बोला, "ऐसा ही करूँगा।"

आधी रात में वह गुफ़ा से निकलकर अलीशेर नवाई के घर पहुँचा, दरवाज़ा खटखटाया और बोला:

"मैं नवाई का यश सुनकर बहुत दूर से उनसे सलाह माँगने आया हूँ। मुझे उनसे मिलने दीजिये।"

हमेशा की तरह अलीशेर अभी तक सोये नहीं थे। वह काफ़ी रात गये तक और कभी-कभी तो सुबह तक कविताएं लिखते रहते थे। उनके नौकर ने उनके पास आकर कहा:

"कोई नौजवान काफ़ी दूर से आपसे सलाह माँगने आया है।"

"उसे अंदर आने दो," अलीशेर नवाई बोले।

ज़ियाद बातिर ने अंदर आकर सलाम किया और बैठकर अपनी सारी मुसीबतें अलीशेर नवाई को सुनायीं।

नवाई ने उसे तसल्ली दिलायी:

"तुम घबराओ मत। बादशाह क़मरख़ान को नहीं मारेगा। कल मैं उसके बारे में पता लगाकर तुम्हें बताऊँगा।"

दूसरे दिन अलीशेर नवाई शाही महल में गये और उसके बाग़ में घुसे। उन्हें तो पता ही था कि वहाँ ज़मीन के नीचे एक जेल है।

बाग़ में घूमते-घूमते उन्हें माली मिल गया। माली ने अलीशेर नवाई को झुककर सलाम किया और उन्हें एक गुलदस्ता भेंट किया। माली बाग़ और जेल दोनों की देखभाल करता था। पर इस बारे में किसी को मालूम नहीं था।

अलीशेर नवाई ने माली से पूछा:

"तहख़ाने में जो ख़ूबसूरत लड़की क़ैद है, उसके बारे में तुम्हें कुछ मालूम है?"

"मालूम है, हुजूर," माली बोला। "खुद बादशाह ने उसे तहखाने में डालने का हुक्म दिया है।"

अलीशेर नवाई ने घर पहुँचकर ज़ियाद बातिर को बताया कि क़मरखान सही-सलामत है। इसके बाद अलीशेर नवाई ने अपने आदमियों को बादशाह के बाग़ तक एक सुरंग खोदने का हुक्म दिया।

तीन दिन में सुरंग खोदकर क़मरखान को जेल में से निकाल लिया गया। उसे अलीशेर नवाई के घर ले आया गया, जहाँ उसके रहने का इंतज़ाम पहले से ही कर दिया गया था।

नवाई ज़ियाद बातिर से बोले:

"मेरे घर में कोई भी तुम्हारा बाल बांका नहीं कर सकता। तुम लोग आराम से रहो।"

ज़ियाद बातिर और क़मरखान नवाई के घर में तीन साल रहे।

क़मरखान ने एक बेटे को जन्म दिया। वह अब पैरों भी चलने लगा था।

एक बार अलीशेर नवाई बाग़ में टहल रहे थे, तो उन्होंने वहाँ एक लड़के को पानी में बैठे छपछप करते देखा। उन्होंने उसे गोदी में उठाकर कुछ फूल दिये। दरवाज़े के पास पहुँचते ही उन्होंने ज़ियाद बातिर को ये शब्द कहते सुना:

"मेरी प्यारी क़मरखान, मत रोओ, मैं जानता हूँ, तुम्हें अपनी माँ की याद सता रही है... मत रोओ... चुप हो जाओ... अपने देश को याद करके मेरा दिल भी तड़पता है..."

अलीशेर नवाई यह सब सुनकर अंदर आये। क़मरखान आंसू पोंछकर खड़ी हो गयी और उसने झुककर अलीशेर नवाई को सलाम किया। नवाई बोले:

"तुम दुःखी मत होओ। बस एक महीना और सबर करो, फिर मैं खुद तुम दोनों को लेकर तुम्हारे देश जाऊँगा और तुम्हारे पिता को सब कुछ समझा दूँगा।"

एक महीना गुज़र गया। अलीशेर नवाई ने बादशाह से दूसरे देश के दौरे पर जाने की इजाज़त माँगी और चार वफ़ादार नौजवानों को बुलाकर सफ़र की तैयारी शुरू कर दी। उन चारों नौजवानों ने सफ़र के एक हफ़्ता पहले क़मरखान और ज़ियाद बातिर को चुपचाप शहर से निकालकर पहाड़ों में छिपा दिया। अलीशेर नवाई अपने सफ़र का सामान जमा करके चल दिये। रास्ते में उन्होंने पहाड़ों में जाकर क़मरखान और ज़ियाद बातिर को अपने साथ ले लिया।

वे काफ़ी दिन चलते रहे और लंबे सफ़र के बाद क़मरखान के देश पहुँचे। बादशाह को जब अलीशेर नवाई के आने की खबर मिली तो उसने अपने सैनिकों को उनकी अगवानी करने भेजा।

अलीशेर नवाई के आने के कुछ दिन बाद बादशाह ने उन्हें अपने महल में बुलाया।

"आपका स्वागत है," बादशाह बोला, "कहिये कैसे आना हुआ?"

अलीशेर नवाई ने जवाब दिया:

"मैं आपके पास दो क़सूरवार लोगों के लिए माफ़ी माँगने आया हूँ। अगर आप उन्हें माफ़ कर देंगे, तो मैं कुछ दिन आपके यहाँ ठहरूंगा और माफ़ नहीं करेंगे, तो फ़ौरन चला जाऊँगा।"

बादशाह बोला :

"ऐ महान नवाई, अगर उन क़सूरवारों ने मेरे पिता की हत्या भी की होती, तो भी मैं उन्हें माफ़ कर देता, इस लिए कि आप उनके लिए माफ़ी माँग रहे हैं। मुझे बताइये, वे कौन हैं ?"

तब अलीशेर नवाई ने क़मरख़ान और ज़ियाद बातिर को लाने का हुक्म दिया। क़मर-ख़ान आयी और पिता के सीने से लिपट गयी। बादशाह ख़ुशी के मारे बेहोश हो गया। वह बहुत दिनों से सोच रहा था कि उसकी बेटी मर चुकी है। बादशाह को होश में लाया गया, तो वह रोते-रोते पूछने लगा :

"मेरी बेटी, तुम कहाँ चली गयी थीं ?"

उसी समय ज़ियाद बातिर भी आ पहुँचा। बादशाह उसे मौत की सज़ा देना चाहता था, पर अलीशेर नवाई ने उसका वायदा याद दिलाया। बादशाह को एक मामूली चरवाहे ज़ियाद बातिर को अपना दामाद मानने को तैयार होना पड़ा।

अलीशेर नवाई कई दिनों तक बादशाह के मेहमान रहे और फिर अपने घर हिरात लौट गये।

ज़ियाद बातिर और क़मरख़ान ज़िन्दगी भर उनका एहसान नहीं भूले।

ज़ियाद बातिर ने सबसे पहला काम उस बूढ़े चरवाहे को बुलवाने का किया, जिसके साथ वह पहाड़ों में घोड़े चराता रहा था और उसे अपने छायादार बाग़ में शरण दी।

ज़ियाद बातिर जीवन भर सीधे-सादे लोगों को प्यार करता रहा और ग़रीबों, भूखे-नंगों की मदद करता रहा।

गुलो

कहते हैं कि बहुत दिन हुए हिरात और समरक़ंद में हुसैन बायक़रा नाम का बादशाह राज करता था और विद्वान कवि अलीशेर नवाई उसके बड़े वज़ीर थे।

यह भी कहा जाता है कि बचपन से ही बादशाह और वज़ीर में बड़ी गहरी दोस्ती थी। हुसैन अलीशेर से बात किये या उसे देखे बिना एक दिन भी नहीं रह पाता था। हुकूमत का कोई भी काम हुसैन विद्वान अलीशेर की सलाह लिये बग़ैर नहीं करता था।

एक बार जब बादशाह शिकार पर जाने लगा, तो अलीशेर ने उसके साथ न जाने का बहाना बनाया और घोड़े पर सवार होकर अकेले ही शहर के एक दूर के मुहल्ले की ओर

चल दिये। बड़े वज़ीर के इस रहस्यमय अकेलेपन के दो कारण थे: विद्वान अलीशेर को शिकार जैसा क्रूर और खूनी मनोरंजन पसन्द नहीं था, दूसरे, एक अनजानी सुन्दर लड़की की आंखों की खूबसूरती ने उन्हें मोह लिया था। चालीस दिन हुए मुहब्बत का तीर वज़ीर के दिल में लग चुका था।

वसंत के एक दिन एक शांत गली में से गुज़रते हुए अलीशेर नवाई ने कुछ सरसराहट-सी सुनी और अनायास ऊपर की ओर देखा। उनकी आश्चर्यचकित आंखों को एक इतना खूबसूरत चेहरा नज़र आया, जिसकी तुलना में चाँदनी भी उतनी ही फीकी लगने लगी, जितना कि सोने की चमकती मोहर के पास पड़ा मोरचा खाया ताँबे का बटन।

पर आश्चर्यचकित हुआ अलीशेर इस अनिंद्य सुंदरता का आनंद केवल क्षण भर के लिए ही ले पाये। वह खूबसूरत चेहरा इतनी जल्दी आंखों से ओझल हो गया, जैसे वह वहाँ कभी था ही नहीं।

अलीशेर नवाई आश्चर्यचकित और परेशान होकर वहाँ से चले गये, पर उन्होंने दूसरे दिन उसी गली में से उसी समय इस तरह निकलने का फ़ैसला किया, जैसे वह संयोगवश वहाँ से गुज़र रहे हों।

उस दिन से अलीशेर अपनी नींद और दिल का चैन खो बैठे। वह हर रोज़ उस मुहल्ले में जाते, जहाँ वह आकर्षक आंखोंवाली लड़की रहती थी, पर उसके बाद वह उन्हें दुबारा दिखाई नहीं दी।

फिर भी अलीशेर ने अपने वफ़ादार नौकरों से पता लगवा लिया कि वह सुंदरी एक मामूली जुलाहा अबू सलीह की बेटी है और उसका नाम गुली है, जिसमें गुल जैसी सुगंध है।

काफ़ी देर सोच-विचार करने के बाद अंत में अलीशेर ने लड़की के पिता से मिलकर बात करने का फ़ैसला किया।

अबू सलीह के घर पहुँचकर अलीशेर ने उसका दरवाज़ा खटखटाया।

"कौन है?"

"एक मुसाफ़िर।"

"मुसाफ़िर, तुम्हें क्या चाहिए?"

"क्या आदरणीय अबू सलीह घर पर हैं?"

दरवाज़ा खुला और स्वयं अबू सलीह बाहर आया।

बड़े वज़ीर को अपने सामने खड़ा देखकर बेचारा जुलाहा घबरा गया और काँपने लगा, क्योंकि उस ज़माने में शासकों के दर्शन से केवल दुःख और कष्ट ही मिलते थे।

पर अलीशेर ने नम्रतापूर्वक सिर झुकाया और अंदर आने की इजाज़त माँगी।

हक्का-बक्का हुआ और अभी तक काँपता हुआ अबू सलीह वज़ीर को अपने घर के अंदर लेकर आया और उसे सम्मानपूर्वक बिठा दिया।

अलीशेर ने हिचकिचाहट के कारण और अबू सलीह ने डर और घबराहट के कारण केवल एक दूसरे का अभिवादन किया और काफ़ी देर तक चुप बैठे रहे।

अंत में जब अलीशेर ने देखा कि बात ज़रा भी आगे नहीं बढ़ी है, तो वह उठ खड़े हुए और आदरपूर्वक सिर झुकाकर बोले:

"आदरणीय अबू सलीह, मुझ तुच्छ को आपका दामाद बनने की आज्ञा दीजिये।"

अचंभे में पड़े अबू सलीह की आवाज़ ही बंद हो गयी। वह कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था कि उस जैसे मामूली जुलाहे की लड़की के साथ, चाहे वह कितनी ही सुंदर क्यों न हो, शाही तख़्त के आधार और रक्षक स्वयं वज़ीर अलीशेर नवाई शादी करना चाहेंगे।

वह खुशी से फूला न समाया और सिर झुकाकर अलीशेर से बोला:

"सरकार, हमारे परिवार का सब कुछ आपके हाथों में है। हमारे लिए यह बड़े सम्मान की बात है कि आप एक तुच्छ जुलाहे की बेटी से शादी करना चाहते हैं।"

"पर लड़की से पूछ लीजिये, उसकी क्या इच्छा है?"

"पिता की आज्ञा का पालन करना बेटी का कर्त्तव्य होता है!" अबू सलीह कह उठा।

तब अलीशेर सिर झुकाकर बोले:

"मैं शरीअत के सारे क़ायदे-क़ानून जानता हूँ, पर उनके अलावा दिल के अपने भी क़ायदे-क़ानून होते हैं। प्यार में दबाव डालना मौत से भी बुरा होता है। अगर आपकी बेटी 'नहीं' कहे, तो मैं चुपचाप सिर झुकाकर यहाँ से चला जाऊँगा।"

अबू सलीह जनानख़ाने में गया और बेटी से बोला:

"बेटी, तेरी क़िस्मत खुल गयी। तू अब महल में रहेगी। खुद वज़ीर अलीशेर तुझसे शादी करना चाहते हैं। मैंने 'हाँ' कह दी है, पर या अल्लाह, वह बड़े अजीब आदमी हैं, वह तेरी रज़ामंदी भी चाहते हैं! वह अपना इरादा बदल दें, इससे पहले तू अपनी रज़ामंदी दे दे। उनके आंख के इशारे की देर है और हमारे घर, हम सब लोगों और नौकरों का नामोनिशान भी बाक़ी न बचेगा।"

गुली मुस्कराकर बोली: "अपने माँ-बाप का कहना मानना मेरा कर्त्तव्य है। आप वज़ीर से कह दीजिये, मेरी बेटी आपकी लौंडी है!"

बूढ़ा खुशी से फूला न समाता अलीशेर के पास दौड़ा आया, बोला:

"मैंने आपसे कहा था न कि गुली बहुत समझदार है। वह राज़ी है!"

अलीशेर ने उसी दिन अगुओं को अबू सलीह के यहाँ भेजा।

अलीशेर नवाई निस्सन्देह एक असाधारण व्यक्ति थे। उन्होंने इस बात का स्वयं यक़ीन कर लेना चाहा कि लड़की क्या चाहती है और इस लिए रोज़ाना शाम को अपने भावी ससुर के घर आने लगे।

अलीशेर और गुली बग़ीचे में घूमते और बिना किसी रुकावट के अपने प्यार के बारे में बातें करते। अलीशेर गुली को समर्पित और प्रेम की उच्च भावनाओं से ओत-प्रोत अपनी नई ग़ज़लें उसे सुनाते और गुली दोम्बा* बजाते हुए अपनी कोयल-सी कूकती सुरीली आवाज़ में

* दोम्बा – एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

गीत गाती। लगता था, दोनों युवा प्रेमियों के आनंद की कोई सीमा न थी।

शादी का दिन नज़दीक आ गया था। अलीशेर ने अपनी मंगेतर के पिता को दस हज़ार अशरफ़ियाँ क़लीन* के तौर पर दीं। दोनों प्रेमियों की सगाई हो गयी।

एक दिन जब अलीशेर अपनी मंगेतर के घर में थे, बादशाह हुसैन ने अपने दरबारियों से पूछा:

"मुझे अपना दोस्त वज़ीर अलीशेर नज़र नहीं आ रहा है।"

तब छोटा वज़ीर मजेद्दीन तख़्त के नज़दीक आकर बोला:

"हुज़ूर, आपके हुक्म के मुताबिक पिछले कई दिनों से हमारे जासूस आपके वज़ीर अलीशेर का छाया की तरह पीछा कर रहे हैं, जिससे कि आपको उसकी नीयत और हरकतों का पता रहे।"

"हमारे जासूसों ने क्या पता लगाया?"

"हुज़ूरे आली, आपकी हुकूमत के हर आदमी की नीयत और मंशा शीशे से ज़्यादा साफ़ और नेक होनी चाहिए। अलीशेर आपको धोखा दे रहा है।"

"क्या! उसकी हिम्मत कैसे हुई!"

"हुज़ूर, अलीशेर आपसे तो कहता है कि वह शाम को रोज़ाना नयी ग़ज़लें लिखता है। पर हक़ीक़त यह है कि वह अपना वक़्त एक बेहद ख़ूबसूरत लड़की के साथ गुज़ारता है। सरकार, उसने एक असली हीरा आपसे छिपाकर रखा हुआ है, जो बादशाह के हरम में चार चांद लगा सकता है। उस लड़की का नाम गुली है। वह जुलाहे अबू सलीह की बेटी है।"

जब अलीशेर नवाई वहाँ पहुँचे, तो बादशाह हुसैन बोला:

"हमने शादी करने का फ़ैसला किया है!"

इस पर अलीशेर ने पूछा:

"क्या आपकी मंगेतर ख़ूबसूरत है? क्या वह अच्छे ख़ानदान से है?"

"वह ख़ूबसूरत है और उसका बाप एक इज़्ज़तदार आदमी है।"

"मुबारक हो, हुज़ूर।"

हुसैन बड़े कपटी ढंग से हँसकर तख़्त के पास खड़े अपने दरबारियों से बोला:

"आप लोगों ने सुना, हमारे बड़े वज़ीर ने हमारी शादी के इरादे को ठीक बताया है। हम अपने दोस्त बड़े वज़ीर अलीशेर को निकाह कराने की ज़िम्मेदारी सौंपते हैं। हमारे दोस्त, जल्दी-से-जल्दी तोहफ़े लेकर लड़की के घर जाओ।"

अलीशेर को किसी तरह का शक नहीं हुआ और वह सिर झुकाकर बोले:

"बादशाह का निकाह तय कराना मेरे लिए बड़ी इज़्ज़त की बात है। पर मुझे कहाँ जाना है?"

"जुलाहे अबू सलीह के घर।"

---

* क़लीन – वर पक्ष की ओर से वधू के पिता को दी जानेवाली राशि।

अलीशेर के चेहरे का रंग उड़ गया और वह सिर झुकाकर बोले :

"मैं सरकार का हुक्म अदा नहीं कर सकता।"

बादशाह हुसैन गुस्से से आग-बबूला हो उठा।

"यानी, यह सच है कि तुम अपनी हरकतें मुझसे छिपा रहे थे। या तो हमारी हुक्म-उदूली की सज़ा भुगतने को तैयार रहो, या फ़िर उस ख़ूबसूरत लड़की के साथ हमारा निकाह तय कराओ।"

पर अलीशेर अपने निश्चय पर डटे रहे। वह फिर सिर झुकाकर बोले :

"एक दूल्हे के लिए अपनी ही मंगेतर का निकाह दूसरे के साथ तय कराना नामुमकिन है, चाहे वह दूसरा – ख़ुद बादशाह ही क्यों न हो।"

यह कहकर वह वहाँ से चले गये।

बादशाह हुसैन ने फ़ौरन अलीशेर को समरक़ंद से निकाल देने का फ़रमान जारी कर दिया और निकाह की ज़िम्मेदारी मजेद्दीन को सौंप दी।

बुरी ख़बर लेकर अलीशेर घोड़ा दौड़ाता हुआ जुलाहे अबू सलीह के घर पहुँचा। उसने घोड़ा इतनी तेज़ी से दौड़ाया कि घोड़े के मुंह से झाग निकलने लगे।

बगीचे में महकते हुए गुलाब के फूलों के बीच अलीशेर रोते हुए अपनी गुली को प्यार की बरबादी की ख़बर सुनायी।

"इस दुनिया में लोगों को जुल्म और सितम के कारण कभी चैन नहीं मिल सकता," अलीशेर अपनी बेबसी पर दुःखी होकर बोले।

"मैं चाहे मर जाऊँ पर हुसैन की बीवी कभी नहीं बनूंगी," गुली बोली।

जिस समय वे ये बातें कर रहे थे, अबू सलीह के घर मजेद्दीन बादशाह के तोहफ़े लेकर आया।

निकाह तय करने के लिए आये हुए प्रतिष्ठित आदमी को सम्मानपूर्वक बैठा छोड़कर अबू सलीह बगीचे में आया और अलीशेर की ओर देखे बिना बोला :

"वज़ीर मेरा दामाद हो सकता था, पर क़िस्मत की मर्ज़ी यही कि मैं ख़ुद बादशाह का ससुर बनूं।"

इस पर गुली ने थोड़ी देर पहले अपने प्यारे अलीशेर को कहे हुए शब्द दोहरा दिये :

"मैं चाहे मर जाऊँ पर हुसैन की बीवी कभी नहीं बनूंगी।"

"हाय, हाय!" अबू सलीह कह उठा, "बादशाह तुम्हारी इन बातों से नाराज़ हो उठेगा। वह मेरे घर को जलाकर ख़ाक कर देगा और मेरा नामोनिशान ही मिट जायेगा।"

अबू सलीह रोता रहा, आहें भरता रहा, अपने और अपने घरवालों को बरबादी से बचाने के लिए बेटी को मनाता रहा, पर गुली अपने निश्चय पर डटी रही।

अबू सलीह जाकर मजेद्दीन के पैरों में गिरा और कहने लगा :

"इसकी अक़्ल पर पत्थर पड़ गये हैं। उसने 'इनकार' कर दिया है, पर मैं आपसे इल्तिजा करता हूं, आप बादशाह को कुछ मत बताइये। थोड़ी देर में वह समझ जायेगी कि वज़ीर

की बीवी बनने से तो बादशाह की लौंडी बनना ज़्यादा अच्छा है।"

मजेद्दीन यह कहकर चला गया कि वह शाम की नमाज़ के बाद जवाब लेने के लिए दुबारा आयेगा। जाने के पहले उसने ऊँची आवाज़ में कहा:

"मैं क़सम खाता हूँ अगर लड़की अपनी मर्ज़ी से न मानी, तो मैं उसकी चोटी पकड़कर उसे घसीटता हुआ महल में ले जाऊँगा।"

गुली अपने कमरे में जाकर वहाँ से मुसल्लस* के दो प्याले भरकर ले आयी। उनमें से एक प्याला अपने प्रियतम को देकर उसने कहा:

"जुदाई मौत से भी बुरी होती है। शराब के इस प्याले में मुझे बादशाह के हाथों का खिलौना बनने की बदक़िस्मती से बचने का रास्ता नज़र आ गया है।"

अलीशेर गुली को रोक पाते, इसके पहले ही उसने शराब का अपना पूरा प्याला पी डाला।

"क्या इसमें ज़हर था?" अलीशेर ने पूछा।

गुली ने मौन होकर स्वीकृति में सिर हिलाया। तब अलीशेर ने भी बिना कुछ कहे अपना प्याला पी डाला।

"मेरी गुली के बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता," वह बोले।

दोनों प्रेमियों के होंठ मिल गये।

शाम की नमाज़ के बाद मजेद्दीन जुलाहे अबू सलीह के घर आया। गुली ने सोचा कहीं निर्दय बादशाह उसके घरवालों को मार डालने और घर मिट्टी में मिला देने की अपनी धमकी पूरी न कर दे, इस लिए उसने अपने पिता से कहा:

"मुझे मंज़ूर है, पर मेरी एक शर्त है – निकाह आज से चालीस दिन के पहले नहीं होना चाहिए।"

बादशाह हुसैन ने शादी की तैयारियां शानदार ढंग से करने का हुक्म दिया और अबू सलीह को सिर से लेकर पैर तक सोने से ढक दिया। अलीशेर को देशनिकाला दिये जाने का हुक्म रद्द कर दिया गया।

शादी की दावत के दौरान अलीशेर नवाई एक मुसाफ़िर के वेष में अपनी प्रियतमा से विदाई लेने हरम में आये।

उन्होंने गुली को बीमार पाया। वह बदन तोड़ देनेवाले बुख़ार के दौरे में तड़प रही थी, पर पहले की तरह सुंदर दिखाई दे रही थी और उसकी आंखों की चमक सितारों की ठंडी जगमगाहट से मुक़ाबला कर रही थी।

"मैं बादशाह की बीवी नहीं बनूंगी," गुली ने कहा, "ज़हर असर कर रहा है और मैं मर रही हूँ।"

"मेरी प्यारी गुली," अलीशेर ने रुंधे कंठ से कहा, "मैंने भी तुम्हारे साथ ज़हर पिया

---

* मुसल्लस – एक प्रकार की अंगूरी शराब।

था, पर मुझ पर उसका कोई असर नहीं हो रहा है और न ही बीमारी का कोई निशान नज़र आ रहा है।"

तब गुली ने कहा:

"जिस दिन से यह दुनिया बनी है, तब से आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि किसी ने प्रियतम को अपने हाथों से ज़हर पिलाया हो। मेरे महबूब, तुम्हारे प्याले में सिर्फ़ शराब ही थी।"

"मैं कितना बदक़िस्मत हूँ," अलीशेर कह उठे, "तुमने क्यों इतनी बेरहमी से काम लिया?"

"प्रियतम, मैंने ऐसा इस लिए किया कि तुम मुझे कभी न भूल पाओ।"

उसी क्षण गुली के कमरे में ग़ुस्से में भरा बादशाह हुसैन घुस आया। हिजड़ों में से किसी ने दावतवाले कक्ष में जाकर उसे अलीशेर के हरम में आने की ख़बर दे दी थी। बादशाह के हाथों में नंगी तलवार थी।

"जिसने भी मेरे हरम की देहरी लांघने की हिम्मत की," हुसैन चिल्लाकर बोला, "वह मरेगा।"

"ज़रा धीरे बोलिये, उसकी नींद मत ख़राब कीजिये," यह कहकर अलीशेर ने गुली की ओर इशारा किया, "हुज़ूर, चलिये, यहाँ से बाहर चलें।"

बादशाह हुसैन ने गुली पर नज़र डाली और देखा कि वह मर चुकी है। तलवार ज़मीन पर फेंककर बादशाह बाहर चला गया।

अलीशेर तलवार उठाकर पासवाले कमरे में आये और बोले:

"अब मेरी इसके अलावा कोई और तमन्ना नहीं रही कि मेरी जिन्दगी का दिया भी फ़रामोशी के इस सैलाब में बुझ जाये। यह रही तलवार, लो मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालो!"

उन्होंने तलवार हुसैन की ओर बढ़ायी।

कहते हैं कि हुसैन को अपने किये पर बड़ा पछतावा हुआ, और उसने अपने वज़ीर अलीशेर का सिर नहीं काटा। यही नहीं, उसने अलीशेर को गले लगाकर हमेशा के लिए दोस्ती की क़सम खायी।

विद्वान अलीशेर सलतनत के बड़े वजीर बने रहे। उनकी सलाह के बग़ैर हुकूमत का कोई भी काम नहीं होता था।

पर यह भी कहा जाता है कि हुसैन मरते दम तक अपने दिल में अलीशेर के प्रति दुश्मनी छिपाये रहा। यह कौन नहीं जानता कि अक्सर आदमी उसी का दुश्मन हो जाता है, जिसका बुरा वह स्वयं करता है। निर्दयी और कायर हुसैन डरता था कि अलीशेर किसी न किसी दिन उससे ज़रूर बदला लेंगे।

बादशाह और वज़ीर के बीच भाईचारे और दोस्ती की भावना का अंत हो चुका था। इसी वजह से अलीशेर को बहुत ज़ुल्म और मुसीबतें सहनी पड़ीं।

विद्वान कवि अलीशेर नवाई मरते दम तक अपनी खूबसूरत गुली को प्यार करते रहे। यही कारण था कि उनकी नज़र फिर किसी और लड़की पर नहीं टिकी, चाहे उसने खूबसूरती में चाँद, सूरज और आसमान के सारे सितारों से मुक़ाबला क्यों न किया हो।

मूर्ख बादशाह

बहुत समय पहले एक ग़रीब आदमी का पुराना घर गिर गया और उसने एक नया घर बनाने का निश्चय किया।

घर बन गया, केवल छत डालनी बाक़ी रह गयी थी, पर उस ग़रीब के पास पैसों की कमी पड़ गयी। उसने कारीगर से सरकंडे की छाजन बिछाकर उसके ऊपर मिट्टी डाल देने को कहा।

"छत," वह बोला, "जब मुझसे बन पड़ा बना दूंगा।"

ग़रीब अपने अधबने घर में रहने लगा।

पड़ोस में एक चोर रहता था। नया घर देखकर वह सोचने लगा: "लगता है, यह ग़रीब धनवान हो गया है, इसने नया घर बना लिया है। अगर इसके यहाँ चोरी करूँ, तो काफ़ी माल हाथ लगेगा!"

रात को चोर उस ग़रीब की छत पर चढ़ गया और जैसे ही उसने पहला क़दम रखा, सरकंडे बिखर गये और वह नीचे गिर पड़ा – सीधा सोते हुए ग़रीब आदमी के ऊपर।

ग़रीब की नींद खुल गयी और वह चोर को पकड़ने भागा, पर अंधेरा था, इस लिए चोर भाग निकला।

चोर को ग़रीब पर बड़ा गुस्सा आया। दूसरे दिन वह शिकायत करने बादशाह के पास पहुँचा।

"तुम कौन हो? तुम्हें क्या शिकायत है?" बादशाह ने पूछा।

"दानिशमंद बादशाह! मैं एक घर में चोरी करना चाहता था। मैं उसकी छत पर चढ़ा। मगर वहाँ छत की जगह सरकंडे बिछाये हुए थे। मैं नीचे गिर पड़ा और मेरा पैर टूटते-टूटते बचा। मेरी आपसे इल्तिजा है कि आप उस घर के मालिक को सज़ा दें।"

बादशाह ने मकान के मालिक – ग़रीब आदमी को बुलवाया।

"क्या यह सच है कि रात को यह आदमी तुम्हारी छत में से नीचे गिरा था?" उसने पूछा।

"जी, हुज़ूर, यह सच है," ग़रीब ने जवाब दिया, "यह अच्छा हुआ कि यह मेरे ऊपर ही गिरा, वरना इसका पैर टूट जाता।"

4—231

"अगर यह सच है, तो मकान मालिक को फांसी दे दी जाये!" बादशाह ने जल्लादों को हुक्म दिया।

ग़रीब गिड़गिड़ाने लगा:

"हुजूर, मुझे क्यों फांसी दी जा रही है, सजा तो इस चोर को मिलनी चाहिए।"

"चुप रहो! तुम्हें मुझे सीख देने की हिम्मत कैसे हुई?"

ग़रीब ने देखा कि मामला बिगड़ रहा है और बादशाह से न्याय की आशा करना बेकार है।

"हुजूर, इसमें मेरा दोष क्या है?" ग़रीब बोला, "छत तो कारीगर ने बनायी थी, उसी ने काम ख़राब किया है। उसने कमज़ोर सरकंडे की छाजन बिछा दी।"

"अच्छा, तब इसे छोड़ दो और उस कारीगर को फाँसी दे दो," बादशाह ने हुक्म दिया।

जल्लाद छत बनानेवाले कारीगर को पकड़कर फाँसीघर में ले आये।

"मेरी बादशाह से एक इल्तिजा है!" कारीगर गिड़गिड़ाने लगा।

"बोलो! तुम क्या चाहते हो?" बादशाह ने हुक्म दिया।

"हुजूर, मैं बिल्कुल बेक़सूर हूँ। क़सूर तो उस कारीगर का है, जिसने छाजन बनायी थी। उसने छाजन में पतले और कम सरकंडे लगाये। अगर सरकंडे अच्छे और मजबूत होते, तो वे एक आदमी के चलने पर गिरते नहीं।"

बादशाह ने छत बनानेवाले कारीगर को छोड़ दिया और छाजन बनानेवाले कारीगर को पकड़कर लाने का हुक्म दिया।

"छाजन तुमने बनायी थी?" बादशाह ने पूछा।

"जी," कारीगर ने जवाब दिया।

"इसे फांसी दे दो!" बादशाह चिल्लाया। "सारा क़सूर इसके सरकंडों का है।"

"हुजूर, मैं एक बात कहना चाहता हूँ," कारीगर बोला। "मैं हमेशा मज़बूत सरकंडे लगाता था, पर अभी कुछ दिनों से मेरे पड़ोसी को कबूतर पालने का शौक़ लगा है। उसने जब अपने कबूतरों को उड़ाया और वे आसमान में मंडराने लगे, तो मैं उन्हें देखने लगा। इसी वजह से मुझे ध्यान नहीं रहा और मैंने छाजन में कमज़ोर और कम सरकंडे लगा दिये। क़सूरवार तो कबूतरबाज़ है।"

बादशाह ने कारीगर को छोड़ दिया और कबूतरबाज को बुलाकर उसे फाँसी देने का हुक्म दिया।

"हुजूर! मुझे कबूतर उड़ाने और उनकी उड़ान देखने का शौक़ है। यह कोई बड़ा गुनाह नहीं है। आप मुझे फाँसी देंगे, तो भला इससे किसी को कुछ फ़ायदा होगा? एक ग़रीब आदमी को मारने से तो चोर को सज़ा देना ज्यादा अच्छा होगा। लोग चैन से जी सकेंगे," कबूतरबाज़ ने कहा।

"बिल्कुल ठीक!" बादशाह ने मान लिया। "सारा क़सूर चोर का है। उसे पकड़कर फाँसी दे दी जाये!" उसने हुक्म दिया।

जल्लाद चोर को पकड़कर फाँसी देने लाये। पर फाँसी का तख़्ता नीचा था और चोर था लंबा। जल्लादों ने चोर को फाँसी पर चढ़ाने की पूरी कोशिश कर ली पर उसके पैर हमेशा ज़मीन को छूते रहे। जल्लाद बादशाह के पास आकर बोले:

"जहाँपनाह, चोर बहुत लंबा है, उसके पैर ज़मीन पर टिके रहते हैं, हम किसी तरह उसको फाँसी नहीं दे पा रहे हैं। क्या करें?"

बादशाह गुस्सा हुआ:

"इतनी छोटी-छोटी बातों के लिए तुम मुझसे क्यों पूछते हो? अगर चोर लंबा है, तो क्या तुम लोग चौराहे पर जाकर कोई ऐसा आदमी नहीं ढूँढ़ सकते, जिसका क़द छोटा हो? क्या तुम्हें इतनी मामूली-सी बात भी समझ में नहीं आती?"

जल्लादों ने बाहर आकर देखा, तो उन्हें एक नाटे क़द का आदमी कंधों पर आटे का बोरा रखे दिखाई दे रहा था।

"अरे, यह बिल्कुल वैसा ही है, जैसे को बादशाह फाँसी चढ़ाना चाहते हैं।" जल्लादों ने फ़ैसला कर लिया: "बादशाह का हुक्म पूरा करना चाहिए।"

वे नाटे क़द के आदमी को पकड़कर फाँसी के तख़्ते पर ले आये। नाटे क़द का आदमी गिड़गिड़ाने लगा:

"मेरा क़सूर क्या है? आप मुझे किस लिए फाँसी चढ़ाना चाहते हैं?"

उसी समय बादशाह भी फाँसी का नज़ारा देखने के लिए आ गया।

"बादशाह से मेरी एक इल्तिजा है!" नाटा आदमी चिल्लाया।

"बोलो, क्या चाहते हो?" बादशाह ने पूछा।

"शहंशाह! मैं एक ग़रीब आदमी हूँ। मैं शहर में बेचने के लिए पहाड़ों में सूखी टहनियाँ इकट्ठी करता हूँ और बोझ भी ढोता हूँ। इस तरह मैं अपने परिवार का पेट पालता हूँ। मेरा क़सूर क्या है? आप क्यों मुझे फाँसी पर चढ़ाना चाहते हैं?"

"बेवक़ूफ़!" बादशाह गाली देने लगा। "मुझे क्या मालूम तुम क़सूरवार हो या नहीं? मुझे तो बस एक आदमी को फाँसी पर लटकाना है। मैं चोर को फाँसी देना चाहता था, पर उसका क़द बहुत ऊँचा है और उसके पैर ज़मीन पर टिके रहते हैं। और तुम फाँसी देने के लिए बिल्कुल ठीक क़द के हो, नाटे हो।"

"शहंशाह," अभागा आदमी गिड़गिड़ाने लगा। "क़सूरवार तो लंबा चोर है और आप बेचारे बेक़सूर नाटे आदमी को सज़ा दे रहे हैं। कहाँ है इनसाफ़! अगर चोर ज़्यादा लंबा है, तो फाँसी के नीचे थोड़ी ज़मीन खोदने का हुक्म दीजिये।"

बादशाह सोचता रहा, सोचता रहा फिर बोला:

"बिल्कुल ठीक है! यह आदमी बिल्कुल ठीक कहता है। इसे छोड़ दो। चोर को फाँसी पर लटका दो। और उसके पैरों के नीचे गढ़ा खोद दो।"

जल्लाद फिर चोर को पकड़कर फाँसी पर ले आये और उसके गले में फंदा डालकर उसके पैरों के नीचे गढ़ा खोदने लगे।

"जल्दी करो, जल्दी करो! नहीं तो देर हो जायेगी। मुझे फ़ौरन फाँसी दे दो!" चोर ने जल्दी मचायी।

"तुम्हें मरने की ऐसी जल्दी क्यों हो रही है?" बादशाह को आश्चर्य हुआ।

"शहंशाह! अभी-अभी स्वर्ग के बादशाह मरे हैं। स्वर्ग के बादशाह ने मरने के पहले कहा था: 'जो मरकर सबसे पहले स्वर्ग में पहुँचे, उसे बादशाह बना दिया जाये।' इसी लिए मैं जल्दी में हूँ। अगर मुझे फ़ौरन फाँसी दे दी जाये, तो मैं वहाँ पहुँचकर बादशाह बन जाऊँगा, अभी तक उनके तख़्त पर कोई नहीं बैठा है। मुझे जल्दी से फाँसी पर लटका दो!" चोर फिर चिल्लाया।

बादशाह को ईर्ष्या होने लगी। "क्या स्वर्ग का बादशाह बनना मामूली बात है! मैं क्यों न वहाँ का तख़्त संभाल लूँ?" उसने यह सोचकर जल्लादों को हुक्म दिया:

"चोर को छोड़ दो और मुझे फाँसी पर लटका दो!"

"बादशाह का हुक्म सिर-आँखों पर।" जल्लादों ने चोर को छोड़ दिया और उसकी जगह मूर्ख बादशाह को फाँसी दे दी।

इस तरह प्रजा को मूर्ख बादशाह से मुक्ति मिल गयी।

जादू का डण्डा

बहुत दिन हुए एक बूढ़ा शिकारी अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। एक बार बूढ़े ने जाल बिछाया और छिपकर बैठ गया। उसके जाल में एक बड़ा लक़लक़ फंस गया।

जैसे ही बूढ़ा लक़लक़ को निकालने लगा, वह आदमी की आवाज़ में बोल उठा:

"मुझे छोड़ दो। मैं लक़लक़ों का राजा हूँ। मुझे छोड़ दो, मैं तुम्हें जो तुम माँगोगे, दूंगा। मेरा घर उन पहाड़ों के पीछे है। तुम जिससे भी पूछोगे, वह बता देगा कि मेरा घर कहाँ है।"

बूढ़े ने लक़लक़ को छोड़ दिया।

बूढ़ा सुबह जल्दी उठकर लक़लक़ से अपना मुँहमाँगा इनाम लेने चल दिया। बूढ़ा चलता रहा, चलता रहा और बहुत-से नदी-नाले और पहाड़ पार करके एक जगह पहुँचा, जहाँ भेड़ें चर रही थीं।

"ये भेड़ें किसकी हैं?" बूढ़े ने गड़रिये से पूछा।

"लक़लक़ की," गड़रिये ने जवाब दिया।

बूढ़ा आगे बढ़ा, तो उसने देखा घोड़ों का झुंड चर रहा है।

"ये घोड़े किसके हैं?" बूढ़े ने चरवाहे से पूछा।

"लक़लक़ के," उसने जवाब दिया।

"ज़रा सुनो," बूढ़ा बोला, "लक़लक़ ने मुझे इनाम देने का वायदा किया है। मैं उससे क्या माँगूँ?"

"लक़लक़ के पास एक जादू की देगची है। तुम जैसे ही बोलोगे, 'उबल मेरी देगची', वह उबलने और सोना उगलने लगेगी। तुम जादू की देगची ही माँगना," चरवाहे ने बूढ़े को सलाह दी।

बूढ़ा आगे चल दिया। चलता रहा, चलता रहा, बहुत-से नदी-नालों, झीलों, पहाड़ों और मैदानों को पार करके सात दिन और सात रात बाद लक़लक़ के घर आ पहुँचा।

"सलाम!" बूढ़े ने दरवाज़े में क़दम रखते ही कहा।

लक़लक़ अपनी चोंच बजाकर बोला:

"लक़-लक़। अगर तुमने सलाम नहीं किया होता, तो अब तक मैं तुम्हें चोंच मारकर ज़िन्दा ही निकल गया होता। तुम, शायद, अपना इनाम माँगने आये हो? अच्छा, बोलो क्या चाहते हो?"

"आपके पास जो जादू की देगची है, उसे मुझे दे दीजिये," बूढ़ा बोला।

लक़लक़ सोचने लगा।

"बूढ़े, तुम देगची लेकर क्या करोगे? इससे अच्छा होगा कि तुम सोने से पूरा भरा थाल ले लो," लक़लक़ बूढ़े को मनाने लगा।

पर बूढ़ा नहीं माना।

लक़लक़ ने बूढ़े को जादू की देगची दे दी।

बूढ़ा देगची लेकर अपने घर चल दिया।

बहुत-से पहाड़, मैदान पार करके बूढ़ा एक गाँव में पहुँचा और आराम करने के लिए अपने एक परिचित के घर रुका।

"आप ज़रा इस देगची का ख़याल रखें," बूढ़े ने अपने परिचित से कहा: "मैं बहुत थक गया हूँ, थोड़ी देर सो लूं। आप बस 'उबल, मेरी देगची' मत कहना," बूढ़े ने चेतावनी दी।

जैसे ही बूढ़े को नींद आयी, घर का मालिक ज़ोर से बोला: "उबल, मेरी देगची!" और देगची सोने की अशरफ़ियाँ उगलने लगी। उसने जादू की देगची छिपा दी और उसकी जगह एक बिल्कुल वैसी ही साधारण देगची लाकर रख दी।

बूढ़े की नींद खुली और वह देगची लेकर आगे चल दिया।

बूढ़ा अपने जाने-पहचाने रास्ते पर चलता हुआ सात दिन और सात रात बाद आख़िर अपने घर पहुँच गया। अन्दर आते ही उसने कहा:

"ला, बुढ़िया, चादर बिछा, हमें अभी इतना सोना मिलेगा कि हम बहुत अमीर हो जायेंगे।"

बुढ़िया ने चादर बिछा दी। बूढ़े ने देगची चादर के बीच में रखी और ज़ोर से चिल्लाया :

"उबल, मेरी देगची!"

पर न देगची में उबाल आया और न ही उसमें से सोना निकला। बूढ़ा फिर चिल्लाया, पर देगची वैसी ही रखी रही।

बूढ़ा गुस्सा होकर ज़ोर-ज़ोर से लक़लक़ को कोसने लगा :

"लानत है, लक़लक़ तुझ पर। तूने मुझे धोखा दिया और मामूली देगची दे दी। मैं कल जाकर दूसरी चीज़ माँगूँगा।"

दूसरे दिन बूढ़ा सुबह जल्दी उठकर चल दिया। चरवाहे के पास पहुँचकर उसने पूछा :

"लक़लक़ ने मुझे धोखा दिया। अब मुझे उससे कौन-सी चीज़ माँगनी चाहिए?"

चरवाहा सोचकर बोला :

"लक़लक़ के पास एक जादूई चादर है। उसे ज़मीन पर रखकर जैसे ही 'खुल जा, मेरी चादर!' कहोगे, तुरंत उसके ऊपर तरह-तरह के खाने आ जायेंगे। तुम वही चादर माँगना।"

बूढ़ा लक़लक़ के पास पहुँचा और घर में क़दम रखते ही बोला :

"सलाम!"

"लक़-लक़," लक़लक़ ने अपनी चोंच बजायी। "अगर तुम ने सलाम नहीं किया होता, तो अब तक मैं तुम्हें चोंच मारकर ज़िन्दा ही निगल गया होता। पिछली बार मैंने तुम्हें जादू की देगची दी थी। क्या वह ठीक काम नहीं कर रही है?" उसने पूछा।

बूढ़े ने लक़लक़ को सारा क़िस्सा सुनाया और कहने लगा :

"तुमने मुझे धोखा दिया। जादू की देगची की जगह तुमने मुझे मामूली देगची दे दी। इसी लिए मैं अब तुमसे जादूई चादर माँगने आया हूँ।"

लक़लक़ ने बूढ़े को जादूई चादर दे दी। बूढ़ा चादर लेकर वापस चल पड़ा। काफ़ी देर चलने के बाद वह उसी गाँव में पहुँचा, जहाँ पिछली बार ठहरा था।

अपने परिचित के घर आकर बूढ़े ने उससे कहा :

"मैं बहुत थक गया हूँ, थोड़ी देर सो लूं, तब तक आप इस चादर का ख़याल रखिये। बस 'खुल जा, मेरी चादर' मत कहिये।"

जैसे ही बूढ़ा सो गया, परिचित ने आवाज़ दी, "खुल जा, मेरी चादर!" और पलक झपकते ही उस पर सत्तर तरह के स्वादिष्ट खाने लग गये। परिचित ने फ़ौरन जादूई चादर और खाने दूसरे कमरे में छिपा दिये और उसकी जगह एक बिल्कुल वैसी ही मामूली चादर लाकर रख दी। बूढ़े की नींद खुली, तो वह चादर उठाकर आगे चल दिया।

घर पहुँचकर वह बोला :

"आ, बुढ़िया, तू जो चाहे, तुझे खिलाऊँगा। बोल, क्या चाहिए? अभी तैयार होकर आ जायेगा।"

उसने चादर रखकर आवाज़ दी :

"खुल जा, मेरी चादर!"

पर वह कितना ही चिल्लाया, न चादर खुली और न ही उस पर किसी तरह के पकवान आये।

बूढ़े को बहुत गुस्सा आया।

"लक़लक़ ने दूसरी बार भी मुझे धोखा दिया। कल ही जाकर उससे दूसरी चीज़ माँगूंगा," वह बोला।

दूसरे दिन पौ फटते ही बूढ़ा सफ़र पर रवाना हो गया।

चरवाहे के पास पहुँचकर उसने सारा क़िस्सा सुनाया और पूछा:

"मुझे लक़लक़ से अब क्या माँगना चाहिए?"

"मालूम पड़ता है, तुम्हारे दुश्मन बहुत हैं," चरवाहे ने कहा। "तुम लक़लक़ से जादू का डण्डा माँगो। जैसे ही तुम बोलोगे, 'मार, डण्डे, मार!' तुम्हारे सामने कोई भी क्यों न हो, डण्डा उसको मारने लगेगा।"

बूढ़ा फ़ौरन आगे चल दिया। लक़लक़ के घर पहुँचकर वह बोला:

"सलाम!"

"लक़-लक़," लक़लक़ ने चोंच बजायी। "अगर तुमने सलाम नहीं किया होता, तो अब तक मैं तुम्हें चोंच मारकर जिंदा ही निगल गया होता... फिर किस लिए आये हो? जादू की देगची और चादर मैं तुम्हें दे चुका हूँ, अब और क्या चाहिए?"

"इस बार भी तुमने मुझे धोखा दिया," बूढ़ा कहने लगा। "जादूई चादर की जगह तुमने मुझे एक मामूली चादर दे दी। अब तुम मुझे एक असली चीज़ दो। मुझे वह डण्डा दो, जो खुद ही मार लगाने लगता है।"

"मुझे डण्डे की कोई ज़रूरत नहीं, अगर तुम्हें वह चाहिए तो ले लो," लक़लक़ ने कहा और जादू का डण्डा बूढ़े को दे दिया।

बूढ़ा डण्डा लेकर वापस लौटने लगा। चलते-चलते वह उसी गाँव में पहुँचा, जहाँ पहले भी ठहर चुका था। अपने परिचित के घर आकर बूढ़े ने उससे कहा:

"ज़रा इस डण्डे का खयाल रखना, मैं थक गया हूँ, थोड़ा सो लूँ। बस 'मार, डण्डे, मार!' मत कहना।"

बूढ़े के सोते ही घर के मालिक ने आवाज़ दी, "मार, डण्डे, मार!"

उसके आवाज़ देने की देर थी कि डण्डे ने घर के सब लोगों को पीटना शुरू कर दिया। चीख-चिल्लाहट सुनकर बूढ़े की नींद खुल गयी! सब रोते हुए बूढ़े के पास आये और माफ़ी माँगने लगे:

"किसी तरह डण्डे को रोक दीजिये। हमने आपकी जादू की देगची और चादर चुरा ली थी। हमें माफ़ कर दीजिये, हम दोनों चीज़ें आपको लौटा देंगे। किसी तरह इस डण्डे को रोक दीजिये!"

"डण्डे, रुक जा!" बूढ़े ने आवाज़ दी और डण्डे ने पीटना बन्द कर दिया!

घरवालों ने दूसरे कमरे में से जादू की देगची और चादर लाकर बूढ़े को दे दी। तीनों

चीज़ें लेकर बूढ़ा अपने घर की ओर चल दिया। कई नदी-नाले, झीलें, पहाड़ और मैदान पार करके सात दिन और सात रात बाद बूढ़ा आख़िर अपने घर आ पहुँचा।

देगची रखकर उसने आवाज़ दी:

"उबल, मेरी देगची!"

देगची में उबाल आने लगा और वह सोने की अशरफ़ियाँ उगलने लगी। बूढ़ा-बुढ़िया दोनों हाथों से भी अशरफ़ियाँ समेट नहीं पाये।

बूढ़े ने फिर आवाज़ दी:

"खुल जा, मेरी चादर!"

चादर खुल गयी और उसके ऊपर सत्तर तरह के स्वादिष्ट खाने और पकवान आ गये। बूढ़े और बुढ़िया ने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी इस तरह का नज़ारा नहीं देखा था। उन दोनों ने छककर खाया और पिया।

उस देश के ख़ान को जब पता लगा कि बूढ़े शिकारी को कहीं से जादू की देगची और चादर मिल गयी है, तो उसने अपने वज़ीर को उसके पास भेजा।

"जादू की देगची और चादर हमें दे दे," वज़ीर कहने लगा।

बूढ़े ने आवाज़ दी:

"मार, डण्डे, मार!"

डण्डे ने वज़ीर की अच्छी तरह पिटाई कर दी और वह किसी तरह घिसटता हुआ ख़ाली हाथ लौट आया।

ख़ान ने सुबह अपनी सात हज़ार फ़ौज लेकर बूढ़े के घर को घेर लिया।

"बूढ़े, अगर तुझमें दम है, तो बाहर आकर लड़!" ख़ान चिल्लाकर बोला।

बूढ़े ने दरवाज़ा खोलकर जैसे ही आवाज़ दी:

"मार, डण्डे, मार!"

डण्डे ने ख़ान के सैनिकों को ऐसी मार लगायी, कि वे बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर भाग पाये।

इसके बाद डण्डा ख़ान के पास पहुँचा और उसको भी पीटने लगा।

ख़ान रोने-चिल्लाने लगा:

"बूढ़े, अपने डण्डे को रोक दे! मुझे जान से मत मार।"

और बूढ़ा अपने घर के दरवाज़े के आगे खड़ा हँसता रहा:

"अब तुम दुबारा कभी किसी ग़रीब की चीज़ पर अपनी नज़र नहीं डाल सकोगे।"

इस तरह बूढ़े शिकारी और उसकी पत्नी की सारी इच्छाएं पूरी हो गयीं।

बुलबुल

बहुत समय पहले एक क्रूर बादशाह राज करता था। कई सालों तक वह अपनी प्रजा पर अत्याचार करता रहा और यातनाएं देता रहा। वह अपनी प्रजा के मुंह का आखिरी कौर भी छीन लेता था और तरह-तरह के कर लगाकर जनता को लूटता रहता था। इस तरह उसने इतना सोना-चाँदी और हीरे-जवाहरात जमा कर लिये कि उसकी समझ में नहीं आता था कि वे सारी संपत्ति कहाँ छिपाये।

एक बार बादशाह ने मशहूर कारीगरों को बुलाया और बोला:

"मेरे लिए एक चिनार का पेड़ बनाओ, जिस का तना नीलम का हो, शाखाएं चन्द्रकान्त मणि की, पत्ते जमुर्रद के और फल मोतियों के हों। और पत्ते इतने घने होने चाहिए कि उनमें से सूरज की एक किरण भी छनकर न आ सके।"

बादशाह का हुक्म सुनकर जनता में बड़ा असंतोष फैल गया:

"इस तरह का चिनार का पेड़ बनने तक बादशाह हमारे बदन पर से आखिरी चिथड़ा भी उतरवा लेगा।"

बादशाह ने अपनी असंतुष्ट प्रजा पर बड़े अत्याचार किये। उसने कुछ लोगों के सिर धड़ से अलग करवा दिये, कुछ को जिन्दा ही गढ्ढों में फिंकवा दिया।

सात साल में चिनार का पेड़ बनकर तैयार हो गया।

बादशाह के हुक्म से उसका पलंग बहुमूल्य पेड़ के नीचे लगवा दिया गया और वह वहाँ सोने लगा।

एक बार सुबह बादशाह को अपने दायें गाल पर गरमी-सी लगी। उसने आंखें खोलीं, तो देखा – जमुर्रद के पत्तों में से सेब के बराबर आसमान दिखाई पड़ रहा है और उस छेद में से होकर सूरज की किरण उसके गाल पर पड़ रही है।

बादशाह आग-बबूला हो उठा:

"किसी ने मेरे चिनार का एक पत्ता चुरा लिया है। जो भी चोर को पकड़कर लायेगा, उसे मैं सिर से पैर तक सोने से ढक दूंगा। और अगर चोर नहीं पकड़ा गया, तो सारे शहर को जलाकर राख कर दूंगा।"

बादशाह के दाहिने ओर बैठे वजीर ने सलाह दी:

"आप रात को चालीस सिपाहियों का पहरा बैठा दीजिये। वे चोर को पकड़ लेंगे।"

बादशाह ने वजीर की सलाह मान ली।

चालीस हथियारबंद सिपाही चिनार के चारों ओर पहरा देने लगे। पर आधी रात होते ही, वे सबके सब खड़े-खड़े ही सो गये।

सुबह बादशाह की नींद खुली, तो उसने देखा कि चिनार के पत्तों में एक और छेद हो गया है। बादशाह इतना गुस्सा हुआ कि उसके सिर के सारे बाल सूइयों की तरह खड़े हो गये।

"जल्लादों को मेरे पास भेजो," वह चिल्लाया।

फ़ौरन चालीस काले भुजंग जल्लाद बादशाह के आगे आ खड़े हुए और अपनी पैनी तलवारें म्यानों से निकालकर कहने लगे:

"जिसकी मौत आयी है, उसका सिर हम धड़ से अलग कर देंगे।"

सिपाहियों की ओर इशारा करके बादशाह बोला: "इनके सिर धड़ से अलग कर दिये जायें।" पर वहाँ खड़े वज़ीर से न रहा गया।

"हुज़ूर, अगर आप हर रोज़ चालीस सिपाहियों को मौत की सज़ा देते रहे, हमारी सारी फ़ौज ही ख़त्म हो जायेगी। अच्छा यही होगा कि इन सिपाहियों को काल-कोठरी में डाल दिया जाये और इनकी जगह चिनार के चारों ओर दूसरे सिपाहियों का पहरा बैठा दिया जाये।"

उन चालीस सिपाहियों को काल-कोठरी में डाल दिया गया।

बादशाह के तीन बेटे थे।

बड़ा बेटा बोला:

"आप मुझे चिनार की रखवाली करने दीजिये। मैं चोर को पकड़ लूंगा।"

बादशाह ने अपने बड़े बेटे की बात मान ली।

बादशाह का बड़ा बेटा चिनार की रखवाली करने लगा, पर आधी रात के बाद उसे भी नींद आ गयी। भोर होने पर बादशाह ने देखा पत्तों में हुआ छेद टोपी जितना बड़ा हो गया है।

बादशाह ने अपने बड़े बेटे को उसी वक़्त काल-कोठरी में डलवा दिया।

"जल्दी मत कीजिये, अब मैं पेड़ की रखवाली करूंगा!" बादशाह का मँझला बेटा बोला। "अगर मैं चोर को न पकड़ पाऊँ, तो मुझे भी बड़े भाई के साथ मौत की सज़ा दे दी जाये।"

पर आधी रात को उसकी पलकें भी मुंद गयीं और सुबह पत्तों में हुआ छेद एक बड़ी रोटी जितना बड़ा दिखाई दिया।

गुस्से के मारे बादशाह की आंखें अंगारों की तरह दहकने लगीं।

"जल्लादों को मेरे पास भेजो!.." वह चिल्लाया।

पर उसी वक़्त बादशाह का सबसे छोटा बेटा उसको मनाने लगा:

"मुझे तीर-कमान लेकर पेड़ की रखवाली करने की इजाज़त दीजिये। मैं चोर को तीर से मारूँगा।"

बादशाह ने उसे इजाज़त दे दी।

अंधेरा होने के बाद छोटा शाहज़ादा कमान पर तीर चढ़ाकर पेड़ के नीचे खड़ा हो गया और बड़ा चौकस रहा।

आधी रात के बाद उसे भी नींद सताने लगी। उसने छुरी निकालकर, अपनी उंगली चीरकर घाव पर नमक के साथ मिर्च बुरक दी। दर्द के मारे उसे नींद बिल्कुल भी नहीं आयी।

शाहज़ादा पेड़ के पास चौकन्ना खड़ा रहा। सूरज निकलने के पहले अचानक पेड़ पर एक अद्‌भुत चिड़िया आकर बैठी। उसकी चोंच नीलम की थी, पैर चन्द्रकान्त मणि के, पंख मोतियों और मूंगे के थे। चिनार की टहनी पर बैठते ही चिड़िया ने इतनी मधुर आवाज़ में गाना शुरू कर दिया कि धरती और आकाश उसकी आवाज़ से गूंज उठे।

शाहज़ादे को उस आद्‌भुत चिड़िया पर बड़ी दया आयी, पर फिर भी उसने उस पर तीर चला दिया। लेकिन शाहज़ादे का हाथ काँप उठा और तीर लगने से चिड़िया का केवल एक पर ही टूटकर गिर पड़ा। उसी क्षण चिड़िया उड़ गयी।

बादशाह की नींद खुलने पर शाहज़ादा उसके पास दायें हाथ में तीर-कमान और बायें हाथ में चिड़िया का पर लिये आया।

"देखिये, मैंने उस चिड़िया का पता लगा लिया, जो हमारे चिनार के बहुमूल्य पत्ते तोड़कर ले जाती थी। वह मीठी आवाज़वाली बुलबुल है। पर मैं तीर मारकर उसे गिरा नहीं पाया। बस उसका यह एक पर मेरे हाथ आया है।"

बादशाह ने पर हाथ में लेकर देखा, तो उसे मालूम हुआ कि उस एक पर की क़ीमत उसकी प्रजा पर लगाये गये सात वर्षों के कर से भी ज़्यादा है।

बादशाह बड़ा खुश हुआ और उसने अपने दोनों बेटों और सिपाहियों को काल-कोठरी से आज़ाद करने का हुक्म दिया।

उसी दिन उसने सारे शहर में मुनादी करवा दी :

"जो कोई उस चिड़िया को पकड़कर लायेगा, उसे मैं अपने साथ तख़्त पर बैठाकर आधा राज दे दूँगा। और अगर चिड़िया नहीं पकड़ी गयी, तो मैं सारे शहर को आग लगाकर राख कर दूँगा!"

बादशाह के दोनों बड़े बेटे आदरपूर्वक सिर नवाकर बोले :

"आप हमें यह चिड़िया पकड़कर लाने की इजाज़त दीजिये!"

बादशाह ने उनकी बात मान ली। दोनों बड़े शाहज़ादे सौदागरों के वेष में शहर से निकल पड़े।

तीन दिन बीत गये। छोटे शाहज़ादे ने सोचा : "मेरे बड़े भाइयों को कुछ नहीं मिलेगा और पिता जी ग़ुस्से में शहर को आग लगाकर राख कर देंगे। मुझे जाना चाहिए।"

वह अपने पिता के पास जाकर बोला :

"पिता जी! मुझे यह काम करने की इजाज़त दीजिये। मैं उस जादूई चिड़िया को पकड़ना चाहता हूँ। आप मुझे इजाज़त दें या न दें, मैं ज़रूर जाऊँगा।"

बादशाह को अपने छोटे बेटे को जाने देने की इच्छा बिल्कुल न थी। पर शाहज़ादा अपनी ज़िद पर अड़ा रहा।

बादशाह किसी तरह भी अपने बेटे को जाने से न रोक पाया और उसे सफ़र पर जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

छोटा शाहज़ादा तेज़ रफ़्तार से चलकर एक हफ़्ते में ही अपने भाइयों से जा मिला।

तीनों भाई साथ-साथ चलते रहे, चलते रहे और एक ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ रास्ता तीन दिशाओं में बंटता था। हर रास्ते पर एक-एक पत्थर लगा था। पहले पत्थर पर लिखा था: "जो इस रास्ते से जायेगा, वह वापस लौटकर आयेगा।" दूसरे पर लिखा था: "जो इस रास्ते से जायेगा, उसे ख़तरे का सामना करना पड़ेगा।" तीसरे पत्थर पर लिखा था:

"जो इस रास्ते से जायेगा, वह वापस नहीं लौटेगा।"

बड़े भाई ने पहला रास्ता चुना, मंझले ने ख़तरनाक रास्ता चुना और सबसे छोटे भाई ने तीसरा रास्ता चुना।

तीनों भाई एक दूसरे से विदा होकर अपने-अपने रास्ते पर चल पड़े।

मंझला भाई चलते-चलते सोचने लगा: "इस रास्ते में मुझे ख़तरे का सामना करना पड़ेगा, पता नहीं, मेरे साथ क्या गुज़रे? क्यों न मैं बड़े भाई के साथ चला जाऊं?" यह सोचकर उसने रास्ता बदल लिया और अपने बड़े भाई से जा मिला। वे दोनों साथ चल पड़े।

दोनों भाई एक अनजाने शहर में पहुँचे। उन्होंने धूप में बैठकर दही खाया और एक दूसरे के बालों में कंघी करने लगे।

वहाँ के बादशाह की बेटी ने अपने छज्जे पर से दोनों भाइयों को देख लिया।

"क्या इन लोगों को मेरे सामने बालों में कंघी करते हुए शर्म नहीं आती?" उसने अपने मन में कहा और गुस्से में आकर अधखाया सेब उठाकर ठीक बड़े भाई के सिर पर निशाना लगाकर फेंका। बड़े भाई ने मुड़कर देखा कि छज्जे पर एक ख़ूबसूरत लड़की खड़ी है।

"शायद, शाहज़ादी को मुझसे प्यार हो गया है," बड़े भाई ने अपने मन में सोचा और मँझले भाई के साथ महल के सामने बैठा रहा।

शाम को शाहज़ादी की एक नौकरानी उनके पास आयी।

"आप लोग यहाँ क्यों बैठे हैं? यहाँ से जाते क्यों नहीं?"

"शाहज़ादी को मुझसे प्यार हो गया है। उसने मज़ाक़ में मुझे सेब का टुकड़ा फेंककर मारा और मुझे देखकर मुस्करायी भी। मैं यहाँ से क्यों उठूँ?" बड़े भाई ने कहा।

"यहाँ से फ़ौरन हट जाओ! नहीं तो शाहज़ादी गुस्सा होकर तुम्हारे सिर कटवा देगी," नौकरानी ने उन्हें डराया।

दोनों भाई डर के मारे काँपने लगे और वहाँ से उठकर चले गये।

वे लोग शहर में रहने लगे और जो धन उनके पिता ने उनके सफ़र के लिए दिया था, वह धीरे-धीरे सारा ख़र्च हो गया। उन्हें कोई काम करना नहीं आता था, इस लिए कुछ ही दिनों में उनकी हालत इतनी ख़राब हो गयी कि उन्हें परायी दुकान की दहलीज़ पर सोना पड़ा।

वे नौकरी ढूँढ़ने लगे। बड़े भाई ने एक ढाबे में खाना परोसने की नौकरी कर ली और मँझला दूसरे ढाबे में भट्टी जलाने का काम करने लगा।

अब छोटे भाई का हाल सुनिये।

वह रात-दिन चलता एक नदी के बाद दूसरी नदी, एक झील के बाद दूसरी झील और

एक पहाड़ के बाद दूसरा पहाड़ पार करता हुआ आगे बढ़ता रहा। उसका सारा धन और खाने का सामान ख़त्म हो गया, केवल एक सूखी रोटी बची रही।

आख़िर वह एक चश्मे के पास पहुँचा। उसके किनारे चिनार का एक छायांदार पेड़ था।

छोटे भाई ने घोड़ा चिनार से बाँध दिया और अपने थैले में से आखिरी रोटी निकाली। वह रोटी को पानी में भिगोकर, टुकड़े करके खानेवाला ही था कि उसे कुछ दूरी पर धूल का बादल उठता हुआ दिखाई दिया। उसने ध्यान से देखा, तो उसे एक बहुत बड़ा बंदर सीधा उसी की ओर दौड़ता हुआ नज़र आया।

छोटा शाहज़ादा डरकर पेड़ के ऊपर चढ़ गया। बंदर दौड़ता हुआ आया और आते ही उसने रोटी खा ली। फिर उसने अपना मुंह पोंछा और सिर उठाकर शाहज़ादे को इशारा किया।

"नीचे उतर आओ!" बंदर ने आदमी की आवाज़ में कहा।

शाहज़ादा सोचने लगा, "रोटी से उसका पेट नहीं भरा, अब मुझे भी खाना चाहता है।" वह और ऊपर चढ़ गया।

बंदर भी उसके नीचे की डाल पर आ बैठा।

"ऐ, आदमी, नीचे उतर आओ!" बंदर ने फिर कहा। "अगर हमारे देश में कोई चिड़िया भी पर मारती है, तो वह तत्क्षण जल जाती है, और अगर आदमी घुस आता है, तो उसकी टाँगें टूट जाती हैं। तुम यहाँ किस लिए आये हो?"

शाहज़ादे ने पेड़ से उतरकर बंदर को शुरू से लेकर आख़िर तक सारा क़िस्सा सुनाया।

"अगर मैंने मीठी आवाज़वाली चिड़िया अपने पिता जी को लाकर नहीं दी, तो वह सारा शहर जलाकर राख कर देंगे," शाहज़ादे ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए दुःख भरे स्वर में बंदर को बताया।

"कहते हैं, 'जिसका तूने एक बार नमक खा लिया, ज़िन्दगी भर उसकी सेवा कर,'" बन्दर बोला। "अच्छा होता अगर मैं तुम्हारी रोटी नहीं खाता! पर जब खा ही ली है, तो मुझे तुम्हारा एहसान चुकाना ही पड़ेगा। घोड़े पर सवार हो जाओ! अगर क़िस्मत ने साथ दिया, तो हमें चिड़िया को पकड़ने और तुम्हारे शहर को बरबादी से बचाने में सफलता मिलेगी।"

वे दोनों घोड़े पर सवार होकर आगे चल दिये। थोड़ी देर में वे एक बाग़ की ऊँची दीवारों के पास आ पहुँचे।

"मैं सुरंग खोदता हूँ, और तुम यहाँ मेरा इन्तज़ार करो। अगर मैं पाँच दिन बाद वापस न आऊँ, तो तुम वहीं लौट जाना, जहाँ से आये थे।" और बंदर ने सुरंग खोदनी शुरू कर दी।

छठे दिन बंदर लौट आया और बोला:

"मैंने सुरंग ठीक पिंजरे तक खोद दी है। पिंजरे में सात परदों के पीछे बुलबुल बैठी है। तुम सुरंग के आख़िर तक पहुंचकर उस समय तक इंतज़ार करो, जब तक पहरेदार सो न जाये और फिर तुरंत चिड़िया का पिंजरा उठाकर यहाँ ले आओ। पर पिंजरे पर से परदा बिल्कुल भी मत हटाना।"

बंदर की दी हुई सारी हिदायतें ध्यान में रखकर शाहज़ादा सुरंग में उतरा और उसके आख़िरी किनारे तक पहुँचकर इंतज़ार करने लगा।

जब दस के दस पहरेदार सो गये, तो शाहज़ादे ने दबे पाँव उनके पास से निकलकर चिड़िया का पिंजरा उठा लिया। उसे यह देखने की इच्छा हुई कि क्या यह वही अद्भुत चिड़िया है, जो उसके पिता के चिनार पर आकर बैठी थी। उसने जैसे ही पहला परदा उठाया, बुलबुल इतने मधुर और ऊँचे स्वर में गा उठी कि शाहज़ादा सम्मोहित-सा हो उठा और पिंजरा उसके हाथों से छूट गया।

पहरेदारों की नींद खुल गयी और वे शाहज़ादे को पकड़कर अपने बादशाह के पास ले आये।

बादशाह जल्लाद को बुलाकर बोला:

"चोर के दोनों हाथ कोहनी तक काट दो!"

वज़ीर बोला:

"थोड़ी देर ठहरिये। पहले हमें पता लगाना चाहिए कि इसे चिड़िया की ज़रूरत क्यों पड़ी।"

"ठीक है," बादशाह मान गया और शहज़ादे ने शुरू से लेकर आख़िर तक सारा क़िस्सा सुना दिया।

तब वज़ीर ने बादशाह से कहा:

"अगर हम चिड़िया के लिए इस बहादुर नौजवान को सज़ा देंगे, तो हमारी बड़ी बदनामी होगी। इससे अच्छा यह होगा कि इससे कोई कठिन काम कराया जाये।"

बादशाह मान गया और शाहज़ादे से बोला:

"तुम वहाँ जाओ, जहाँ सूरज डूबता दिखाई देता है। घोड़े पर नौ महीने के सफ़र के बाद तुम्हें एक शहर दिखाई देगा। वहाँ के बादशाह की एक बेटी है, जो सोने के संदूक़ में सोती है। अगर तुम लड़की को लाकर मुझे सौंप दोगे, तो मैं तुम्हें मीठी आवाज़वाली बुलबुल दे दूँगा!"

शाहज़ादे ने बंदर के पास पहुँचकर सारी बात उसे बतायी।

वे दोनों फिर घोड़े पर सवार होकर सफ़र पर चल पड़े।

नौ महीने के सफ़र के बाद अंत में वे एक बड़े शहर के पास आ पहुँचे। वे लोग मैदान में रुके और बंदर ने फिर सुरंग खोदनी शुरू कर दी। नौ दिन बाद वह अपना काम समाप्त कर शाहज़ादे के पास आया।

"मैंने शाहज़ादी के महल तक सुरंग खोद दी है," बन्दर कहने लगा। "चालीस सीढ़ियाँ चढ़कर, चालीस कमरे पार करके तुम एक छज्जे पर पहुँचोगे, वहीं तुम्हें चन्द्रमुखी सुंदरी मिलेगी। शाहज़ादी चालीस दासियों से घिरी अपने सोने के संदूक़ पर बैठी होगी। जब शाहज़ादी को नींद आती है, वह संदूक़ का ढक्कन उठाकर उसमें लेट जाती है। तुम पहले संदूक़ का ढक्कन उठाकर देख लेना कि शाहज़ादी की आंखें बन्द हैं या नहीं। अगर उसकी आंखें खुली हों, तो

तुम उसे उठा लाना और अगर उसकी आंखें बंद हों, तो उसे बिल्कुल मत छूना।"

शाहज़ादा सुरंग में उतरकर महल तक पहुँचा और चालीस सीढ़ियाँ चढ़कर, चालीस कमरे पार करके छज्जे में झाँका। उसने देखा ख़ूबसूरत शाहज़ादी अपनी चालीस दासियों से घिरी बैठी है। उसकी सुन्दरता देखकर कोई भी पागल हो सकता था। वह अपने संदूक़ में लेट गयी और उसकी दासियाँ भी उसके चारों ओर सो गयीं। शाहज़ादे ने संदूक़ का ढक्कन उठाकर देखा – शाहज़ादी की आंखें बंद थीं। उसे वापस लौट आना चाहिए था, पर वह सोचने-समझने की शक्ति खो बैठा।

शाहज़ादा बंदर की दी हुई चेतावनी भूल गया। वह शाहज़ादी को चूमने के लिए झुका। उसकी साँसों की गरमी से शाहज़ादी की नींद खुल गयी।

"ऐ, तुम्हें क्या चाहिए?" वह चिल्लायी।

दासियों की भी नींद खुल गयी और वे शाहज़ादे के हाथ बाँधकर उसे अपने बादशाह के पास ले आयीं।

बादशाह बहुत गुस्सा हुआ और उसने शाहज़ादे को फ़ौरन जान से मारने का हुक्म दे दिया।

पर उसका वज़ीर बोला :

"हुज़ूर! अगर हम इसे मार डालेंगे, तो सुबह तक हर छोटे-बड़े आदमी तक यह ख़बर पहुँच जायेगी और हमारी बहुत बदनामी होगी। अच्छा होगा कि इससे कोई कठिन काम कराया जाये।"

बादशाह मान गया और बोला :

"मैंने सुना है कि यहाँ से नौ महीने के सफ़र की दूरी पर एक क़ुलज़म नाम का समुद्र है और उस समुद्र में हीरों का द्वीप है। उस पर ओर्काज़ी नाम का जादूगर रहता है। उसके पास क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच* नाम का घोड़ा है। वह घोड़ा एक महीने का सफ़र पलक झपकते ही पूरा कर लेता है। तुम मुझे घोड़ा लाकर दे दो और मैं तुम्हें अपनी बेटी दे दूंगा।"

शाहज़ादा बंदर के पास आकर फूट-फूटकर रो पड़ा। बंदर उसको दिलासा दिलाने लगा :

"शाहज़ादे, तुम दुःखी मत होओ! अगर क़िस्मत ने हमारा साथ दिया, तो मैं तुम्हें क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच घोड़ा दिला दूँगा।"

और वे फिर सफ़र पर निकल पड़े।

कई पहाड़ और मैदान पार करके वे अंत में समुद्र तक आ पहुँचे।

शाहज़ादा समुद्र का अनंत विस्तार देखकर उदास हो उठा।

"हम समुद्र पार नहीं कर सकेंगे," वह बंदर से कहने लगा। "और यहीं मर जायेंगे।"

बंदर उसको तसल्ली दिलाने लगा।

"हर काम हिम्मत से करो! किसी बात से डरो नहीं!"

---

* क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच – काली अबाबील।

और बंदर ने समुद्र के नीचे सुरंग खोदनी शुरू कर दी। चालीस दिन और चालीस रात में उसने काम पूरा कर डाला और शाहज़ादे के पास लौट आया।

"मैंने घोड़े के अगले खुरों तक सुरंग खोद दी है। तुम सावधानी से सुरंग के मुंह में से सिर निकालकर देखना। क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच हिनहिनायेगा, जादूगर बिस्तर से उठकर बाहर आयेगा और घोड़े को मार लगाकर फिर सोने चला जायेगा। तुम फिर सिर बाहर निकालना, क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच फिर हिनहिनायेगा। जादूगर आकर घोड़े को मार लगायेगा और फिर सो जायेगा। फिर तुम दबे पाँव घोड़े के पास पहुँच जाना और वह हिनहिनाये उसके पहले ही उसके मुंह पर किशमिश से भरा थैला बाँध देना और कहना: 'ऐ, मेरे अच्छे घोड़े क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच! तुम कब तक इस दुष्ट की ग़ुलामी करते रहोगे और इसकी मार सहते रहोगे?' होशियारी से घोड़े को सहलाना। और बिना काठी, लगाम और गद्दी के ही उस पर सवार होकर सरपट भाग निकलना।"

बंदर की दी हुई हिदायतें अच्छी तरह याद करके शाहज़ादा सुरंग में उतरा और समुद्र के नीचे-नीचे घोड़े तक पहुँच गया। उसने सुरंग से सिर निकालकर देखा कि क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच कान खड़े किये, पूँछ उठाये हुए नाच रहा है।

अनजाने आदमी को देखकर घोड़ा ज़ोर से हिनहिना उठा। जादूगर उठकर आया। वह मीनार जितना ऊँचा था, उसके कंधे चिनार जैसे थे, मुँह गुफ़ा की तरह था, आंखें पुराने बोरों जितनी बड़ी थीं, नाक तंदूर जितनी बड़ी थी, बदन हाथी के समान था। उसके मुंह से आग निकल रही थी।

"अरे, बदमाश!" जादूगर घोड़े पर चिल्लाया। "अगर चिड़िया ने भी यहाँ पर मारा, तो उसके पर तत्क्षण जलकर गिर पड़ेंगे, और अगर आदमी ने यहाँ क़दम रखा, तो उसके पैर टूट जायेंगे। तुझे क्या आदमी की बू आ रही है?"

जादूगर ने घोड़े को चाबुक मारा और सोने चला गया।

शाहज़ादे ने फिर सिर बाहर निकाला। घोड़ा फिर हिनहिनाया। जादूगर फिर चाबुक लेकर आया और घोड़े पर चिल्लाने लगा:

"तू मर क्यों नहीं जाता! क्या तुझे फिर आदमी की बू आ रही है? चाहे ज़मीन के नीचे हो, चाहे आसमान में मुझसे बचकर न जा सकेगा। अगर मैंने उसे पकड़ लिया तो ज़िन्दा ही निगल जाऊँगा।"

घोड़े को चाबुक से बुरी तरह पीटकर जादूगर फिर चला गया।

शाहज़ादा फुरती से सुरंग से बाहर निकला और घोड़े के मुंह पर किशमिश से भरा थैला रखकर कहने लगा:

"मेरे प्यारे दोस्त, तुम कब तक इस जादूगर के ग़ुलाम बने रहोगे और इसकी मार सहते रहोगे?"

शाहज़ादे ने घोड़े को थपथपाया, उसके ऊपर सवार होकर एड़ लगायी और अपनी आंखें मींच लीं। क़ारा क़ाल्दीर्ग़ाच ने गरदन को एक झटका दिया और उसी क्षण उसके पंख निकल

आये। वह बाज़ की तरह आसमान में उड़ चला। घोड़े के खुरों में से बिजली कड़ककर जादूगर के माथे पर लगी और उसकी नींद खुल गयी।

"ठहर, ज़रा ठहर!" वह चिल्लाया। और अपने तेज़ पंजे निकालकर घोड़े के पीछे लपका। क़ारा क़ाल्दीर्गाच समुद्र की ओर मुड़ गया। जादूगर घोड़े को पकड़नेवाला ही था, पर जैसे ही उसने घोड़े की पूँछ को छुआ कि घोड़े ने उसके बहुत ज़ोर से लात मार दी। जादूगर का मुँह पुराने कपड़े की तरह चर से फट गया और वह पानी में गिरकर डूब गया।

घोड़े ने नौ महीने का सफ़र पलक झपकते ही पूरा कर लिया। शाहज़ादे को शहर दिखाई दिया और उसके पास उसने बंदर को देखा, जो बैठा हुआ अख़रोट तोड़-तोड़कर खा रहा था।

"अच्छा, अब क्या करें?" बंदर ने पूछा।

"बादशाह को क़ारा क़ाल्दीर्गाच देकर बदले में लड़की ले लेंगे," शाहज़ादे ने जवाब दिया।

"भला ऐसा घोड़ा किसी को दिया जाता है? मेरी बात सुनो! मैं कलाबाज़ी खाकर घोड़ा बन जाऊँगा। तुम बादशाह के पास दोनों घोड़े लेकर जाना, वह मुझे ही चुनेगा। फिर तुम लड़की को साथ लेकर चिड़िया लेने जाना!"

बंदर ने कलाबाज़ी खायी और एक इतने अच्छे घोड़े में बदल गया कि क़ारा क़ाल्दीर्गाच उसके सामने गधे से भी बुरा लग रहा था।

शाहज़ादा घोड़े लेकर महल पहुँचा। बादशाह ने अपनी खिड़की में से मखमल की तरह चिकने दोनों मुश्की घोड़ों को देखा।

"इस आदमी को बुलाओ!" बादशाह ने वज़ीर को हुक्म दिया। "हमें ऐसे घोड़े पसंद हैं। अगर वह बेचे, तो हम खरीद लेंगे।"

वज़ीर ने शाहज़ादे को बुलाया।

"तुम्हारे घोड़ों की क्या क़ीमत है?" बादशाह ने पूछा।

"मैं इन्हें बेचूँगा नहीं। एक घोड़े के बदले में तुम्हें अपनी बेटी देनी होगी!"

"अरे, बेवक़ूफ़! भला कोई घोड़े के बदले में लड़की देता है?"

तब शाहज़ादे ने बादशाह को क़ारा क़ाल्दीर्गाच के बदले में अपनी बेटी देने का वायदा याद दिलाया।

"अब हम क्या करें?" बादशाह ने वज़ीर से पूछा।

"बहादुर आदमी कभी अपने वायदे से मुकरता नहीं। प्राण जायें पर वचन न जाये। आपको अपना वायदा पूरा करना होगा।"

"एक घोड़े के बदले में सोना दूँगा और दूसरे के बदले में—बेटी। मैं दोनों घोड़े लूँगा!" बादशाह बोला।

पर शाहज़ादे ने जवाब दिया:

"एक घोड़े के बदले में तुम्हारी बेटी लूँगा और दूसरे पर सवार होकर वह शिकार पर जाया करेगी।"

बादशाह ने वज़ीर से पूछा:

5—231

"कौन-सा घोड़ा ज्यादा अच्छा है? तुम चुनो!"

वज़ीर को क़ारा क़ाल्दीर्शाच पसंद आया।

"अरे, बेवक़ूफ़! अच्छा घोड़ा तो यह है!" बादशाह ने घोड़ेरूपी बंदर की ओर इशारा किया और उसे चुन लिया।

बादशाह ने फिर अपनी बेटी को और, जिस संदूक़ में वह सोती थी, उसे भी लाने का हुक्म दिया।

बादशाह ने घोड़ेरूपी बंदर को ले जाकर अस्तबल में बाँधने का हुक्म दिया। पर घोड़े के कान खड़े हो गये, पूँछ तन गयी। वह लगाम की कड़ी चबा गया और अपने नज़दीक आनेवालों को काटने लगा, जो पीछे से उसके पास आता, उसके वह लात मारने लगा। इस तरह उसने किसी को अपने पास न फटकने दिया और न ही अपने को बाँधने दिया। बादशाह ने अस्तबल के फाटक पर आदमी के सिर जितना बड़ा ताला लगा दिया, और अस्तबल की छत पर चालीस सिपाहियों का पहरा बिठाकर स्वयं फाटक के पास ही सो गया। रात को घोड़ा फिर से बंदर हो गया और दीवार के छेद में से निकलकर भाग गया।

सुबह बादशाह ने झरोखे में से झांककर देखा, पर वहाँ घोड़े का कोई निशान भी बाक़ी नहीं बचा था। बादशाह छटपटाने लगा। उसने वज़ीर को बुलाकर सारा क़िस्सा सुनाया।

वज़ीर ने उसे सांत्वना दी:

"क़ारा क़ाल्दीर्शाच ओर्ज़ाक़ी जादूगर का घोड़ा था। और सारी भली-बुरी रूहें उस जादूगर के क़ब्ज़े में रहती हैं। कितने ही बादशाह उस घोड़े को पाने के लिए अपनी जानें गँवा बैठे! शायद, जादूगर ओर्ज़ाक़ी ने अपना घोड़ा वापस ले लिया है। यह अच्छा हुआ कि उसने आपको कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया। आप उदास मत होइये। आखिर आप अपनी बेटी की शादी शाहज़ादे के साथ कर रहे हैं और एक घोड़ा तो उसके पास रह ही गया।"

अब शाहज़ादे का हाल सुनिये।

जब वह उस बाग़ के नज़दीक पहुँचा जहाँ मीठी आवाज़वाली बुलबुल थी, तो उसने देखा कि बंदर दीवार के पास बैठा अखरोट तोड़-तोड़कर खा रहा है।

"अब क्या करें?" बंदर ने पूछा।

"हम लड़की बादशाह को सौंपकर बदले में मीठी आवाज़वाली बुलबुल ले लेंगे," शाहज़ादे ने जवाब दिया।

"वाह रे, नासमझ, कहीं चिड़िया के बदले में लड़की दी जाती है? मैं कलाबाज़ी खाकर लड़की बन जाता हूँ। मेरे मुक़ाबले में शाहज़ादी नब्बे साल की बुढ़िया से भी ज्यादा बदसूरत लगेगी। तुम हमें बादशाह के पास ले जाना और वह मुझे पसंद कर लेगा।"

"क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं लड़की को यहीं छोड़ जाऊँ और सिर्फ़ तुम्हें साथ लेकर चला जाऊँ?"

"नहीं। अच्छा यही रहेगा कि वह स्वयं चुन ले, जिससे बाद में पछताये नहीं।"

बंदर एक बहुत ही खूबसूरत लड़की में बदल गया। शाहज़ादे ने दोनों खूबसूरत लड़कियों को दो संदूक़ों में रखा और बादशाह के महल की ओर चल पड़ा।

वह वहाँ पहुँचकर रुक गया और भीख माँगने लगा। बादशाह ने उसे अपनी खिड़की में से देख लिया और अपने ख़ज़ानची को बुलाकर बोला:

"इस अजनबी को कुछ दे दो!"

पर वज़ीर बोला:

"महल के बाहर जो लड़का खड़ा है, वह भिखारी नहीं, बल्कि वही शाहज़ादा है, जिसे आपने खूबसूरत शाहज़ादी को लाने के लिए दूर देश भेजा था।"

बादशाह ने लड़के को बुलाकर पूछा:

"शाबाश, लड़के, क्या तुमने काम पूरा कर दिया?"

"जी हाँ," उसने जवाब दिया।

"पर लड़की कहाँ है?" बादशाह ने पूछा।

"आपने मुझसे एक लड़की लाने के लिए कहा था, पर मैं दो लेकर आया हूँ। आपको उनमें जो पसंद हो, उसे रख लीजिये, दूसरी मेरे पास रह जायेगी।"

दोनों संदूक़ खोले गये। दोनों लड़कियाँ एक-साथ छींक उठीं और खड़ी हो गयीं। बादशाह उनकी सुंदरता देखकर भौचक्का रह गया और उसकी मत बिगड़ गयी। लड़कियों को देखते ही जैसे उसके दिल में तीर-सा लगा। वह प्यार में पागल हो उठा और अपने दिल का चैन खो बैठा।

"इन दोनों में से कौन-सी लड़की चुनूँ?" उसने वज़ीर से पूछा।

वज़ीर ने शाहज़ादी की ओर इशारा किया। पर बादशाह को लड़कीरूपी बंदर ही पसन्द आया। उसे अपने पास रखकर बादशाह ने बदले में शाहज़ादे को मीठी आवाज़वाली बुलबुल दे दी।

शहर से बाहर आकर शाहज़ादा क़ारा क़ाल्दीर्गाच पर सवार हुआ। उसने एक घुटने पर संदूक़ में सोयी लड़की को रखा, दूसरे पर सोने के पिंजरे में बंद बुलबुल को और आगे चल पड़ा।

और बादशाह ने अपनी सारी प्रजा को बुलाकर इतनी धूमधाम से शादी की कि वैसी किसी ने न देखी होगी। जब दावत ज़ोरों पर थी, बंदर उठकर दीवार के छेद में से बाहर निकलकर ग़ायब हो गया।

अब शाहज़ादे का हाल सुनिये।

वह पुराने चिनार के पेड़ के पास पहुँचा, तो उसने देखा बंदर वहाँ बैठा अखरोट तोड़-तोड़कर खा रहा है।

"अब क्या करें?" बंदर ने पूछा।

"अब मैं अपने घर जाऊँगा," शाहज़ादा बोला।

"पहले मेरे घर चलो और वहां तीन-चार दिन रहकर फिर अपने घर जाना।"

"तुम्हारा घर तो पहाड़ में किसी दरार में होगा, मैं उसमें कैसे घुस सकूँगा?"

बंदर हँसने लगा:

"तुम्हें अभी तक पता नहीं कि मैं कौन हूँ! चलो मेरे साथ!"

शाहज़ादा बंदर के पीछे-पीछे चला। पहाड़ पार करने के बाद वे एक बड़े दरवाज़े के पास पहुँचे, जिसके ऊपर सुंदर नक़्क़ाशी पर सोने का काम था। दरवाज़े के अन्दर घुसे, तो एक ख़ूबसूरत बाग़ नज़र आया। बाग़ में गुलाब के फूल खिले थे, बुलबुलें गा रही थीं, पानी के ऊपर हरे-भरे तिपतिया लहरा रहे थे। आड़ू और तरह-तरह की रसदार बेरियाँ पककर ज़मीन पर गिर रही थीं। बाग़ के चारों कोनों में चार सोने के घर थे और हर घर में चालीस कमरे थे। हर कमरे में छोटी परियाँ बैठी लिखना-पढ़ना सीख रही थीं।

बंदर ने कलाबाज़ी खायी और एक सुंदर परी में बदल गया। शायद ही किसी माँ ने इतनी सुंदर बेटी को जन्म दिया होगा।

शाहज़ाहा इस ख़ूबसूरत बाग़ में तीन दिन रहा।

जब वह जाने लगा, तो परी ने अपने सिर का एक बाल तोड़कर उसे दिया।

"अगर तुम किसी मुसीबत में फँस गया, तो बाल का सिरा जलाना, मैं फ़ौरन आ जाऊँगी।"

"तुमने मुझ पर इतना अहसान और हर समय मेरी सहायता किस लिए की?" शाहज़ादे ने पूछा।

"तुमसे मिलने से पहले ही मुझे पता चल गया था कि सुनहले देश में एक क्रूर बादशाह रहता है; वह लोगों के मुंह का आखिरी कौर भी छीनकर एक बेशक़ीमती पेड़ बनवा रहा है। इस पेड़ के कारण वह सारे शहर को बरबाद कर देना चाहता है। बादशाह के तीन बेटे हैं। छोटा बेटा कहने लगा: 'अगर मेरे पिता ने पेड़ के कारण शहर को बरबाद कर दिया, तो लोग बेघर हो जायेंगे और बहुत बुरा होगा। मैं पेड़ के पत्ते तोड़नेवाली चिड़िया को पकड़ूंगा'। तब मैंने सोचा: 'अगर यह लड़का ग़रीब प्रजा के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा सकता है, तो मैं आराम से अपने तख़्त पर कैसे बैठी रह सकती हूँ।' और मुझे तब तक चैन नहीं मिला, जब तक कि सात साल बाद मैंने तुम्हें ढूँढ़ नहीं लिया।"

शाहज़ादा परी से विदा लेकर और उसे धन्यवाद देकर शाहज़ादी के साथ आगे चल पड़ा।

चलते-चलते वह उस जगह पहुँचा, जहाँ अपने भाइयों से अलग हुआ था। वह क़ारा क़ाल्दी-ग़ाँच को रोककर सोचने लगा। "मेरे भाई कहाँ हैं? मुझे जाकर उनका पता लगाना चाहिए।"

उसने लड़की और चिड़िया को एक गुफ़ा में छोड़ा और उस रास्ते पर चल पड़ा, जिस पर उसका बड़ा भाई गया था।

शाहज़ादे ने शहर में आकर देखा कि बड़ा भाई ढाबे में भट्टी जलाने का काम कर रहा है।

"अरे भई, सुनना!" शाहज़ादे ने ढाबे के मालिक को बुलाया। "सामनेवाली सराय में भट्टी जलानेवाले लड़के के हाथों मुझे खाना भिजवा दो।"

ढाबे के मालिक ने एक कटोरे में शोरबा डालकर बड़े भाई को दिया और उसके गाल पर एक ज़ोरदार तमाचा भी जड़ दिया।

"संभलकर ले जाना!" मालिक बोला।

बड़ा भाई शोरबा सराय में ले आया।

"तुम यहाँ बैठकर इसे खाओ!" छोटा भाई बोला।

"नहीं, नहीं, मालिक लड़ेगा।"

"नहीं लड़ेगा! बैठो, बैठो!"

जब बड़ा भाई खा चुका, तो छोटे ने पूछा:

"तुम कौन हो? कहाँ से आये हो?"

"मैं ढाबे में काम करता हूँ, यहीं पैदा हुआ था।"

"मुझसे मत छिपाओ। मैं तुम्हें पहचान गया हूँ। अगर तुम सच-सच बताओगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारे देश ले जाऊँगा।"

बड़ा भाई रोने लगा और उसने सारी आपबीती उसे सुना दी।

"अगर तुम्हें तुम्हारा छोटा भाई दिखाई दे, तो क्या तुम उसे पहचान लोगे?" शाहज़ादे ने पूछा।

"हाँ, पहचान लूंगा।"

"कैसे?"

"एक बार बचपन में जब हम छोटे थे, मैं घोड़े को पानी पिलाने के लिए नदी पर ले जा रहा था, तो वह मेरे पीछे पड़ गया और कहने लगा: 'मैं भी जाऊँगा।' घोड़े ने उसे लात मार दी और उसके बायें कंधे पर घोड़े के खुर का निशान रह गया।"

"तुमने अपने छोटे भाई की सैर कराकर उसका जी क्यों नहीं बहलाया?"

"वह मुझे अच्छा नहीं लगता था – इसी लिए उसे सैर नहीं करायी।"

"क्या तुम्हारे भाई के कंधे की चोट का निशान ऐसा ही था?" शाहज़ादे ने अपना बायाँ कंधा उघाड़कर उसे दिखाया।

बड़ा भाई फ़ौरन उसके पैरों में गिरा और फूट-फूटकर रोने लगा।

शाहज़ादे ने उसे उठाकर उसके आंसू पोंछे और उसे बाज़ार ले जाकर घोड़ा और बढ़िया कपड़े खरीदवाये। बड़ा भाई बन-ठनकर घोड़े पर बैठा और वे दोनों मंझले भाई को ढूंढ़ने निकले। पुलाव बेचनेवाले के यहाँ काम कर रहे मँझले भाई की हालत भी ढाबे में काम करने-वाले बड़े भाई से अच्छी नहीं थी।

मँझले भाई को ढूँढ़कर शाहज़ादे ने उसे भी घोड़ा और कपड़े खरीदवाये और वे तीनों अपने देश चल पड़े।

जब बड़े भाइयों ने देखा कि छोटा भाई पिता के लिए कितने अच्छे-अच्छे तोहफ़े ले जा रहा है, तो उन्हें उससे जलन हुई और वे वह सब भला भूल गये, जो छोटे भाई ने उनके साथ किया। रात को वे लोग छोटे भाई को मारने के बारे में आपस में सलाह करने लगे।

पर संदूक़ में लेटी शाहज़ादी ने उनकी सारी बातें सुन लीं।

जब वे लोग नदी के किनारे रात गुज़ारने के लिए रुके, तो लड़की ने शाहज़ादे को बुलाकर उसे सारी बातें बता दीं।

"तुम्हारे भाई तुम्हें जान से मार डालना चाहते हैं। तुम कहीं छिप जाओ।"

रात आयी। शाहज़ादा थोड़ी देर लेटा रहा और फिर क़ालीन पर मिट्टी डालकर, उसके ऊपर अपना लबादा उढ़ाकर कुछ दूरी पर जाकर छुप गया।

सुबह होने के पहले दोनों बड़े भाई आये और उन्होंने क़ालीन को चारों कोनों से पकड़कर नदी में फेंक दिया।

"अब जाकर घोड़ा, चिड़िया और लड़की भी हथिया लेते हैं," वे लोग बोले।

अचानक पानी में से छप-छप की आवाज़ आयी। उन्होंने देखा शाहज़ादा नदी के किनारे बैठा नहा रहा है।

अपनी योजना सफल न होने पर दुष्ट भाई बड़े निराश हुए और अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए बालू के एक टीले के पास आकर रुक गये। यहाँ पर उन्होंने एक तेज़ धारवाली तलवार बालू में गाड़ दी और स्वयं कुछ दूरी पर लेटकर कमर तक रेत में गड़ गये।

कुछ समय बाद छोटा भाई आया और पूछने लगा:

"आप लोग बालू में क्यों गड़े हुए हैं?"

"इस लिए कि कमर और पैरों में दर्द न हो," बड़ा भाई बोला। "आओ, हम तुम्हें भी गाड़ दें, तुम्हारे पैर कभी नहीं दुखेंगे।"

शाहज़ादा घोड़े से उतरा और उसके भाइयों ने उसे कमर तक रेत में गाड़ दिया। गरम रेत के कारण उसके पैर जलने लगे।

"अरे, भाई, रेत तो बहुत गरम है!" वह बोला।

"तुम अपने पैरों को हिलाओगे तो वह ठंडी हो जायेगी।"

छोटा भाई पैर हिलाने लगा और रेत में छिपी तलवार से उसके दोनों पैर घुटनों तक कट गये।

भाइयों ने शाहज़ादे की दोनों आंखें फोड़ दीं और लड़की, घोड़ा और चिड़िया लेकर वहाँ से भाग निकले।

पिता के पास पहुँचकर भाइयों ने सारे तोहफ़े उन्हें सौंप दिये।

बादशाह बड़ा खुश हुआ। उस लड़की को उसने अपने बड़े बेटे की मंगेतर घोषित करके हरम में भेज दिया और उसकी सेवा में चालीस दासियां लगा दीं, क़ारा क़ाल्दीर्गाच को उसने अपने अस्तबल में बंधवा दिया और मीठी आवाज़वाली बुलबुल को पिंजरे सहित अपने बहुमूल्य चिनार पर लटकवा दिया।

पर बुलबुल ने गाना बंद कर दिया और चोंच पंख में दबाये बैठी रही। क़ारा क़ाल्दीर्गाच जो सामने से उसके पास आता, उसे काटता और जो पीछे से आता उसके लात मारना शुरू कर देता, अपने पास किसी को भी फटकने नहीं देता। चालीस दासियों से घिरी हुई लड़की अपने सोने के संदूक़ में ही लेटी रहती और सिर उठाकर भी नहीं देखती।

अब शाहज़ादे का हाल सुनिये।

तीन दिन और तीन रात बाद उसे होश आया। उसे परी के दिये हुए बाल की याद आयी। बाल को जलाते ही परी अपने सोने के सिंहासन पर बैठी और अपनी दासियों से घिरी वहाँ आ पहुँची।

"ऐ, आदमी के बेटे, किसने तुम्हारा यह हाल किया है?" परी ने आते ही पूछा।

उसने अपनी दासियों को शाहज़ादे को अपने तख़्त पर बिठाकर उसे धरती के दूसरे कोने पर कोहेक़ाफ़ नाम के पहाड़ में अपने पिता के पास ले जाने के लिए कहा और उन्हें यह संदेश पहुँचाने का हुक्म दिया:

"इस आदमी को जीवनदायी सागर के पानी में डुबकी लगवाकर हमारे तरीक़े से इसका इलाज करना। चालीस दिन बाद जब यह ठीक हो जाये, तो इसे मेरे पास भेज देना। यह मुझे सगे भाई की तरह प्यारा है।"

परी की दासियाँ तख़्त पर बैठे शाहज़ादे को उड़ाकर कोहेक़ाफ़ में परी के पिता के पास ले आयीं।

चालीस दिन में शाहज़ादा स्वस्थ हो गया और पहले से भी ज़्यादा सुन्दर दिखने लगा।

"मैं इस हालत में तुम्हें तुम्हारे पिता के पास नहीं जाने दूँगी," परी ने कहा। "पहले मैं तुम्हें एक भिखारी का रूप प्रदान करूँगी और फिर वहाँ पहुँचाऊँगी। अगर तुम्हारे पिता ने उस लड़की की शादी तुम्हारे बड़े भाई के साथ कर दी है और उसे वहाँ का बादशाह बना दिया है, तो हम शहर में बिना घुसे ही वापस लौट आयेंगे; और अगर तुम्हारे पिता पहले की तरह राज कर रहे हैं, तो मैं तुम्हारी शादी उस लड़की के साथ करा दूँगी।"

परी ने तीन महीने तक शाहज़ादे को अपने यहाँ से नहीं जाने दिया। तीन महीनों में उसके बाल काफ़ी बढ़ गये, माथा ढकने लगे और नाख़ून बहुत लंबे हो गये। इसके बाद ही परी उसे अपने तख़्त पर बिठाकर उसके शहर उड़ चली।

तख़्त को शहर के बाहर छोड़कर परी शाहज़ादे का हाथ पकड़कर उसे बादशाह के महल में ले आयी।

बादशाह उस समय अपने वज़ीर के साथ बातचीत कर रहा था।

"मुझे दुःख के सागर में ग़ोते खाते हुए कितने महीने हो चुके हैं," बादशाह शिकायत करने लगा। "चिड़िया ने एक बार भी नहीं गाया, घोड़ा एक बार भी नहीं हिनहिनाया और लड़की कुछ भी नहीं खा रही है।"

अचानक उसे अपने महल में एक जवान मुसाफ़िर दिखाई दिया।

"अरे, यहाँ आना!" बादशाह ने चिल्लाकर आवाज़ दी।

शाहज़ादे ने मुड़कर तख़्त की ओर देखा, तो अपने भाइयों को पिता के दोनों ओर बैठा पाया।

जैसे ही शाहज़ादे ने तख़्त की ओर क़दम बढ़ाया कि बुलबुल इतनी मीठी आवाज़ में गा उठी कि दुनिया के सारे लोगों के दिल मोम की तरह पिघलने लगे।

शाहज़ादे ने दूसरा क़दम बढ़ाया, तो अस्तबल में बंधा क़ारा क़ाल्दीर्गाच बड़े ज़ोर से हिनहिना उठा। उसने तीसरा क़दम बढ़ाया, तो लड़की फ़ौरन अपने सोने के संदूक़ से बाहर निकली और सोने का साज़ लेकर अपनी चालीस दासियों से घिरी नाचने लगी।

बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ।

"ऐ, मुसाफ़िर, तुमने हमारी ख़ुशी वापस दिला दी!" बादशाह ने कहा और अशरफ़ियों से भरा थाल उसके सिर के ऊपर बिखेर दिया।

तब छोटा शाहज़ादा बोला:

"मैं कोई मुसाफ़िर नहीं हूँ, आप मीठी आवाज़वाली बुलबुल से पूछिये, वह आपको सब कुछ बता देगी।"

"तुमने कभी सुना है कि चिड़िया भी बोलती है?" बादशाह ने आश्चर्यचकित होकर कहा।

उसी क्षण मीठी आवाज़वाली बुलबुल आदमी की आवाज़ में बोल उठी और उसने शुरू से लेकर आख़िर तक सारी कहानी बादशाह को सुना दी।

तब बादशाह ने समझा कि उसके राज का आख़िरी समय आ पहुँचा है, क्योंकि प्रजा को जब मालूम पड़ा कि किसने शहर को मुसीबतों और बरबादी से बचाया है, तो वह तुरन्त छोटे शाहज़ादे के पीछे चट्टान की तरह खड़ी हो गयी।

निर्दयी बादशाह अपने बड़े बेटों के साथ शहर से भाग निकला।

शाहज़ादे ने चालीस दिनों तक अपनी प्रजा को शादी की दावत खिलायी। और परी ने विदा लेते समय उससे कहा: "तुम जब भी मुझसे मिलना चाहो, मेरा बाल जलाना, मैं फ़ौरन आ जाऊँगी।"

इस तरह प्रजा को बादशाह के अत्याचारों से मुक्ति मिली और शाहज़ादे की सारी इच्छाएं पूरी हुईं।

मैंने भी शाहज़ादे की शादी में डटकर पुलाव खाया, मूँछें और दाढ़ी घी में तर कीं और ख़ुशी-ख़ुशी घर लौट आया।

जहाँ चाह, वहाँ राह

बहुत समय पहले एक बूढ़ा रहता था। उसके पास सोने की तीन सौ अशरफ़ियाँ थीं। एक बार उसने अपने बेटे से कहा:

"अलीजान, तुम बड़े हो गये हो और मैं बूढ़ा हो गया हूँ। खुदा जाने मैं कितने और दिन इस दुनिया में रहूँगा, लेकिन मरने से पहले मैं तुम्हें व्यापार करना सिखा देना चाहता हूँ। ये सौ अशरफ़ियाँ लो और कल सौदागरों के क़ाफ़िले के साथ रवाना हो जाओ। परदेस में पैसा कभी बेकार मत खर्च करना, उससे कुछ सौदा खरीदकर लाना।"

यह सीख देकर बूढ़े ने अपने बेटे को सौदागरों के साथ रवाना कर दिया।

लड़का कुछ दिन पहले ही अठारह साल का हुआ था। वह एक भला और समझदार लड़का था। उसे व्यापार करना बिल्कुल भी अच्छा न लगता था, बल्कि वह कोई हुनर सीखकर अपनी मेहनत से जीना चाहता था।

पर अपने पिता के साथ बहस करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई और वह अशरफ़ियाँ लेकर सौदागरों के साथ चल पड़ा।

कुछ दिनों में कारवां एक बड़े शहर में पहुँचा और वे सब एक सराय में ठहरे।

उस शहर में एक बड़ा बाग़ था। उसी दिन शाम को अलीजान घूमने के लिए बाग़ में गया। बाग़ में घुसते ही उसने देखा कि हज़ारों रोशनियों के जलने से वहाँ दिन की तरह उजाला हो रहा है। पेड़ों के बीच में जाली से घिरे संगमरमर के चबूतरे पर खुली छत खंभों पर टिकी हुई थी और उसके ऊपर रंग-बिरंगे बेलबूटे बने हुए थे। फ़र्श पर क़ालीन बिछे थे जिन पर सोने-चाँदी और हीरे-मोतियों की चौकियाँ रखी हुई थीं और उनके ऊपर हीरे-जवाहरात के मोहरे रखे हुए थे। एक-से कपड़े पहने हुए सौ से ज़्यादा लड़के हर चौकी के पास दो-दो करके आमने-सामने बैठे हुए मोहरे चला रहे थे।

अलीजान भौचक्का हुआ जाली के सहारे खड़ा देखता रहा, वह किसी भी तरह इस अद्भुत खेल से अपनी नज़रें नहीं हटा पाया। वह इसी हालत में कई घंटों तक वहाँ खड़ा रहा।

बाग़ का एक नौकर उसे वहाँ खड़ा देखकर उसके पास आया और बोला:

"आप यहाँ क्यों मुंह बाये खड़े हैं?"

"ये लोग कौन हैं और क्या कर रहे हैं?" अलीजान ने घबराते हुए पूछा।

"ये सारे लड़के," नौकर ने जवाब दिया, "एक महीने से शतरंज खेलना सीख रहे हैं।"

"मैं किस तरह यह खेल सीख सकता हूँ?" अलीजान ने पूछा।

"सौ अशरफ़ियाँ देकर आप भी यह खेल सीख सकते हैं।"

अलीजान ने सौ अशरफ़ियाँ देकर खेल सीखना शुरू कर दिया।

थोड़े दिनों में ही अलीजान शतरंज इतने अच्छे ढंग से खेलना सीख गया कि अपने उस्तादों को भी मात देने लगा।

एक साल बाद खेल की शिक्षा समाप्त हुई और लड़के अपने-अपने घर जाने लगे। अलीजान उदास होकर सोचने लगा: "बिना पैसों के मैं कहाँ जाऊँ?"

उसके उस्ताद को उस पर दया आयी और उसने एक अशरफ़ी देकर वहाँ से गुज़रनेवाले एक क़ाफ़िले के साथ उसे भेज दिया। अलीजान खाली हाथ अपने पिता के पास पहुँचा। पिता बड़ा दुःखी हुआ। एक साल बीत गया। बूढ़े ने फिर अपने बेटे को बुलाकर काफ़ी हिदायतें दीं और अंततः सौ अशरफ़ियाँ देकर सौदागरों के एक कारवाँ के साथ भेज दिया।

कारवाँ उसी बड़े शहर में पहुँचा।

"इस बार मैं बिल्कुल भी फ़िज़ूलखर्ची नहीं करूँगा," अलीजान ने निश्चय किया।

शाम को वह टहलने निकला।

बाग़ के पास पहुँचते ही उसे बहुत ही कर्णप्रिय संगीत सुनाई पड़ा। उसने देखा, उसी जगह जहाँ उसने शतरंज खेलना सीखा था, लड़के बैठे हुए तरह-तरह के वाद्ययंत्र बजाना सीख रहे हैं।

अलीजान अपने पिता की दी हुई सीख बिलकुल भूल गया और सौ अशरफ़ियाँ देकर संगीत सीखने लगा।

थोड़े समय में ही वह इतने अच्छे ढंग से गाना-बजाना सीख गया कि अपने उस्तादों को भी मात देने लगा।

एक साल में पढ़ाई समाप्त हो गयी। अलीजान उदास हो गया: "अब किस मुँह से मैं अपने पिता के पास जाऊँ?" उसके शिक्षक को उस पर दया आयी और उसने उसे दो अशरफ़ियाँ देकर घर भेज दिया।

अलीजान अपने पिता के पास लौट आया। अपने बेटे के आने पर हालाँकि बूढ़ा खुश हुआ, पर उसने उसे पहले से भी ज्यादा डांटा-फटकारा।

एक साल बीत गया। बूढ़े ने अपने बेटे को बुलाकर अन्तिम सौ अशरफ़ियाँ उसके हाथों में रखीं और बोला:

"अगर तुमने ये अशरफ़ियाँ भी बेकार खर्च कर दीं, तो हम लोग बेघर हो जायेंगे और भूखों मर जायेंगे।" उसने अपने बेटे से वचन लिया कि यह रक़म वह केवल किसी सौदे को खरीदने में ही लगायेगा।

अलीजान फिर उसी बड़े शहर में पहुँचा। पहले वह हमाम में जाकर नहाया।

तरोताज़ा होकर हमाम से लौटते समय वह अपने जाने-पहचाने बाग़ के पास से गुज़रा, तो सोचने लगा: "एक मिनट झाँक लेने में क्या हर्ज है?"

सोचते-सोचते किस तरह वह बाग़ के अंदर पहुँचा, उसे कुछ याद नहीं रहा।

उसने देखा उसी संगमरमर के चबूतरे पर शिक्षक किताब में से कुछ पढ़ रहा है और लड़के बैठे अपनी कापियों में वे शब्द लिख रहे हैं।

अलीजान आश्चर्य में डूबा वहाँ काफ़ी देर तक खड़ा रहा। अंत में उसने फ़ैसला किया: "शतरंज खेलना मैं सीख चुका हूँ, संगीत भी सीख चुका हूँ, पर पढ़ना-लिखना मैंने अभी तक नहीं सीखा। चाहे मैं भिखारी ही क्यों न हो जाऊँ, पर पढ़ना-लिखना ज़रूर सीखूँगा।"

अलीजान ने सौ अशरफ़ियाँ दीं और पढ़ना-लिखना सीखने लगा। पहले की तरह इस बार भी वह सबसे अच्छा साबित हुआ और थोड़े दिनों में ही पढ़ना-लिखना अच्छी तरह सीख गया।

फिर उसके पास घर वापस लौटने के लिए पैसा नहीं बचा। शिक्षक ने उसे तीन अशरफ़ियाँ देकर घर भेजा। पर इस बार अलीजान को पिता के पास लौटने की हिम्मत नहीं हुई।

उसने एक दूर के शहर जानेवाले एक सौदागर के यहाँ नौकरी कर ली। सौदागर का सारा सामान ऊँटों पर लादा जा चुका था। सूरज निकलने के पहले ही कारवाँ रवाना हो गया।

कारवाँ कई दिन और कई रात तक रेगिस्तान में चलता रहा। उन्हें रास्ते में पानी के दर्शन कहीं नहीं हुए। अंत में वे एक कुएं के पास पहुँचे। कुआँ बहुत गहरा था और पानी उसके पेंदे में ही था।

सौदागर ने अपने नये नौकर को कुएं में उतरने का आदेश दिया। अलीजान ने कुएं के पेंदे में सही-सलामत पहुँचकर मशक में पानी भर लिया। अचानक उसे कुएं की दीवार में एक दरवाज़ा दिखाई पड़ा।

"इसका क्या मतलब हो सकता है?" यह सोचकर अलीजान ने दरवाज़ा थोड़ा-सा खोला। उसने देखा दरवाजे के पीछे एक बहुत बड़ा और रोशनीदार कमरा है और वहाँ क़ालीन के ऊपर एक देव सिर लटकाये उदास बैठा है। उसके हाथों में एक वायोलिन रखा था।

अलीजान डरा नहीं। उसने मशक दरवाज़े के पास छोड़ दी और दबे क़दमों से देव के पास पहुँचकर वायोलिन उठाकर बजाने लगा।

देव ने तारों की मधुर झंकार सुनकर आँखें खोलीं और चैन की साँस ली। उसने चारों ओर देखा, खड़ा हुआ और अलीजान के पास आकर उसके सिर पर हाथ फेरा।

"ऐ, आदमी, तुम यहाँ किस तरह पहुँचे?" देव ने पूछा।

अलीजान ने उसे सारी बात बता दी। फिर उसे कारवाँ की याद आयी और वह जल्दी से उठकर चलने लगा।

"तुम्हारी सबसे बड़ी इच्छा क्या है? उसे पूरा करने के लिए मैं सब कुछ करूंगा," देव ने कहा।

अलीजान ने आश्चर्यचकित होकर उसकी ओर देखा।

"मेरा इकलौता बेटा मर गया," देव कहने लगा। "उसे यह दुनिया छोड़कर गये हुए आज पाँचवाँ दिन है। मैं अकेला रह गया और इतना दुःखी हो चुका था कि मरने के लिए तैयार था। अपना दिल बहलाने के लिए मैंने वायोलिन उठाया, पर मुझे बजाना नहीं आता। अगर तुम कुछ घंटे बाद आये होते तो मुझे ज़िंदा न पाते। अपने जादूभरे संगीत से तुमने मुझे मौत

के मुँह में जाने से बचा लिया। तुम चाहो, तो मैं अपनी सारी धन-दौलत तुम्हें दे सकता हूँ!"

"इस कुएं से निकलने में मेरी मदद कीजिये," अलीजान बोला। "इस के सिवा मुझे कुछ और नहीं चाहिए।" और उसने फिर से वायोलिन बजाना शुरू कर दिया। देव ने उसे एक बोरी भरकर सोना दिया और बोला:

"अपनी आंखें मीच लो!"

अलीजान ने अपनी आंखें मीच लीं।

जब उसने आंखें खोलीं, तो अपने आपको कुएँ की जगत पर पाया। उसने चारों ओर देखा– कोई नहीं था, कारवाँ जा चुका था।

ऊँटों के पैरों के निशानों के सहारे-सहारे अलीजान कारवाँ से जा मिला। उसे देखकर सब अचंभे में पड़ गये और पूछने लगे कि वह किस प्रकार कुएँ से बाहर निकला। अलीजान ने उन्हें सारा क़िस्सा सुनाया और देव की दी हुई सोने से भरी बोरी भी दिखायी।

जब क़ाफ़िला आराम के लिए रुका, तो मालिक ने काग़ज़ के एक टुकड़े पर कुछ लिखा, उस पर अपनी मुहर लगाकर अलीजान को दिया और बोला:

"मेरी एक बहुत खूबसूरत बेटी है। मैं उसकी शादी तुम्हारे साथ कर दूँगा। तुम यह चिट्ठी लेकर कारवाँ से पहले मेरे घर पहुँचकर, शादी की सारी तैयारी कर लो, पर देखना, सोना गँवाना नहीं। तीन दिन में मैं भी घर पहुँच जाऊँगा।"

उसने अलीजान को एक तेज़ घोड़ा दिया और रास्ता भी समझा दिया।

अलीजान चलते-चलते सुस्ताने के लिए रुका। वह सोचने लगा: "मैंने सौ अशरफ़ियाँ खर्च करके पढ़ना-लिखना सीखा। ज़रा देख तो लूं, इस चिट्ठी में क्या लिखा है।"

उसने चिट्ठी खोलकर पढ़ी और काँप उठा।

सौदागर ने अपनी पत्नी को लिखा था:

"मेरी प्यारी पत्नी, मैं इस नौकर के साथ तुम्हें सोना भेज रहा हूँ। मैंने इससे झूठ कहा है कि मैं अपनी बेटी की शादी इसके साथ कर दूँगा। मिलते ही इसका सिर काट देना।"

अलीजान ने दूसरा काग़ज़ लेकर उस पर यह लिखा:

"मेरी प्यारी पत्नी, इस आदरणीय अतिथि का अच्छी तरह स्वागत करना और अपनी लड़की की शादी इसके साथ कर देना। शादी पर मेरा इंतज़ार मत करना। तुम्हारा पति।"

चिट्ठी बंद करके अलीजान आगे चला।

शहर पहुँचकर उसने सौदागर के घर का पता लगाया और पत्र उसकी पत्नी को दे दिया। पत्र पढ़कर उसने अतिथि का हार्दिक स्वागत किया।

दूसरे दिन ही बहुत धूमधाम से अलीजान की शादी सौदागर की लड़की के साथ कर दी गयी। दावत दो दिन तक चली।

तीसरे दिन एक तेज़ घोड़े पर सवार होकर अलीजान ने नौकरों को हुक्म दिया:

"मैं अपने व्यापार के काम से बाहर जा रहा हूँ। रात को दरवाज़ा किसी के लिए भी

मत खोलना, और अगर कोई दीवार पर चढ़ आये, तो उसे पकड़कर अच्छी तरह पीटना। यह तुम्हारे मालिक का हुक्म है।"

रात को सौदागर अपने क़ाफ़िले के साथ घर पहुँचा और दरवाज़ा खटखटाने लगा। उसे खटखटाते, आवाज़ देते दो घंटे हो गये, पर किसी ने दरवाज़ा नहीं खोला। तब वह दीवार फाँदकर अहाते में घुसा। नौकरों ने उसे फ़ौरन पकड़ लिया और पीट-पीटकर अधमरा कर दिया।

मालिक काफ़ी देर तक बेहोश पड़ा रहा और होश आने पर बड़ी मुश्किल से अपने कमरे तक पहुँचा। पत्नी के साथ दुआ-सलाम के बाद उसने पूछा:

"बताओ, तुमने उस आदमी का क्या किया जिसे मैंने चिट्ठी देकर तुम्हें भेजा था?"

"आपने जो लिखा था, मैंने वही किया," पत्नी ने जवाब दिया।

"और अशरफ़ियाँ कहाँ रखीं?" सौदागर की आँखें लालच से चमक उठीं।

"कौन-सी अशरफ़ियाँ?" पत्नी भौचक्की रह गई।

"मैंने तुम्हें लिखा तो था कि चिट्ठी लेकर आनेवाले को मार डालना और अशरफ़ियाँ निकालकर छिपा देना।"

"अरे, आपको हुआ क्या है? आपका दिमाग़ तो ठीक है? अपने दामाद को क्यों मार डालती?"

"कौन-सा दामाद?"

"अपनी बेटी का पति।"

"तुमने उसकी शादी कब कर डाली?"

"दो दिन हुए।"

मालिक ने अपना माथा ठोक लिया और अपनी पत्नी और नौकरों को कोसने लगा। "और वह खुद कहाँ है?" उसने दामाद के बारे में पूछा।

"सुबह घोड़े पर सवार होकर कहीं चला गया और दरवाज़ा खोलने के लिए मना कर गया। उसने कहा था कि अगर कोई दीवार फाँदकर घर में घुस आये, तो उसे पकड़कर पीटना," नौकरों ने जवाब दिया।

सौदागर समझ गया कि उसे अपने किये का फल मिल गया, इस लिए उसने अपने दामाद के साथ मेल करने का फ़ैसला किया।

अच्छा, अब सौदागर और उसकी पत्नी को यहीं छोड़िये और अलीजान का हाल सुनिये।

अलीजान काफ़ी देर तक घोड़ा दौड़ाता हुआ बड़े शहर में पहुँचा। उस दिन बाज़ार लगा हुआ था। मुनादी करनेवाला चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था:

"खल्क खुदा की, मुल्क बादशाह का। कान खोलकर ध्यान से सुनिये! जो कोई अपने आपको शतरंज का अच्छा खिलाड़ी समझता है, महल में आकर बादशाह के साथ खेले। जो लगातार तीन बाज़ियाँ जीत जायेगा, बादशाह उसे अपने तख़्त पर बैठा देगा। और जो लगातार तीन बाज़ियाँ हार जायेगा उसका सिर कटवा दिया जायेगा।"

अलीजान बादशाह के महल में पहुँचकर बोला कि वह बादशाह के साथ शतरंज की बाज़ी लगाना चाहता है।

खेल शुरू हुआ। पहली बाज़ी अलीजान हार गया, पर बाक़ी दोनों जीत गया। फिर खेल शुरू हुआ। बादशाह दो बाज़ी जीत गया और तीसरी हार गया। फिर बाज़ी शुरू हुई। इस बार अलीजान ने एक के बाद एक तीन मातें बादशाह को दे दीं।

बादशाह क्या करता, उसे अपना तख़्त अलीजान को देना पड़ा। बादशाह अपने तख़्त पर से उठा और सिर झुकाकर अलीजान से बोला:

"अब इस तख़्त पर तुम बैठोगे।"

"मैं बादशाह नहीं बनना चाहता। मैं अपने शहर लौटकर अपने लोगों को पढ़ना-लिखना और संगीत सिखाना चाहता हूँ।"

अलीजान पहले अपनी पत्नी को लेने गया और फिर उसके साथ अपने शहर में पिता के पास पहुँचा।

सारा क़िस्सा सुनकर पिता ने उसकी बहुत तारीफ़ की और ख़ुश होकर बोला:

"तुम वास्तव में बुद्धिमान हो! इतनी विद्याएं सीखकर तुम कितनी बार मौत के मुँह में जाने से बचे!"

"आदमी के लिए सत्तर विद्याएँ सीखना भी कम है!" बेटे ने जवाब दिया।

विद्वान गधा

एक बार एक गधा बाग़ में घुसा। उसने देखा – पेड़ों पर सेब लटक रहे हैं और पास के खेत में बेल की पतली-पतली शाखाओं पर कद्दू पक रहे हैं।

गधे ने एक बार फिर सेबों की ओर देखा, उसके बाद कद्दू की ओर और कान हिलाकर दु:खी स्वर में कहने लगा:

"कितने मूर्खतापूर्ण ढंग से बनाया गया है इस दुनिया को!"

पेड़ पर बैठी गौरैया ने पूछा:

"अच्छा, जनाब, यह बताइये कि आपको इस दुनिया के बनाने में किस चीज़ की कमी नज़र आ रही है?"

"क्या तुम ख़ुद नहीं देख रही हो?" गधे ने जवाब दिया और पहले सेबों की ओर इशारा किया, फिर कद्दूओं की ओर। "यह देखो: इतने ऊँचे पेड़ पर बच्चे की मुट्ठी के बराबर के

मीठे फल लगे हैं और यहाँ पतली-पतली शाखाओं पर मेरे सिर जितने बड़े-बड़े बेस्वाद कद्दू ज़मीन पर पड़े हैं।"

"इसी में तो सारी बुद्धिमानी है," गौरैया ने विरोध किया।

"भला, इसमें क्या बुद्धिमानी है?!" गधा चिल्लाया। "अगर सेब कद्दू जितना और कद्दू सेब जितना होता, तो मैं इसे बुद्धिमानी कहता।"

गधे ने सेब के पेड़ से अपना बदन रगड़ा और एक सेब टूटकर सीधा उसके सिर के ऊपर गिरा।

"हाय, मेरा सिर!" गधा रेंकने लगा।

गौरैया हँस पड़ी।

"अच्छा हुआ कि सेब कद्दू जितना बड़ा नहीं था, नहीं तो आपके सिर का कुछ भी न बचा होता।"

गधा हेंचू-हेंचू करता तुरंत सेब के पेड़ से दूर भाग गया।

चतुर बेटी

बहुत समय पहले एक बूढ़ा अपनी बारह साल की लड़की के साथ रहता था। संपत्ति के नाम पर बूढ़े के पास एक ऊँट, एक घोड़ा और एक गधा ही थे। बूढ़ा पहाड़ से लकड़ी काटकर शहर में बेचता और उसकी बेटी घर संभालती।

एक बार बूढ़ा अपने ऊँट पर लकड़ी लादकर बाज़ार पहुँचा। एक मोटा ज़मींदार उसके पास आया और पूछने लगा:

"लकड़ी क्या भाव बेचोगे?"

बूढ़े ने तीन तंगा* माँगे।

मोटा ज़मींदार बोला:

"तुम 'सारे' का दस तंगा लो और लकड़ी मेरे घर पहुँचा दो।"

बूढ़ा ख़ुशी-ख़ुशी लकड़ी लेकर मोटे ज़मींदार के घर पहुँचा।

बूढ़े को वायदे के अनुसार दस तंगा मिल गये। उसने लकड़ी ज़मीन पर डाली और जाने लगा।

अचानक मोटा ज़मींदार बोला:

---

* तंगा – चांदी का सिक्का।

"ऊँट यहीं बाँध जाओ!"

बूढ़ा चक्कर में पड़ गया:

"ऊँट तो मेरा है।"

"नहीं," मोटा ज़मींदार बोला। "मैंने सौदा ऊँट सहित 'सारा' खरीदा है। अगर ऐसा न होता, तो, भला, मैं तुम्हारे जैसे बेवक़ूफ़ को दस तंगा देता।"

वे लोग काफ़ी समय तक बहस करते रहे और अंत में निर्णय के लिए क़ाज़ी के पास पहुँचे।

क़ाज़ी ने बूढ़े से पूछा:

"क्या यह सच है कि तुम ने 'सारे' माल का सौदा किया था?"

"हाँ, पर मेरे ऊँट की क़ीमत तो तीन सौ तंगा है।"

"अब मैं कुछ नहीं कर सकता। ग़लती तुम्हारी है, तुम्हें 'सारे' का सौदा नहीं करना चाहिए था।"

क़ाज़ी ने ऊँट मोटे ज़मींदार को दिलवा दिया और बेचारा बूढ़ा आंखों में आँसू भरे अपने घर पहुँचा। उसने अपनी बेटी को इस बारे में कुछ नहीं बताया।

दूसरे दिन बूढ़ा अपने घोड़े पर लकड़ी लादकर फिर बाज़ार आया। मोटा ज़मींदार भी वहीं मौजूद था।

"लकड़ी क्या भाव है?"

"तीन तंगा।"

मोटा ज़मींदार बोला:

"'सारे' माल का दस तंगा दूँगा।"

बूढ़ा कल की बात बिलकुल भूल गया और उसने सौदा मंज़ूर कर लिया।

बूढ़े को घोड़े से भी हाथ धोने पड़े।

वह बहुत दु:खी होकर घर पहुँचा, पर बेटी को उसने फिर भी कुछ नहीं बताया।

तीसरे दिन बूढ़ा अपने गधे पर लकड़ी लादकर बाज़ार रवाना होनेवाला ही था कि बेटी बोली:

"पिता जी, कल आप बिना घोड़े के वापस लौटे थे और परसों बिना ऊँट के। आज लोग आपसे गधा भी छीन लेंगे। आज लकड़ी बेचने मैं जाऊँगी।"

बूढ़ा मान गया। लड़की लकड़ी गधे पर लादे बाज़ार पहुँची। मोटा ज़मींदार आया और पूछने लगा:

"लकड़ी क्या भाव है?"

लड़की ने तीन तंगा माँगे।

मोटा ज़मींदार बोला:

"'सारे' माल का पाँच तंगा दूँगा।"

लड़की बोली:

"आप क्या लकड़ी के बदले में 'सारा' एक साथ देंगे?"

"ठीक है, मुझे मंजूर है। लकड़ी लेकर मेरे घर आओ।"

ज़मींदार के घर पहुँचकर लड़की ने लकड़ी ज़मीन पर डाल दी और पूछने लगी:

"आपके गधे को कहाँ बाँधूँ?"

मोटे ज़मींदार ने उसे जगह बता दी।

लड़की ने गधा बाँधकर लकड़ी की क़ीमत माँगी।

मोटे ज़मींदार ने क़ीमत देने के लिए हाथ लड़की की ओर बढ़ाया ही था कि उसने फट से ज़मींदार का हाथ पकड़ लिया और कहने लगी:

"जब हमने सौदा तय किया था, तो आपने कहा था कि आप लकड़ी के बदले में 'सारा' एक साथ देंगे। अब मैं पैसे आपके हाथ सहित लूँगी।"

उनमें बहस होने लगी। शोरगुल सुनकर पड़ोसी दौड़े आये और उन दोनों को लेकर क़ाज़ी के पास पहुँचे।

क़ाज़ी ने बहुत घुमा-फिराकर बात की, मोटे ज़मींदार को बचाने के लिए हज़ारों चालें चलीं, पर लड़की अपनी बात पर अड़ी ही रही।

लोग चिल्लाने लगे:

"लड़की सच कहती है! लड़की चतुर है!"

क़ाज़ी ने काफ़ी देर सोचकर फ़ैसला किया:

"तुम अपना हाथ उसे दे दो।"

मोटा ज़मींदार रोने-चिल्लाने लगा:

"मैं बिना हाथ के जिंदा कैसे रहूँगा।"

"अच्छा, तो फिर हाथ के बदले में ५० अशरफ़ियाँ दो।"

मोटे ज़मींदार को गिनकर पचास अशरफ़ियाँ लड़की को देनी पड़ीं।

मोटे ज़मींदार से रहा नहीं गया और वह बोल उठा:

"अच्छा, आओ हम दोनों शर्त लगाते हैं। जो झूठ बोलने में बेहतर साबित होगा, हारनेवाला उसे पचास अशरफ़ियाँ और देगा।"

"ठीक है," लड़की बोली, "पर ज़मींदार साहब, आप मुझसे उम्र में बड़े हैं इस लिए आप ही शुरू कीजिये।"

मोटा ज़मींदार आराम से बैठ गया, खाँसा और बोलने लगा: "एक बार मैंने गेहूँ बोया। उस बार मेरी फ़सल इतनी अच्छी हुई कि जो भी मेरे खेत में ऊँट या घोड़े पर चढ़कर घुसता, तो दस दिन तक बाहर निकलने का रास्ता नहीं ढूँढ़ पाता। एक बार मेरे खेत में चालीस बकरे घुस आये और खो गये। जब गेहूँ पक गया, तो मैंने फ़सल काटने के लिए मज़दूर लगाये। गेहूँ काटा गया, गाह लिया गया, पर बकरों का कोई निशान भी नहीं मिला। एक बार मैंने अपनी पत्नी को रोटी पकाने के लिए कहा और खुद बैठकर क़ुरान पढ़ने लगा। जब रोटी पक गयी, तो मैंने एक टुकड़ा तोड़ा और खाने लगा। अचानक मेरे दाँतों के बीच में से 'में-में'

की आवाज़ आयी। फिर मेरे मुंह में से एक बकरा निकलकर भागा और उसके बाद एक-एक करके बाक़ी बचे ३९ बकरे भी भाग निकले। बकरे इतने मोटे हो गये थे कि हर बकरा चार साल के सांड़ जैसा दिखाई देता था।"

लड़की ने ताली पीटी और हँसकर बोली :

"बहुत अच्छे! आपने तो एक सच्चा क़िस्सा सुनाया। ऐसी घटनाएं तो दुनिया में रोज़ाना होती रहती हैं। अब आप मेरा क़िस्सा सुनिये। एक बार मैंने गाँव के बीचोंबीच ज़मीन खोदी और उसमें कपास का सिर्फ़ एक बीज बो दिया। आपके ख्याल से क्या पैदा हुआ?.. एक बहुत ही बड़ा पेड़, जिस की छाया गाँव के चारों ओर एक दिन के सफ़र के बराबर दूरी तक पड़ती थी। जब कपास पक गयी, तो मैंने उसको चुनने के लिए पाँच सौ हट्टी-कट्टी, फुर्तीली औरतें लगायीं। साफ़ की हुई कपास बेचकर मैंने चालीस बड़े ऊँट खरीदे और उन पर क़ीमती कपडों के थान लादकर अपने दो भाइयों के साथ बुखारा भेजा। तीन साल से मुझे उनकी कोई खबर नहीं थी। अभी कुछ दिन पहले ही मुझे उनके मारे जाने का बुरा समाचार मिला है। अब आप लोग ही फ़ैसला करें," उसने आस-पास खड़े लोगों से चिल्लाकर कहा। "इस मोटे ज़मींदार ने मेरे मंझले भाई का लबादा पहन रखा है, जिसे पहनकर वह बुखारा गया था। यानी, इसी ज़मींदार ने ही मेरे भाइयों की हत्या करके उनकी सारी चीज़ें और सारे ऊँट हथिया लिये!"

मोटा ज़मींदार दुविधा में पड़ गया : अगर वह लड़की की कहानी सच माने, तो उस पर हत्या का मुक़दमा चलाया जायेगा और उसका सिर काट दिया जायेगा, और अगर कहे कि उसकी बात झूठी है, तो शर्त के अनुसार उसे ५० अशरफ़ियाँ देनी होंगी।

उसने काफ़ी देर सोच-समझ लेने के बाद गिनकर पचास अशरफ़ियाँ लड़की को दे दीं, और बोला :

"मैं अपने जीवन में पहली बार बेवकूफ़ बना हूँ।"

और लड़की अपना ऊँट, घोड़ा और गधा लेकर हँसी-खुशी अपने पिता के पास चली गयी।

ताहिर और ज़ोहरा

पता नहीं सच है या झूठ, पर लोग कहते हैं कि बहुत समय पहले एक बादशाह राज करता था। उसके कोई संतान न थी।

एक बार जब वह उदास बैठा था, तो बड़ा वज़ीर उसके पास आया और पूछने लगा :

"सर्वशक्तिमान बादशाह, आपको क्या दुःख है? आपके पास धन-दौलत की कमी नहीं है, आपके सारे शहर और गाँव खुशहाल हैं, सब आपके अधीन हैं – फिर आपको क्या दुःख है?"

बादशाह बोला :

"मेरे बादशाह होने और मेरे पास धन-दौलत होने से क्या फ़ायदा, मरना तो मुझे निःसंतान ही पड़ेगा।"

एक ठंडी साँस लेकर वज़ीर ने भी कहा कि उसके भी कोई संतान नहीं है। वे दोनों एक दूसरे को अपना दुखड़ा सुनाते रहे और अंत में दोनों ने ही यात्रा पर जाने का निश्चय किया।

कई दिनों की लंबी यात्रा के बाद वे एक बहुत खूबसूरत बाग़ के पास पहुँचे। वे दोनों काफ़ी समय तक दीवार के सहारे भटकते रहे, पर उन्हें अंदर घुसने का रास्ता कहीं नहीं दिखाई दिया।

उस बाग़ में गुलाब के फूल खिले थे, बुलबुलें गा रही थीं, तरह-तरह के पौधों और फूलों की खुशबू चारों ओर महक रही थी। पेड़ों की छाया में घास के ऊपर मुलायम क़ालीन बिछे हुए थे और गुदगुदे तकिये लगे हुए थे। बाग़ ऐसा था कि उसमें घुसते ही आदमी अपना सारा दुःख-दर्द और चिंताएं भूल जाता।

अंत में उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिखाई दिया और वे जाकर क़ालीन पर बैठ गये। अचानक एक सफ़ेद दाढ़ीवाला फ़क़ीर बनात का सफ़ेद चोग़ा पहने उनके पास आया और पूछने लगा :

"बेटो, तुम्हें यहाँ किस काम से आना हुआ?"

बादशाह और वज़ीर उठ खड़े हुए और सिर नवाकर फ़क़ीर को सलाम किया।

आंखों ही आंखों में एक दूसरे से सलाह करके वे दोनों बताने लगे कि उनके कोई संतान नहीं है, इस लिए दुनिया के सारे सुख छोड़कर वे लोग सफ़र पर निकल पड़े हैं।

फ़क़ीर ने उनकी सारी राम-कहानी सुनी और फिर अपने चोग़े में से दो लाल सेब निकाल-कर एक बादशाह को दिया, दूसरा वज़ीर को और बोला :

"मेरे बच्चो, ये फल लो! इन्हें तुम दोनों अपनी-अपनी सबसे प्यारी पत्नी के साथ खाना। जाओ और अपना काम करो, ईमानदारी से रहो, न्यायपूर्वक राज करो : अपने देश

का ख़याल रखना, प्रजा को दु:ख मत देना। मेरी एक शर्त और है: तुममें से जिसके भी बेटा पैदा हो, वह उसका नाम ताहिर रखे और जिसके बेटी हो, वह उसका नाम ज़ोहरा रखे। उन्हें बचपन में कभी अलग मत करना और जब बड़े हो जायें, तो उनकी शादी कर देना। इस बात को कभी मत भूलना।"

यह कहकर फ़क़ीर चला गया। वज़ीर और बादशाह आश्चर्यचकित होकर एक दूसरे को देखते रह गये और फिर दोनों बोले:

"जैसा फ़क़ीर ने चाहा है, वैसा ही होगा!"

अपने घर लौटकर दोनों ने जैसा फ़क़ीर ने कहा था, वैसा ही किया। एक दिन के बाद दूसरा और एक महीने के बाद दूसरा बीतने लगे। दोनों की पत्नियाँ गर्भवती हुईं। बादशाह और वज़ीर ख़ुशी के मारे फूले न समाते, रात भर जागते रहते। वे बड़ी उत्सुकता से अपनी पहली संतान के जन्म की प्रतीक्षा करने लगे। एक बार वे दोनों शिकार करने निकले।

तीन दिन बाद वज़ीर की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया और बादशाह की पत्नी ने एक पुत्री को। एक हरकारा ख़ुशख़बरी सुनाने उनके पास भेजा गया।

"जहाँपनाह, मुझे इनाम दीजिये। आपकी पत्नी ने एक बेटी को जन्म दिया है!" हरकारे ने कहा।

फिर वह वज़ीर से बोला:

"और आप भी इनाम दीजिये। आपके बेटा पैदा हुआ है!"

बादशाह गुस्सा हो उठा। वह तो बेटा पैदा होने के सपने देख रहा था। गुस्से से पागल होकर उसने हरकारे के सामने एक सफ़ेद रूमाल फेंका और चिल्लाया:

"लड़की को फ़ौरन जान से मार डालो और यह रूमाल उसके ख़ून में भिगोकर, वापस लेकर आओ।"

और वज़ीर ख़ुशी के मारे हवा में उड़ता हुआ-सा अपने घोड़े पर घर की ओर दौड़ा।

ठीक घर के सामने ही उसके घोड़े को ठोकर लगी, वज़ीर सिर के बल पत्थर पर गिरा और वहीं मर गया।

वज़ीर की पत्नी के बुरे दिन आ गये। बेटा अपने पिता को कभी न देख पाया। माँ ने बड़ी कठिनाइयों का सामना करते हुए रोते-धोते किसी तरह अपने बेटे का पालन-पोषण किया।

दिन बीतने लगे। लड़का बड़ा हुआ और घर के बाहर खेलने जाने लगा। एक दिन बादशाह ने उसे देख लिया।

"यह किसका लड़का है?" उसने अपने नये वज़ीर से पूछा। वज़ीर सिर झुकाकर बोला:

"जहाँपनाह, यह आपके स्वर्गीय वज़ीर का लड़का है। इसका नाम ताहिर है। अगर आपकी बेटी ज़िंदा होती, तो आज वह भी इतनी ही बड़ी होती।"

यह सुनकर बादशाह बड़ा पछताया और अपना माथा ठोक लिया।

"मैं कितना बदक़िस्मत हूँ! मैंने क्यों उसे मार डालने का हुक्म दिया!" यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा।

वज़ीर ने बादशाह से कुछ नहीं कहा, पर उसी दिन वह जनानखाने में गया और वहाँ की एक नौकरानी को बुलाकर पूछा:

"बादशाह की लड़की का क्या हुआ?"

"आप बादशाह को कुछ मत बताइये," नौकरानी बोली, "उनकी बेटी ज़िंदा है। वह अब बड़ी हो गयी है और ख़ूबसूरत भी।"

वज़ीर भागा-भागा बादशाह के पास आया।

"जहाँपनाह, अगर मेरी जान बख़्शी जाये, तो मैं आपको एक ख़ुशख़बरी दूँ!"

"बोलो!" बादशाह ने जवाब दिया।

"मेरे हुज़ूर, आप दुःखी न हों, आपकी बेटी ज़िंदा है।"

बादशाह बड़ा ख़ुश हुआ और बोला:

"उसे फ़ौरन मेरे पास लेकर आओ!"

लड़की को तुरंत बादशाह के पास लाया गया। बादशाह ने बेटी को सीने से लगा लिया और चालीस दिन और चालीस रात तक सब लोगों को दावत खिलाई।

इस बीच ताहिर बड़ा होता रहा। उसे दीन-दुनिया की कोई ख़बर न थी। एक बार वह आंगन में खेल रहा था। खेलते-खेलते उसने अपना डंडा उछाला और वह धूप में बैठी सूत कातती हुई बुढ़िया के चरखे में जा फंसा। बुढ़िया गुस्सा होकर बोली:

"अरे, बिनबाप के ताहिर! मेरे साथ खेलने से तो अच्छा होता कि तू अपनी मंगेतर ज़ोहरा के साथ जाकर खेलता।"

ताहिर ने भागकर बुढ़िया का हाथ पकड़ लिया,

"दादी, आपने ज़ोहरा का नाम लिया, वह कौन है?"

"अरे, अनाथ, मेरा हाथ छोड़ दे! हाथ छोड़, मैं बताती हूँ!"

"मेरी प्यारी दादी, बताओ ना!" ताहिर बुढ़िया को मनाने लगा।

"तू अपनी माँ से पूछ!"

ताहिर ने माँ के पास जाकर पूछा:

"मेरी मंगेतर कौन है? सच-सच बताओ!"

"हालाँकि तुझे बताना नहीं चाहिए था, पर अब मैं क्या करूँ, बता ही दूंगी।"

और माँ ने उसे सारी कहानी सुना दी कि किस तरह ताहिर के पिता और बादशाह बहुत दिनों तक निःसंतान रहे। कैसे उन्होंने एक दूसरे के यहाँ बेटा और बेटी पैदा होने पर उनकी आपस में शादी कर देने का वायदा किया और कैसे ताहिर के पिता उसके पैदा होने के दिन ही घोड़े से गिरकर सिर फट जाने से मर गये।

"अब तुझे ज़ोहरा कभी नहीं मिल सकेगी," माँ बोली। "वह शहज़ादी है और तू अब एक अनाथ और ग़रीब लड़का है।"

"कोई बात नहीं, माँ, मैं बस यही जानना चाहता था।"

और उसी दिन से ताहिर ज़ोहरा के साथ खेलने लगा।

दिन बीतते रहे। दोनों बड़े हुए और पढ़ने जाने लगे। पर पढ़ने के बजाय ताहिर सारे समय ज़ोहरा से ही बात करता रहता।

शिक्षक ने जाकर बादशाह से शिकायत की:

"जहाँपनाह, क्या करूँ? ताहिर आपकी बेटी ज़ोहरा को पढ़ने ही नहीं देता है।"

बादशाह बहुत गुस्सा हुआ और उसने हुक्म दिया:

"उन दोनों के बीच में एक दीवार खड़ी कर दो!"

शिक्षक ने बादशाह के हुक्म के अनुसार दीवार खड़ी कर दी। पर उसी दिन ताहिर ने दीवार में एक छेद कर दिया और ज़ोहरा से फिर बातें करने लगा।

ताहिर और ज़ोहरा एक दूसरे के बिना एक दिन भी न रह पाते थे। और जब वे बड़े हुए, तो दोनों के दिलों में प्यार की लौ भड़क उठी।

जब बादशाह को इस बात का पता चला, तो वह आग-बबूला हो गया। उसने कारीगरों को बुलाकर हुक्म दिया:

"एक संदूक़ बनाओ! और उस संदूक़ में ताहिर को बंद करके नदी में बहा दो!"

ज़ोहरा को जब बादशाह के हुक्म का पता चला, तो वह एक थाल में सोना भरकर कारीगरों के पास आयी और आंखों में आंसू भरकर उन्हें मनाने लगी।

"यह सोना ले लो! कम लगे – और मांग लेना! पर संदूक़ इतना मज़बूत बनाना कि उसमें पानी न जा सके और इतना बड़ा बनाना कि ताहिर सांस ले सके! कम-से-कम कुछ दिन तो बेचारा अनाथ ज़िंदा रह सके!"

कारीगरों को ज़ोहरा पर दया आयी और वे उसे दिलासा दिलाने लगे:

"अगर संदूक़ उससे अच्छा नहीं बना, जैसा कि आप चाहती हैं, तो हम सारा सोना आपको वापस लौटा देंगे।"

और वे वैसा ही संदूक़ बनाने लगे। थोड़े दिनों में उन्होंने बादशाह को ख़बर भिजवायी कि संदूक़ तैयार है। अपना चेहरा ढककर, ज़ोहरा संदूक़ देखने आयी। और वास्तव में संदूक़ जैसा उसने चाहा था, उससे भी ज़्यादा अच्छा और मज़बूत बना था।

दूसरे दिन बादशाह ने सारे देश में मुनादी करवाकर शहरों और गाँवों के लोगों को बुलवाया। जब सब लोग इकट्ठे हो गये, तो बादशाह महल में से निकला और बोला:

"हमने ताहिर को मौत की सज़ा सुनायी है! आज उसे संदूक़ में बन्द करके नदी में फेंक दिया जायेगा। नदी जहाँ चाहे उसे बहा ले जाये!"

लोगों को ताहिर पर बड़ी दया आयी, पर किसी ने चूँ भी न की, क्योंकि सभी निर्दयी बादशाह से डरते थे।

मर्द और औरतें, बूढ़े और बच्चे – सभी नदी के किनारे जमा हो गये। मुसीबत की मारी ताहिर की माँ भी आयी। वह किनारे की रेत पर गिर गयी और उसकी आंखों से आँसुओं की धारें बहने लगीं।

लोग घबरा उठे, भीड़ में से कुछ लोग चिल्लाने लगे:

"माँ की हाय बादशाह को लगे!"

"आज तक किसी आदमी को किसी औरत से प्यार करने के लिए मौत की सज़ा नहीं दी गयी!"

"बादशाह का यह ज़ुल्म कभी माफ़ नहीं किया जायेगा!"

अचानक मुनादी करनेवाले की आवाज़ गूंजी कि जल्लाद ताहिर को ला रहे हैं।

चीख़-पुकार बंद हो गयी, लड़के को देखकर लोग बेज़बान हो गये। सिर्फ़ अभागी माँ की दर्दभरी आवाज़ सुनाई पड़ी:

"मुझे कम-से-कम आख़िरी बार तो अपने बेटे को देख लेने दो!"

हाथ-पैर बँधे हुए ताहिर को माँ के पास लाया गया। माँ ने आंसू बहाते हुए अपने बेटे को गले लगाया, उसके पैरों से लिपट गयी और एक चीख़ मारकर वहीं मर गयी।

भीड़ में से रोने-चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं। जल्लादों ने ताहिर को पकड़कर जल्दी से संदूक़ में बंद कर दिया। अपनी प्यारी ज़ोहरा को वह चिल्लाकर बस इतना ही कह पाया:

"अगर मैं ज़िंदा रहा, तो तुम्हें प्यार करता रहूँगा! अगर मर गया, तो भी तुम्हें प्यार करता रहूँगा!"

ज़ोहरा भी जवाब में केवल इतना ही कह पायी:

"मैं भी तुम्हें कभी नहीं भूलूंगी!"

उसी वक़्त संदूक़ बन्द करके नदी में बहा दिया गया।

संदूक़ कई दिनों तक नदी में बहता रहा। दिन के बाद रात आयी और रात के बाद दिन। अंत में वह संदूक़ ख़्वारज़्म नाम के शहर के किनारे आ लगा।

ख़्वारज़्म के बादशाह की दो बेटियाँ थीं। उस दिन वे अपनी दासियों के साथ नदी में नहाने आयी थीं। उन्होंने संदूक़ को नदी में बहते देख लिया।

संदूक़ किनारे के और नज़दीक आ गया था। बादशाह की बड़ी बेटी ने पानी में घुसकर अपनी चोटियों में संदूक़ को बाँधने की कोशिश की, पर वह उसे बाँध नहीं पायी। उसके पीछे बादशाह की छोटी बेटी नदी में घुसी और अपनी लम्बी चोटियों में संदूक़ को बांधकर किनारे पर घसीट लायी।

दोनों बहनों में बहस होने लगी कि अकस्मात् पायी हुई चीज़ किसे मिले।

काफ़ी देर तक बहस करने के बाद उन्होंने फ़ैसला किया कि बड़ी बहन संदूक़ लेगी और छोटी बहन उसमें रखी हुई चीज़ें।

उन्होंने सन्दूक़ खोला, तो इतने सुंदर युवक को उसमें पाया, जिसकी सुंदरता के आगे सूरज भी पानी भरता था। उसके घुंघराले बाल कंधों पर गिर रहे थे, भौंहें कमान की तरह तनी थीं और आंखें अंगारों की तरह चमक रही थीं। ऐसे सुंदर युवक को देखकर तो हर बादशाह की बेटी मर मिटती।

उसको देखकर दोनों बहनों में फिर बहस होने लगी:

"यह मेरा होगा!"

"नहीं, मेरा!"

छोटी बहन बोली:

"नहीं, क्योंकि यह संदूक के अन्दर था, यानी मेरा हुआ! मैं इसे किसी को भी नहीं दूंगी!"

इसी बीच नौकरानियाँ भागी-भागी बादशाह के पास पहुँचीं और उसे सारा क़िस्सा सुनाया।

"हुज़ूर, आपकी बेटियों को नदी में एक संदूक बहता हुआ मिला है। उस संदूक से एक इतना खूबसूरत लड़का निकला, जिसकी खूबसूरती के आगे सूरज भी फीका लगता है! आपकी छोटी बेटी उसके साथ शादी करना चाहती है। आपको उससे बेहतर दामाद कभी नहीं मिलेगा!"

बादशाह ने खुशखबरी के लिए अपने वफ़ादार नौकरों को इनाम दिये और अपने वज़ीर के साथ भागा-भागा नदी के किनारे पहुँचा। उसने देखा, लड़का तो जितना बताया गया था, उससे भी ज्यादा सुंदर है। बादशाह ने ताहिर का अपने सगे बेटे की तरह स्वागत किया और कुछ दिनों बाद उसकी शादी अपनी छोटी लड़की के साथ कर दी। शादी की दावत चालीस दिन और चालीस रात तक चली।

बादशाह की बेटी ज़ोहरा से भी ज्यादा खूबसूरत थी। पर ताहिर अपनी मंगेतर को दिया हुआ वचन भूला नहीं था। उसे शहज़ादी की खूबसूरती देखने की भी इच्छा नहीं हुई। वह उससे एक शब्द भी नहीं बोला।

बेचारी शाहज़ादी रात भर रोती रहती और बार-बार अपने से पूछती रहती:

"वह क्यों मुझे प्यार नहीं करता है? क्यों मुझसे एक शब्द भी नहीं कहता है?"

उसने ताहिर से पूछताछ करने की कोशिश भी की, पर ताहिर ने उसे कोई जवाब नहीं दिया।

इस तरह चालीस दिन बीत गये। इकतालीसवें दिन ताहिर शाहज़ादी से बोला:

"आप पिताजी से कह दीजिये कि मैं नदी के किनारे जाना चाहता हूँ।"

शाहज़ादी ने अपने पिता के पास दौड़कर खुशखबरी पहुंचाई, "ताहिर बोलने लगा। वह नदी के किनारे जाकर बैठना चाहता है!"

यह ख़बर सुनकर बादशाह बड़ा खुश हुआ। उसने नदी के किनारे जशन मनाने का हुक्म दिया। जशन में बहुत-से लोग आये। नदी के किनारे एक ऊँची जगह पर ताहिर के लिए मुलायम क़ालीन बिछवा दिये गये, तरह-तरह के पकवान परोसे गये।

थोड़ी देर बाद ताहिर वहाँ पहुँचा। उसके चेहरे पर उदासी छायी थी।

"जो भी सबसे पहले मेरे दामाद को हँसते हुए देखेगा, उसे मैं सिर से पैर तक सोने से ढक दूँगा!" बादशाह ने एलान कराया और अपने वज़ीरों के साथ महल वापस आ गया।

पर ताहिर उदास हुआ बैठा, खोयी-खोयी आंखों से नदी को ही देखता रहा।

उसे वहाँ बैठा छोड़कर अब ज़ोहरा का हाल सुनिये।

ताहिर से जुदाई के बाद ज़ोहरा रात-दिन उसकी याद में तड़पती रहती थी। कुछ दिनों

बाद उसके निर्दयी पिता ने एक बादशाह के बेटे क़ारा बातिर के साथ उसकी शादी कर दी। इसी दिन से ज़ोहरा की ज़िंदगी में ग़म के अलावा और कुछ न रहा।

दिन बीतते गये। एक बार ज़ोहरा को एक सपना दिखाई दिया।

सपने में ज़ोहरा को लगा जैसे वह ताहिर के साथ एक ख़ूबसूरत बाग़ में घूम रही है। ज़ोहरा की नींद खुल गयी और वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

"क्या मेरा प्रियतम ज़िंदा है? काश, कोई उसकी ख़बर लाकर मुझे देता!" सोचते-सोचते उसका दिल दु:खी हो उठता।

दूसरे दिन ज़ोहरा एक थाल पूरा सोने से भरकर सराय में पहुँची। सोना उसने कारवां के सरदार को दिया और उसकी मिन्नत करने लगी:

"आप तो सारी दुनिया में घूमते हैं, हर तरह के लोगों से मिलते हैं। आप ताहिर को ढूंढ़कर, उसकी ख़बर लाकर मुझे दीजिये! या कम-से-कम यही पता लगाइये कि वह ज़िंदा है या नहीं!"

"ठीक है!" सरदार मान गया। और वह अपने ऊंट पर सवार होकर ताहिर को ढूंढ़ने निकल पड़ा।

वह कई दिनों तक गाँव-गाँव, शहर-शहर में जाकर ताहिर को ढूंढ़ता रहा, पर उसे वह कहीं नहीं मिला।

एक दिन सरदार नदी के किनारे पहुँचा। उसने वहाँ एक ख़ूबसूरत नौजवान को उदास बैठे देखा। उसके चारों ओर लोग खुशियाँ मना रहे थे।

"मैं एक गीत गाकर देखता हूं! शायद, यही ताहिर हो," सरदार ने अपने मन में सोचा और गाने लगा:

मैं सरदार कारवां का
भटकता देश देश,
ढूंढ़ता तुम्हें, ताहिरजान
तुम कहां हो, ताहिरजान?

अपना नाम सुनकर ताहिर मुस्कराया और जवाब में बोला:

ऐ, मेरे कारवां के सरदार!
कर दो मुखर स्वर फिर से
वही एक बार।
तुम्हारे सामने खुद बैठा है ताहिरजान।
नज़र उठाकर देखो तो एक बार।

यह पता लगाने के लिए कि यह वही ताहिर है या और कोई, सरदार ने अपना गीत फिर छेड़ा:

सुनकर नाम ज़ोहरा का,
गले से कौर उतर नहीं सकता।
सामने दस्तरख़ान के ताहिरजान
ख़ामोश बैठ नहीं सकता।

जैसे ही सरदार ने ज़ोहरा का नाम लेकर गीत गाया, ताहिर उठकर भागा और उसके ऊँट की गर्दन से लिपट गया और आंखों में आंसू भरकर मिन्नत करने लगा:

"मुझे ज़ोहरा के पास ले चलो। मैं उसे कम-से-कम एक बार तो देख लूँ!"

"ज़ोहरा की शादी क़ारा बातिर के साथ कर दी गयी है," सरदार ने जवाब दिया। "अब आपको उसे देखने से क्या फ़ायदा? और आप भी इतने दिन यहाँ रह चुके हैं, शायद, आपकी भी शादी हो गयी है। आप जाकर क्या करेंगे? बेहतर होगा, आप यहीं रहें! मुझे सिर्फ़ इतना मालूम करना था कि आप ज़िंदा हैं या नहीं।"

"यहाँ मेरी शादी बादशाह की बेटी के साथ कर दी गयी!" ताहिर ने जवाब दिया। "मेरी शादी हुए चालीस दिन हो चुके हैं, पर मैं एक बार भी अपनी पत्नी से न ही बोला हूँ, न ही मैंने उसकी ओर नज़र उठाकर देखा है। मुझे ज़ोहरा के पास ले चलो।"

सरदार मान गया:

"ठीक है, मैं आपको ले चलता हूँ। पर पहले जाकर अपनी पत्नी से विदा लेकर आइये। आख़िर, वह आपको प्यार करती है, इसी लिए तो उसने आपसे शादी की है। उसका दिल नहीं दुखाना चाहिए।"

ताहिर महल में पहुंचा और एक पैर देहरी के अन्दर और दूसरा बाहर रखे-रखे ही बोला:

"ऐ, शाहज़ादी! आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, पर आज मुझे ज़ोहरा की ख़बर मिली है और मैं अभी उसके पास जाना चाहता हूँ।"

शाहज़ादी ने पूछा:

"क्या नदी आपको मेरे पास बहाकर नहीं लायी थी? क्या इतनी दूर रहनेवाली ज़ोहरा मुझसे ज़्यादा सुंदर है?"

"इसमें कोई शक नहीं कि नदी मुझे बहाकर आपके पास लायी थी। आप बहुत सुन्दर हैं, पर ज़ोहरा दूर रहकर भी मेरे दिल के ज़्यादा क़रीब है!" ताहिर ने कहा और सिर झुकाकर वहाँ से निकल आया।

कारवाँ के सरदार के साथ ऊँट पर सवार होकर वे दोनों उसी वक़्त वहाँ से चल दिये।

काफ़ी देर तक चलते रहने के बाद वे ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ रास्ता तीन दिशाओं में बंटता था। एक बड़ा पत्थर उनका रास्ता रोके हुआ था। उस पत्थर पर लिखा था: "दायीं

ओरवाले रास्ते पर जानेवाला वापस नहीं लौटेगा, बायीं ओर जानेवाले रास्ते का अंत नहीं है, सीधा जानेवाला रास्ता खतरनाक है।" सरदार सोचने लगा: "कौन-सा रास्ता चुनूं?"

"सीधे जानेवाले रास्ते पर चलते हैं," ताहिर बोला। "हालांकि यह रास्ता खतरनाक है, पर सीधे रास्ते से हम ज़ोहरा के पास ज़्यादा जल्दी पहुँच सकेंगे।"

और वे सीधे जानेवाले रास्ते पर चल पड़े। उनके रास्ते में एक शहर पड़ा। उस शहर के लोग थोड़ी देर पहले हिरासत से भागे हुए दो चोरों को ढूंढ़ रहे थे। ताहिर और कारवाँ के सरदार को देखते ही उन्होंने समझा ये ही वे चोर हैं और उन्हें बाँधकर काल-कोठरी में डाल दिया।

काल-कोठरी में बंद ताहिर रात-दिन तड़पता रहा। उसकी प्यारी ज़ोहरा अब ज़्यादा दूर नहीं थी, पर मज़बूत दीवारें और लोहे के दरवाज़े पार करके वह किस तरह उसके पास पहुँचता। सोचते-सोचते ताहिर को एक चाल सूझी: "मैं इस तरह गाऊँगा कि लोग मेरी आवाज़ सुन लें। शायद; कोई मुझे पहचान ले और मुझे क़ैद से छुटकारा दिला दे!"

और उसने गाना शुरू कर दिया:

रवि-शशि की बांहें थामे
मैं तुझसे मिलने आता था।
लेकिन भाग्य ने उल्टा खेल खिलाया
काल-कोठरी में जा पहुंचाया।
बिन ताहिर के ज़ोहरा तड़पे,
इधर मैं भी तड़प रहा हूं, हाय!*

वह यही गीत रोज़ाना गाता रहा। एक दिन उसका गीत एक सौदागर को सुनाई पड़ा, जो बचपन में ताहिर के साथ एक ही शिक्षक के पास पढ़ने जाता था।

"अरे, यह तो ताहिर है!" सौदागर ने कहा। "ज़ोहरा को इतने सालों तक न भूलनेवाला और कौन हो सकता है?!"

सौदागर पहरेदारों के पास पहुँचा और उन्हें अंजलि भर सोना देकर बोला:

"ताहिर को छोड़ दो! वह बेक़सूर है। वह तो सिर्फ़ अपने प्यार के लिए ज़िंदा है।"

पहरेदारों ने ताहिर और कारवाँ के सरदार को छोड़ दिया और उनका ऊंट उन्हें वापस दे दिया। सौदागर का शुक्रिया अदा करके ताहिर उससे विदा हुआ और आगे चला।

काफ़ी लम्बे सफ़र के बाद एक दिन सुबह वे अपने शहर आ पहुँचे। सराय के पास पहुँचकर ताहिर अपने साथी से विदा हुआ और अकेला ही महल की ओर चल पड़ा।

---

* पद्यानुवाद – मंज़र सलीम।

बाग़ में घुसकर ताहिर ज़ोहरा को ढूंढ़ने लगा। वह एक बेशक़ीमती क़ालीन पर गहरी नींद सोयी हुई थी। उसे जगाने के लिए ताहिर ने धीरे-से गीत छेड़ा :

जागो, जागो, कब से जगा रहा हूं, ज़ोहरा प्यारी!
राह निहारते अंखियां थक गयीं, ज़ोहरा प्यारी!
सोयी कब से, जागो भी अब, ज़ोहरा प्यारी!
उठकर जल्दी गले लगा लो,
ज़ोहरा प्यारी!

ज़ोहरा ने अपने प्रियतम की आवाज़ सुनी तो उसकी नींद खुल गयी और वह ख़ुशी से झूम उठी। वह उठकर आंखों में आंसू भरे मुस्कराती हुई ताहिर से लिपट गयी। और इसी तरह एक दूसरे की बाँहों में बंधे हुए वे बाग़ के अन्दर चले गये।

एक दूसरे के साथ बातें करते-करते, एक दूसरे को निहारते वे बिलकुल भी नहीं थके। और उन अभागों को यह भी पता नहीं चला कि क़ारा बातिर की बहन ने उन्हें देख लिया है। वह अपने भाई के पास दौड़ी और बोली :

"ताहिर आ पहुँचा है।"

गुस्से में पागल क़ारा बातिर बादशाह के पास भागा और उसने सारा क़िस्सा उसे सुनाया।

बादशाह ने अपने सिपाहियों को बाग़ में भेजा। उन्होंने ताहिर को पकड़कर एक गढ़े में फेंक दिया, जिसमें घुटनों तक कीचड़ था और ऊपर से पानी गिर रहा था।

दूसरे दिन बादशाह ने अपने वज़ीरों और सलाहकारों को बुलाया। काफ़ी समय सोचने-विचारने के बाद उन्होंने फ़ैसला किया कि ताहिर के दो टुकड़े करके शहर के दरवाज़ों पर लटका दिये जायें।

मुनादी करनेवालों ने शहर में एलान करके लोगों को मृत्यु-दंड का नज़ारा देखने के लिए बुलाया। लोग भागकर शहर के मैदानों में इकट्ठे होने लगे। ज़ोहरा भी आयी। सबको ताहिर के साथ सहानुभूति थी और बादशाह की निर्दयता पर ग़ुस्सा आ रहा था।

"ताहिर वापस क्यों लौटकर आया?" कुछ लोग कहने लगे।

"ताहिर का प्यार उसे वापस खींच लाया," दूसरों ने जवाब दिया।

"पर क्या इसीलिए बेचारे लड़के को मौत की सज़ा दी जा सकती है? इस ख़ूनी बादशाह का सत्यानाश हो!"

सिपाही ताहिर को लेकर चबूतरे पर आये। जल्लाद ने अपनी तलवार की धार तेज़ की। लोग बादशाह को कोसने लगे, पर कुछ न कर पाये। ज़ोहरा ने भी अपने बेरहम पिता की बहुत आरज़ू-मिन्नत की, पर वह पत्थरदिल ज़रा भी नहीं पिघला। और जब ज़ोहरा ने ताहिर को जल्लाद के हाथों में देखा, तो उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया और वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ी।

जल्लाद ने तलवार के वार से ताहिर के दो टुकड़े कर डाले।

लोग चीख उठे, चारों ओर से आहें और सिसकियां सुनाई देने लगीं। एक बुढ़िया भीड़ में से निकलकर आयी और गुस्सेभरे स्वर में बादशाह से बोली :

ज़ालिम शहंशाह, तेरे तख़्त से टपकता है
जैसे किसी जल्लाद की तलवार से ख़ूं
टपकता है।
मौत के घाट उतार दिया तुमने भले
ही ताहिर को,
बाल बांका भी नहीं कर पाओगे
उसकी मुहब्बत को।

इसी बीच जल्लादों ने ताहिर के शरीर के दोनों टुकड़े शहर के दरवाज़ों पर लटका दिये। तब ज़ोहरा ने सिर उठाया और अपनी आह रोककर बोली :

ज़ालिम शहंशाह, जब तक भू पे
क़ाबिज़ तू रहेगा
धरती पर इंसाफ़ का निशान भी
बाक़ी न रहेगा।
न कभी सूरज आसमां पे रोशन होगा,
न कभी पहाड़ों पर बर्फ़बारी का दामन होगा।
सुनो, सुनो, लगी हैं ऊंटों की क़तारें
गूंज रहीं शहर की सारी दीवारें।
गोश्त ताहिर का हो रहा नीलाम
अब्बा-क़साई बोलियां लगाते-लगाते सरे-आम।

और बादशाह उसे कुछ भी जवाब न दे पाया।

ताहिर के मरने के बाद ज़ोहरा ने काले कपड़े पहन लिये, चेहरे पर परदा डाल लिया और चालीस दिन और चालीस रात अपने प्रियतम के मरने का शोक मनाती रही।

इकतालीसवें दिन ज़ोहरा ने बादशाह से ताहिर की क़ब्र पर जाने की इजाज़त मांगी। बादशाह ने इजाज़त दे दी, पर उसके साथ कई नौकरानियां लगा दीं। तब ज़ोहरा ने अपने रूमाल में बहुत-से मोती बांधे और एक कटार लेकर चल पड़ी।

महल से बाहर निकलते ही ज़ोहरा ने रास्ते में मोती बिखेरने शुरू कर दिये। मोती देखकर दासियां रुक-रुककर उन्हें उठाने लगीं।

ज़ोहरा उनसे दूर होती गयी। जब वे सब आंखों से ओझल हो गयीं, तो ताहिर की क़ब्र बहुत कम दूरी पर रह गयी थी। ज़ोहरा ने बाक़ी बचे मोती फेंके, भागकर, ताहिर की क़ब्र पर पहुँची और अपने दिल में कटार भोंक ली।

दासियां सारे मोती चुनकर क़ब्र पर पहुँचीं। उन्होंने देखा — ज़ोहरा मरी पड़ी है। वे सब फूट-फूटकर रो पड़ीं, पर आँसू बहाने से क्या फ़ायदा? दूसरे दिन ज़ोहरा को ताहिर के पास ही दफ़नाया गया।

क़ारा बातिर को जब इस बात की ख़बर मिली, तो वह चिल्लाया:

"नहीं, मरने के बाद भी मैं ज़ोहरा को ताहिर से प्यार नहीं करने दूँगा। मैं परलोक में भी उन्हें चैन से नहीं रहने दूँगा," और ग़ुस्से में उसने आत्महत्या कर ली।

"मेरा भाई उन्हें अकेले नहीं छोड़ना चाहता था," क़ारा बातिर की बहन बोली। "उसे ताहिर और ज़ोहरा के बीच में दफ़नाया जाये!"

"क्या अपनी ज़िन्दगी में उन्होंने कम कष्ट झेले! क्या मरने के बाद भी उन्हें चैन नहीं मिलेगा? उन्हें चैन से रहने दो, रहम करो!" लोग कहने लगे। पर उनकी एक न सुनी गयी।

ज़ुल्मियों ने क़ारा बातिर को ताहिर और ज़ोहरा के बीच में दफ़ना दिया।

ताहिर की क़ब्र में से लाल गुलाब उगा और ज़ोहरा की क़ब्र में से सफ़ेद गुलाब। उनके बीच में एक कंटीली झाड़ी उग आयी। पर दोनों गुलाब के पौधों की शाखाएँ कंटीली झाड़ी को पार करके एक दूसरे से लिपट गयीं। तब से आज तक वे दोनों हमेशा खिलते आये हैं, बिलकुल वैसे ही जैसे ही ताहिर और ज़ोहरा का अमर प्रेम ...

जादूई हीरा

बहुत समय पहले एक गांव में एक औरत अपने बेटे के साथ रहती थी।

"बेटे," मां ने एक बार कहा। "यह पैसे ले और बाज़ार से रोटी ख़रीद ला।"

लड़का पैसे लेकर घर से निकला।

चौराहे पर कुछ लड़के एक मरियल-से बिल्ली के बच्चे को सता रहे थे। लड़के को बिल्ली के बच्चे पर दया आयी। वह बोला:

"दोस्तो, बिल्ली का बच्चा मुझे बेच दो!"

"यह लो," लड़के बोले।

"कितने पैसे दूँ?"

"जितने चाहो।"

"अच्छा, ये लो!"

लड़के ने पैसे दिये और बिल्ली के बच्चे को सीने से चिपटाये घर लौट आया।

"रोटी ले आया, बेटा?" मां ने पूछा।

"मैं रोटी नहीं, यह बिल्ली का बच्चा ले आया," बेटे ने जवाब दिया।

"बेटा, तू ने यह क्या किया?"

लड़के ने सारी बात माँ को बताकर कहा:

"कोई बात नहीं, माँ, हम एक दिन बिना रोटी के रह लेंगे।"

दूसरे दिन माँ ने लड़के को कुछ पैसे दिये और कसाई की दुकान से गोश्त ख़रीदकर लाने को कहा।

लड़का पैसे लेकर बाज़ार जा रहा था कि उसने देखा – कुछ लड़के एक पिल्ले को चारों ओर से घेरकर उस पर पत्थर बरसा रहे हैं। लड़के को उस पर दया आ गयी।

"अरे, भई, मुझे यह पिल्ला बेच दो!"

"ये लो!"

"तुम्हें कितने पैसे दूँ इसके?"

"जितने चाहो।"

"अच्छा, ये लो।"

पिल्ले को लेकर वह लौट आया।

"क्या गोश्त ले आया, बेटा?" माँ ने पूछा।

"आप नाराज़ न होना, आपने जो पैसे दिये थे, मैंने उनसे यह पिल्ला ख़रीद लिया।"

माँ बड़ी दु:खी हुई। "बेटा, हम ग़रीब लोग हैं। मैंने किसी तरह गोश्त के लिए ये पैसे बचाये थे और तू गोश्त के बजाय पिल्ला ख़रीद लाया। इसकी हमें क्या ज़रूरत है! इसे खिलाने के लिए हमारे पास क्या है?"

"कोई बात नहीं, माँ, हम एक दिन बिना गोश्त के रह लेंगे।"

तीसरे दिन माँ ने बेटे को कुछ और पैसे दिये और उसे बाज़ार से कुछ चर्बी ख़रीदने भेजा।

लड़के ने बाज़ार जाते समय देखा – गली में कुछ लड़के चूहेदानी में फंसे एक चूहे के बच्चे को सता रहे हैं।

"अरे, भई, क्या यह चूहे का बच्चा मुझे बेचोगे?" लड़के ने पूछा।

"ज़रूर बेचेंगे!"

लड़के ने पैसे दिये और चूहे का बच्चा लेकर घर आ गया।

"क्यों, बेटा, चर्बी ले आया?" माँ ने पूछा।

"मुझे माफ़ करना, माँ," लड़के ने जवाब दिया और चूहे के बच्चे को ख़रीदने का पूरा क़िस्सा सुना दिया।

माँ बेटे को बहुत प्यार करती थी, इसलिए उसने इस बार भी बेटे को फटकारा नहीं।

दिन बीतने लगे। लड़का जवान हो गया। कुत्ते, बिल्ली और चूहे के बच्चे भी बड़े हो गये।

एक बार लड़के ने नदी में एक मछली पकड़ी। उसने मछली साफ़ करके अंतड़ियां कुत्ते को डाल दीं। कुत्ता उनको चबाने लगा। चबाते-चबाते उसे अपने दांतों के बीच कुछ कठोर-सी चीज़ महसूस हुई। उसने उगला तो देखा – सूरज की तरह चमकता एक हीरा है।

हीरा देखकर लड़का खुशी से उछल पड़ा। उसे जादूई हीरा अहानरबा मिल गया था।

लड़के ने हीरे को हथेली पर रखकर कहा:

"अहानरबा, मुझे खाना खिला!"

उसने यह कहा और आश्चर्य से उसका मुंह फटा रह गया: एक क्षण में ही उसके सामने एक बहुमूल्य दस्तरखान पर तरह-तरह के इतने स्वादिष्ट पकवान आ गये, जितने उसने कभी सपने में भी न देखे थे।

लड़का भागता हुआ अपनी माँ के पास पहुँचा और उसे वह करामाती हीरा दिखाया। माँ बहुत खुश हुई और उस दिन से उन लोगों को किसी चीज़ की तंगी महसूस नहीं हुई।

एक बार लड़के ने शहर में एक बहुत ही सुन्दर लड़की को देखा।

"मैं इससे ही शादी करूँगा!" लड़के ने सोचा और यह बात माँ को भी बता दी।

"अरे, बेटा," माँ ने कहा, "क्या तुझे मालूम नहीं कि वह बादशाह की बेटी है और हम ग़रीब लोग हैं। कहाँ बादशाह और कहाँ ग़रीब। मैं तो उससे शादी की बात भी करने नहीं जाऊँगी!"

"माँ, बस इतना ही कर दो, बस बादशाह से जाकर कह दो," लड़के ने ज़िद की।

माँ काफ़ी देर-तक मना करती रही, पर अंत में तैयार हो गयी।

"ठीक है," माँ बोली, "जाती हूँ। पर यह बात याद रख – बादशाह के महल में जाकर कोई सुख से नहीं रह पाया है।"

वह रात को महल के पास पहुँची और दरवाज़े के सामने का रास्ता साफ़ करके लौट आयी।

अगले दिन जब बादशाह सुबह अपने महल से बाहर निकला, तो उसने देखा कि दरवाज़े के सामने बहुत सफ़ाई है। दूसरे दिन भी उसने देखा फिर उसके दरवाज़े के सामने का रास्ता साफ़-सुथरा है। बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने दरवाज़े के बाहर पहरेदार खड़े कर दिये।

तीसरे दिन पहरेदार बुढ़िया को पकड़कर बादशाह के महल में ले आये।

"तुम महल के सामने सफ़ाई क्यों करती हो?" बादशाह ने बुढ़िया से पूछा।

"मैं अपने बेटे का रिश्ता आपकी बेटी से करने आयी हूँ। हम लोग ग़रीब हैं, इसलिए मैं सीधे आपके पास आने की हिम्मत न कर सकी। वैसे आपके पहरेदार भी मुझे आप तक पहुँचने नहीं देते।"

बादशाह ने गुस्से में औरत को मौत की सजा दिये जाने का हुक्म दे दिया, पर उसके दायें हाथ को बैठे वज़ीर ने उसे सलाह दी:

"आप क्यों इस बेचारी औरत को मौत की सजा देना चाहते हैं? इससे अच्छा यह होगा कि आप इससे कोई असंभव काम करने को कहें। फिर यह स्वयं ही महल के पास फटकने की हिम्मत नहीं कर सकेगी।"

वजीर की सलाह मानकर बादशाह ने औरत से कहा:

"जा, अपने बेटे से कह कि वह मुझे मेरी बेटी के बदले में सोने से लदे चालीस ऊँट दे!"

"इतना सोना हम लायेंगे कहाँ से!.." माँ सोच में पड़ गयी। घर पहुँचकर उसने बादशाह की शर्त बेटे को बतायी।

"फ़िक्र की कोई बात नहीं," बेटा बोला।

उसने केवल एक बार जादूई हीरे अहानरबा से कहा और सुबह बुढ़िया की झोंपड़ी के बाहर सोने से लदे चालीस ऊँट एक क़तार में आ खड़े हुए।

"माँ, अब आप इन ऊँटों को लेकर बादशाह के पास जाइये," लड़का बोला। माँ ऊँटों को लेकर बादशाह के महल में पहुँची। बादशाह भौचक्का रह गया, पर उसने तुरन्त हुक्म दिया:

"अब अपने बेटे से कहो कि वह अपनी मंगेतर के लिए ख़ालिस सोने का महल बनवाये। इसके बाद ही शादी के बारे में सोचा जा सकेगा।"

माँ बहुत चिंता में पड़ गयी और घर लौटकर उसने बादशाह की नयी शर्त अपने बेटे को बतायी। उसे सुनकर बेटा बोला:

"आप चिन्ता मत कीजिये, ख़ालिस सोने का महल भी बन जायेगा।"

सुबह होते-होते नदी के किनारे ख़ालिस सोने का एक सुंदर महल भी बनकर तैयार हो गया। इतना सुंदर महल दुनिया में किसी ने न देखा था।

माँ बादशाह के पास पहुँची और बोली:

"आपकी बेटी के लिए महल तैयार है। चलकर देख लीजिये!"

बादशाह अपने वज़ीरों के साथ आया। सोने का महल देखकर आश्चर्य के मारे उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

अब बादशाह किसी तरह अपने वायदे से मुकर नहीं पाया और उसने अपनी बेटी की शादी बड़ी धूमधाम से उस औरत के बेटे के साथ कर दी।

बादशाह के महल में एक बूढ़ी चुड़ैल रहती थी। उसने यह पता लगाने का निश्चय किया कि एक रात में ही इस लड़के ने किस तरह इतना सुंदर महल बना लिया और वह भी ख़ालिस सोने का।

चुड़ैल शाहज़ादी के पास आयी और उसे अपने पति से यह भेद उगलवाने के लिए मना लिया।

बादशाह की बेटी भी यह भेद जानने के लिए बड़ी उत्सुक थी। वह अपने पति से पूछने लगी।

लड़के ने उसे सारी बात बता दी।

"मेरे पास जादूई हीरा अहानरबा है। उससे मैं जो भी मांगूँ, मुझे फ़ौरन मिल जाता है।"

"तुम अहानरबा को कहाँ छिपाकर रखते हो?" पत्नी ने पूछा।

"मैं उसे अपने मुंह में जीभ के नीचे रखता हूँ," लड़के ने बताया।

दूसरे दिन बादशाह की बेटी ने सारी बात चुड़ैल को बता दी।

चुड़ैल रात होने का इंतज़ार करती रही, जब लड़का गहरी नींद में सो गया, तो उसने उसके मुंह में से जादूई हीरा निकाल लिया और बोली:

"ऐ, अहानरबा, शाहज़ादी सहित सोने के महल को उठाकर बादशाह के महल के पास रख दे! और इस ग़रीब लड़के को वहीं रहने दे, जहाँ यह पहले रह रहा था।"

पलक झपकते ही शाहज़ादी और सोने का महल बादशाह के महल के पास पहुँच गये।

लड़के की नींद खुली, तो उसने देखा – महल ग़ायब है और वह अपनी टूटी-फूटी झोंपड़ी में पड़ा है। उसकी माँ उसके पास बैठी रो रही है और बिल्ली, कुत्ता और चूहा एक कोने में उदास बैठे उसकी ओर देख रहे हैं...

"हाय, मैं कितना बदनसीब हूँ!" लड़के ने एक आह भरी। "मेरा जादूई हीरा ग़ायब हो गया। अब मैं क्या करूँ?.."

और वह ज़मीन पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगा।

कुत्ते, बिल्ली और चूहे को अपने मालिक पर बड़ी दया आयी।

"हमें कोई तरकीब सोचनी चाहिए, जिससे जादूई हीरा हमारे मालिक को वापस मिल जाये," वे तीनों अपने मन में सोचने लगे।

कुत्ता भौंक उठा।

बिल्ली म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी।

चूहा चीं-चीं करने लगा।

वे तीनों झोंपड़ी से बाहर भागे और आंखों से ओझल हो गये।

वे बिना दम लिये दिन भर भागते रहे और शाम ढलने तक बादशाह के बाग़ के पास पहुँचे। उन्होंने देखा दीवार के उस ओर लड़के का बनवाया हुआ सोने का महल चमचमा रहा है।

"हमें किसी तरह महल में घुसना चाहिए!" कुत्ते, बिल्ली और चूहे ने योजना बनायी।

महल के चारों ओर की दीवारें बहुत ऊँची थीं – उन्हें पार करना कठिन था और सारे दरवाज़ों पर मज़बूत ताले लगे थे। क्या किया जाये?

वे लोग दीवार में छेद या दरार ढूँढ़ने लगे।

चूहे ने अपने पंजों से सुरंग खोदना शुरू कर दिया। बिल्ली और कुत्ते ने मिलकर छेद बड़ा किया। इस तरह तीनों ने मिलकर दीवार के आरपार छेद बना लिया।

पहले चूहा सुरंग में घुसा, उसके बाद बिल्ली। और कुत्ता वहीं रुककर पहरा देने लगा।

चूहे और बिल्ली ने सारा महल छान मारा। अन्त में वे एक कमरे में पहुँचे।

वहाँ बादशाह की बेटी सो रही थी और उसके पास ही चुड़ैल बैठी ऊंघ रही थी। चुड़ैल के होंठ बड़ी मज़बूती से आपस में जुड़े हुए थे।

चतुर चूहा फ़ौरन समझ गया कि चुड़ैल ने जादूई हीरा अहानरबा अपनी जीभ के नीचे छिपा रखा है। चूहा चुपचाप चुड़ैल के पास पहुंचा और उसने अपनी पूंछ सीधी करके उसकी नोक चुड़ैल की नाक में घुसेड़ दी।

"आक-छीं!" चुड़ैल छींकी और उसका मुंह खुलते ही अहानरबा ज़मीन पर गिरा। बिल्ली फ़ौरन उसे अपने मुंह में दबाकर वहाँ से भाग निकली।

जब तक चुड़ैल को होश आये, तब तक चूहा और बिल्ली कुत्ते के पास पहुँच चुके थे। बिल्ली से हीरा लेकर कुत्ते ने उसे अपने मुंह में दबा लिया और तीनों वहाँ से भाग निकले।

बादशाह के महल में शोर मच गया।

"पकड़ो, पकड़ो!"

पर कौन सोच सकता था कि जादूई हीरा किसी आवारा कुत्ते के मुंह में छिपा हो सकता है!

थोड़ी देर बाद कुत्ता, बिल्ली और चूहा नदी के किनारे पहुँचे।

बिल्ली बोली, "मैं हीरे को लेकर नदी पार करूँगी!"

"नहीं," कुत्ता बोला। "तुम अच्छी तरह तैरना नहीं जानती, खुद तो डूबोगी ही और साथ में जादूई हीरे को भी ले, डूबोगी।"

चूहा भी चाहता था कि वह हीरे को लेकर नदी पार करे।

तीनों काफ़ी समय तक बहस करते रहे। कुत्ता अपनी बात पर अड़ा रहा और हीरा उसने अपने पास ही रखा। तीनों नदी पार करने लगे। कुत्ते ने पानी में अपनी परछाईं देखी और उसे दूसरा कुत्ता समझकर भौंकते ही जादूई हीरा पानी में गिर गया। उसी समय एक बहुत बड़ी मछली तैरती हुई आयी और जादूई हीरा निगलकर वहाँ से ग़ायब हो गयी।

"मैंने कहा था न कि तुम्हें हीरा लेकर नदी पार नहीं करनी चाहिए थी!" बिल्ली बोली।

उनकी समझ में न आ रहा था कि क्या करें। वे अपने मालिक के पास बिना जादूई हीरा लिये नहीं जाना चाहते थे।

वहाँ से थोड़ी दूरी पर मछुओं की एक बस्ती थी। कुत्ता, बिल्ली और चूहा तीनों को बड़ी तेज़ भूख लगी और वे मछुओं की बस्ती की तरफ़ भागे।

उनके भाग्य से एक मछुए ने बड़ी मछली पकड़ ली। उसे साफ़ करके उसने उसकी अंतड़ियां फेंक दीं। कुत्ता, बिल्ली और चूहा उसे खाने लगे।

अचानक बिल्ली खुशी के मारे म्याऊँ-म्याऊँ बोल उठी: मछली की अंतड़ियों में उसे कुछ पत्थर जैसा महसूस हुआ। तीनों ने बड़े ध्यान से देखा और खुशी से नाच उठे: यह वही जादूई हीरा अहानरबा था!

कुत्ता, बिल्ली और चूहा फ़ौरन अपने मालिक की झोंपड़ी की ओर भागे। लड़के की मां ने उन्हें देख लिया और बोली:

"बेटा, देख, तेरे कुत्ता, बिल्ली और चूहा लौट आये हैं।"

बिल्ली ने जादूई हीरा अपने मालिक के सामने रख दिया। लड़का खुश होकर बोला:

"मैं तुम लोगों का अहसान जिंदगी भर नहीं भूलूंगा!"

"हम भी जब तक ज़िन्दा रहेंगे, तुम्हारी सेवा के लिए हमेशा तैयार रहेंगे, क्योंकि तुमने एक दिन हमें मौत से बचाया था," कुत्ता, बिल्ली और चूहे ने एक स्वर में कहा।

लड़का बोला:

"मैं अभी इस हीरे से सोने का महल यहाँ लाने के लिए कहता हूँ।"

"नहीं, हमें सोने का महल नहीं चाहिए," माँ ने उसे रोका।

तब लड़के ने हीरे को हुक्म दिया:

"महल ग़ायब हो जाये!"

और फ़ौरन बादशाह का महल ग़ायब हो गया और बादशाह, शाहज़ादी और चुड़ैल का निशान भी बाक़ी न रहा।

कहते हैं, बाद में लड़के ने एक ग़रीब माली की लड़की से शादी कर ली और वे सब लोग बहुत सुख-चैन से रहने लगे।

क्रूर बादशाह

बहुत समय पहले एक देश में क्रूर बादशाह राज करता था। एक बार पता नहीं क्यों उसने एक नया हुक्म जारी किया:

"जिस आदमी के घर में कोई आदमी मरे उस घर का मालिक उसकी लाश उठाकर छत पर ले जाये और एक छत से दूसरी पर होकर ही क़ब्रिस्तान तक लेकर जाये। जो कोई इस आज्ञा का पालन नहीं करेगा, उसे मौत की सज़ा दी जायेगी।"

उस देश में एक बहुत बूढ़ा कत्थक रहता था, जिसके सारे बाल पक चुके थे। वह बादशाह के पास गया।

बादशाह ने पूछा:

"तुम यहाँ किस लिए आये हो?"

कत्थक बोला:

"क्या प्रजा भूख, ग़रीबी और तुम्हारे अत्याचारों से कम परेशान है, जो तुमने एक नया बेतुका हुक्म जारी किया है? मरे हुए को दफ़नाने के लिए उसके रिश्तेदार पांच और कई बार तो दस-दस दिन तक परेशान होते हैं। तुम्हें इस में क्या आनंद आता है?"

बादशाह आग-बबूला हो उठा।

"लोग कहते हैं कि बूढ़े बुद्धिमान होते हैं," वह बोला। "पर वास्तव में यह झूठ है। कोई सिरफिरा बूढ़ा आकर मुझे सीख दे रहा है। इसे पकड़कर फ़ौरन फांसी दे दो!" उसने जल्लादों को बुलाकर हुक्म दिया।

इसके बाद बादशाह ने एक नया हुक्म निकाला:

"सब सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़ों के सिर धड़ से अलग कर दिये जायें।"

जल्लाद हर घर में घुसकर सफ़ेद दाढ़ीवाले बूढ़ों को पकड़कर उनके सिर काटने लगे। कुछ बूढ़ों ने भागकर अपनी जान बचाई, कुछ तहखानों और तलघरों में छिप गये। जिसे जहाँ जगह मिली, वह वहीं छिप गया, ताकि उसे कोई ढूंढ़ न पाये।

एक बार बादशाह ने तीस वर्ष तक की आयु के सैनिकों को कूच के लिए तैयार होने का हुक्म दिया। "और जिसे इकतीसवां वर्ष लग चुका है, उसे छोड़ दिया जाये! ऐसे लोग कमज़ोर होते हैं," उसको सूझी।

बादशाह का एक वज़ीर था। वह बादशाह को समझाने लगा:

"हुजूर, आपने क्यों ऐसा हुक्म निकाला?"

पर बादशाह तो सहन ही नहीं कर पाता था कि कोई उसे रोके-टोके या सीख दे।

"अरे, बेवक़ूफ़, तुम क्या समझोगे?" वह वज़ीर पर टूट पड़ा।

"फिर कभी मुझे सीख देने की हिम्मत मत करना। अगर तुमने दूसरी बार ऐसा कहा, तो तुम्हारे मुंह में पिघला हुआ सीसा भरवा दूँगा।"

एक दिन बादशाह ने अपनी सेना के साथ कूच किया। बादशाह के सिपाहियों में ज़ाकिर नाम का एक नौजवान था। उसका पिता अस्सी साल का बूढ़ा था। उन दिनों जब बादशाह के हुक्म से पैंतालीस वर्ष से ज्यादा उम्रवालों के सिर काटे जा रहे थे, ज़ाकिर ने अपने पिता को छिपा दिया था।

बादशाह की फ़ौज के कूच करने से पहले ज़ाकिर अपने पिता से मिलने आया। बूढ़ा बोला:

"मेरे प्यारे बेटे, तुम जाओगे, तो वापस लौटकर आ सकोगे या नहीं, कोई नहीं जानता। तुम्हारे सिवा मेरा और कौन है जो मुझे खाना खिलाये और मेरा खयाल रखे। तुम्हारे जाने के बाद मैं किस तरह ज़िन्दा रह पाऊँगा? तुम बादशाह के पास जाकर कह दो कि वह मुझे मार डाले। मुझे दफ़नाकर तुम बेफ़िक्र होकर चले जाना। या फिर मुझे अपने साथ ले चलो।"

ज़ाकिर अपने पिता को ऐसी हालत में न छोड़ सका। उसने एक संदूक़ बनाया और उसमें अपने पिता को बन्द करके साथ ले गया।

बादशाह अपनी फ़ौज के साथ बहुत दूर के एक देश पर चढ़ाई करने निकला। चलते-चलते वे लोग ऊँचे पहाड़ों के पास पहुँचे। पहाड़ों की तलहटी में एक बहुत बड़ी नदी बहती थी। उसका पानी बड़े शोर और गरज के साथ बह रहा था। बादशाह ने अपनी फ़ौज को नदी के किनारे पड़ाव डालने का हुक्म दिया।

शाम को बादशाह ने एक आश्चर्यजनक प्रकाश देखा: नदी के तल में, रात के अंधेरे में जगमगाते तारों की तरह, दो बड़े हीरे चमक रहे थे।

बादशाह ने एक सिपाही को ग़ोता मारकर नदी के तल में से हीरे निकाल लाने का हुक्म दिया।

सिपाही ने गहरे पानी में ग़ोता लगाया, पर वह वापस न लौटा। बादशाह ने दूसरे सिपाहियों को बुलाया। उन सब ने एक-एक करके ग़ोता लगाया, पर उनमें से कोई भी पानी के ऊपर वापस नहीं दिखाई दिया।

एक सिपाही ने बादशाह का विरोध करने का साहस किया।

"हुजूर," वह बोला, "इतने गहरे पानी में नदी के तल तक पहुँच पाना असंभव है। हम लोग बेकार ही क्यों अपनी जान खोयें?"

"अरे, बेवकूफ़," बादशाह चिल्लाया, "अगर नदी गहरी होती, तो क्या उसके तल में पड़े हीरे दिखाई पड़ते? ज़बान खोलने के लिए तुम्हारा सिर काट डाला जायेगा। जल्लादो, यहाँ आओ!"

सिपाही का सिर काट डाला गया।

बादशाह ने दूसरे सिपाहियों को भी नदी में ग़ोता लगाने के लिए मजबूर किया।

जब ज़ाकिर की नदी में ग़ोता लगाने की बारी आनेवाली थी, तो वह भागकर अपने खेमे में पहुँचा और सन्दूक खोलकर रोते हुए कहने लगा:

"अलविदा, अब्बाजान, मुझे माफ़ करना, मुझे बुरा मत समझना!"

"क्या हुआ, बेटा?" घबराये हुए पिता ने पुछा।

ज़ाकिर ने अपने पिता को बादशाह के हुक्म के बारे में बताया और यह भी बताया कि अब तक कितने लोग मारे जा चुके हैं। थोड़ी देर सोचने के बाद बूढ़ा बोला:

"क्या, नदी के किनारे कोई पेड़ है?"

"जी, है।" बेटे ने जवाब दिया।

"तब हीरे नदी में नहीं, पेड़ पर हैं। पानी में सिर्फ़ उनकी परछाईं नज़र आ रही है। बेटा, तुम वह जगह अच्छी तरह देख लेना और जब तुम्हारी बारी आये, तो भागकर पेड़ के शिखर पर चढ़ जाना। हीरे चिड़िया के घोंसले में रखे हैं। उन्हें अपनी कमर में बांधकर तुम वहीं से नदी में छलांग लगाना और फिर किनारे पर आना।"

ज़ाकिर पिता से विदा होकर बादशाह के पास आया। बादशाह ने उसे नदी में ग़ोता लगाकर हीरे लाने का हुक्म दिया।

ज़ाकिर पेड़ की तरफ़ भागा और उसके ऊपर चढ़ गया।

"तुम पेड़ पर क्यों चढ़े?" बादशाह चीखा।

"हुजूर, मैं ज्यादा गहरा ग़ोता लगाने के लिए पेड़ के शिखर से कूदूँगा। हीरे अगर ज़मीन के नीचे भी छिपे हुए हों, तो भी मैं उन्हें निकालकर ले आऊँगा।"

पेड़ पर चढ़कर ज़ाकिर ने देखा: चिड़िया के घोंसले में दो हीरे चांदनी में झिलमिला रहे हैं। उसने फ़ौरन उन्हें उठाकर अपनी कमर में बांध लिया और वहाँ से पानी में छलांग लगाकर ग़ायब हो गया। जब ज़ाकिर अपने पिता के पास था, तो बादशाह ने एलान किया था:

"जो कोई बिना हीरे लिये पानी से बाहर आयेगा, उसकी खाल उधेड़ दूँगा।"

थोड़ी देर में ज़ाकिर पानी में से निकला और उसने दोनों हीरे बादशाह को दे दिये।

"शाबाश!" बादशाह ने उसकी तारीफ़ की और पीठ थपथपायी।

सुबह बादशाह की फ़ौज नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ी। एक जगह उन लोगों को बहुत सारी चींटियाँ दिखाई पड़ीं।

"यहाँ चीटियाँ क्यों चल रही हैं? ये क्या कर रही हैं?" बादशाह ने पूछा।

पर कोई भी जवाब न दे पाया। बादशाह बोला:

"मैं रोज़ाना दो आदमियों से यह सवाल पूछूँगा! जिसका जवाब मुझे अच्छा लगेगा, उसे इनाम दूँगा और जिसका जवाब मुझे पसंद नहीं आयेगा, उसका सिर कटवा दूँगा।"

बादशाह का हुक्म सुनकर ज़ाकिर फिर अपने पिता के पास आया और उन्हें यह बात बतायी।

बूढ़ा बोला:

"तुम बादशाह के पास जाओ और कहो कि तुम उसके सवाल का जवाब देना चाहते हो। कहो, 'नदी के पेंदे में घी का खाली बर्तन पड़ा है, इसलिए यहाँ चींटियाँ इकट्ठी हो रही हैं।' और अगर बादशाह बर्तन निकालकर लाने को कहे तो कहना, 'अभी लेकर आता हूँ।' इसके बाद पेड़ पर चढ़कर, निशाना लगाकर, बादशाह पर तीर चलाना। निशाना ऐसा लगाना कि तीर सीधा उसके मुंह में लगे और वह फ़ौरन मर जाये। इस एक आदमी के कारण कितने आदमी बेकार ही मारे गये!"

ज़ाकिर बादशाह के पास पहुँचकर बोला:

"मैं आपके सवाल का जवाब दूँगा। हुज़ूर, नदी के पेंदे में घी का एक खाली बर्तन पड़ा है, इसलिए चींटियां यहां मंडरा रही हैं।"

बादशाह आग-बबूला हो उठा।

"घी का खाली बर्तन पानी में पड़ा है, फिर चींटियाँ यहाँ क्यों चक्कर लगा रही हैं? जवाब हमें पसंद नहीं!" बादशाह ने कहा और जल्लादों को बुलाकर ज़ाकिर का सिर काटने का हुक्म दिया।

ज़ाकिर ने मिन्नत की:

"हुज़ूर, अगर आप इजाज़त दें तो मैं पानी में से घी का खाली बर्तन लाकर आपको दिखाऊँ?"

"ठीक है, लाकर हमें दिखाओ।"

ज़ाकिर फ़ौरन भागकर पेड़ पर चढ़ गया और एक मज़बूत डाल पर बैठकर, उसने बादशाह के मुँह का निशाना लगाकर तीर छोड़ा। तीर सीधा बादशाह के मुँह में लगा और आरपार हो गया।

बादशाह ढेर हो गया।

जब ज़ाकिर पेड़ पर से उतरा, तो सारे सिपाहियों ने भागकर उसे अपने गले लगा लिया और खुशी से बोले:

"तुमने बहुत ही अच्छा किया!"

ज़ाकिर बोला:

"यह मैने नहीं मेरे अब्बाजान ने किया है। बड़े अफ़सोस की बात है कि इस क्रूर बादशाह के कारण इतने लोग मारे गये।"

सारे सिपाही बुद्धिमान बूढ़े के पास पहुँचे और उन्हें क्रूर बादशाह से छुटकारा दिलवाने के लिए धन्यवाद दिया और बड़ी इज़्ज़त के साथ अपना बादशाह बना लिया।

हुस्नाबाद

बहुत दिन हुए एक बेरहम बादशाह राज करता था। उसकी एक बेटी थी। उसका नाम हुस्नाबाद था। हुस्नाबाद अद्वितीय सुंदरी थी; उसे चांद कहा जा सकता था, पर चांद पर भी दाग़ होते हैं, उसे सूरज भी कहा जा सकता था, पर सूरज में भी आग होती है।

बहुत-से देशों के शाहज़ादे शादी का प्रस्ताव लेकर आये, पर बादशाह ने सबको इनकार कर दिया।

हुस्नाबाद की मां एक ग़रीब परिवार से थी। बादशाह अक्सर उसका तिरस्कार करता रहता था।

"तुम बादशाह की पत्नी हो, इसलिए तुम्हें अच्छा खाने और पहनने को मिल रहा है। अगर तुम्हारी शादी किसी ग़रीब से हुई होती, तो तुम रोटी की जगह आज मिट्टी खा रही होती।"

हुस्नाबाद की मां रोती रहती और हुस्नाबाद उसका यह हाल देखकर कहती:

"मेरी शादी किसी ग़रीब के साथ कीजिये। अगर मेरे भाग्य में हुआ, तो मैं स्वयं अपने पति को बादशाह बनाकर अपने पिता के तख़्त पर बिठा दूंगी। फिर सब ग़रीब लोग चैन से जी सकेंगे।"

एक दिन की बात है। बादशाह तख़्त पर बैठा था। अचानक एक कौवा उड़कर आया और खिड़की के सामने के पेड़ पर बैठकर बोलने लगा:

"कांव! कांव! कांव!"

बादशाह ने अपने चार सौ सलाहकारों को बुलाया।

"कौवा क्या कह रहा है?" उसने उनसे पूछा।

सलाहकारों ने काफ़ी देर तक सोचकर जवाब दिया:

"हम नहीं जान सकते। वह कौवा है और हम हैं—आदमी। शायद, खुश होकर कांव-कांव कर रहा है।"

बादशाह क्रोधित होकर चिल्लाया :

"जल्लादो, यहां आओ!"

फ़ौरन चौदह काले भुजंग जल्लाद अपनी तेज़ धारवाली तलवारें लिये बादशाह के सामने आ खड़े हुए।

"किसकी मौत आयी है? हम फ़ौरन उसका सिर धड़ से अलग कर देंगे!"

"इन सब सलाहकारों को ले जाओ और इनके सिर काट दो!" बादशाह ने हुक्म दिया।

हुस्नाबाद बादशाह के पैरों में गिरकर बोली :

"अब्बाजान ! अगर मैं आपके सवाल का जवाब दूं, तो क्या आप उन्हें माफ़ कर देंगे?"

"अगर जवाब दे पाओगी, तो इन्हें माफ़ करूंगा," बादशाह बोला।

"कौवा अपनी बोली में कह रहा है, 'पति का भाग्य बनानेवाली भी पत्नी है और बिगाड़नेवाली भी वही' है।"

बादशाह गुस्से के मारे पागल हो उठा।

"बेशर्म! इसका मतलब यह है कि मैं तुम्हारी मां, एक ग़रीब की बेटी, के कारण बादशाह बना हूं! बकवास बंद करो! मैं तुम्हें काल-कोठरी में डलवा दूंगा और सात साल बाद तुम्हारी लाश में भूसा भरवाकर मैदान में लटकवा दूंगा! इससे उन सब लड़कियों को सबक़ मिल जायेगा, जो अपने पिता के खिलाफ़ जाती हैं!"

बादशाह ने हुस्नाबाद को काल-कोठरी में डलवा दिया और सलाहकारों को छोड़ दिया। इसके बाद बादशाह एक हफ़्ते तक मुंह लटकाये उदास बैठा रहा और महल से बाहर ही न निकला।

"आप महल के अंदर उदास न बैठे रहिये," बादशाह के बड़े वज़ीर ने कहा। "चलिये, शिकार पर चलते हैं, इससे कुछ दिल बहल जायेगा!"

बादशाह अपने साथ चार सौ सलाहकारों और चवालीस वज़ीरों को लेकर शिकार पर निकला। पूरे सात दिनों तक वे लोग शिकार की तलाश में जंगलों और पहाड़ों, मैदानों में भटकते रहे, पर उन्हें एक चूहा भी न मिला।

बादशाह बड़ा उदास हुआ। अचानक दूर उन्हें एक नदी दिखाई दी। वे उसी नदी की तरफ़ गये। नदी के किनारे पहुंचकर उन्होंने देखा – एक सफ़ेद दाढ़ीवाला बूढ़ा नदी में से कंकर-पत्थर निकालकर, उन पर कुछ लिखकर, वापस नदी में फेंक रहा है।

"ऐ, बूढ़े, तुम यहां क्या कर रहे हो?" बादशाह ने पूछा।

"मैं फ़क़ीर हूं। मैं, भला, बादशाह से बात करने की हिम्मत कर सकता हूं?"

"जवाब दो, नहीं तो तुम्हारे टुकड़े कर दूंगा!" बादशाह चिल्लाया।

"मैं लोगों का भाग्य लिख रहा हूं," बूढ़े ने जवाब दिया।

"अच्छा, तब मुझे बताओ, मेरी ज़िद्दी लड़की के भाग्य में क्या बदा है?"

बूढ़े ने पानी में हाथ डालकर मुट्ठी भर कंकर निकाले।

"शहरे-जुरजां के राज्य में एक बहादुर नौजवान रहता है। वह एक ग़रीब चरवाहे का

लड़का है। इसी नौजवान के साथ तुम्हारी बेटी की शादी होगी," बूढ़े ने कहा।

गुस्से के मारे बादशाह का चेहरा काला पड़ गया।

"यहां से उस देश तक कितने दिन का रास्ता है?" बादशाह ने पूछा।

"अगर घोड़ा तेज़ हो, तो अठारह महीने लगेंगे।"

बादशाह अपने महल में लौट आया और तीन दिन तक सोचता रहा। "एक मामूली गड़रिये से अपनी बेटी की शादी न हो पाये, इसके लिए मुझे क्या करना चाहिए? क्यों न उसे काल-कोठरी में भूखा मार दूं, या उसके टुकड़े करवा दूं?"

बड़े वज़ीर को बादशाह के इरादे का पता चल गया। उसे शाहज़ादी पर बड़ी दया आयी। वह रात को उसे काल-कोठरी से निकालकर अपने घर ले आया।

फिर उसने बढ़ई को बुलवाकर उसे पैसा दिया और एक ऐसा मज़बूत संदूक़ बनाने को कहा, जिसमें पानी न घुस पाये।

जब संदूक़ बन गया, तो बड़े वज़ीर ने लड़की से कहा:

"हुस्नाबाद, तुम संदूक़ में लेट जाओ। मैं तुम्हारे लिए चालीस दिन का खाना रखकर संदूक़ को नदी में बहा दूंगा। अगर तुम्हारे भाग्य में लिखा हो, तो तुम जिंदा रहोगी। बादशाह की तलवार से मारे जाने से तो स्तेपी में भेड़ें चराना बेहतर है।"

"आप ठीक कहते हैं!" हुस्नाबाद मान गयी और संदूक़ में घुस गयी।

आधी रात को बड़े वज़ीर ने सन्दूक़ को नदी में बहा दिया।

संदूक़ तीन महीने तक नदी में बहता रहा। हुस्नाबाद ने एक दिन का खाना चार दिन चलाने की कोशिश की।

एक दूर के देश में क़ारा शाह नाम का बादशाह राज करता था। एक बार उसने महल में सूखी लकड़ियां मंगवाईं।

"मैं लाऊंगा!" एक बूढ़े ने कहा। "मेरा घर पोते-पोतियों से भरा है और खाने को कुछ नहीं है। अगर आप मुझे कुछ मज़दूरी दें, तो हम खाने-पीने की कोई चीज़ ख़रीद सकेंगे।"

अपने कंधे पर कुल्हाड़ी रख और कमर में रस्सी बांध बूढ़ा स्तेपी की ओर चल पड़ा। उसने सूखी लकड़ी का गट्ठर बांधा। बूढ़ा वापस लौटने ही वाला था कि अचानक उसे प्यास लगी। "नदी के पास जाकर पानी पी लूं," बूढ़े ने सोचा और चल पड़ा। नदी के किनारे पहुंचकर उसने देखा – किनारे के बिलकुल क़रीब पानी में एक संदूक़ बह रहा है।

बूढ़ा फ़ौरन अपने कपड़े उतारकर नदी में कूदा और संदूक़ को घसीटकर किनारे पर ले आया। वह संदूक़ को चारों ओर से देखने लगा, पर उसे खोल नहीं सका। तब उसने कुल्हाड़ी से संदूक़ में एक छोटा-सा छेद किया और उसमें झांककर देखा – अन्दर एक अत्यन्त सुंदर लड़की लेटी थी।

बूढ़ा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। "शायद, किसी सौदागर की लड़की है," उसने सोचा। "अपने पिता के साथ सफ़र पर निकली होगी, जहाज डूब गया और यह संदूक़ बच गया।"

"लड़की, तुम जिंदा तो हो?" बूढ़े ने आवाज़ दी।

"ज़िन्दा हूं!" हुस्नाबाद ने जवाब दिया और सिर उठाकर बैठ गयी।

"अब मैं क्या करूं?" बूढ़े ने सोचा। "अगर मैं बादशाह के पास लकड़ियां लेकर जाऊं, तो वह मुझे एक तंगा देगा, और अगर लड़की ले जाऊँ—तो कुछ भी न देगा। इस लिए यही ठीक होगा कि इस संदूक़ को शहर में ले जाकर बेच दूं। भला, किसी को क्या पता लगेगा कि इसमें क्या है।"

बाज़ार पहुंचते ही बूढ़े को क़ारा शाह मिल गया।

"लकड़ी कहां है? मैंने तुझे लकड़ियां लेने भेजा था और तू किसी के घर में से संदूक़ चुराकर ले आया!"

क़ारा शाह ने अपनी तलवार से बूढ़े के दो टुकड़े कर डाले और संदूक़ अपने महल में पहुंचा देने का आदेश दिया। जब संदूक़ तोड़ा गया, तो उसमें से हुस्नाबाद निकल आयी। लड़की की सुंदरता पर मोहित हो क़ारा शाह बोल उठा:

"मेरे साथ शादी करोगी?"

हुस्नाबाद रो पड़ी। "मैंने एक ग़रीब आदमी के साथ शादी करने का निश्चय किया था, अब मैं क्या करूं?" उसने सोचा।

"मुझे चालीस दिन की मोहलत दीजिये," हुस्नाबाद बोली। "मैं तीन महीने संदूक़ के अंदर घुटती रही, अब आराम करके लड़कियों के साथ जी बहलाना चाहती हूं।"

"अगर तुमने इसी वक़्त मेरे साथ शादी नहीं की, तो मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालूं-गा!" क़ारा शाह ने धमकी दी।

हुस्नाबाद रो-रोकर कहने लगी:

"कम-से-कम तीन दिन की मोहलत तो मुझे दीजिये। मैं लड़कियों के साथ थोड़ा घूम-फिर लूं, उसके बाद—जैसी आपकी मर्ज़ी हो, कीजिये।"

"जी बहलाने के लिए एक दिन काफ़ी होगा!" क़ारा शाह ने कड़े स्वर में कहा और चालीस लड़कियों को उस पर निगाह रखने का हुक्म देकर उसे छोड़ दिया।

हुस्नाबाद लड़कियों के साथ बाग़ में पहुंची। बाग़ के पीछे एक नदी बहती थी।

"लड़कियो, चलो नदी में नहायें!" हुस्नाबाद लड़कियों के साथ नदी के किनारे आयी। वह पानी में घुसी ही थी कि एक बहुत बड़ी दैत्याकार मछली आयी और उसे निगल गयी।

लड़कियां भागी-भागी क़ारा शाह के पास पहुंचीं और उन्होंने उसे इस दुर्घटना के बारे में रो-रोकर बताया।

क़ारा शाह आह भर उठा। उसने अपना ताज और सोने की पेटी उतारकर फेंक दी और फ़क़ीरों के कपड़े पहनकर रेगिस्तान में चला गया।

अब दूसरे देश शहरे-जुरजां का हाल सुनिये।

नदी के किनारे एक जवान चरवाहा ढोर चरा रहा था। उससे थोड़ी दूरी पर मछुओं ने नदी में जाल फेंक रखे थे।

चरवाहा मछुओं के पास आकर बोला:

"मेरे पिताजी बीमार हैं और रोटी खरीदने शहर नहीं जा सकते हैं। मैं स्वयं भी ढोर छोड़कर जा नहीं सकता। आप मुझे अपने पिता को खिलाने के लिए एक मछली दे दीजिये।"

"ठीक है, इस बार हम जो भी मछली पकड़ेंगे, तुम्हें दे देंगे!" मछुओं ने कहा और जाल खींचा। उन्होंने देखा – एक बहुत बड़ी मछली फंसी है।

"इसे ले लो, चरवाहे!"

मछली इतनी बड़ी और भारी थी कि चरवाहा उसे उठा नहीं पाया। उसने पांच बैल गाड़ी में जोते और किसी तरह मछली घर ले आया। मछली पिता के लिए छोड़कर वह ढोर के पास लौट गया।

चरवाहे का पिता बहुत खुश हुआ। उसने मछली का पेट चीरा, तो देखा – एक लड़की पड़ी है। बूढ़े ने उसके मुंह में कुछ बूंद पानी डाला।

हुस्नाबाद को होश आया और उसने खड़े होकर बूढ़े को सिर झुकाकर सलाम किया।

"पिताजी, मैं भूखी हूं, मुझे कुछ खाने को दीजिये," उसने कहा।

बूढ़े ने मछली का एक टुकड़ा तलकर उसे दिया।

"पिताजी, आप क्या काम करते हैं?" हुस्नाबाद ने पूछा।

"मैं गायें चराता था। बूढ़ा हो गया हूं, अब मेरी जगह मेरा बेटा गायें चराता है।"

हुस्नाबाद प्रफुल्लित हो उठी।

"मेरी इच्छा पूरी हो गयी!" उसने कहा। "अगर आप चाहें, तो मैं आपके बेटे की बहू बनकर रहूं। मेरी मां भी एक गरीब परिवार से थी।"

"हम लोगों के पास शादी के लिए एक कौड़ी भी नहीं है।"

"मैं जब अपनी मर्जी से शादी कर रही हूं, तो हमें शादी की दावत देने की कोई जरूरत नहीं है," हुस्नाबाद बोली।

बूढ़े ने अपने लड़के का विवाह हुस्नाबाद के साथ कर दिया।

शादी के दूसरे दिन ही हुस्नाबाद ने अपने बालों पर रूमाल बांधा और खाना पकाने देग के पास आयी। उसने देखा – देग की सतह पर इतनी गंदगी जमा हो गयी है कि लगता था उसके दोनों कुंदे मिलकर एक हो जायेंगे। दूसरे बर्तन भी साफ़ न थे। हुस्नाबाद ने धो-रगड़कर सारे बर्तन चमका दिये। बूढ़ा खुशी के मारे फूला न समाया। वह उठकर बहू के पास आया।

"बेटी!" वह बोला। "मैं बूढ़ा हूँ और घर संभालना मेरे लिए मुश्किल है। बेटा पौ फटते ही चला जाता है और अंधेरा होने पर लौटता है। यह अच्छा हुआ कि तुम हमारे घर आ गयी। तुम बहुत मेहनती हो। मैं भी तुम्हारी मदद करना चाहता हूं। बताओ, मैं क्या काम करूं!"

हुस्नाबाद ने अपने दायें कान से बाली उतारकर बूढ़े को दी।

"आप इसे लेकर बाजार जाइये। जब कोई इसका दाम पूछे, तो आप कहिये: 'आप ईमानदारी से जो चाहें दे दीजिये।' और जितनी क़ीमत लगे, उतने में ही बेच दीजिये।"

बूढ़ा बाली लेकर बाजार पहुंचा। संयोग से उसी दिन कुछ सौदागर भी बाजार में खरी-

दारी कर रहे थे। उनमें से एक ने बूढ़े के हाथों में एक बहुत ही खूबसूरत बाली देखी।

"इसकी क्या क़ीमत है?" सौदागर ने पूछा।

"आप ख़ुद ईमानदारी से जो चाहें दे दीजिये।"

सौदागर ने एक हाथ लंबा और एक हाथ चौड़ा संदूक़ सोने से भरकर बूढ़े को दे दिया।

"यह ठीक है या कम है?"

"मैंने कहा न, ईमानदारी से जो चाहें दे दीजिये।"

सौदागर ने उसे एक बोरी सोने से भरकर और दी।

"यह घर ले जाइये!" सौदागर ने कहा और सोना ढोने के लिए एक गधा भी साथ में दे दिया।

बूढ़े को गुस्सा आया: "क्या यह मेरा मज़ाक़ उड़ा रहा है? मेरा क्या जाता है, आओ, सारा सोना उठाकर ले जाऊं, बाद में देखा जायेगा!" यह सोचकर वह गधे को हांकता हुआ घर चल दिया।

उधर सौदागर अपने मन में कहता रहा: 'अगर मुझे इसके साथ की एक बाली और मिल जाये, तो मैं इन्हें अपने बादशाह को सारी दुनिया पर लगाये गये महसूल के बदले में दे दूंगा।'

घर पहुंचकर बूढ़े ने सारा सोना अपनी बहू को दे दिया।

अगले सप्ताह हुस्नाबाद ने अपने बायें कान की बाली उतारकर ससुर को दी और उसे बाज़ार में बेचने को कहा।

बूढ़ा फिर बाज़ार पहुंचा। वही सौदागर बूढ़े के पास आकर पूछने लगा:

"इस बाली का क्या दाम है?"

"मैं तुम्हें नहीं बेचूँगा!" बूढ़े ने कहा। "तुमने पिछली बार मेरा मज़ाक़ उड़ाया था।"

"अच्छा, मेरे साथ चलो!" सौदागर बोला और बूढ़े को अपने घर ले आया।

उसने बूढ़े को सोने से भरे दो संदूक़ दिये, उसे अतलस का चोग़ा पहनाया और दो गधे भी भेंट किये।

"आप कहां रहते हैं, बाबा?" सौदागर ने पूछा।

"अगर मैं इसे बता दूं, तो यह सारा सोना छीन लेगा," बूढ़े ने सोचा।

"मेरा घर नहीं है," उसने उत्तर दिया।

जब बूढ़ा बाज़ार से घर लौटा, तो हुस्नाबाद ने सारा सोना छुपाकर रख दिया और अपने ससुर और पति से बोली:

"आप बीस कारीगरों को बुलाइये, हम एक शहर बनवायेंगे।"

वे लोग कारीगरों को बुला लाये।

"आप लोग अपने परिवारों को भी यहां ले आइयें!" हुस्नाबाद ने कारीगरों से कहा।

सब कारीगर अपने परिवार भी ले आये।

हुस्नाबाद के हुक्म के अनुसार कारीगरों ने एक ऊंची और लंबी दीवार बनानी शुरू की।

उन सबको रोज़ाना रोटी, पैसा और गरम-गरम खाना दिया जाने लगा। उन्हें पहनने के लिए भी अच्छा कपड़ा मिलने लगा। जब दूसरे कारीगरों ने हुस्नाबाद के बारे में सुना, तो वे भी जगह-जगह से वहां पहुंचने लगे। हुस्नाबाद ने सब का स्वागत किया, उन्हें खिलाया, पिलाया और अच्छे कपड़े पहनने को दिये।

वहां से गुज़रनेवाले मुसाफ़िर पूछते:

"यह दीवार कौन बनवा रहा है?"

"चरवाहे की पत्नी," कारीगर जवाब देते। "अगर आप काम करना चाहें, तो आप भी यहां आ सकते हैं। यहां खाने-पीने को अच्छा मिलता है और मज़दूरी भी अच्छी मिलती है।"

पंद्रह दिनों में ही वहां पांच हज़ार परिवार इकट्ठे हो गये। उन लोगों ने तीन महीने में ही दस दिन के सफ़र जितनी लंबी और चौड़ी ज़मीन के चारों ओर दीवार खड़ी कर दी।

दीवार में बारह दरवाज़े बनाये गये। सब दरवाज़ों के ऊपर हुस्नाबाद की तस्वीरें लगा दी गयीं और लिख दिया गया: "इस शहर का नाम हुस्नाबाद है। जिस किसी को रोटी और गरम-गरम खाना चाहिए – यहां आकर काम करे।"

एक साल में ही वहाँ पचहत्तर हज़ार परिवार जमा हो गये।

हुस्नाबाद ने हर परिवार के लिए अच्छा घर बनवाया और साथ में सायबान भी। शहर की दीवार के हर दरवाज़े पर उसने पच्चीस पहरेदार बिठा दिये और उन्हें हुक्म दिया:

"जो कोई मेरी तस्वीर को देर तक ताकता रहे, उसे मेरे पास ले आओ।"

शहरे-जुरजां के बादशाह को जब नये शहर के बारे में पता चला, तो वह गुस्से के मारे पागल हो उठा।

"किसने हमारी बादशाहत पर हमला करने की हिम्मत की है? हमारी ही ज़मीन पर शहर बनानेवाला वह कौन है? हम उसका सिर काट डालेंगे!" बादशाह हुस्नाबाद पहुंचा और दरवाज़े पर खड़े पहरेदारों से पूछने लगा:

"यह शहर किसने बनाया है?"

"उसने, जिसकी तस्वीर यहाँ लगी है," पहरेदारों ने जवाब दिया। "जब हम आपकी फ़ौज में थे, तो आप हमें और हमारे घरवालों को भी भूखों मारते रहे। हमारी हुस्नाबाद हमें अच्छी तरह खिलाती-पिलाती हैं। उन्हें हमें रोटी देने का अफ़सोस नहीं होता और हमारे बच्चों को भी पढ़ाती हैं। बहुत-से लोग तरह-तरह के हुनर सीख गये हैं।"

बादशाह ने हुस्नाबाद की तस्वीर की ओर देखा और उस पर मोहित हो गया। शहर में घुसकर वह महल में पहुँचा।

"शहरे-जुरजाँ का बादशाह आपको अपनी पत्नी बनाना चाहता है," हुस्नाबाद के आदमियों ने उसे बादशाह का यह संदेश पहुंचाया।

यह सुनकर हुस्नाबाद गुस्सा हो उठी। उसने बादशाह को लाने का हुक्म दिया।

"ऐ, बादशाह! तुम्हारी कितनी पत्नियां हैं?" उसने पूछा।

"मेरी चालीस पत्नियां हैं..."

"क्या तुम्हें चालीस पत्नियां भी कम लगती हैं?"

बादशाह आग-बबूला हो उठा:

"ऐ, नाचीज़, मेरा अपमान करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई? अभी तुझे इसका मज़ा चखाता हूं!"

और उसने म्यान से तलवार निकाल ली। पर हुस्नाबाद के अंगरक्षकों ने उसे फ़ौरन पकड़ लिया, हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ियां डाल दीं और काल-कोठरी में बंद कर दिया।

प्रजा की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा।

"बहुत अच्छा हुआ! अब बादशाह को खूब जेल की हवा खिलायी जाये जबकि हुस्नाबाद को हम तख़्त पर बिठायेंगे।"

प्रजा के दूत हुस्नाबाद के पास आये और उससे शहरे-जुरजां पर राज करने की प्रार्थना की।

कई महीने बीते। एक दिन एक भिखारी दरवाज़े के पास आया और हुस्नाबाद की तस्वीर देखकर रोने लगा। पहरेदार उसे पकड़कर हुस्नाबाद के पास ले आये। उसने खिड़की में से देखा और फ़ौरन भिखारी के वेष में क़ारा शाह को पहचान गयी। हुस्नाबाद ने तख़्त पर बैठकर अपने चेहरे पर नक़ाब डाल लिया।

"ऐ, भिखारी! तुम क्यों रो रहे हो?" उसने पूछा।

"अगर मेरी जान बख़्शो, तो बताऊं!" क़ारा शाह ने जवाब दिया।

"बोलो! हमने तुम्हारी जान बख़्शी।"

"मैं एक लड़की से प्यार करता था जिसका नाम हुस्नाबाद था। इस शहर के दरवाज़ों पर मैंने उसकी तस्वीर देखी।"

"और वह लड़की कहां है?"

"वह नदी में नहाने गयी थी और वहीं डूब गयी थी। मुझको यही बताया गया था। और अगर उसने दासियों को रिश्वत देकर मुझे यह झूठी ख़बर भिजवाई है, तो बस वह मेरे हाथ आ जाये! मैं उसे जंगली घोड़े की पूंछ से बंधवाकर स्तेपी में घिसटवाऊंगा, जिससे हर कांटे पर उसका गोश्त लग जाये।"

"इसमें उसका कोई क़सूर नहीं है। तुम उस पर नाराज़ मत होओ।"

"क्या यही मेरी हुस्नाबाद है?" क़ारा शाह ने सोचा और अपने कपड़ों में छिपी तलवार निकालकर हुस्नाबाद के सिर पर आ खड़ा हुआ।

"अपना नक़ाब हटाओ! मैं देखना चाहता हूं, तुम कौन हो!" वह चिल्लाकर बोला।

पर हुस्नाबाद के अंगरक्षकों ने क़ारा शाह को पकड़ लिया और काल-कोठरी में डाल दिया।

हुस्नाबाद ने अपने बड़े वज़ीर को बुलाकर पूछा:

"ज़रा, गिनकर बताओ, हमारी फ़ौज में कितने सिपाही हैं?"

वज़ीर ने गिनती की। फ़ौज में सात लाख घुड़सवार और पैदल थे।

"फ़ौज को चढ़ाई के लिए तैयार करो!" हुस्नाबाद ने हुक्म दिया।

फ़ौज को चढ़ाई के लिए तैयार करने में चालीस दिन लगे। इसके बाद स्वयं हुस्नाबाद अपने पति के साथ फ़ौज की कमान संभाले हुए अपने पिता के शहर की ओर चली।

हुस्नाबाद की फ़ौज रास्ते में मैदान, रेगिस्तान, झीलें पार करती हुई हंसी-खुशी आगे बढ़ती रही।

अब फ़ौज को आगे बढ़ती छोड़कर हुस्नाबाद के क्रूर पिता का हाल सुनिये।

एक बार उसने सपने में देखा कि एक उक़ाब उसे अपने पंजों में दबोचकर काफ़ी ऊंचाई पर ले गया और वहां अधर में लटकाकर बोला, "तू मेरा ग़ुलाम बनेगा? नहीं तो तेरा सिर काट डालूंगा!" बादशाह गिड़गिड़ाने लगा, "मैं अपना शहर और ख़ज़ाना तुम्हें सौंप दूंगा, मेरा सब कुछ ले लो, पर मुझे छोड़ दो!" "मुझे तेरी धन-दौलत नहीं, तेरी बेटी हुस्नाबाद का ख़ून चाहिए," उक़ाब बोला। बेटी का नाम सुनते ही बादशाह रो पड़ा। अचानक पहाड़ों के पीछे से हुस्नाबाद दिखाई दी। उसके एक हाथ में नंगी तलवार थी और दूसरे हाथ में हंस के गोश्त से बने सीखकबाबों की सीख। हुस्नाबाद ने अपनी तलवार से उक़ाब को मारकर उसके दो टुकड़े कर दिये और पिता को कमर से उठाकर सावधानी से ज़मीन पर रख दिया। फिर उसने उसे सीखकबाब दिये और बोली, "पिताजी, अगर मुझसे कोई ग़लती हुई हो, तो माफ़ कर दीजिये!" बादशाह की चीख निकल गयी और उसकी नींद खुल गयी।

सुबह उसने अपने चार सौ सलाहकारों और चवालीस वज़ीरों को बुलाया और उन्हें अपने सपने का मतलब बताने को कहा। सब चुप रहे।

बादशाह ने धमकी दी:

"अगर तुम लोगों ने मेरे सपने का मतलब नहीं बताया, तो तुममें से किसी को भी ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा!"

बड़ा वज़ीर खड़ा होकर बोला:

"अगर आप मेरी जान बख्शें, तो मैं आपके सपने का मतलब बताऊँ।"

"बोलो!"

"आपके सिर को पकड़कर उठा ले जानेवाला उक़ाब कोई दुश्मन होना चाहिए। जब वह हमारे देश पर क़ब्ज़ा करके आपको जेल में डाल देगा, तो आपकी बेटी आकर आपको बचायेगी। पर आपका ताज दूसरे को मिल जायेगा।"

"झूठा कहीं का!" बादशाह चिल्लाया। "मेरी बेटी को मरे हुए कितने साल बीत चुके हैं। तुम ऐसा मुझको दुःखी करने और डराने के लिए कह रहे हो। तुम्हें क़ैद कर दूंगा! फिर तुम्हारी हड्डियां भी मेरी बेटी की हड्डियों के साथ सड़ती रहेंगी।"

और बादशाह ने बड़े वज़ीर को क़ैद करवा दिया।

पर उस दिन से बादशाह रात को चैन की नींद न सो सका, सरकंडों में फंसे घायल जंगली सूअर की तरह छटपटाता रहा। एक सप्ताह बाद एक हरकारा आया।

"शहरे-जुरजां का बादशाह अपनी फ़ौज के साथ तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करने आ रहा है,"

हरकारा कहने लगा, "अपना सिर झुकाये और सीने पर हाथ रखे उसके पास जाओ। अगर तुमने अपना राज उसे सौंप दिया, तो ठीक होगा। नहीं तो देखना क्या होता है! हमारे बादशाह का यही पैग़ाम है। साथ ही उन्होंने तुम्हें सलाम भेजा है, यह लो!"

हरकारा बादशाह के पास पहुंचा और उस की गरदन पर एक घूंसा मारा। डर के मारे कांपते हुए और माफ़ करने की मिन्नत करते हुए बादशाह सिंहासन के पीछे छिप गया।

हरकारे के जाने के बाद बादशाह ने अपने वज़ीरों से कहा: "अगर इस बादशाह के हरकारे ही ऐसे हैं, तो पता नहीं, उसके सिपाही कैसे होंगे? अब हमें क्या करना चाहिए?"

"हम अब तुमको कोई सलाह नहीं दे सकते," वज़ीरों ने एक स्वर में जवाब दिया। "अगर हम अच्छा कहें, तो तुम हमें मार डालोगे, बुरा कहें—तो भी मार डालोगे। बड़े वज़ीर को क़ैद में से छुड़वा दो और खाने और तोहफ़ों के साथ उसे शहरे-जुरजां के बादशाह के पास भेजो। आगे देखा जायेगा।"

बादशाह ने बड़े वज़ीर को आज़ाद कर दिया और बोला:

"शहरे-जुरजां के बादशाह के पास जाकर सलाम करना। अगर वह मेरा शहर मांगे, तो दे देना। कल की चोट से मेरी गर्दन अभी तक दुख रही है। और अगर वह मेरा ख़ून मांगे, तो मैं लाठी लेकर शहर से निकल जाऊंगा। ऐसा दूसरा घूंसा सहने की और ताक़त मुझमें नहीं है।"

वज़ीर हंसने लगा:

"जब मैंने तुम्हें तुम्हारे सपने का मतलब बताया था, तब तुम गुस्से से पागल हो उठे थे। किसकी बात सही निकली? दुश्मन आकर तुम्हें घोड़े की पूंछ से बांधकर तुम्हें स्तेपी में कांटों पर घिसटवायेगा और तुम कुत्ते की मौत मारे जाओगे!"

बादशाह ने दलदल में फंसे गधे की तरह गर्दन लटका ली।

बड़ा वज़ीर क़ीमती तोहफ़े लेकर शहरे-जुरजां के बादशाह के यहां गया।

उसने रास्ते में शहरे-जुरजां के बादशाह के नाम एक पत्र लिखा और दस्तख़त करके एक दूत को दिया।

पत्र पाकर हुस्नाबाद ने बड़े वज़ीर को बुलवाया।

बड़े वज़ीर ने नीचे झुककर सलाम किया और बैठ गया। उसने चारों ओर देखा—उसके सामने बादशाह बैठा था (यह हुस्नाबाद का पति था)। तख़्त के चारों ओर अपने सीनों पर हाथ रखे चालीस अंगरक्षक तैयार खड़े थे। तख़्त के पास कोई अपने चेहरे पर नक़ाब डाले बैठा था।

"बड़े वज़ीर," नक़ाबपोश बोला, "तुम्हें अकेले हमारे पास आने में डर नहीं लगा? तुम्हें बचानेवाला कोई नहीं है। क्या हो, अगर मैं तुम्हें मार डालूं?"

बड़ा वज़ीर हुस्नाबाद की आवाज़ पहचान गया।

"जिसकी जान बचाई हो, उससे क्या डरना?"

तब हुस्नाबाद ने अपने चेहरे पर से नक़ाब हटा दिया और बड़े वज़ीर के पास आकर बोली:

"ऐ, मेरे प्यारे पिता! आपके ही कारण मैं अभी तक ज़िंदा हूं। अगर मैं अपने पिता का देश आपको सौंप दूं, तो क्या आप न्यायपूर्वक राज करेंगे?"

वज़ीर सिर झुकाकर बोला:

"बेटी, मैं बूढ़ा हो चुका हूं! तुमने अपने पिता का देश मुझे सौंपा, मैं उसे मेरे सामने तख़्त पर बैठे बादशाह को सौंपता हूं।"

हुस्नाबाद अपनी फ़ौज के साथ शहर में घुसी।

बादशाह को ढूंढ़ा गया, पर वह कहीं न मिला। वह डर के मारे उसी दिन भाग गया था और फिर उसको किसी ने नहीं देखा।

हुस्नाबाद अपने पति के साथ राज करने लगी और उसने सब बेक़सूर लोगों को जेल से मुक्त कर दिया। उनमें से कुछ को उसने अपने शहरों का शासन सौंप दिया।

इस प्रकार हुस्नाबाद की इच्छा पूरी हुई।

ग़रीब की बेटी

अजम देश के बादशाह के एक ही बेटा था और वह भी बिलकुल मूर्ख। उसकी शैतानियों के कारण प्रजा की नाक में दम था। एक दिन लोगों के धैर्य का बांध टूट गया और वे बादशाह के पास शिकायत करने गये।

शिकायत सुनकर बादशाह गुस्सा हो उठा। उसने उन सबको महल से बाहर निकलवा दिया और जल्लादों को उनका पीछा करके मारने का हुक्म दे दिया। वज़ीर से न रहा गया, वह बोला:

"हुज़ूर, गुस्सा थूक दीजिये और जल्लादों को रोकिये। आपका बेटा बारह साल का हो गया है। उसे आप पढ़ने भेजिये, वह ठीक हो जायेगा।"

बादशाह ने अपने कूढ़-मग़ज़ बेटे को पढ़ने भेजा।

सनकी शाहज़ादा किताब देखते ही रोने-चिल्लाने लगा:

"मैं नहीं पढूंगा! मैं तो शाहज़ादा हूं! जो मेरे जी में आयेगा, वही करूंगा। मुझको अपना सिर खपाने की क्या ज़रूरत है?"

उसका शिक्षक घबराकर सोचने लगा:

"अगर मैंने शाहज़ादे को डांटा-फटकारा और पढ़ने के लिए मजबूर किया, तो यह अपने पिता के पास जाकर मेरी शिकायत करेगा। मुझे अपनी जान प्यारी है। यह जो चाहे, करता रहे।"

शाहज़ादा तीन साल तक मकतब में पढ़ता रहा। सारे तीन साल उसने अपने दोस्तों के साथ पासा खेलने में ही गुज़ारे और कुछ भी नहीं सीखा।

एक दिन बादशाह को अपने बेटे की याद आयी। उसने उसे बुलवाया और लंबी दाढ़ी-वाले चार सौ विद्वानों से कहा:

"आप लोग देखिये, मेरा बेटा कितना पढ़ गया है और कौन-कौन-सी किताबें उसे याद हैं?"

कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादा बादशाह और उसके चार सौ विद्वानों के सामने आया।

"बेटे, तुमने स्कूल में क्या सीखा?"

मूर्ख शाहज़ादे ने अपनी जेब में से पासे निकालकर हथेली पर रखे और बोला:

"यह!"

बादशाह आग-बबूला हो उठा। उसने शिक्षक को जान से मार डालने का हुक्म दिया। बेचारे शिक्षक के सात बच्चे अनाथ रह गये।

बादशाह ने सारे शहर में मुनादी करवायी:

"जो कोई शाहज़ादे को चालीस दिन में पढ़ना-लिखना सिखा देगा, उसे इनाम दिया जायेगा। और अगर उसे पढ़ाने के लिए कोई आगे नहीं आया, तो सारा शहर तुम लोगों समेत जलाकर राख कर दूंगा।"

उस शहर में एक ग़रीब आदमी रहता था, जिसकी नौ साल की एक लड़की थी। वह बैठी सूत कात रही थी। अचानक उसके पिता रोते हुए आये।

"पिता जी, आप क्यों रो रहे हैं?" बेटी ने पूछा।

"हाय, अब क्या करें! अगर बादशाह के कूढ़-मग़ज़ बेटे को चालीस दिन में लिखना-पढ़ना नहीं सिखाया गया, तो बादशाह सबको जलाकर राख कर देगा।"

"आप उसे लाइये, मैं पढ़ना-लिखना सिखा दूंगी।"

ग़रीब आदमी को अपनी बेटी के कहे पर विश्वास नहीं हुआ, पर मजबूर होकर वह बादशाह के पास गया और बोला:

"अगर आप हुक्म दें, तो मेरी बेटी शाहज़ादे को पढ़ाने के लिए तैयार है।"

"ठीक है," बादशाह बोला और उसने अपने मूर्ख बेटे को ग़रीब की बेटी के पास पढ़ने के लिए भेज दिया।

बादशाह के दरबारी कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे को ग़रीब के घर लेकर आये।

जब मूर्ख शाहज़ादे ने देखा कि ग़रीब की बेटी छोटी-सी है, तो उसने सोचा, "इसके एक थप्पड़ मारूंगा और यह मुझे पढ़ाना भूल जायेगी।"

पर लड़की बड़ी होशियार थी। शाहज़ादे के उस पर हाथ उठाते ही, उसने उसके गाल पर कसकर एक चांटा मारा।

कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे को अपनी ज़िंदगी में कभी मार नहीं पड़ी थी और इसके अलावा वह था भी बड़ा डरपोक। इस लिए वह इतना डर गया कि लड़की अगर भौंहें भी सिकोड़ती,

तो उसकी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की सांस नीचे रह जाती। अपनी शैतानियों के कारण उसे रोज़ाना थप्पड़ खाने पड़ते। ग़रीब की लड़की उसे पढ़ाती रही और उसकी कोशिशें व्यर्थ नहीं गयीं – शाहज़ादा पढ़ना-लिखना सीख ही गया।

चालीस दिन बाद बादशाह को अपने कूढ़-मग्ज़ बेटे की याद आयी। उसने अपने चार सौ विद्वानों को बुलाया और बोला:

"अच्छा, अब शाहज़ादे को भी लाओ। देखता हूं, लड़की ने मेरे बेटे को क्या सिखाया है, और अगर कुछ नहीं सिखाया है, तो इसी वक़्त सारे शहर को जलाकर राख कर दूंगा और लड़की को जंगली घोड़ों की पूंछ से बांध कर घिसटवाऊंगा।"

कूढ़-मग्ज़ शाहज़ादे को लाया गया।

"अच्छा, बेटे, हमें पढ़कर सुनाओ।"

वह रुक-रुककर पढ़ने लगा। लेकिन आखिर पढ़ना तो सीख ही गया था।

बादशाह और उसके लंबी दाढ़ीवाले विद्वानों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"क्यों, कैसा है मेरा बेटा?" बादशाह ने पूछा।

"शाहज़ादा बहुत क़ाबिल है!" सलाहकारों ने अपनी दाढ़ियां हिलाते हुए कहा।

बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने अपने बेटे को ज़री का नया चोग़ा पहनाया, बेशक़ीमती चीज़ें तोहफ़े में दीं, दरबार के सब लोगों को दावत दी और ग़रीब से कहा:

"चल, चल। तुझे और तेरी बेटी को शेखी बघारने की कोई ज़रूरत नहीं। अल्लाह का शुक्रिया अदा कर कि उसने तुझे मौत के मुंह से बचा लिया।"

सारी प्रजा भी खुश थी कि बादशाह अब शहर को जलाकर राख नहीं करेगा और वे लोग ज़िंदा रह सकेंगे। उन्हें यहां खुशियां मनाने दीजिये, आइये अब हम शाहज़ादे का हाल देखें।

कूढ़-मग्ज़ शाहज़ादा दावत के फ़ौरन बाद गीली ज़मीन पर लेट गया और चालीस दिन तक बिना कुछ खाये-पिये पड़ा रहा।

बादशाह बड़ा दुखी हुआ। उसने शहर में मुनादी करवायी:

"जो कोई मेरे बेटे को बुलवा सकेगा, उसे सिर से पैर तक सोने से ढक दूंगा और काले-काले बालोंवाली खूबसूरत लड़की इनाम में दूंगा। और अगर कोई भी आदमी ऐसा न कर सका, तो शहर उजाड़ दूंगा और किसी की राख भी बाक़ी न छोड़ूंगा।"

उसी शहर में एक ग़रीब पोपली बुढ़िया रहती थी। उसने अपने मुंह में एक सूखी खूबानी डाली और उसका रस चूसते हुए बोली: "ठीक है, मैं जाकर देखती हूं।"

महल में आकर बुढ़िया ने मूर्ख शाहज़ादे की पीठ पर हाथ फेरकर पूछा:

"बेटे! तेरे पिता बादशाह हैं और उनके पास खाने-पीने की कोई कमी नहीं है, फिर तू क्यों भूखा और चुपचाप पड़ा है?"

शाहज़ादा बोला:

"अगर मेरे पिता मेरी शादी उसी लड़की से कर दें, जिसने मुझे पढ़ाया था, तब तो मैं बोलने लगूंगा, नहीं तो मरने तक यहीं लेटा रहूंगा।"

बादशाह ने अपने बेटे की बात सुन ली और अपने लंबी दाढ़ियोंवाले चार सौ विद्वानों को बुलाकर कहा:

"ज़रा मज़हबी किताबों में देखकर बताओ, क्या मेरे प्यारे बेटे की शादी उस ग़रीब लड़की से हो सकती है?"

लंबी दाढ़ियोंवाले काफ़ी देर तक मज़हबी किताबों के पन्ने उलटते रहे, पर उन्हें इस बारे में कुछ नहीं मिला।

वे बादशाह के पास आये और बोले:

"नहीं, ऐसी शादी नहीं हो सकती!"

और शाहज़ादा बिना खाये-पिये पड़ा रहा।

बादशाह ग़ुस्से से पागल हो उठा। उसने जल्लादों को बुलाया।

सात जल्लाद सीने पर हाथ रखे आये और झुककर सलाम करके बोले:

"हमारी तलवारों की धार तेज़ है, हाथों में बहुत ताक़त है, जिसकी मौत आयी है, पलक झपकते ही हम उसका सिर धड़ से अलग कर देंगे।"

जल्लादों ने चार सौ लंबी दाढ़ियोंवालों के हाथ पीछे बांध दिये और उनके सिर काटने के लिए चबूतरे पर ला खड़ा किया।

उस शहर में एक नाकामयाब वकील भी रहता था।

"किसी तरह इन चार सौ विद्वानों की जान बचानी चाहिए," उसने अपने मन में सोचा और बादशाह के पास आकर बोला:

"बादशाह सलामत, एक मज़हबी किताब में साफ़-साफ़ लिखा है कि आपकी मर्ज़ी हो, तो आप अपने बेटे की शादी ग़रीब की लड़की के साथ कर सकते हैं, न चाहें तो नहीं, इससे आपका कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

बादशाह बहुत खुश हुआ। उसने अपने लोगों को ग़रीब की लड़की को पकड़कर महल में लाने का हुक्म दिया। उन लोगों ने जाकर लड़की को पकड़ लिया और बिना उसकी सहमति लिये जबर्दस्ती उसकी शादी कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे के साथ कर दी।

शादी के दूसरे दिन ही कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे ने एक गढ़ा खुदवाया। ग़रीब की बेटी को गढ़े के पास लाकर उसने उसकी चालीस चोटियों में गांठ लगायी, एक थप्पड़ उसके दायें गाल पर मारा, दूसरा बायें पर और उसकी चोटी से बांधकर उसे लटका दिया।

"कंगली, ले अब, शाहज़ादे को पीटने का मज़ा चख।" यह कहकर वह अपने घोड़े पर सवार हो गया और शिकार करने चल दिया। शाम को वापस आकर उसने लड़की को गढ़े में से निकाला और सुबह फिर चोटी से लटका दिया। इस तरह चालीस दिन बीत गये। इकतालीसवें दिन लड़की ने अपनी आंखों में आंसू भरकर कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे की बहुत आरज़ू-मिन्नत की:

"मैं बहुत कमज़ोर हो गयी हूं। मुझे बस आज अपने मां-बाप से मिल आने दो, पता नहीं मैं उन्हें फिर देख भी पाऊंगी या नहीं।"

"जा, पर फ़ौरन लौटकर आना। अगर ज़रा भी देर की, तो सिर कटवा दूंगा और लाश में भूसा भरवाकर महल की दीवार पर लटकवा दूंगा, जिससे पति का कहना न माननेवाली पत्नियों को शिक्षा मिले।"

ग़रीब की बेटी बड़ी ख़ुश हुई। उसने जल्दी-जल्दी जूते पहने, बुर्क़ा ओढ़ा और मक्के की दो रोटियां उठाकर मायके भागी।

अपनी बेटी का उतरा हुआ चेहरा देखकर मां रोने-बिलखने लगी:

"मेरी बेटी, क्या हुआ है तुझे? तू बिलकुल पीली पड़ गयी है, सूख गयी है। क्या तू बहुत परेशान है?"

"मां, शाहज़ादा मुझे पूरे चालीस दिनों से सता रहा है। न मुझे रोटी का टुकड़ा खाने को देता है, न पानी का घूंट पीने को, सिर्फ़ चांटे ही चांटे। मुझे दिन भर गढ़े में चोटी से लटकाये रखता है।"

मां का दिल भर आया। उसने बेटी का मुंह धुलाया, बालों में कंघी की और तरह-तरह के पकवान बनाकर खिलाये। और जब बेटी ने खा-पी लिया और ख़ुश नज़र आने लगी, तो उसने अपने संदूक़ में से एक तसवीर निकालकर बेटी को दी और बोली:

"जब तेरा पति तुझे पीटने लगे, तू मुस्कराने लगना, जब वह और मारे, तो हंस पड़ना। अगर वह पूछे कि तू रोने के बजाय हंस क्यों रही है, तो कहना तुम्हारी मार मेरे लिए सेंवई की तरह है और तुम्हारी गालियां – पुलाव की तरह। तुम्हारा जो जी चाहे करो, पर जिस लड़की की यह तसवीर है, उसे दूसरी पत्नी मत बनाना। इसके बाद खिलखिलाकर हंस पड़ना।"

अपने पति के घर पहुंचकर ग़रीब की बेटी ने वैसा ही किया, जैसा मां ने कहा था।

जब कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे ने उस बेहद ख़ूबसूरत लड़की की तसवीर देखी, तो वह उसके पीछे पागल हो उठा।

"यह किस की तसवीर है?" कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे ने चिल्लाकर पूछा। "मैं इससे शादी करना चाहता हूं। यह कहां रहती है?"

ग़रीब की बेटी ने वही कहा, जो उसकी मां ने उसे बताया था।

"कुछ भी हो इसे अपनी दूसरी पत्नी मत बनाना।"

कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादा ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ ग़रीब की बेटी को पीटने लगा।

तब ग़रीब की बेटी बोली:

"एराम नाम का जन्नत का एक बाग़ है। वहां पहुंचने में तुम्हें छः महीने लगेंगे। एराम के बादशाह की आक़बीलाक नाम की लड़की है। वह अपने चेहरे पर सत्तर पारदर्शक नक़ाब डाले रहती है। अगर एक भी नक़ाब उठाया जाये, तो चारों ओर ऐसी रोशनी फैल जायेगी, जैसे बत्तीस तेज़ दीप जल रहे हों। आक़बीलाक ने एलान करवा रखा है: 'जो कोई मुझे तीन

बार बोलने के लिए मजबूर करेगा, उसी से मैं शादी कर लूंगी। और जो असफल रहेगा – उसका सिर कटवा दूंगी।"

कूढ़-मग़ज़ शाहज़ादे ने फ़ौरन चालीस खच्चरों पर सोना लदवाया और अपने साथ चालीस हथियारबन्द पिछलग्गुओं को लेकर एराम खोजने निकल पड़ा। "मैं शाहज़ादा हूं," उसने सोचा, "सब मुझसे डरते हैं, मैं जो चाहूं, कर सकता हूं, आक़बीलाक को जबर्दस्ती अपनी पत्नी बना लूंगा, चाहे वह इसके लिए तैयार हो या नहीं – मुझे इससे कोई मतलब नहीं।"

बहुत-सी झीलें, नदियां, पहाड़, रेगिस्तान पार करता हुआ वह बहुत दिनों तक सफ़र करता रहा।

मूर्ख शाहज़ादा अपने पिछलग्गुओं के साथ चलते-चलते अन्त में बग़दाद के चांदी के नक़्क़ाशीदार दरवाज़ों तक आ पहुंचा। दरवाज़ों के पीछे एक बहुत सुंदर बाग़ था, जिसमें गुलाब और ट्यूलिप के फूल खिले हुए थे, बुलबुलें और तरह-तरह की चिड़ियां चहक रही थीं। वहां सोने का एक तख़्त रखा था, जिस पर अतलस के गद्दे बिछे हुए थे। सोने के हौज़ में पानी की जगह दूध के फ़ौवारे चल रहे थे।

दरबान दौड़कर आया और बोला:

"आइये, आइये, प्यारे मेहमानो! आप कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं?"

मूर्ख शाहज़ादा उफ़न पड़ा:

"गुलाम कहीं का!"

तलवार म्यान से निकालकर उसने उसके दो टुकड़े कर दिये।

मूर्ख शाहज़ादा बाग़ में घुसकर ऊँची गद्दी पर बैठ गया, ताज उतारकर एक तरफ़ रख दिया और अपने पिछलग्गुओं से चिल्लाकर बोला:

"घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दो और मेरे लिए खाना बनाओ!"

घोड़े फूल रौंदने और खाने लगे, पिछलग्गू अनार और अंजीर के पेड़ लकड़ी जलाने के लिए काटने लगे।

उसी समय तीन फ़ाख़्ताएं उड़कर सोने के तख़्त पर आ बैठीं और कलाबाज़ी खाकर तीन खूबसूरत परियां बन गयीं।

उन्होंने मूर्ख शाहज़ादे की ओर देखा भी नहीं और एक सदूंक़ची में से मोहरे निकालकर शतरंज खेलने लगीं।

उनमें से एक परी बेईमानी करने लगी, तो बाक़ी दोनों परियां कहने लगीं:

"बेईमानी सिर्फ़ आदमी करते हैं, परियां नहीं।"

मूर्ख शाहज़ादा गुस्सा हो उठा,

"परियां बेईमान होती हैं, न कि आदमी!" वह बोला। "मैं बिना बेईमानी किये ही तुम्हें हरा सकता हूं।"

"ज़रा, हमारे साथ खेलकर देखो!" सबसे सुंदर परी ने इठलाते हुए कहा।

"ठीक है!"

और पलक झपकते ही मूर्ख शाहज़ादा अपने चालीस खच्चर, उन पर लदा सोना और चालीस पिछलग्गू भी हार गया। जब खेल समाप्त हुआ, तो वह बिलकुल कंगाल हो चुका था।

"मैं अभी तुम्हें मज़ा चखाता हूं," वह अपनी तलवार निकालकर चिल्लाया।

एक परी उठ खड़ी हुई।

"यहां से चले जाओ!" उसने मृदु स्वर में कहा। "यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है!" और उसने मूर्ख शाहज़ादे के एक ऐसी लात मारी कि वह कलाबाज़ियां खाता हुआ और तरबूज़ की तरह लुढ़कता हुआ मुंह के बल मिट्टी में जा गिरा। परियाँ हंसने लगीं। उनकी आंखें उस बिल्ली की आंखों की तरह चमक रही थीं, जिसने अभी-अभी मक्खन चखा हो।

इस तरह मूर्ख शाहज़ादे ने अकेले ही अपना रास्ता पकड़ा।

कई दिनों के बाद वह एक ऐसी जगह पहुंचा, जहां सात अधबनी मीनारें खड़ी थीं।

"यह कौन-सी मसजिद है?" मूर्ख शाहज़ादे ने वहां से गुज़र रहे गड़रिये से पूछा।

गड़रिये ने जवाब दिया:

"दोस्त, यह मसजिद नहीं, महल है। इसमें बादशाह अपनी बेटी आक़बीलाक के साथ रहता है। आक़बीलाक ने एलान करवा रखा है कि वह उसीसे शादी करेगी, जो उसे तीन बार बोलने के लिए मजबूर कर देगा। अभी तक कोई उसकी शर्त पूरी नहीं कर पाया है और जो असफल रहे हैं, उनकी खोपड़ियां इन मीनारों में ईंटों की जगह लगायी जा रही हैं।"

मूर्ख शाहज़ादा महल में घुसा, तो उसने देखा कि शाहज़ादी आक़बीलाक, जितना उसे बताया गया था, उससे भी सौ गुना सुंदर है। वह भौचक्का रह गया और दलदल में फंसे गधे की तरह सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

आक़बीलाक ने अपनी आंखों से उसे शतरंज और पासों की तरफ़ इशारा किया। मूर्ख शाहज़ादा शतरंज खेलने से डरता था, इस लिए उसने पासे खेलने का निश्चय किया। उसने सोचा, "मेरे पास कुछ भी नहीं है। तो क्या हुआ, मैं अपने आपको ही दांव पर लगा दूंगा। हर हालत में मुझे ही जीतना है। कितने सालों से यह खेल खेलता जो आया हूं।"

खेल शुरू हुआ। थोड़ी देर में ही फ़ैसला हो गया। मूर्ख शाहज़ादा फिर हार गया।

आक़बीलाक ने इशारे से जल्लाद को बुलाया।

शाहज़ादी के दायें ओर खड़ा वज़ीर सिर झुकाकर बोला:

"मैं आपसे प्रार्थना करता हूं। आप इस बेवक़ूफ़ को मुझे सौंप दीजिये। मैं इसे खूब सता-सताकर मारूँगा। इसके बाद कोई खाली जेब खेलने नहीं आयेगा।"

वज़ीर मूर्ख शाहज़ादे को पकड़कर अपने साथ ले गया।

"मेरे घर पर तेल पेरने का कोल्हू है, जिस पर एक बूढ़ा गुलाम काम कर रहा है। उसका सिर कटकर मीनार पर जायेगा और उसकी जगह तुम तेल पेरोगे," उसने शाहज़ादे से कहा।

कोल्हू पर मूर्ख शाहज़ादा दिन-रात काम करता, तीन कनस्तर तेल निकालता, सूखी घास पर सोता, मूंग की दाल खाता और गोबर की बू सूंघता रहता।

एक बार वहाँ से सौदागरों का एक क़ाफ़िला गुज़रा।

"आप लोग कहाँ जा रहे हैं?" मूर्ख शाहज़ादे ने क़ाफ़िले के सरदार से पूछा।

"अजम देश।"

"वहाँ के बादशाह के नाम मेरी एक चिट्ठी ले जाओगे?"

"ठीक है," कारवाँ का सरदार बोला।

मूर्ख शाहज़ादे ने एक काग़ज़ लेकर चिट्ठी लिखी:

"आदरणीय पिता जी, आपकी आँखों का नूर, आपका बेटा, एराम पहुँच गया है।
मैंने आक़बीलाक परी को अपनी पत्नी बनाना चाहा था, पर एक जाल में फंस गया हूँ।
साल से कोल्हू पेर रहा हूँ। पिता जी, आप अजम के बादशाह हैं। मेरी सारी मुसीबतों
जड़ वह ग़रीब की बेटी है, जिसके बाल मैंने उखाड़ दिये थे। पत्र मिलते ही सात से ले
सत्तर साल तक के उसके सारे रिश्तेदारों के टुकड़े-टुकड़े करवा दीजिये। अगर आपने ऐसा
नहीं किया, तो मैं इस दुनिया में ही नहीं, परलोक में भी आपसे नाराज़ रहूँगा।"

मूर्ख शाहज़ादे ने चिट्ठी बन्द करके कारवाँ के सरदार को दे दी।

कारवां का सरदार उस ग़रीब का पड़ोसी था, जिसकी बेटी मूर्ख शाहज़ादे की पत्नी
थी। अजम लौटकर उसने अपने पड़ोसी को इस चिट्ठी के बारे में बताया। यह बात पास के
कमरे में बैठी ग़रीब की बेटी ने सुन ली:

"यह चिट्ठी, शायद, मेरे पति की ही है," उसने सोचा। और अपने पिता के हाथों
में से चिट्ठी छीनकर वह बाग़ में भाग गयी।

ग़रीब की बेटी ने देखा कि मामला ख़राब है। उसने वह चिट्ठी जला दी और एक और
काग़ज़ पर नयी चिट्ठी लिखी।

"आदरणीय पिता जी!

आपकी आंखों का नूर, आपका बेटा, एराम पहुँच गया है। मैंने परी आक़बीलाक से
शादी कर ली और अब मैं सारी दुनिया का बादशाह हो गया हूँ। देव, परियां, जिन और
आदमी सब मेरे अधीन हैं। पत्र पाते ही मेरी पत्नी और उसके घरवालों की सातवीं पीढ़ी तक
के रिश्तेदारों को नये कपड़े पहना दीजिये और सिर से पैर तक सोने से ढक दीजिये। अगर
ऐसा नहीं किया, तो मैं आकर आपके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। मैं तीन महीने के अंदर-अंदर
अपनी सात लाख फ़ौज लेकर आ रहा हूँ। और आकर मैं आपकी अच्छी तरह मरम्मत करूँगा।
आपका बेटा।"

ग़रीब की बेटी ने यह चिट्ठी अपने पिता को दे दी, जो उसे बादशाह के पास ले गया।
बादशाह ने डर के मारे काँपते हुए यह चिट्ठी पढ़कर अपने चार सौ विद्वानों को सुनाई।
चिट्ठी में जैसा लिखा था, वैसा ही किया गया।

ग़रीब सिर से पाँव तक सोने से लदा घर आया, ख़ुशी के मारे उसके क़दम ज़मीन पर
नहीं पड़ रहे थे।

रात को ग़रीब की लड़की महल में घुसकर वह तेज घोड़ा चुरा लाई, जिस पर सवा

होकर उसका पति शिकार करने जाता था। घोड़े पर काठी कसकर उसने मर्दों के कपड़े पहने, सिर पर पोस्तीन की टोपी पहनी और कमर में इस्फ़हान में बनी तलवार बांध ली।

ग़रीब की लड़की लपककर घोड़े पर सवार हुई और उसे इतने ज़ोर से चाबुक मारे कि उसकी हड्डियों पर भी निशान पड़ गये। घोड़ा कान हिलाता, पूंछ उठाये पूरी रफ़्तार से भागा।

ग़रीब की बेटी उसी बाग़ में रुकी, जहाँ तीन साल पहले उसका पति परियों के साथ शतरंज खेला था। उसने दरबान का शिष्टतापूर्वक अभिवादन किया और अपने घोड़े को खूंटे से बांधने को कहा, ताकि वे फूलों को न खा सकें।

उसने अभी चाय का एक प्याला भी न पिया था कि पहले की तरह तीन फ़ाख़्ताएँ उड़कर आयीं और परी बनकर शतरंज खेलने लगीं। एक परी ने खेल में बेईमानी की, तो दूसरी बोली :

"बेईमानी केवल आदमी करता है।"

"नहीं, परियाँ बेईमानी करती हैं," ग़रीब की बेटी ने उनको टोका। परियों में से एक ने उसकी ओर देखकर पूछा :

"क्या आप भी शतरंज खेलते हैं?"

"हां," ग़रीब की बेटी ने कहा और उसने थोड़ी ही देर में तीनों परियों को मात देकर उनका सब कुछ जीत लिया।

इसके बाद ग़रीब की बेटी ने मोहरा चलते हुए कहा :

"अगर इस बार मैं फिर जीत गया, तो तुम तीनों मेरी ग़ुलाम हो जाओगी।"

उसने चाल चली और परियाँ फिर मात खा गयीं।

परियाँ थर-थर काँपने और रोने लगीं।

"हमें माफ़ कर दीजिये! हम आक़बीलाक की दासियाँ हैं। अगर उसे मालूम पड़ गया कि हम अपने आपको हार गयी हैं, तो वह हमारे माता-पिताओं को भी जिंदा नहीं छोड़ेगी। हमें छोड़ दीजिये। आपकी जो भी इच्छा हो, उसे हम फ़ौरन पूरा कर देंगी।"

ग़रीब की लड़की बहुत ख़ुश हुई।

"मेरा एक काम करो," वह बोली। "आक़बीलाक को तीन बार बोलने के लिए मजबूर कर दो, फिर मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।"

तीनों परियों ने एक ठंडी सांस ली।

"आक़बीलाक बड़ी क्रूर, निर्दयी और ज़िद्दी तानाशाह है," बड़ी परी बोली। "वह अट्ठारह साल की हो गयी है, पर अभी तक उसने एक बार भी अपने माता-पिता का कहना नहीं माना है। अच्छा, आप जैसा चाहते हैं, हम वैसा ही कर देंगी। हम आपको तीन पर देती हैं। फिर हम जैसा कहें, जैसा सिखायें, वैसा ही करिये। शाहज़ादी के कमरे में तीन पलंग हैं : एक पन्ने का बना है, दूसरा नीलम का और तीसरा – माणिक का। जब शाहज़ादी पन्ने के पलंग पर बैठे, तो आप दीये की लौ से एक पर जलाना और मैं फ़ौरन उस पलंग

के नीचे घुस जाऊँगी। आप पलंग को कुछ सुनाने के लिए कहना। मैं कुछ सुनाने लगूंगी और शाहज़ादी आक़बीलाक सोचेगी कि पलंग बोल रहा है। इसके बाद आक़बीलाक नीलम के पलंग पर जा बैठेगी, आप फिर पलंग को कुछ सुनाने के लिए कहना। जब वह माणिक के पलंग पर बैठे, तब भी यही करना। पर हम जो भी आपसे कहें, आप उसका उल्टा बोलना। आपकी बातों का कोई मतलब नहीं निकलना चाहिए।"

तीनों परियों ने अपना एक-एक पर ग़रीब की बेटी को दे दिया और फ़ाख़्ताएं बनकर उड़ गयीं।

ग़रीब की बेटी घोड़ा सरपट दौड़ाती हुई एराम पहुँची और महल में गयी।

शाहज़ादी आक़बीलाक अपने चेहरे पर रेशम के सत्तर बारीक नक़ाब डाले बैठी थी। उसकी चाँद-से चेहरेवाली, काले-काले बालोंवाली चालीस दासियाँ हंसती-खेलती नखरे के साथ अपने नाखून कुतर रही थीं। ग़रीब की लड़की ने इतने अच्छे ढंग से मर्दाने कपड़े पहन रखे थे कि उनमें से किसी को पता नहीं चला कि सुगठित शरीरवाला यह लड़का वास्तव में लड़की है।

"पत्थरदिल लड़की!" ग़रीब की बेटी चिल्लाई। "तू कब तक बेक़सूर आदमियों की हत्या करती रहेगी, उनके खून से ज़मीन लाल करती रहेगी? तू कब तक केवल इसी लिए अदंडित रहेगी, क्योंकि तेरे पिता बादशाह हैं? फ़ौरन उठकर मेरे पैरों में गिर, वरना मैं तलवार से तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगा और तेरा सिर अपनी काठी के आगे लटकवा दूंगा। पर मुझे तेरी खूबसूरती पर रहम आता है। तुझे मैं यहाँ से उठाकर ले जाऊँगा और नौकरानी बनाकर मेरे चालीस हज़ार सैनिकों को चाय पिलाने का काम करवाऊँगा।"

शाहज़ादी आक़बीलाक क्रोधित हो उठी। उसने अपने चेहरे से नक़ाब उतार फेंके। उसका मुंह खुला का खुला रह गया, माथे पर बल पड़ गये।

शाहज़ादी ने वज़ीर को इशारा किया।

"ऐ, जाहिल।" वज़ीर चिल्लाया। "तेरे घर में मेहमान को खिलाने के लिए भी कुछ नहीं है और तू इतनी बकवास कर रहा है। अभी जल्लाद को बुलाकर तेरा सिर कटवाता हूँ।"

जवाब में ग़रीब की लड़की हंसकर बोली :

"तुम मुझे डरा नहीं सकते। आओ, हम पासे खेलकर देखें, कौन जीतता है।"

शाहज़ादी आक़बीलाक ने चांदी की गोटियां और सोने के पासे निकाले।

"ठहर, बेशर्म शाहज़ादी," ग़रीब की लड़की बोली, "तू सब आनेवालों से बेईमानी से जीतकर उन्हें मरवा देती है, पर तू मुझे धोखा नहीं दे सकती। पासे मुझे दे।"

शाहज़ादी आक़बीलाक गुस्से से लाल हो उठी, पर उसने पासे दे दिये।

पलक झपकते ही ग़रीब की बेटी ने आक़बीलाक का सब कुछ जीत लिया।

निराशा और गुस्से में भरकर आक़बीलाक ने अपने सिर के बाल नोच लिये और पन्ने के पलंग पर जा बैठी।

ग़रीब की बेटी ने परियों का दिया हुआ एक पर जलाया। परी आयी और पलंग के नीचे छिप गयी। शाहज़ादी आक़बीलाक को कुछ भी पता न चला।

"ऐ, पलंग," ग़रीब की बेटी बोली, "मैं छः महीने से सफ़र कर रहा हूँ और बहुत थक चुका हूँ। मुझे कुछ सुना, जिससे मेरे दिल को चैन आये।"

परी बोलने लगी:

"आपको क्या सुनाऊँ?"

"सुनायेगा तू, मैं तो सुनूंगा," ग़रीब की बेटी बोली।

परी सुनाने लगी।

पहली परी की कहानी

बहुत समय पहले एक बढ़ई रहता था। कुछ पैसा जोड़कर वह यात्रा पर निकला। बढ़ई का एक दोस्त था जो सोने के ज़ेवर बहुत सुंदर बनाता था। सुनार बोला, "मैं भी चलूँगा"। और सुनार का दोस्त एक दर्ज़ी था। दर्ज़ी बोला, "मैं भी तुम लोगों के साथ चलूंगा।" दर्ज़ी का भी एक दोस्त था, जो जादू-टोना करना जानता था। वह बोला: "मैं भी चलूंगा।"

वे चारों चल पड़े। चलते-चलते रात हो गयी, सब सो गये और बढ़ई पहरा देने लगा। नींद न आये, इस लिए उसने लकड़ी के टुकड़े से एक गुड़िया बनानी शुरू की। गुड़िया बनाकर उसने चिराग़ के पास रख दी और सो गया। अब सुनार पहरा देने लगा। उसने गुड़िया देखकर सोचा: "बढ़ई ने यही बनायी है, मैं उससे भी अच्छा काम करूंगा।" उसने आग में चांदी का सिक्का पिघलाया और उससे गुड़िया के चाँदी के नाखून, दांत और आँखें बना दीं। अपना काम खत्म करके वह सो गया। अब दर्ज़ी की बारी आयी। उसने गुड़िया को देखकर सोचा: "मेरे दोस्तों ने यह काम किया है, मुझे भी कुछ करना चाहिए।" उसने कपड़े का एक टुकड़ा लेकर बहुत सुन्दर पोशाक बनायी और गुड़िया को पहनाकर सो गया। जादूगर उठा। गुड़िया को देखकर उसने मंत्र पढ़ा और गुड़िया में जान पड़ गयी। "उठो," जादूगर चिल्लाया। सबने सिर उठाकर देखा – उनके सामने एक बहुत ख़ूबसूरत लड़की खड़ी है। उसकी सुंदरता के आगे चाँद और सूरत फीके पड़ रहे थे। उसके मुक़ाबले में शाहज़ादी आक़बीलाक एक बदसूरत मेंढकी से भी गयी-गुज़री है।

"ऐ, लड़के," पलंग के नीचे छिपी परी बोली, "अगर तू अपने आपको विद्वान समझता है, तो बता, उस लड़की को किसने बनाया? बढ़ई ने, सुनार ने, दर्ज़ी ने या जादूगर ने?"

ग़रीब की लड़की बोली:

"अगर दर्ज़ी ने कपड़े नहीं सिये होते, तो क्या वह आदमी बन सकती थी?"

वही हुआ, जो होना था। आक़बीलाक अपना गुस्सा नहीं रोक पाई और चिल्ला उठी:

"तुम मूर्ख हो। क्या इतना भी तुम्हारी समझ में नहीं आता कि कपड़े पहने हुए भी मैं शाहज़ादी हूँ और कपड़े न पहने हुए भी शाहज़ादी रहूँगी।"

शहनाइयां गूंज उठीं, ढोल बजने लगे और लोग खुशी से चिल्ला उठे:

"शाहज़ादी पहली बार बोल उठी!"

शाहज़ादी आकबीलाक उस बिल्ली की तरह गुस्सा हो उठी, जिसके मुंह से चूहा छीन लिया गया हो और नीलम के पलंग पर जा बैठी। ग़रीब की लड़की ने दूसरा पर जलाया और बोली: "ऐ, नीलम के पलंग, कुछ सुना, जिससे मेरा दिल बहल जाये।"

नीलम के पलंग के नीचे छिपी दूसरी परी बोली:

"तुम्हें क्या सुनाऊं? पन्ने के पलंग की कहानी तक तो तुम्हारी समझ में आयी नहीं। अच्छा, सुनो।"

दूसरी परी की कहानी

बहुत समय पहले एक अमीर रहता था। वह कितना ही धनवान क्यों न था, पर उसकी पीठ पर डेढ़ मन मैल जमा रहती थी।

उस अमीर के तीन बेटे थे। एक दिन बड़ा बेटा बोला:

"पिता जी, मुझे एक सौ अशरफ़ियां दीजिये, मैं ताशक़न्द जाकर मोटी-मोटी भेड़ें ख़रीदूंगा।"

अमीर आदमी ने अपने बेटे को सौ अशरफ़ियां दे दीं। वह बाहर निकला, तो देखा – एक लड़का फटी हुई टोपी कभी लगाता है तो कभी उतारता है।

"तू इस फटी-पुरानी टोपी को बार-बार क्यों लगा और उतार रहा है?" अमीर आदमी के बेटे ने उस लड़के से पूछा।

"यह जादूई टोपी है, इस टोपी को सिर पर रखकर आंखें मींचिये और फिर खोलकर देखिये, तो मालूम पड़ेगा कि आप पश्चिम से पूर्व पहुंच गये हैं।"

अमीर आदमी के बेटे ने फ़ौरन सौ अशरफ़ियां देकर टोपी ख़रीद ली और घर ले आया। पिता फटी टोपी को देखते ही चिल्ला पड़ा:

"तुमने यही ख़रीदारी की है!"

मंझला बेटा बोला:

"पिता जी, आप मुझे एक सौ अशरफ़ियां दीजिये, मैं उर्गेन जाकर पिस्ते जितने बड़े दानेवाला चावल ख़रीदूंगा।"

अमीर ने उसे सौ अशरफ़ियां दे दीं। मंझला लड़का बाहर निकला, उसने देखा – कुछ लड़के शीशे के टुकड़े से खेल रहे हैं और चिल्ला रहे हैं:

"जादूई शीशा! इसमें देखने पर समरक़न्द से ही बुख़ारा दिखाई देगा!"

मंझले बेटे ने सौ अशरफ़ियां देकर शीशे का टुकड़ा ख़रीद लिया।

"बेवक़ूफ़!" अमीर आदमी चिल्लाया।

तब सबसे छोटे बेटे ने उससे सौ अशरफ़ियां मांगीं।

"मैं बाज़ार में दुकान लगाऊँगा। छोटी-मोटी चीज़ें बेचूंगा," छोटा लड़का बोला।

अमीर ने उसे भी सौ अशरफ़ियाँ दे दीं। वह घर से बाहर निकला, तो देखा – कुछ लड़के छेददार परात में बैठकर पहाड़ी से नीचे फिसल रहे हैं।

"कमाल है," छोटे बेटे ने सोचा, "न कुछ खाती है, न पीती है और इतना तेज़ भागती है।"

उसने सौ अशरफ़ियाँ देकर छेददार परात ख़रीद ली और घर लौट आया। अमीर परात को देखते ही गुस्से से पागल हो उठा, उसने डंडा उठाया और तीनों बेटों को मारने लगा। मंझले बेटे की जेब में से शीशे का टुकड़ा गिर पड़ा। छोटे बेटे ने मार से बचने के लिए छेददार परात से सिर ढक लिया। अचानक उसकी नज़र शीशे के टुकड़े पर पड़ी। उसने शीशे में देखा – पश्चिम के किसी बादशाह की बेटी मर गयी है और लोग उसके ताबूत के चारों ओर खड़े रो रहे हैं। छोटे बेटे ने फटी टोपी उठाकर ओढ़ ली और आँखें बंद कर लीं। आँखें खोलते ही उसने देखा – वह ताबूत के पास खड़ा है। उसने छेददार परात में पानी भरकर मृत शाहज़ादी के सिर पर डाला। अचानक वह उठ खड़ी हुई। वह इतनी ख़ूबसूरत थी कि उसके आगे शाहज़ादी आक़बीलाक मेंढकी जैसी लगती है। अच्छा अब तुम फ़ैसला करो: "शाहज़ादी को किस चीज़ ने जिलाया – टोपी ने, शीशे के टुकड़े ने या परात ने?"

ग़रीब की बेटी बोली:

"अगर छोटे बेटे ने मृत शाहज़ादी को शीशे में न देखा होता, तो कुछ भी न हुआ होता।"

आक़बीलाक से न रहा गया और वह बोल उठी:

"बिलकुल बेवक़ूफ़ हो। मेरे मरने के बाद मुझे लाखों आदमी देखें, तो क्या मैं जी उठूंगी?"

यह कहते ही उसने अपनी ज़बान काट ली। शहनाइयाँ गूंज उठीं, ढोल बजने लगे। लोग चिल्लाने लगे:

"आक़बीलाक दूसरी बार बोल उठी!"

आक़बीलाक गुस्सा होकर माणिक के पलंग पर जा बैठी। ग़रीब की बेटी ने तीसरा पर जलाकर कहा:

"ऐ माणिक के पलंग, तू भी कुछ सुना।"

तीसरी परी माणिक के पलंग के नीचे आकर छिप गयी और कहानी सुनाने लगी।

तीसरी परी की कहानी

बहुत समय पहले एक बादशाह राज करता था। उसके पास एक तोता था। बादशाह तोते को बड़े प्यार से खिलाता-पिलाता था और उसका बहुत ख्याल रखता था।

एक बार तोते ने सोचा:

"मेरी ज़िंदगी में तो बादशाह मुझे बहुत प्यार करता है, पर मेरे मरने के बाद क्या करेगा?" यह सोचकर वह अपने पिंजरे में ऐसे पड़ गया, जैसे मर गया हो।

बादशाह आया और पिंजरे की ओर देखकर नौकरों से बोला :

"इस मरी हुई चिड़िया को बाहर फेंक दो।"

तोता फ़ौरन उठ खड़ा हुआ और बोला :

"तुम बहुत खराब बादशाह हो। मैं मरा नहीं हूं! मुझे अब हिन्दुस्तान जाने दो। मैंने चालीस सालों से अपने घरवालों को नहीं देखा है।"

"ठीक है," बादशाह बोला, "पर तुझे वापस मेरे पास आना होगा।"

तोता अपने देश जाकर वापस आ गया और बादशाह के लिए एक फल लेकर आया। वह फल देखने में सेब या आड़ू जैसा लगता था, पर था इतना सुंदर कि देखते ही मुंह में पानी आने लगता था।

बादशाह अपनी घुड़साल में तोते को कंधे पर बिठाये अपने चहेते घोड़े को थपथपा रहा था। तोते का लाया हुआ फल सोने की तश्तरी में रखकर बादशाह को दिया गया। बादशाह फल का एक टुकड़ा उठाकर मुंह में रखनेवाला ही था कि अचानक घोड़े ने मुंह बढ़ाकर सारा फल खा लिया।

"ठहर, ठहर," बादशाह चिल्लाया।

घोड़ा ज़मीन पर गिरकर तड़पने लगा और मर गया। बादशाह गुस्से से पागल हो उठा और उसने तोते की गर्दन मरोड़ दी।

"बताओ, ग़लती किसकी थी? बादशाह की, घोड़े की या तोते की?"

ग़रीब की बेटी भूली नहीं थी कि परियों ने उसे बिलकुल उल्टा जवाब देने को कहा है, इस लिए वह बोली :

"ग़लती घोड़े की थी, उसे वह फल खाना ही नहीं चाहिए था।"

शाहज़ादी आक़बीलाक से फिर न रहा गया, और वह चिल्लाकर कह उठी :

"अरे बेवक़ूफ़, क्या घोड़ा वह फल हिन्दुस्तान से लेकर आया था..."

उसने फिर अपनी जीभ काट ली, पर अब देर हो चुकी थी।

शहनाइयां और ढोल बजने लगे। लोग चिल्लाने लगे :

"शाहज़ादी तीसरी बार बोल उठी। अब वह दूल्हों के सिर नहीं कटवा सकेगी।"

आक़बीलाक उदास होकर बोली :

"हाय, मैंने क्या कर दिया! अब मुझे तेरी पत्नी बनना पड़ेगा। मेरी वजह से कितने ही शाहज़ादे आकर अपने सिर कटा गये। तेरे न मूंछें हैं, न दाढ़ी, पर तूने मुझे बेवक़ूफ़ बना दिया। ख़ैर, अब मैं कुछ नहीं कर सकती, मुझे तेरी पत्नी बनना ही पड़ेगा।"

ग़रीब की बेटी ने म्यान से तलवार निकाल ली और बोली :

"बेरहम शाहज़ादी! देखती है, यह क्या है? तेरे नखरों की वजह से कितने लोगों ने अपने सिर कटाये हैं! अब तेरी मौत आ गयी!"

आक़बीलाक रो पड़ी :

"हाय, मैं कितनी बदक़िस्मत हूं! मेरा कोई क़सूर नहीं। एक दुष्ट जादूगर ने मेरे पैदा

होते ही मुझ पर जादू कर दिया था। तूने वह जादू उतार दिया। अब मेरे साथ तेरा जो जी चाहे कर।"

ग़रीब की बेटी ने शाहज़ादी आक़बीलाक की बातों में आकर उसे अपनी आपबीती सुनायी और मूर्ख शाहज़ादे को ढूंढ़कर ग़द्दारी की सज़ा देने के लिए कहा।

आक़बीलाक ने मुनादी करवाई:

"अजम का शाहज़ादा जहाँ भी हो, फ़ौरन महल में पहुँचे!"

मूर्ख शाहज़ादे को बहुत ढूंढ़ा गया, पर वह कहीं न मिला। ग़रीब की बेटी अपने देश लौटने की तैयारी करने लगी। उसे यहीं छोड़कर, आइये, अब मूर्ख शाहज़ादे का हाल सुनिये। जब तीसरी बार नगाड़े बजे, तो वज़ीर भागता हुआ कोल्हू पेर रहे मूर्ख शाहज़ादे के पास आया और बोला:

"शाहज़ादे, अपनी जान बचाओ! जिस शाहज़ादे ने आक़बीलाक को तीन बार बोलने के लिए मजबूर कर दिया था, वह तुम्हारी पत्नी है और वह तुम्हारा सिर काटना चाहती है। तुम फ़ौरन कहीं छुप जाओ।"

डर के मारे मूर्ख शाहज़ादा कूड़े के गढ़े में छिप गया और तब तक वहीं बैठा रहा, जब तक कि ग़रीब की बेटी एराम छोड़कर न चली गयी।

तब वज़ीर मूर्ख शाहज़ादे को शाहज़ादी आक़बीलाक के पास लेकर आया।

"इसे मेरे तख़्त से दूर खड़ा करो," आक़बीलाक ने नाक सिकोड़ते हुए वज़ीर से कहा: "इस शाहज़ादे के बदन से बहुत तेज़ बदबू आ रही है। अगर तुम अजम के बादशाह के लड़के हो, तब तो तुम्हें माफ़ कर दूंगी, नहीं तो तुम्हारा सिर कटवा दूंगी।"

मूर्ख शाहज़ादा घुटनों के बल गिर पड़ा और बोला:

"शाहज़ादी, मेरे पिता वास्तव में अजम के बादशाह हैं। मैंने उन्हें चिट्ठी लिखी थी कि वह मेरी पत्नी, ग़रीब की लड़की के, जिसके बाल मैंने उखाड़ दिये हैं, टुकड़े-टुकड़े करवा दें। पर वह सबको बेवक़ूफ़ बनाकर और भेष बदलकर मुझे मारने यहाँ आ पहुँची। मेरी पत्नी नागिन से भी ज़्यादा चालाक है। एराम की शाहज़ादी, कोई भिखारिन आकर आपको धोखा दे गयी और बोलने के लिए मजबूर कर गयी। आपको उससे बदला लेना चाहिए।"

आक़बीलाक का चेहरा ग़ुस्से से लाल हो उठा।

"तुम मेरे चालीस हज़ार सैनिकों को लेकर अपने देश जाओ। उस चालाक लड़की को पकड़कर यहाँ लाओ। मैं ख़ुद उसके ख़ून का रंग देखना चाहती हूँ।"

"आपका हुक्म सिर आँखों पर," मूर्ख शाहज़ादा बोला और कूच की तैयारी करने दौड़ पड़ा। वह इतनी जल्दी में था कि सीढ़ियों से उतरते समय सात बार ठोकर खाकर लुढ़का और उसके हाथों और पैरों की खाल सात जगह से छिल गयी।

कुछ दिन बाद मूर्ख शाहज़ादा चालीस हज़ार सैनिकों के साथ अजम के लिए कूच कर गया।

अजम की सीमा के पास पहुँचते-पहुँचते उसने एक हरकारे को चिट्ठी देकर अपने पिता के पास भेजा:

"मैं तीन दिन बाद अजम पहुँच रहा हूँ। मैं अब सारी दुनिया का बादशाह हूँ, अगर आप अपना तख़्त छोड़कर मुझसे मिलने नहीं आये, तो मैं आपके देश को जलाकर ख़ाक कर दूंगा।"

चिट्ठी मिलते ही अजम के बादशाह ने अपने चार सौ लंबी दाढ़ियोंवाले विद्वानों को बुलाकर कहा:

"मेरा प्यारा बेटा बहुत नज़दीक पहुँच चुका है और उसने चिट्ठी भेजी है, जिस में लिखा है कि सारी दुनिया में उसका डंका बजता है। अगर उसने ऐसा लिखा है, तो सच ही होना चाहिए। अगर मैं उससे मिलने नहीं गया, तो वह नासमझ जो मन में आये, कर डालेगा।"

चार सौ लंबी दाढ़ियोंवालों ने जवाब में केवल अपने सिर और दाढ़ियाँ हिलाईं। बादशाह ने अपने सारे वज़ीरों और लंबी दाढ़ियोंवालों को रास्ते के दोनों ओर खड़ा कर दिया और स्वयं धूलभरी सड़क के बीचोंबीच खड़ा हो गया। सबने अपनी-अपनी तलवार निकालकर गरदन पर लटका ली।

मूर्ख शाहज़ादा नाक फुलाता, नथुने सिकोड़ता, मूंछों पर ताव देता आया और पिता के वज़ीरों और विद्वानों की ओर नज़र किये बिना घोड़ा रोककर अपने पिता से बोला:

"मैंने आपको चिट्ठी में लिखा था कि आप मेरी पत्नी की सातवीं पीढ़ी तक के सारे लोगों को मार डालें। पर आपने क्या किया? मैं आपको हुक्म देता हूं कि आप अस्सी हाथ ऊंचा फांसी का तख़्ता लगवायें और मेरी पत्नी को उस पर लटका दें। फिर मैं उसके मुंह का निशाना लगाकर तीर छोड़ूंगा, जो आरपार निकल जायेगा।"

बादशाह डर गया। उसके हाथ-पैर काँपने लगे। वह मुंह के बल धूल में गिर पड़ा। और मूर्ख शाहज़ादे ने वज़ीरों और विद्वानों के सिर काटने शुरू कर दिये।

मूर्ख शाहज़ादे को यहीं छोड़कर अब ग़रीब की बेटी का हाल सुनिये।

उसने जब सुना कि उसका पति – मूर्ख शाहज़ादा चालीस हज़ार सैनिकों के साथ अजम देश में घुस आया है, तो वह सैनिक का भेष धर, एक हाथ में तलवार और दूसरे में ढाल संभालकर अपने पिता से बोली:

"मैं अपने पति को अच्छी तरह जानती हूँ। डरपोक के सामने वह बहादुर बनता है और बहादुर के सामने – डरपोक।"

ग़रीब की बेटी एराम की फ़ौज के सामने आ खड़ी हुई और चिल्लाकर बोली:

"यहाँ कौन डींग हाँक रहा है और बेक़सूर लोगों को मार रहा है?"

मूर्ख शाहज़ादा ग़रीब की बेटी को सैनिक के भेष में तलवार और ढाल लिये देखते ही काँपने लगा। उसके हाथ से तलवार गिर गयी और वह घोड़े पर से सीधा गोबर के ढेर में जा गिरा। एराम की फ़ौज ने जब मूर्ख शाहज़ादे का यह हाल देखा, तो सारे चालीस हज़ार सैनिक सिर पर पैर रखकर भागे।

ग़रीब की बेटी मूर्ख शाहज़ादे के पैरों में फंदा डालकर उसे गोबर के ढेर में से शहर के मैदान में घसीट लायी। मूर्ख शाहज़ादे को वहीं फाँसी पर लटका दिया गया।

9–231

अजम के बादशाह का कुछ पता नहीं चला। वह कहाँ गया, उसका क्या हुआ – कोई नहीं जानता।

अजम की प्रजा ने ग़रीब की बेटी को सम्मान के साथ बादशाह के तख़्त पर बिठा दिया।

सींगोंवाला सिकंदर

पुराने समय में सिकंदर नाम का एक बादशाह राज करता था। उससे सारे नाई डरते थे, क्योंकि वह अपने बाल कटवाने के बाद नाई को मरवा देता था। बहुत-से नाइयों ने अपने प्राण गंवाये, पर कोई भी यह राज़ न जान पाया कि आख़िर सिकंदर नाइयों को मरवाता क्यों है। एक दिन सिकंदर समरक़ंद आया। वहाँ भी उसने बहुत-से नाइयों को जान से मरवा डाला। कुछ नाई अपने प्राण बचाकर भाग निकले। शहर में एक भी नाई न रहा। बहुत ढूंढ़ने के बाद एक बूढ़ा मिला जो कभी युवावस्था में बाल काटने का काम किया करता था। वज़ीर ने उसे महल में बुलाकर हुक्म दिया:

"तुम्हें बादशाह के बाल काटने होंगे।"

"बड़ी ख़ुशी से काटूंगा," बूढ़ा बोला। उसे मालूम न था कि बादशाह सिकंदर अपने बाल कटवाने के बाद नाई को ज़िंदा नहीं छोड़ता था।

बूढ़ा सिकंदर के बाल काटने लगा, तो अचानक उसने देखा कि बादशाह के सिर में सींग हैं।

बूढ़ा चुप रहा। अपना काम ख़त्म करके वह जानेवाला ही था कि अचानक सिकंदर ने आवाज़ दी:

"जल्लाद!"

"ग़रीबपरवर, मुझ पर रहम कीजिये! मेरे बहुत-से बेटे-पोते हैं, आप मेरी जान लेकर क्या करेंगे?"

सिकंदर को बूढ़े पर दया आ गयी, पर उसने उससे वचन ले लिया कि वह कभी भी किसी को नहीं बतायेगा कि सिकंदर के सिर में सींग हैं।

बहुत दिन बीत गये। अपना दिया हुआ वचन याद करके बूढ़ा चुप रहा। पर इस राज़ को छिपाये रखने के कारण उसको नींद नहीं आती थी। वह हमेशा परेशान रहने लगा और उसका पेट भी फूलने लगा – पहले एक तरबूज़ जितना हुआ, फिर एक बड़े घड़े जितना और उसके बाद एक ढोल जितना।

बूढ़े के लिए अब राज़ और ज़्यादा देर छिपाये रखना असंभव हो गया। वह शहर से भागकर पहाड़ पर चला गया। पहाड़ में एक सुनसान जगह में एक सूखा कुआँ था। बूढ़ा कुएँ के पास पहुँचा और चारों ओर देखने लगा। जब उसने देखा कि वहाँ पानी की तलाश में कोई नहीं आ रहा है तो वह कुएं में मुंह करके तीन बार चिल्लाया,

"सिकंदर के दो सींग हैं!"

"सिकंदर के दो सींग हैं!"

"सिकंदर के दो सींग हैं!"

बूढ़े ने इतना ही कहा कि उसका पेट ठीक हो गया और उसकी सारी परेशानी खत्म हो गयी।

बूढ़ा खुशी-खुशी अपने घर लौट आया।

थोड़े दिनों के बाद उस सूखे कुएं में से बहुत सुंदर और ऊंचा नरकल उग आया।

पहाड़ों में भेड़ें चरानेवाले गड़रिये को वहाँ से गुज़रते समय वह नरकल दिखाई दे गया। गड़रिया बहुत खुश हुआ। उसने नरकल के डंठल से एक बांसुरी बनायी। गड़रिये ने बांसुरी पर अपने प्यारे गाने की धुन बजानी चाही। उसने कितनी ही कोशिश क्यों न की, पर बांसुरी में से हर बार तरह-तरह के सुर में एक ही आवाज़ निकलती:

"सिकंदर के दो सींग हैं!"

एक पल में यह गूंजती हुई आवाज़ अपने तख़्त पर बैठे बादशाह सिकंदर के कानों में भी पड़ी। उसने बूढ़े नाई को फ़ौरन पकड़कर लाने का हुक्म दिया।

डर के मारे कांपते हुए बूढ़े को घसीटकर दरबार में लाया गया। उसी समय फिर पहाड़ की तरफ़ से आवाज़ आती सुनाई दी:

"सिकंदर के दो सींग हैं!"

सिकंदर ने सोचा:

"मेरे देश में दुश्मन की फ़ौज घुस आयी है और वे लोग ही मेरा नाम बिगाड़ रहे हैं।"

उसने अपनी फ़ौज को पहाड़ों में भेजा।

सिकंदर के सैनिकों ने गड़रिये को पकड़ लिया और उसे उठाकर दरबार में ले आये।

अपना कोई दोष न देखकर गड़रिये ने सोचा: "शायद, बादशाह मेरा संगीत सुनना चाहता है!" और वह गुस्से से पागल हो रहे बादशाह के सामने चुपचाप खड़ा रहा।

"बता," सिकंदर ने बूढ़े से कहा, "क़सम तोड़ने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?"

"अगर आप मेरी जान बख़्शें तो बताऊं!" बूढ़ा गिड़गिड़ाकर बोला।

"ठीक है, बता!" बादशाह बोला।

बूढ़े ने पूरा क़िस्सा बादशाह को सुना दिया। उसके बाद गड़रिये की बारी आयी।

गड़रिये ने बताया किस प्रकार वह पहाड़ में सूखे कुएं के पास पहुँचा, किस प्रकार उसने उसमें नरकल देखकर उसके डण्ठल से बाँसुरी बनायी और किस प्रकार उसकी हर कोशिश के बावजूद बाँसुरी में से एक ही स्वर निकलता रहा।

सिकंदर ने बाँसुरी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये और बूढ़े और गड़रिये को अपने देश से निकाल दिया। पर एक आदमी ने यह बात दूसरे के कान में कही, दूसरे ने तीसरे के कान में। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों को मालूम होता रहा कि सिकंदर के सींग थे।

इस कहानी को पढ़कर आपको भी मालूम हो गया कि सिकंदर के सींग थे।

मरता क्या न करता

बहुत समय पहले एक बूढ़ा रहता था। एक बार बूढ़े की पत्नी नहाने के लिए हमाम में गयी। पर अपनी बारी आने पर भी वह नहा न सकी। बादशाह का नौकर आकर बोला:

"अभी बादशाह के प्रधान ज्योतिषी की पत्नी आकर नहायेगी, इसलिए हमाम इसी वक़्त खाली कर दो!"

घर आकर बूढ़े की पत्नी बोली:

"बादशाह के ज्योतिषी का पद बहुत ऊँचा होता है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी होता है, सब पर उसका रोब रहता है। तुम भी भविष्य बताना सीखकर ज्योतिषी बन जाओ, नहीं तो मैं तुम्हें छोड़कर चली जाऊंगी।"

बूढ़े को भविष्य बताना बिलकुल भी नहीं आता था। पर मरता क्या न करता। उसने लकड़ी का एक चौकोर टुकड़ा लेकर एक तरफ़ से उस पर लाल रंग फेरा, दूसरी ओर से – काला, तीसरी ओर से – सफ़ेद, चौथी ओर से – नीला, पांचवीं ओर से – पीला और छठी ओर से – हरा। लकड़ी के चौकोर टुकड़े और एक घिसे-पिसे काग़ज़ को थैले में डालकर वह बाज़ार में एक ऐसी जगह बैठ गया, जहाँ भीड़ ज्यादा रहती थी। जब कोई आदमी उसके पास अपना भविष्य पूछने आता, तो वह लकड़ी का रंगबिरंगा पासा फेंककर उसकी ओर देखते हुए जो जी में आता कह देता। कुछ ही दिनों में नये "ज्योतिषी" की ख्याति सारे शहर में फैल गयी।

उन दिनों बादशाह के लगान उगाहनेवाले इकट्ठा हुआ सोना खच्चरों पर लादकर शहर में लाये थे। एक सोने से लदा खच्चर लापता हो गया।

बादशाह ने अपने सारे ज्योतिषियों को बुलाकर पूछा, पर उनमें से कोई भी न बता सका कि खोया हुआ खच्चर कहाँ मिल सकता है। बादशाह का एक दरबारी बोला:

"हुजूर, अभी कुछ दिनों से एक नया ज्योतिषी बाज़ार में बैठ रहा है। वह बिलकुल सही बात बताता है और उसका बताया हुआ कभी ग़लत नहीं होता।"

बूढ़े को दरबार में लाया गया। बादशाह बोला:

"मेरा सोने से लदा एक खच्चर ग़ायब हो गया है। तुम बताओ, वह कहाँ है। अगर नहीं बताया, तो तुम्हारा सिर काट डालूँगा।"

बूढ़े ने थैले में से अपना रंगबिरंगा पासा निकालकर फेंका और उसकी ओर देखकर लगान उगाहनेवालों से पूछा :

"शहर के पास पहुंचते-पहुंचते आप कहीं रुके तो नहीं थे?"

"हां, हम खच्चरों को चराने के लिए पेड़ों के एक झुरमुट के पास रुके थे।"

बूढ़े ने सोचा : "आराम करने के बाद इन लोगों ने खच्चरों की गिनती नहीं की होगी और एक खच्चर पेड़ों के झुरमुट में ही रह गया होगा।"

बूढ़ा बादशाह की ओर देखकर बोला :

"आपका खोया हुआ खच्चर झुरमुट में है। आप किसी आदमी को वहीं भेज दीजिये।"

बादशाह ने अपने आदमी भेजे। बूढ़े की बतायी हुई बात बिलकुल ठीक निकली। खोया हुआ खच्चर मिल गया। बादशाह ने बूढ़े को सिर से लेकर पैर तक बेशक़ीमती तोहफ़ों से लाद दिया और उसे अपने दरबार में ही रख लिया।

एक बार बादशाह के ख़ज़ाने में चोरी हो गयी। चोर सोने का एक बोरा उठा ले गये। बादशाह ने अपने चालीसों ज्योतिषियों को बुलाकर कहा :

"सोने की चोरी का पता लगाओ! अगर पता नहीं लगा, तो सबको जान से मार डालूंगा।"

बूढ़े ने चालीस दिन की मोहलत मांगी।

"अगर चालीस दिन में हम चोर और माल का पता न लगा पायें, तो आप हमें मार दीजिये!" बूढ़ा बोला।

बूढ़े "ज्योतिषी" ने बाज़ार से चालीस सूखी सूबानियाँ ख़रीदीं। घर आकर वह पत्नी से बोला :

"तुम चाहती थी कि मैं मर जाऊं। अगर चालीस दिन के अंदर-अंदर मैंने चोरों और माल का पता नहीं लगाया, तो बादशाह मुझे मार डालेगा। मैं नहीं कह सकता कि सोना कहाँ है। तुमने ही ज्योतिषी बनने के लिए मुझे मजबूर किया था, पर मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ। अब मुझे चालीस दिन ही ज़िंदा रहना है, इसलिए तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करना और प्यार से रहना।"

अब चोरों और सोने के बोरे का हाल सुनिये।

सोने का बोरा चालीस चोरों ने चुराया था। उनका सरदार लंगड़ा था।

चोरों को पता लगा कि एक नया ज्योतिषी आया है और वह चालीस दिन में चोर और माल दोनों का पता लगा लेगा।

सरदार ने शाम को अपने दल के एक आदमी को हुक्म दिया :

"जाकर देखो, वह बूढ़ा ज्योतिषी क्या कर रहा है।"

चोर बूढ़े के घर में छुपकर सुनने लगा। बूढ़ा उस समय पहली खूबानी खाकर पत्नी से कह रहा था:

"देखो, चालीस थे, उनमें से एक यहाँ पहुँच गया," बूढ़े ने अपने पेट की ओर इशारा किया।

चोर घबराया: "इसे मालूम है कि हम चालीस हैं, और मैं इसके घर में छुपा हूँ।"

वह भागा-भागा अपने साथियों के पास पहुँचा और बोला:

"जैसे ही मैं बूढ़े ज्योतिषी के घर में घुसा वह कहने लगा: 'चालीस में से एक चोर यहाँ है।' अगर हमने उसके साथ समझौता नहीं किया, तो हम सब पकड़े जायेंगे।"

"डरपोक कहीं का!" सरदार गुस्सा हो उठा। "उसने किसी और चीज़ के बारे में कहा होगा और तूने अपने बारे में समझ लिया। कल किसी को साथ लेकर जाना!"

दूसरे दिन दो चोर बूढ़े के घर में घुसे और छुपकर सुनने लगे।

बूढ़े ने उसी समय एक और खूबानी खायी थी और वह पेट की ओर इशारा करते हुए अपनी पत्नी से कह रहा था:

"देखो चालीस में से दो अब यहाँ पहुंच गये।"

"हमारे बारे में ही कह रहा है," चोरों ने सोचा और वहाँ से भाग निकले।

तीसरे दिन चोरों का सरदार अपने दो आदमियों के साथ स्वयं आया।

उसी समय बूढ़े ने एक और खूबानी खायी थी। वह खूबानी खराब थी, इसलिए बूढ़ा अधखायी खूबानी पत्नी को दिखाकर कह रहा था:

"देखो, अब तीन यहाँ पहुंच गये हैं, पर इन में से एक में कुछ खोट है।"

"सचमुच, यह तो हमारे बारे में ही कह रहे हैं! इसे तो हमारे लंगड़े सरदार का भी पता लग गया!" चोरों ने सोचा। सरदार ने फ़ौरन एक आदमी को घर से सोने की बोरी लाने के लिए भेजा। जब सोने की बोरी आ गयी, तो सरदार ने ज्योतिषी का किवाड़ खटखटाया।

बूढ़े ने पूछा:

"कौन है?"

"आपको तो मालूम ही है कि हम लोगों ने खज़ाने से सोने का बोरा चुराया था। लेकिन हमने इसमें से एक भी अशरफ़ी नहीं निकाली है। वह बोरा हमने एक सुरक्षित जगह में, चिमनी के अन्दर छुपा दिया है और सोने की यह बोरी आपको भेंट कर रहे हैं। हमें मुसीबत से बचाइये, हमारे बारे में बादशाह को कुछ भी न बताइये," सरदार बोला।

"मैं तो उसी दिन जान गया था कि खज़ाने में चोरी तुम्हीं लोगों ने की है," बूढ़े ने डींग हांकी, "पर मुझे तुम पर दया आ गयी। मैंने सोचा, तुम लोग खुद ही आकर बता दोगे। इसी लिए तो मैंने चालीस दिन की मोहलत ली थी। तुम सोने की बोरी यहाँ छोड़ो और अपने-अपने घर जाओ।"

दूसरे दिन ही बूढ़ा बादशाह के पास पहुँचा।

"हुजूर, मैंने आपके सोने का पता लगा लिया है। पर चोर हाथ नहीं आ सके, वे लोग किसी दूसरे शहर में भागकर छुप गये हैं।" बूढ़े ने वह जगह भी बता दी जहाँ सोना छुपा हुआ था। "आप अपने वफ़ादार नौकरों को उसे लेने भेज दीजिये," उसने बादशाह को सलाह दी।

बादशाह ने फ़ौरन अपने आदमी दौड़ाये। उन्हें बूढ़े की बतायी हुई जगह में सोना मिल गया। बादशाह ने उसी समय अपने प्रधान ज्योतिषी को बुलाकर चालीस कोड़े लगवाये और उसे हटाकर बूढ़े को अपना प्रधान ज्योतिषी बना दिया।

बूढ़ा घर आकर पत्नी से बोला:

"लो, तुम जो चाहती थीं, वही हो गया हूँ। बादशाह ने मुझे अपना प्रधान ज्योतिषी बना दिया है। जिस दिन मेरी मौत आयेगी मर जाऊंगा, पर तब तक के लिए तो मैं बड़ा आदमी बन ही गया।"

एक बार बूढ़ा हमाम में नहाने गया। वह अपने सिर में दही मलकर धोने लगा। नहाते-नहाते वह सोचने लगा:

"क्या करूँ? किस तरह बादशाह से पीछा छुड़ाऊं? ठीक है, मैं पागल होने का ढोंग रचता हूँ। यहाँ से नंगा भागकर बादशाह का ग़रेबान पकड़ लूंगा और उसे बाहर खींच लाऊंगा। जब वह देखेगा कि मैं पागल हो गया हूँ, तो वह मुझे निकाल देगा। इसके अलावा अब कोई दूसरा चारा नहीं रहा।"

बूढ़ा हमाम से नंगा निकलकर महल की ओर भागा। बादशाह बरामदे में बैठा था। बूढ़े ने जाकर बादशाह का ग़रेबान पकड़ लिया। बादशाह और उसके अंगरक्षक भौचक्के रह गये। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। बूढ़ा बादशाह को घसीटता हुआ बाहर ले आया।

संयोग से उसी समय भूकंप आया और बरामदे की छत टूटकर नीचे गिर पड़ी।

बादशाह को काटो तो ख़ून नहीं। फिर जब उसे होश आया तो उसने पूछा:

"तुम्हें इसका पता कैसे चला?"

"मैं हमाम में बैठा नहा रहा था। अचानक मुझे पता लगा कि आप पर मुसीबत आनेवाली है। आपके प्राण बचाने के लिए मैं बिना कपड़े पहने, शर्म-हया छोड़कर नंगा ही भागा आया। इस लिए मैंने आपको ज़बरदस्ती बरामदे से उठाया और यहाँ खींच लाया।"

बादशाह बूढ़े की और भी ज़्यादा इज़्ज़त करने लगा, उसे बहुत क़ीमती इनाम दिये और हमेशा अपने साथ रखने लगा।

"मैंने कभी तुम जैसा ज्योतिषी नहीं देखा!" बादशाह कहता रहता।

एक बार बादशाह खेत में घूम रहा था। उसने एक टूटी टांगवाला टिड्डा पकड़कर हाथ में बन्द कर लिया। "ज्योतिषी से पूछकर देखता हूँ, वह बता सकता है या नहीं कि मेरे हाथ में क्या है।" बादशाह ने मन में सोचा और बूढ़े से पूछा:

"अच्छा, बताओ, मेरे हाथ में क्या है?"

बूढ़ा घबरा गया। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे। "अब मैं कैसे जान बचाऊँ?" उसने सोचा और ज़ोर-ज़ोर से अपने बारे में बोलने लगा:

"पहली बार फंसते-फंसते बचा, दूसरी बार फिर फंसते-फंसते बचा, पर तीसरी बार बुरी तरह फंस गया।"

"शाबाश! तुमने बिलकुल ठीक बताया!" बादशाह ने मुट्ठी खोलकर उसे टिड्डा दिखाया।

कुछ दिन बाद बूढ़ा बादशाह के पास आकर बोला:

"हुज़ूर, मैं आपसे एकांत में कुछ कहना चाहता हूँ।"

बादशाह ने बाक़ी सब लोगों को बाहर भेज दिया।

"बोलो, क्या कहना चाहते हो!"

"हुज़ूर, मैं ज्योतिषी नहीं हूँ। मैंने मुसीबत में पड़ जाने पर ही भविष्य बताना शुरू किया था।"

बूढ़े ने बादशाह को अपनी पूरी कहानी सुना दी। बादशाह सुनकर बहुत देर तक हंसता रहा। फिर उसने बूढ़े को प्रधान ज्योतिषी के पद से मुक्त करके वापस घर जाने की इजाज़त दे दी।

शाहज़ादी माहेसितारा

किसी समय बग़दाद में आदिल नाम का बादशाह राज करता था। आदिल अपनी विद्वत्ता और न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था। उसकी तीन पत्नियां थीं। काफ़ी लंबे अर्से तक उनमें से किसी के भी कोई संतान नहीं हुई। अंत में आदिल की सब से छोटी पत्नी दिलारा ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम शौकत रखा गया। नवजात शाहज़ादे को अतलस और ज़री के कपड़े पहनाये गये। उसके लिए बहुत-सी नौकरानियां और धायें रखी गयीं।

शाहज़ादा चाँद-सा सुंदर था। इतने दिनों बाद एक पुत्र का पिता बनने पर बादशाह आदिल की खुशी की कोई सीमा न रही। उसने अपनी सारी प्रजा को बुलाकर कई दिनों तक दावतें दीं, खुशियां मनाईं और दूर-दूर से आये ग़रीब लोगों को दिल खोलकर दान दिया...

समय बीतता रहा, शाहज़ादा शौकत सात बरस का हो गया। बादशाह आदिल ने बग़दाद के जाने-माने मौलवियों को बुलाकर उन्हें शाहज़ादे शौकत को शिक्षा देने की ज़िम्मेदारी सौंपी। लड़का असाधारण रूप से प्रतिभाशाली और योग्य निकला। उसके शिक्षक उससे बहुत खुश थे, क्योंकि शाहज़ादे ने बहुत आसानी से और बहुत ही कम समय में सब विद्याएं उनसे सीख लीं।

पिता के महल में मौलवी लोगों की देख-रेख में शाहज़ादे की शिक्षा-दीक्षा उसके पन्द्रह साल के होने तक चली। अब कोई भी ऐसी विद्या न बची थी, जिसमें शाहज़ादा दक्ष न हो। इन सब विद्याओं के अलावा उसने गायन और वाद्य-वादन भी सीखा तथा युद्ध-कौशल भी। शौकत के पिता की ख़ुशी की कोई सीमा न थी।

जब शाहज़ादा सत्तरह साल का हुआ, तो उसे तीन हज़ार सैनिकों का सेनानायक बना दिया गया।

एक बार शाहज़ादा शौकत अपने सैनिकों के साथ शिकार पर गया। कई दिनों की यात्रा के बाद वे एक बहुत चौड़ी घाटी में पहुंचे, जिसके दोनों ओर अगम्य पहाड़ खड़े थे, जहाँ अभी तक आदमी का क़दम न पड़ा था। इस घाटी में हरे-भरे घने जंगल थे और कई नदियाँ बहती थीं, इसके अलावा तरह-तरह के शिकार की भी कोई कमी न थी।

शाहज़ादे के सैनिकों ने अपने खेमे उस घाटी में गाड़ दिये। घाटी में आराम करते हुए उन्हें शिकार करने में बड़ा आनन्द आता रहा। शिकार के गोश्त के वे सीख़-कबाब बनाकर खाते रहे और उनका समय बहुत ही ख़ुशी-ख़ुशी बीतने लगा। चौथे दिन, जब शौकत अपने तेज़ निशानेबाज़ शिकारियों के साथ घाटी में शिकार कर रहा था, अचानक उसके सामने से एक बहुत ही सुंदर हिरण बड़ी तेजी से भागकर निकल गया। हालांकि हिरण शाहज़ादे को केवल एक क्षण के लिए ही नज़र आया होगा, पर उसने देख लिया कि हिरण के चारों खुर मोतियों के थे, उसके हर पैर पर एक-एक जोड़ा सोने के कड़ों का था। हिरण के सींगों पर भी सोने-चाँदी और हीरे-मोतियों का बहुत ही सुंदर काम था। उसकी रेशम जैसी खाल भी तरह-तरह के लगभग बत्तीस क़िस्मों के रंगों में झिलमिला रही थी। शाहज़ादा सम्मोहित-सा खड़ा था कि अचानक वह हिरण फिर उसके सामने आकर अत्यन्त आकर्षक ढंग से अपना नृत्य-कौशल दिखाने लगा। उसके पैरों में पड़े सोने के कड़ों की मधुर आवाज़ शाहज़ादे के कानों में गूंजने लगी, उसकी रंग-बिरंगी खाल झिलमिलाती रही। शाहज़ादा होश में आने पर अनायास ही कह उठा:

"अपने जीवन में मैंने पहली बार इतना आश्चर्यजनक दृश्य देखा है!" फिर वह अपने शिकारियों से बोला, "इस हिरण को ज़िंदा ही पकड़कर लाओ!"

शिकारी काफ़ी देर तक अपने घोड़े उस हिरण के पीछे दौड़ाते रहे, पर वह उनके हाथ न आया। अपने सब सैनिकों पर नाराज़ होकर शाहज़ादे ने ख़ुद ही हिरण का पीछा किया, पर उसे भी सफलता न मिली। तब उन लोगों ने हिरण को घेरने का फ़ैसला किया। शौकत ने अपने शिकारियों को कड़ी चेतावनी दी:

"देखना, हिरण बचकर न निकल जाये। अगर तुममें से किसी ने भी ग़लती की, तो उसे ज़िंदा नहीं छोड़ूंगा!"

शिकारी हिरण को चारों ओर से घेरकर धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगे, पर हिरण निडर होकर पहले के समान आकर्षक ढंग से नाचता रहा, जैसे उसे अपने ऊपर आनेवाले ख़तरे का ख़्याल ही न हो। इस बीच घेरा इतना तंग हो चुका था कि बहुत-से शिकारियों को पीछे

रह जाना पड़ा। जब कुछ तेज शिकारियों का अगला घेरा सावधानीपूर्वक बढ़ता हुआ हिरण के बहुत क़रीब पहुँच गया, तो हिरण अचानक कूदा और शाहज़ादे के घोड़े के पुट्ठे पर अपने अगले खुर मारकर तीर की तरह पहाड़ों की ओर भाग निकला। क्योंकि हिरण को ख़ुद शाहज़ादा ही नहीं पकड़ पाया, इस लिए अब वह किसी और को दोष भी नहीं दे सकता था। अपनी असफलता पर शर्मिंदा होकर शाहज़ादा अपने सैनिकों से बोला कि वह स्वयं ही हिरण को पकड़ेगा और अपने घोड़े पर तीर की तरह पहाड़ों की ओर उड़ चला।

शाहज़ादे का घोड़ा उसके देश के सब से तेज़ दौड़नेवाले घोड़ों में से था और हवा से ऐसे बातें कर रहा था, जैसे उसके पंख निकल आये हों। शाहज़ादा अपनी ओर दौड़कर आते हुए हिरण का रास्ता काटकर अपने घोड़े को उससे लगभग तीस क़दम की दूरी तक ले आया। पर हिरण भागते-भागते एकदम तीर की तरह पलटकर दूसरी ओर भागा। ऐसा न जाने कितनी बार हुआ। अंत में जब शाहज़ादे ने समझ लिया कि वह हिरण को किसी तरह नहीं पकड़ पायेगा, तो उसने उसको तीर मारकर घायल करने की सोची। उसने घोड़े से उतरकर एक चट्टान का सहारा लिया और निशाना साधकर एक तीर छोड़ा। पर तीर हिरण के नहीं लगा। उसने दुबारा एक तीर चलाया, पर निशाना फिर चूक गया। उसने एक-के-बाद-एक न जाने कितने तीर चलाये, पर उनमें से एक भी निशाने पर नहीं लगा। शाहज़ादे को अपने आप पर गुस्सा आने लगा और वह अंधाधुंध तीर चलाने लगा, पर हिरण पहले की तरह नाचता रहा, मानो उसे चिढ़ा रहा हो। शाहज़ादे के पास पाँच सौ तीर थे, सारे ख़त्म हो चुके थे और उनमें से एक भी हिरण के न लग पाया था। हिरण जैसे जान गया था कि शाहज़ादे के सारे तीर ख़त्म हो चुके हैं और बड़ी शान से पहाड़ों की ओर चल दिया। शाहज़ादा उसके पीछे भागा। अब हिरण एक चट्टान से दूसरी पर कूदता हुआ ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने लगा। शाहज़ादा भी उसका पीछा करता हुआ अपने घोड़े को एक चट्टान से दूसरी पर कुदाने लगा। पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर हिरण फिर शाहज़ादे को दिखाकर नाचने लगा और वहाँ से उतरकर कुलाँचें मारता हुआ पहलेवाले पहाड़ से भी ज़्यादा ऊंचे पहाड़ पर चढ़ने लगा। शाहज़ादे ने फिर अपना घोड़ा हिरण के पीछे दौड़ाया। उसका घोड़ा भी असाधारण रूप से फुर्तीला और मज़बूत था और बड़ी तेजी से ढलान से उतरकर दूसरे पहाड़ की चोटी की ओर उड़ा चला जा रहा था। हिरण दूसरे पहाड़ की चोटी पर पहुँचकर एकदम आँखों से ओझल हो गया। शाहज़ादा पूरी तरह इसी सपने में खोया हुआ था कि वह उस हिरण को ज़िंदा या मरा पकड़ ही लेगा। अंत में जब शौकत पहाड़ की चोटी पर पहुँचा, तो उसने देखा — एक ओर घास का असीम मैदान है और दूसरी ओर हरा-भरा घना जंगल। वह हिरण दूर जाकर खड़ा हो गया और जैसे ही शाहज़ादे की नज़र उसके ऊपर पड़ी, फिर नाचने लगा। शाहज़ादा हिरण के नाच की सराहना किये बिना न रह सका, पर उसे अब अपने आप पर और भी ज़्यादा गुस्सा आने लगा।

शौकत अपने घोड़े की गरदन से चिपटे हुए बड़ी होशियारी के साथ चट्टानों पर से उतरता हुआ घाटी में पहुँच गया। बीच-बीच में उसे कई बार घोड़े से उतरकर पैदल भी चलना पड़ा। जैसे ही शाहज़ादा हिरण के नज़दीक पहुँचता, वह फिर दूर भाग खड़ा होता। शाहज़ादा हिरण

का तब तक पीछा करता रहा, जब तक कि वह घने जगंल में घुसकर आँखों से ओझल न हो गया।

शौकत भी अपने घोड़े पर बैठा जंगल में घुसा। वहाँ तरह-तरह के इतने सुंदर पेड़ थे, जो शाहज़ादे ने पहले कभी नहीं देखे थे। चारों ओर सुंदर फूलों की मादक गंध फैली हुई थी। हर तरफ़ से तरह-तरह की चिड़ियाओं का सुखद कलरव और गान सुनाई दे रहा था। शाहज़ादा काफ़ी देर तक हिरण को खोजता रहा, पर वह उसे कहीं नज़र नहीं आया। शाम होने लगी। पर शाहज़ादा खाली हाथ लौटने को तैयार नहीं था, इस लिए उसने रात जंगल में ही बिताने और सुबह फिर से हिरण को खोजने का फ़ैसला किया। थोड़ी देर बाद वह एक खुले मैदान में पहुँचा। उसने अपने घोड़े पर से काठी उतार दी और लगाम उसकी गर्दन पर डालकर बोला, "जा, अब तू भी थोड़ी देर आराम कर और हरी-भरी घास चर ले!"

शाहज़ादे को नींद आने ही वाली थी कि वह किसी जंगली जानवर की दहाड़ सुनकर हड़बड़ाकर उठ बैठा। थोड़ी देर बाद ही जंगल की हर दिशा से डरावनी आवाज़ें सुनाई पड़ने लगीं। यह स्पष्ट हो गया कि इस जंगल में कई तरह के खतरनाक जानवर हैं, जो रात होते ही शिकार की खोज में अपनी माँदों से निकल पड़े हैं। शौकत उनकी आवाज़ें सुनकर समझ गया कि चारों ओर शेर, चीते, रीछ और भेड़िये मंडरा रहे हैं।

"इनसे बचना ही है!" शाहज़ादे ने अपने मन में सोचा। उसे अब नींद से ज़्यादा अपनी जान की फ़िक्र लगी थी। वह बड़ी फुर्ती से एक ऊंचे पेड़ पर चढ़ गया। यह क़दम बेकार साबित नहीं हुआ, क्योंकि उसी पेड़ के नीचे थोड़ी देर बाद शेर, चीते, बघेरे, रीछ, भेड़िये और तरह-तरह के जंगली जानवर मंडराने लगे। पेड़ पर बैठे-बैठे भी शौकत सारी रात जागता रहा। सुबह होने पर वह पेड़ से नीचे उतरा। वह यह सोचकर डर रहा था कि पता नहीं उसका घोड़ा ज़िंदा बचा या नहीं। वह अपने घोड़े को ढूंढने लगा। उसकी क़िस्मत से उसका घोड़ा खतरा महसूस करके एक सुरक्षित जगह में छुपा हुआ था। घोड़े को सही-सलामत पाकर शाहज़ादा बहुत खुश हुआ। घोड़े को प्यार से थपथपाते हुए वह उसे पेड़ के पास लाया और उस पर काठी कसकर फिर से हिरण को ढूंढने निकल पड़ा। शौकत उसे काफ़ी देर तक ढूंढ़ता रहा। दोपहर हो चुकी थी। उसने अपने आपको जंगल के किनारे एक तंग रास्ते में पाया। हिरण को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते शाम हो गयी, पर उसे हिरण के पैरों के निशान नहीं मिले।

"अब मैं क्या करूं, क्या वापस लौट जाऊं?" शाहज़ादे ने सोचा, पर जंगल में से बाहर निकलने के लिए किस दिशा में जाये, इसका उसे कोई ज्ञान न रहा। इस लिए उसे दूसरी रात भी जंगल में ही बितानी पड़ी। उसका घोड़ा पहले की तरह नीचे सुरक्षित जगह में जा छुपा और वह स्वयं पेड़ पर चढ़ गया। यह रात पिछली रात से भी ज्यादा खतरनाक रही।

सुबह शाहज़ादा पेड़ पर से उतरा और सुरक्षित जगह में छुपे अपने समझदार घोड़े पर सवार होकर जंगल से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ़नें लगा। लगभग चार घंटे भटकने के बाद वह एक मैदान में पहुँचा, जहाँ से थोड़ी दूरी पर एक छोटी पहाड़ी के नीचे दायीं ओर उसे एक छोटा-सा आबाद इलाक़ा दिखाई दिया।

"वहां के लोगों से ही रास्ता पूछ लूंगा," शौकत ने सोचा और उस ओर चल पड़ा। पहाड़ी की तलहटी में पहुँचकर सुरक्षा की दृष्टि से उसने ऊपर चढ़कर चारों ओर अच्छी तरह देख लेना उचित समझा। उसे घाटी में एक छोटी नदी बहती दिखाई दी। नदी के दोनों किनारों के सहारे पेड़ थे और वह इलाक़ा नदी के किनारे पर बसा हुआ था। शौकत ढलान से नीचे उतरकर नदी के किनारे पहुँचा। नदी में कलकल करता दूध जैसा सफ़ेद ठंडा पानी बह रहा था। और क़रीब पहुँचने पर शौकत को आश्चर्य हुआ, क्योंकि इलाक़ा मामूली नहीं था। उसके चारों ओर नीले संगमरमर की ऊंची दीवारें खड़ी थीं। दीवारों के कंगूरे सोने से मढ़े थे। ऊंचे दरवाज़े के ऊपर सोने-चाँदी और मोतियों का सुंदर काम था। और सबसे बड़े आश्चर्य की बात तो यह थी कि दरवाज़ा पूरा खुला था।

शौकत जब दरवाज़े में घुसा, तो उसने देखा – सारी इमारतें हरी, लाल, पीली, नीली और गुलाबी चीनी-मिट्टी की बनी थीं। इलाक़े के बीचोंबीच एक बहुत बड़ा हौज़ था जिसके किनारे संगमरमर के थे। इस हौज़ में बहकर आने और निकलनेवाला पानी भी दूध-सा सफ़ेद और साफ़ था। हौज़ के चारों कोनों पर चार इतने सुंदर और आश्चर्यजनक पेड़ थे, जैसे शौकत ने अपनी ज़िंदगी में पहले कभी न देखे थे। दरवाज़े के एक ओर दीवार के सहारे-सहारे बना अस्तबल भी संगमरमर का था, घोड़ों की नाँद भी संगमरमर की थी और उसमें जौ और तरह-तरह का बढ़िया क़िस्म का दाना भरा था।

पूरे आँगन में एक भी आदमी नज़र नहीं आ रहा था। शौकत हैरान होकर सोचने लगा :

"यहाँ थोड़ी देर सुस्ता लेता हूँ, अगर कोई यहाँ हुआ, तो वह ज़रूर बाहर आयेगा और अगर यहाँ कोई भी नहीं रहता है या सब कहीं गये हुए हैं, तो थोड़ी देर आराम करके चला जाऊंगा।"

उसने घोड़े से उतरकर काठी खोल दी और उसे अस्तबल के पास ले जाकर बोला :

"भई, तू भी भूख से मरा जा रहा होगा, जा, पेट भर के जौ और चारा खा ले!"

शौकत स्वयं भी थककर चूर हो चुका था, इस लिए झूल बिछाकर और काठी का सिरहाना लगाकर फ़ौरन सो गया। उसे पता नहीं चला कि वह कितनी देर तक सोता रहा, उसकी नींद किसी शोर से ही खुली। उसने धीरे-से सिर उठाकर देखा – एक कमरे का दरवाज़ा खुला और उसमें से सफ़ेद रेशमी कपड़े पहने, सुडौल बदन, गोरे चेहरे, काली-काली भौंहें और आकर्षक आँखोंवाली अठारह बरस की एक लड़की सोने की सुराही लिये बाहर निकली। लड़की ने चुपचाप हौज़ के पास पहुँचकर सुराही में पानी भरा और वैसे ही चुपचाप वापस लौट गयी। उसने न तो शौकत की ओर देखा और न ही उससे कुछ कहा। शौकत सोचने लगा :

"आखिर बात क्या है, यह लड़की बाहर आयी, इसने मुझे देखा भी, पर न तो मुझसे नज़र मिलायी और न ही कुछ बोली?"

लड़की बहुत सुंदर थी और उसे देखते ही शौकत का दिल ज़ोर से धड़क उठा था। अभी दस मिनट भी नहीं गुज़रे कि जिस दरवाज़े में घुसकर लड़की ग़ायब हो गयी थी, उसीमें से लगभग पचपन साल का एक आदमी निकला, जिसकी दाढ़ी खिचड़ी थी। यह आदमी इतना

सुंदर था कि उसके चेहरे से प्रकाश फूटा पड़ रहा था। उसने शौकत की ओर हाथ बढ़ाकर स्नेहपूर्वक कहा :

"हमारे प्यारे मेहमान, आपका स्वागत है!"

शौकत ने खड़े होकर उस आदमी से सादर हाथ मिलाया और थोड़ा पीछे हटकर खड़ा हो गया। उस आदमी ने पूछा :

"हमारे मेहमान, हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं?"

"मैं सफ़र से थककर चूर हो चुका हूँ। आपके इलाक़े में छाया और ठंडक व्याप्त देखकर मैंने यहाँ थोड़ी देर आराम करना चाहा। मैं आपसे माफ़ी चाहता हूँ कि मैं बिना आपकी इजाजत के आपके इलाक़े में घुस आया," शौकत ने जवाब दिया।

वह आदमी शौकत की बात ध्यान से सुनकर बड़े स्नेहपूर्ण स्वर में बोला :

"आप इस छोटी-सी बात पर बिलकुल भी शर्मिंदा मत होइये। आपको तो इससे ज्यादा अच्छी जगह पर आराम करना चाहिए। आइये, मेरे साथ चलिये!"

"यह आदमी मुझे कहाँ और क्यों ले जा रहा है? अब मैं क्या करूं? अंदर जाऊं या नहीं?" शौकत दुविधा में पड़ गया और उसने पूछ लेना उचित समझा :

"माफ़ कीजिये, हमें कहाँ जाना है?"

"अगर आपको अपने घोड़े की फ़िक्र हो रही है तो बेकार परेशान मत होइये," उस आदमी ने शौकत को विश्वास दिलाया और उसी दरवाजे की ओर बढ़ा, जिसमें से वह बाहर निकला था। शाहज़ादा भी विवश होकर उसके पीछे चल दिया। दरवाजे में घुसते ही उसने अपने आपको शानदार चौक में पाया। उस जगह भी इतने सुंदर मकान थे, जैसे शौकत ने अपने पिता के राज में भी नहीं देखे थे। चारों ओर तरह-तरह के खुशबूदार फूल महक रहे थे, फलदार पेड़ों की डालियां फलों के बोझ से झुकी जा रही थीं। इतने फल देखकर शौकत के मुंह में पानी आ गया। चलते-चलते उसने एक फल तोड़ने के लिए हाथ बढ़ाया; पर उसे महसूस हुआ कि फल असाधारण रूप से कठोर है और वह उसे किसी तरह तोड़ नहीं सकता। ध्यान से देखने पर शाहज़ादा समझ गया कि वे फलदार पेड़ साधारण नहीं बल्कि उन पर सोने-चाँदी और हीरे-मोतियों के फल आते हैं। चौक में एक ओर संगमरमर का चबूतरा बना था, जिसके रेलिंग सोने के थे। चबूतरे में लाल रंग के क़ालीन के ऊपर मखमल के गद्दे बिछे थे। उस आदमी ने शौकत को चबूतरे पर बैठने के लिए कहा। चबूतरे की सीढ़ियों के पास एक औरत खड़ी थी, जिसने झुककर शौकत को सलाम किया। बूढ़ा चबूतरे पर चढ़ा, उसके बाद शौकत। और वे दोनों रेशमी गद्दों पर आराम से बैठ गये। फिर उस औरत ने आकर सादर पूछा :

"हमारे प्यारे मेहमान, आपकी तबीयत कैसी है?"

"शुक्रिया, मैं बिलकुल ठीक हूँ," शाहज़ादे ने जवाब दिया।

यह औरत कोई तीस-पैंतीस साल की होगी। वह इतनी आकर्षक थी कि उससे नज़रें हटाना असंभव था। उसका बदन सुडौल था, गाल सेब-से लाल थे, उसकी कमान-सी तनी भौंहें,

बरौनियाँ, खूबसूरत आँखें, गुलाबी होंठ किसी भी आदमी को सम्मोहित कर सकते थे। उसके लंबे-लंबे काले बालों की दो चोटियाँ उसकी एड़ियाँ छू रही थीं। दोनों गालों पर बिखरी लटें उसकी सुन्दरता में चार चांद लगा रही थीं। वह औरत भी आकर बूढ़े के पास बैठ गयी। थोड़ी देर बाद वह लड़की भी आयी, जो सोने की सुराही में पानी भरने बाहर निकली थी। उसने भी कई बार शौकत को झुककर सलाम किया और पूछा:

"हमारे प्यारे मेहमान, आपकी तबीयत कैसी है?"

शाहज़ादे ने उसका शुक्रिया अदा दिया। औरत उस लड़की से बोली:

"जाओ, दस्तरख़ान लगाओ!"

लड़की सिर झुकाकर चली गयी। थोड़ी देर बाद एक और लड़की आयी, जो सूरत-शक्ल में तो पहली लड़की जैसी ही थी, पर उससे भी ज़्यादा खूबसूरत और आकर्षक थी। मेहमान के प्रति पूर्ण आदरभाव दिखाते हुए वह उसके पास आयी और झुककर बोली:

"हमारे प्यारे मेहमान, आपके आने से हमें बहुत ख़ुशी हुई!"

शौकत ने भी खड़े होकर सिर झुकाकर उसका अभिवादन स्वीकार किया। इसके बाद लड़की फ़ौरन घर के अंदर चली गयी, थोड़ी देर बाद ही दस्तरख़ान लेकर आयी और उसे मेहमान के सामने बिछा दिया। दस्तरखान ज़री का था और उस पर सोने के सुंदर बेल-बूटे कढ़े थे। उसके बाद एक और लड़की आयी और अपना सिर झुकाने के जवाब में शुक्रगुज़ारी की अभिव्यक्ति देखकर वापस घर के अंदर चली गयी। कुछ ही मिनट बाद लड़कियाँ तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने ले आयीं और दस्तरखान पर परोसने लगीं – मालपुए, क़ीमे की कचौड़ियाँ, तंदूरी मुर्ग़े, पिस्ता, अखरोट, शहद, मिठाइयाँ, तरह-तरह के मुरब्बे ... जब लड़कियों ने सारा खाना दस्तरख़ान पर लगा दिया, तो बूढ़े के साथ बैठी खूबसूरत औरत ने रोटी का पहला टुकड़ा तोड़कर मेहमान को खाना शुरू करने के लिए कहा। इस बीच लड़की सोने के सामोवार में उबलता पानी लेकर आयी। उसने चाय की पहली प्याली भरकर मेहमान को दी, उसके बाद बूढ़े और औरत को। वह भी उन्हीं के साथ बैठकर खाना खाने लगी। खाने और चाय के बाद इधर-उधर की बातें होने लगीं। थोड़ी देर बाद बूढ़ा आदमी लड़कियों से बोला:

"हमारे मेहमान लंबे सफ़र के बाद थक चुके होंगे। इनका बिस्तर लगा दो। अब इन्हें चाहिए कि अच्छी तरह आराम कर लें!"

लड़कियों ने हौज़ के किनारे पेड़ों की छाया में सोने का पलंग बिछाकर उस पर अतलस और रेशम का बिस्तर और गुदगुदे तकिये लगा दिये। बूढ़े के कहने पर शौकत पलंग पर लेट गया और फ़ौरन सो गया। नींद खुलने पर उसने देखा कि दो लड़कियाँ दोनों ओर बैठी हुई बारी-बारी से उस पर पंखा झल रही हैं। शौकत की आँखें खुलते ही लड़कियाँ सोने की सुराहियों में पानी लेकर आयीं, उसके हाथ-मुंह धुलाये और सफ़ेद रेशमी तौलियों से पोंछे। बूढ़ा और उसकी पत्नी शौकत के पास आये।

"हमारे प्यारे मेहमान, आपको नींद कैसी आयी?" बूढ़े ने पूछा।

मेहमान ने उनका शुक्रिया अदा किया। उसी समय एक लड़की उनके पास आकर बोली कि शाम का खाना तैयार है। बूढ़ा, उसकी पत्नी, शौकत और उनके पीछे-पीछे वे सुंदर लड़कियाँ चबूतरे पर जाकर बैठ गये। दस्तरखान लगाने के बाद खाना परोसा गया। इस बार खाने में तरह-तरह की भुनी हुई चिड़ियाएं थीं। खाना उतना ही स्वादिष्ट था और खाने के लिए उतना ही उत्साह पैदा कर रहा था, जितना कि उसे पकानेवाली लड़कियाँ। खाना शुरू होने के पहले एक लड़की सोने की सुराही में अंगूरी शराब लेकर आयी और सोने की प्यालियों में उसे डालकर सबको देने के बाद बोली:

"हम सब यह जाम हमारे प्यारे मेहमान के आने की खुशी में पियेंगे!"

खाना काफ़ी देर चला और बीच-बीच में अंगूरी शराब के जाम भी। जब सब पर थोड़ा सरूर चढ़ गया, तो उसी कमरे में से पतली-पतली कमरवाली सत्तरह-अठारह साल की लड़कियों का एक झुंड निकला। काली-काली भौंहों और आँखोंवाली ये लड़कियाँ रेशम के पारदर्शक कपड़े पहने थीं, उनकी गोरी-गोरी गर्दनों में मोतियों की मालाएँ पड़ी थीं, कानों में सोने की बालियाँ थीं और सब एक ही क़द की थीं। लड़कियों ने शौकत के पास आकर झुककर सलाम किया और उसके पास बैठ गयीं। हर एक को कोई-न-कोई साज़ लाकर दिया गया – किसी को हार्प, किसी को तम्बूरा, किसी को दुतार*, किसी को ग़िजाक**, किसी को बाँसुरी, किसी को झाँझ, किसी को डफली। सधे हुए हाथों से बजाते और खूबसूरती से नाचते हुए लड़कियाँ मेहमान का दिल बहलाने लगीं। उस दिन काफ़ी रात गये तक दावत और हंसी-खुशी का ऐसा दौर चला कि सब थककर जहाँ बैठे थे, वहीं सो गये। सुबह नींद खुलते ही शौकत के चारों ओर लड़कियाँ मंडराती हुई उसकी सेवा करने लगीं – एक सोने की सुराही में पानी लेकर आयी, दूसरी ने उसके हाथों पर पानी डाला, तीसरी ने मुलायम सफ़ेद तौलियों से उसके हाथ और मुंह पोंछे। इसके बाद नाश्ते का बुलावा आया। तरह-तरह के पकवान परोसे गये। सब पकवान इतने स्वादिष्ट थे कि शौकत ने मन-ही-मन स्वीकार किया:

"ये सब लाजवाब हैं और इस तरह का खाना तो मैंने कभी अपने पिता के महल में भी नहीं खाया था!"

इसके अलावा उसके चारों ओर सुंदर लड़कियाँ भी बैठी थीं, जिनकी वजह से उसे खाने और पीने में पहले से भी ज़्यादा आनंद आ रहा था।

नाश्ते के बाद बूढ़े, उसकी पत्नी और खूबसूरत लड़कियों ने शाहज़ादे को बाग़ में टहलने के लिए कहा। सब दरवाज़े में से साथ निकलकर बाग़ में घुसे। बाग़ इतना सुंदर था कि किसी भी आदमी का दिल खुश हो जाये। चारों तरफ़ तरह-तरह के फूलों की मादक सुगंध व्याप्त थी, चिड़ियाँ चहक रही थीं, फूलों की सुंदरता पर मोहित होकर बुलबुलें गा रही थीं। बाग़

---

* दुतार – एक प्रकार का उज़बेक लोगों का राष्ट्रीय बाजा।

** ग़िजाक – एक प्रकार का वायोलिन।

की ख़ूबसूरती से सम्मोहित हुए शाहज़ादे को वहाँ काफ़ी देर तक घुमाया गया। दोपहर भी न जाने कब बीत गयी। ख़बर मिली कि खाना भी तैयार है। बाग़ से सब लोग साथ निकले और फिर दावत शुरू हो गयी। हंसी-खुशी में पता भी न चला कि कब शाम हो गयी और शाम की दावत भी शुरू हो गयी। इस बार भी लड़कियों ने इतने आकर्षक ढंग से साज़ बजाये, नाच दिखाये और गाने गाये कि वे दिल के तारों को छूकर आश्चर्यजनक सपने जगाते रहे। दावत काफ़ी रात गये तक चलती रही और जो जहाँ बैठा था, वहीं सो गया। सुबह हुई। शाहज़ादा हाथ-मुंह धोकर तैयार हो गया। सब लोग नाश्ता करने बैठे। बूढ़े ने नाश्ते के बाद सब लड़कियों को कुछ-न-कुछ काम बताकर वहाँ से बाहर भेज दिया। दस्तरख़ान के सामने अब केवल तीन आदमी थे – बूढ़ा, उसकी पत्नी और शौकत। बूढ़ा शौकत की ओर देखकर बोला :

"हमारे प्यारे मेहमान, आपको हमारे यहाँ आये दो दिन हो चुके हैं। आपके आने के पहले ही दिन आपसे यह पूछना कि आप कौन हैं और कहां से आये हैं, हमारे लिए एक अच्छी बात न होती। जहां तक हम सोचते हैं, अब आप अच्छी तरह आराम कर चुके हैं। इस लिए हम आपसे अपने बारे में बताने की प्रार्थना करते हैं।"

शाहज़ादे को अब तक पूरा विश्वास हो चुका था कि यह आदमी बहुत ही नेक और मेहमाननवाज़ है, इस लिए वह उसे अपनी कहानी सुनाने लगा।

इसी बीच सामने के कमरे का दरवाज़ा खुला और उसके खुलते ही चारों ओर प्रकाश की तेज़ किरणें फैल गयीं। पर यह प्रकाश नहीं था, बल्कि सूरज के समान दमकते चेहरेवाली एक सोलह बरस की लड़की थी। उसकी आँखें काली थीं, ख़ूबसूरत पतली भौंहें कमान की तरह तनी हुई थीं, घुंघराले बालों की लंबी चोटियाँ उसकी एड़ियाँ छू रही थीं, होंठ गुलाबी थे, गाल अनारों जैसे लाल थे और दाँत मोतियों की तरह चमक रहे थे। वह जन्नत की पतली कमरवाली परी की तरह खिलखिलाती हुई, शाहज़ादे पर एक शरारतभरी नज़र डालकर, जिस दरवाज़े में से आयी थी, उसी में ग़ायब हो गयी। बूढ़े ने हंसते हुए उसको उंगली से धमकी दी और स्नेहपूर्ण स्वर में बोला: "तू बड़ी नटखट है!"

उस लड़की को देखते ही शाहज़ादा उस पर मोहित हो गया। अचानक उसकी कहानी की कड़ी बीच में ही टूट गयी, सोचने-समझने की शक्ति जाती रही और कुछ क्षण के लिए शब्द उसके मुंह में ही अटके रह गये। अंत में बूढ़े को कहना ही पड़ा :

"अच्छा, शौकतबेग, अपनी कहानी आगे सुनाइये ..."

शाहज़ादा अपनी घबराहट छुपा न पाया, पर किसी तरह अपने पर क़ाबू पाकर बोला :

"हिरण की खोज में मैं जंगल में घुसा और शाम हुए तक उसे ढूंढ़ता रहा, पर वह न मिला। उस रात मैं जंगल में ही सोया और दूसरे दिन काफ़ी देर तक भटकने के बाद ही जंगल से निकलकर सरकंडों के झुरमुट में पहुँचा। अब तक मैं अच्छी तरह समझ गया था कि हिरण मेरी पकड़ में न आ सकेगा, इस लिए मैंने वापस लौटने का फ़ैसला किया। पर लौटता कैसे? मैं रास्ता भूल चुका था। मैं इधर-उधर भटकता रास्ता खोजता हुआ आपके यहाँ आ पहुँचा।"

उसी क्षण वही दरवाज़ा फिर से खुला और उसमें से वही अद्वितीय सुंदरी हवा के झोंके की तरह भागकर निकली। उसकी खिलखिलाहट शाहज़ादे के कानों में पहाड़ी नदी के कलकल करते हुए पानी की तरह गूंज उठी। पर पिता के शब्द "नटखट लड़की, तू फिर आ गयी!" सुनकर वह फिर उसी दरवाज़े में घुसकर ग़ायब हो गयी। शाहज़ादा उस लड़की को देखते ही फिर होश खो बैठा। होश में आने पर वह बूढ़े आदमी से बोला:

"अब तो आप जान ही गये हैं कि मैं कौन हूँ, अब आप अपने बारे में मुझे बताइये।"

"हम अपने बारे में आपको कभी भी बता सकते हैं, पर इस वक़्त तो हमें थोड़ी देर दिल बहला लेना चाहिए," बूढ़े ने जवाब दिया। उसने लड़कियों को बुलाया और सब उसी बाग़ में घूमने निकल पड़े। पहली बार लड़कियों के साथ घूमते समय शाहज़ादा हंसता-बोलता, मज़ाक़ करता रहा था, पर इस बार वह बहुत व्याकुल और उदास दिखाई दे रहा था। लड़कियों ने शाहज़ादे में यह परिवर्तन देखकर उसका दिल बहलाने की कोशिश की। वे उसे अपने मनोहर नाच दिखाने लगीं और बड़े प्यार से बातें करने लगीं। पर साफ़ दिखाई दे रहा था कि शाहज़ादे का मन कहीं और था। वह एकांत की खोज में था और इस हंसी-खुशी के वातावरण में हिस्सा लेते हुए भी बीच-बीच में कुछ क्षणों के लिए उदास और चुप हो उठता था। उसी सोलह बरस की लड़की ने उसका दिल चुरा लिया था।

एक बार शाहज़ादे ने बड़े आग्रहपूर्वक बूढ़े से कहा:

"अब मेरे ख़्याल में यह बताने का समय आ गया है कि आप कौन हैं और क्यों ऐसी एकांत जगह में रह रहे हैं?"

बूढ़े ने टालने की बहुत कोशिश की, पर शाहज़ादे ने भी ज़िद कर ली। तब बूढ़ा अपना क़िस्सा सुनाने लगा:

"मैं हिरात शहर का रहनेवाला हूँ। मेरे पिता बहुत बड़े सौदागर थे। उनके पास ऊंट ही कई हज़ार थे। उन ऊंटों पर माल लादकर हिरात से दूसरे शहरों में ले जाकर बेचा जाता था और वहाँ से माल ख़रीदकर हिरात लाया जाता था। मेरे पिता बूढ़े हो गये। एक दिन वे मुझे बुलाकर बोले:

'बेटे सादिक़! तुम जवान हो गये हो और समझदार भी। कोई भी काम ऐसा नहीं रहा, जो तुम नहीं कर सकते हो। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और कारवाँ के साथ दूसरे शहरों और देशों में नहीं जा सकता। अब यह ज़िम्मेदारी मैं तुम्हें सौंपता हूँ। तुम दूसरे शहरों और देशों में जाकर हमारी दौलत बढ़ाओ।'

मैं पिता की बात सुनकर आदरपूर्वक बोला:

'पिता जी, जैसा आप चाहेंगे, वैसा ही करूँगा। मैं दिल लगाकर यह काम करूँगा और आप मुझ पर भरोसा रख सकते हैं। मैं आपकी इच्छा पूरी करने में कोई क़सर नहीं छोड़ूंगा।'

कुछ ही दिनों बाद हमारे शहर से कई कारवाँ हिन्दुस्तान के लिए रवाना होनेवाले थे। मेरे पिता ने मेरे लिए एक हज़ार ऊंटों पर माल लदवा दिया। मैं जानता था कि हिन्दुस्तान के लोगों में उन चीज़ों की बड़ी मांग थी। हर ऊंट पर माल लादकर, ऊपर से रेशमी या ज़री

की चादर डाल दी गयी थी। आखिर हम लोग रवाना हुए। मैं कभी घोड़े पर सवार होता, कभी ऊंट पर और कभी-कभी पैदल भी चलता। कई गाँव और शहर पार करने के बाद रेगिस्तान शुरू हुआ। रेगिस्तान की तपती रेत में हम कई दिनों तक चलते रहे। अंत में हम हिन्दुस्तान के एक बड़े शहर में पहुँचे। सारे क़ाफ़िले सरायों में ठहरे। मैं सराय के एक छोटे-से कमरे में ठहरा। दूसरे दिन उस शहर के सौदागर लोग हमारा माल देखने आये और मोल-भाव करने लगे। हमारा सारा माल उन्हें अच्छा लगा, उसकी बहुत मांग थी और वह हाथों हाथ बिकने लगा। शाम हो गयी। खाने के बाद हम सौदागर दोस्तों के साथ अपने कमरे में इकट्ठे होकर काफ़ी देर तक गपशप करते रहे। दोस्तों के जाने के बाद मैं सो गया। सुबह उठकर मैंने हाथ-मुंह धोये और मसजिद गया। नमाज़ के बाद लोग उठकर बाहर भागने लगे। सबके साथ मैं भी बाहर निकला। मैं यह देखकर हैरत में पड़ गया कि सारा रास्ता लोगों की भीड़ से भरा है। मुझे लगा कि अब एक भी आदमी किसी तरह यहाँ से निकल नहीं पायेगा।

मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई, पर भीड़ का अंत ही नज़र नहीं आ रहा था। मैं काफ़ी देर तक सबके साथ चलता रहा और अंत में मैंने देखा – सब शहर के बाहर एक बड़े दरवाज़े की ओर भागे जा रहे हैं।

दरवाज़े के दोनों ओर खौफ़नाक चेहरे और बड़ी-बड़ी मूंछोंवाले हथियारबंद पहरेदार खड़े थे। भीड़ के साथ-साथ मैं भी दरवाज़े में घुसा। अंदर पहुँचने पर एक बड़ा मैदान दिखाई दिया, जिसके तीन ओर जंगल था और चौथी ओर लंबी और ऊंची दीवार थी, जिसके सहारे-सहारे घुड़सवार खड़े थे। हर घोड़े पर अठारह-उन्नीस वर्ष के अत्यन्त सुंदर जवान बैठे थे, जिनपर ज़री और रेशम की एक-सी पोशाक खूब फब रही थी। सबसे आगे सबसे ऊंचे और सुंदर तगड़े घोड़े पर एक अठारह बरस का नौजवान सवार था। नौजवान ज़री के काम की पोशाक और लाल रंग का पतलून पहने था, उसकी कमर में सोने की पेटी बंधी थी और सिर पर सोने का ताज था। सुगठित बदन, काली-काली आँखें, भौंहें और सेब जैसे लाल गाल। वह नौजवान वास्तव में बहुत ही आकर्षक था।

लोग काफ़ी देर तक आकर मैदान में जमा होते रहे। आखिर मैदान पूरा भर गया। मैंने अपनी ज़िंदगी में एक ही जगह में इतने लोगों को इकट्ठे होते हुए कभी नहीं देखा था। सबकी नज़रें लाल कपड़े पहने और सबसे आगेवाले सुंदर घोड़े पर सवार नौजवान पर टिकी थीं।

भीड़ में सब लोगों के चेहरों पर मायूसी छायी हुई थी। कोई बोला, 'हाय, कितना सुंदर नौजवान है! कितने अफ़सोस की बात है!' भीड़ में से और बहुत-से लोग भी अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए बोल उठे: 'हाय, कितना सुंदर नौजवान है! क्या यह बेचारा भी मारा जायेगा?' बहुत-से बूढ़े और बुढ़ियाएं नौजवान को देख-देखकर रोने लगे। मैंने लोगों के उदास चेहरों और अफ़सोसभरी आवाज़ों से महसूस कर लिया कि ज़रूर कोई बुरी और दर्दनाक घटना होनेवाली है। कुछ देर बाद लाल कपड़े पहने यह सुंदर नौजवान अपने घोड़े पर कुछ आगे बढ़ा और दो खंभों के पास पहुँचकर रुक गया, जिनके बीच में एक बहुत बड़ा नग़ाड़ा लटका हुआ था। नौजवान ने खंभे से लटका डंका उठाकर तीन-चार चोटें नग़ाड़े पर मारीं। नग़ाड़ा

बजते ही कुछ घुड़सवार इधर-उधर सरक गये और दीवार में दो छोटे दरवाज़े नज़र आये। एक छोटे दरवाज़े के ऊपर की दीवार पर आदमियों के कटे सिर टंगे हुए थे। नगाड़ा बजते ही उस दरवाज़े का फाटक पूरा खुल गया और उसमें से उन्नीस-बीस बरस की दस खूबसूरत लड़कियाँ मुस्कराती हुई भागकर बाहर निकलीं। वे बड़े नगाड़े के पास पहुँचीं और सुंदर नौजवान को अपने साथ ले गयीं। दरवाज़ा तुरंत बंद हो गया। पता नहीं क्यों उसी वक़्त लोगों में घबराहट फैलने लगी। लोग डरे-डरे-से एक दूसरे से फुसफुसाकर बातें करने लगे। इसके बाद उसी दीवार के पीछे से कहीं से तुरही और शहनाई बजने की आवाज़ आयी और दरवाज़ा खुल गया। एक डरावने और क्रूर चेहरेवाला आदमी बाहर आया, जिसके सारे कपड़ों पर खून के बड़े-बड़े धब्बे पड़े थे। उसके दायें हाथ में खून में सनी तलवार थी और बायें हाथ में कान से लटका, थोड़ी देर पहले अंदर घुसे, उसी नौजवान का सिर था। उसने कटा सिर उठाकर लोगों को दिखाया और दीवार में पहले से टंगे सिरों की क़तार में उसे भी कील से गाड़ दिया।

बहुत-से लोग फूट-फूटकर रोने लगे। कुछ हाय-हाय करते हुए ज़मीन पर गिर पड़े। चारों ओर से 'हाय, कितना सुंदर नौजवान मारा गया!' की दर्दभरी आवाज़ें ही सुनाई पड़ने लगीं। जल्लाद चला गया और दरवाज़ा फ़ौरन बंद हो गया। इसके बाद लोग अपने आँसू पोंछते और आहें भरते वापस लौटने लगे।

अगले दिन तक मेरे साथियों ने अपना सारा माल बेच दिया था। अब हमें वहाँ से माल ख़रीदना था। एक बार जब मैं बाज़ार में घूम रहा था, तो मैंने एक बुढ़िया को एक पोटली लिये बैठे देखा। पता नहीं क्यों उस बुढ़िया ने मेरा ध्यान आकर्षित कर लिया। मैंने उसके पास जाकर पूछा कि उसकी पोटली में क्या है और क्या वह उसे बेचना चाहती है।

'हाँ, बेच दूंगी, अगर दस हज़ार अशरफ़ियाँ दोगे तो,' बुढ़िया ने मुझे जवाब दिया।

'पर इस पोटली में ऐसी क्या चीज़ है?' मैंने पूछा।

'इसके बिकने तक ख़रीददार के लिए यह एक राज़ ही रहेगा। क़ीमत इसकी दस हज़ार अशरफ़ियाँ जो है। ख़रीदने पर अगर घर ले जाकर देखोगे, तो शायद इस पोटली की मदद से तुम्हारी तक़दीर खुल जाये...' बुढ़िया ने ऐसा रहस्यपूर्ण जवाब दिया।

मैंने उसकी बात में आकर दस हज़ार अशरफ़ियाँ दे दीं और पोटली लेकर अपने कमरे में आ गया। मैंने पोटली खोली, तो उसमें औरतों की एक पोशाक पायी। पर पोशाक थी लाजवाब! सोने और चाँदी के सिक्कों से बनी थी और वास्तव में बहुत ही सुंदर थी। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि दुनिया का कोई दर्ज़ी इतनी सुंदर पोशाक सी सकता है। पोशाक को उलट-पुलटकर देखते समय मुझे उसके सीने पर सोने के तारों से बनी एक लड़की की तस्वीर दिखाई दी, जिसके नीचे 'शाहज़ादी माहेसितारा' कढ़ा हुआ था। हाय, अल्लाह, तुम्हें क्या बताऊं यह चेहरा कितना खूबसूरत था! मैं उसकी खूबसूरती को शब्दों में बयान नहीं कर सकता... मुझे फ़ौरन नशा-सा चढ़ गया और मैं बेहोश हो गया।

होश आने पर मैंने जब आँखें खोलीं, तो अपने को क़ाफ़िले के लोगों से घिरा पाया, उन सबके चेहरों पर चिंता झलक रही थी। मेरी आंखें खुलते ही उनमें से एक चिल्ला उठा:

'इसने आँखें खोल दीं! होश में आ गया! या, अल्लाह, यह ज़िंदा है!'

बाद में मुझे पता चला कि पहले मुझे उन्होंने सोता समझकर जगाना ठीक नहीं समझा। फिर उन्होंने सोचा कि शायद मैं अब तक अच्छी तरह सो चुका हूँ, इस लिए वे मुझे जगाने लगे। उन्होंने मेरे चेहरे पर पानी के छींटे भी मारे, पर उसका मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। तीन दिन बाद जब मुझे होश आया तो उन्होंने सबसे पहले पूछा कि मेरी तबीयत कैसी है। मैं कुछ देर तक तीन दिन पहले जो कुछ हुआ था याद करता हुआ चुप रहा और फिर अपने दिल की असली हालत उन्हें न मालूम पड़े, इस लिए बोला:

'मैं बहुत देर तक तपती धूप में घूमता रहा था, शायद यह उसी का असर है।'

मेरे साथी मुझे होश में आया देखकर खुशी-खुशी अपनी-अपनी कोठरियों में लौट गये। पर फिर मेरी इच्छा सुंदरी माहेसितारा का चेहरा एक बार और देख लेने की हुई। मैंने वह पोशाक निकाली और माहेसितारा के चेहरे पर नजर पड़ते ही फिर बेहोश हो गया। इस बार भी मैं तीन दिन और तीन रात तक बेहोश रहा। होश आया, तो मैंने देखा – मेरे साथी पहले की तरह चिंता में डूबे मेरे सिरहाने खड़े हैं। इस बार भी मैंने उन्हें असली कारण नहीं बताया। मेरे साथ आये हुए क़ाफ़िले के सौदागर वहाँ से माल खरीदकर वापस लौटने की तैयारी कर रहे थे। वे लोग मेरे पास बार-बार आकर मुझे भी जल्दी करने के लिए कहने लगे। पर मुझे अब किसी तरह की दौलत की ज़रूरत नहीं रह गयी थी, मुझे सपनों में और वैसे भी सिर्फ़ शाहज़ादी माहेसितारा ही दिखाई देती थी। कुछ दिन और बीते। मेरे साथी पूरी तैयारी करके दूसरे दिन सुबह वहाँ से रवाना होने के बारे में मुझसे इजाज़त लेने आये। उस समय मैं पीला पड़ा और कमजोर हुआ अपनी कोठरी में लेटे-लेटे शाहज़ादी माहेसितारा के बारे में सोच रहा था। मेरे दोस्त आकर पूछने लगे:

'कल दिन निकलने के पहले ही हम लोगों को यहाँ से चल पड़ना चाहिए या नहीं?'

'आप लोग रवाना हो जाइये और मैं यहीं ठहरूंगा!' मैंने उन्हें जवाब दिया।

दोस्तों को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे मुझसे मेरे रुके रहने का कारण पूछने लगे। लेकिन मैं चुप रहा। तब उनमें से एक ने बाक़ी सबको बाहर भेज दिया और गहरी सहानुभूति के साथ मुझसे मेरे रुकने का कारण पूछने लगा। उस आदमी की नेकनीयती मेरे दिल को छू गयी और मैंने उसे पूरा क़िस्सा सुना दिया। अपनी बात समाप्त करते हुए मैंने कहा:

'मैंने भी माहेसितारा के महल में जाने और उसकी सारी शर्तें पूरी करने का निश्चय किया है।'

मेरी बात ध्यान से सुनकर वह समझदार आदमी बोला:

'अरे, मेरे भाई! तुम और मैं भले ही कितने ही बड़े सौदागर क्यों न हों, पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम परदेस में हैं। हमें सही-सलामत अपने देश लौटना चाहिए। तुम माहेसितारा का विचार तज दो! इस खूबसूरत और निर्दयी शाहज़ादी के कारनामों के बारे में हम लोग भी सुन चुके हैं। उसके प्यार में पागल हुए नौजवान उसकी कोई भी शर्त पूरी नहीं कर पाते हैं और मौत के घाट उतर जाते हैं। मैं नहीं चाहता कि तुम भी उसके शिकार बनो। होश में आओ!'

'अगर मेरे सौ सिर होते, तो भी मैं उन्हें माहेसितारा के लिए कटवा देता। मैं उसकी सारी शर्तें पूरी कर सकूं या नहीं, पर मैं मरने से पहले उसे एक नज़र देखना ज़रूर चाहता हूँ... मैं हर बात के लिए तैयार हूँ!' मैंने जवाब दिया।

वह दुनिया देखा हुआ आदमी मुझे फिर समझाने और अपने साथ जाने के लिए मनाने लगा और जब उसने देखा कि उसकी सलाह का मुझ पर कोई असर नहीं हो रहा है, तो बोला:

'माना तुम्हें दौलत और अपने ऊंटों की कोई फ़िक्र नहीं है, पर कम-से-कम तुम्हें अपने लोगों के बारे में तो सोचना चाहिए, जो तुम्हारे हाथों में अपनी क़िस्मत सौंपकर तुम्हारे साथ इतनी दूर आये हैं। इस लिए मैं तुमसे एक बार और कहता हूँ – जल्दी से जल्दी यहाँ से माल ख़रीदो और हमारे साथ चलने की तैयारी करो। इसके अलावा अपने पिता का भी ख़्याल करो, जिनकी तुम बहुत इज़्ज़त करते हो और जिन्हें प्यार करते हो। माल बेचने के बाद पैसे उन्हें दे दो। फिर तुम अपनी माहेसितारा के प्यार में पागल होकर अपना सिर कटाने लौट सकते हो...'

अपने दोस्त की सलाह से मुझे होश आया और मैं उनके साथ वापस लौट चलने को तैयार हो गया। उस नेक आदमी ने बाक़ी सौदागरों को दो दिन और ठहरने के लिए मना लिया, जिससे कि मैं ज़रूरी माल ख़रीद सकूं और सफ़र की तैयारी कर सकूं। कई दिनों के सफ़र के बाद हम फिर उसी रेगिस्तान में पहुँचे। बहुत ज़्यादा थक जाने के कारण हम लोगों की रफ़्तार बहुत धीमी रही और हम अक्सर बीच-बीच में रुकते हुए चलने लगे। एक रात को बहुत तेज़ आँधी चलने लगी और हर चीज़ रेत से ढक गयी। काफ़िला रुक गया, ऊंटवानों ने टटोल-टटोलकर ऊंटों पर से माल उतार लिये। फिर हम सब, जो मिला, उससे अपने सिर ढककर लेट गये। साँस लेना दूभर हो गया था। तूफ़ान और ज़्यादा तेज़ होता जा रहा था, हमें लग रहा था कि रेत हमारे पैरों के नीचे से उड़ी चली जा रही है। हम सब जानते थे कि अब तूफ़ान रेत उड़ाकर टीलों से हमारा सारा रास्ता ढक देगा। इन रास्तों से पहले भी सफ़र कर चुके ऊंटवान घबराये हुए आपस में सलाह-मश्विरा करने लगे। उन्हें डर था कि बगूले हमें भी अपने साथ उड़ा ले जायेंगे। अचानक कहीं दूर से चीख़ने-चिल्लाने की एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनाई दी। हम समझ गये कि अब रेत का बगूला आसमान में लंबी मीनार जितनी ऊंचाई पर चक्कर काट रहा है। उसी क्षण यह बगूला हमारे पास से गुज़रा और मुझे अपने साथ घसीटता हुआ न जाने कहाँ ले गया... मैं बेहोश हो गया। मुझे जब होश आया, तो मैंने देखा – मैं बाग़ में इस चबूतरे पर लेटा हूँ और मुझे चारों ओर से ख़ूबसूरत लड़कियाँ घेरे खड़ी हैं। मैंने पहले तो सोचा कि सुंदर लड़कियों के रूप में मुझे बुरी रूहों ने घेर लिया है, पर अचानक उनमें से एक मुझसे बोली:

'आप हमसे बिलकुल भी मत डरिये, खड़े हो जाइये, हाथ-मुंह धो लीजिये।'

मैं दिल में डरते-डरते खड़ा हुआ। लड़कियों ने मेरे हाथ, पैर, मुंह धुलवाने में मेरी मदद की और मुझे सफ़ेद कपड़े पहनाकर अकेला छोड़ गयीं। थोड़ी देर बाद एक बहुत ही ख़ूबसूरत लड़की मुस्कराती हुई आयी। उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे सोने की कुर्सी पर बिठा दिया।

वह मेरा विश्वास पाने के लिए बड़े मधुर स्वर में बातें करती रही। पर मैं डर और घबराहट के मारे कुछ समझ नहीं पा रहा था कि मैं कहां आ पहुंचा हूं। शुरू में मैं कुछ बोल न पाया, पर किसी तरह अपने पर क़ाबू पाकर मैंने उससे पूछा :

'मैं कहाँ हूँ ?'

वह लड़की खिलखिलाकर हंस पड़ी और मेरे पास आ खड़ी हुई। मैं उसकी दृष्टि से सम्मोहित-सा हुआ उठ खड़ा हुआ। उसने मेरा सिर अपने सीने पर रख दिया और कोमल हाथों मे मेरा चेहरा सहलाते हुए बोली :

'ऐ, ख़ूबसूरत नौजवान! मैं परियों के देश की सुंदरी हूँ। मेरा नाम सनोबर है। मेरी एक ग़लती के कारण परियों की रानी ने मुझे अपने देश से निकालकर यहाँ भेज दिया था। मुझे अब यहाँ साठ साल बिताने है। मेरे लिए यह घर परियों की रानी ने ही बनवाया है। और ये सब लड़कियाँ, जिन्हें तुम देख रहे हो, मेरी सेवा करती हैं। अपनी रानी की आज्ञा के अनुसार मैं कोई भी आदमी ढूंढ़कर उसके साथ शादी कर सकती हूँ। मेरे यहाँ आने के दिन से ही मैंने हर जगह ढूंढ़ा, पर अपने मनपसंद आदमी को अभी तक ढूंढ़ नहीं पायी हूँ। आज, जब हम लोग रेगिस्तान के ऊपर उड़ती हुई जा रही थीं, तो मैंने तुम्हें देखा और रेत का बगूला बनकर तुम्हें यहाँ ले आयी। तुम्हारा सामान और दौलत, जो रेगिस्तान में पड़ी रह गयी है, तुम उसकी कोई फ़िक्र मत करो। तुम्हारे साथी सारा सामान ले जाकर तुम्हारे पिता को दे देंगे। हमें उसकी कोई ज़रूरत नहीं है, क्योंकि हमारे पास बहुत ज्यादा दौलत है। मेरी सारी बातों का मतलब केवल यही है कि तुम्हें मुझसे शादी करनी होगी। हम दोनों पति-पत्नी की तरह यहाँ सुख-चैन से जियेंगे।'

लड़की की यह बात सुनकर मैंने अपने आप पर नियंत्रण किया, मेरी हिम्मत बढ़ी और मैंने सोचा :

'अब मुझे क्या करना चाहिए ?'

लड़की मुझसे लिपट गयी, मैं समझ गया था कि वह किसी भी क़ीमत पर मुझसे अपनी बात मनवाना चाहती है। सारी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए मैं मन ही मन कहता रहा :

'हाँ, मैं माहेसितारा को प्यार करता हूँ। सिर्फ़ उसी के सपनों में डूबा रहता हूँ, पर अब उसके पास लौटकर जाना अपनी ज़िंदगी को ख़तरे में डालना होगा। अगर मेरी तक़दीर अच्छी निकली, तो सब ठीक हो जायेगा, और अगर नहीं तो मैं मर जाऊंगा। पूनम के चाँद-सी सुंदर परी इस समय मेरे पास है, वह किसी बादशाह की भी क़िस्मत बना सकती है। इतनी दूर और हाथ न आनेवाली माहेसितारा के पास लौटने से तो अच्छा है कि मैं यहाँ इस परी के साथ सुख-चैन से रहूं।'

मैंने सुंदरी का प्रस्ताव स्वीकार किया। वह बहुत ख़ुश हुई और यह ख़ुशख़बरी अपनी सहेलियों को सुनाने चली गयी।

पहले दिन उन्होंने सबसे प्यारे मेहमान की तरह मेरा स्वागत किया, ख़ूब खिलाया-पिलाया।

दूसरे दिन मेरी और सनोबर की शादी हो गयी। शादी के बाद हमारा जीवन सुख-चैन से बीतने लगा। तब से मैं यहीं रह रहा हूँ।" उसने अपने पास बैठी हुई खूबसूरत औरत की ओर इशारा करते हुए कहा कि यही वह सनोबर है। और उस औरत ने भी मुस्कराकर नज़रें झुका लीं। बूढ़ा बोला:

"हमारी एक ही बेटी है!"

उसी क्षण वहीं दरवाज़ा खुला और फिर वही सोलह साल की सुंदरी पहले की तरह खिलखिलाती, मुस्कराती हुई निकली और तुरंत गायब हो गयी। बूढ़ा उसके जाते-जाते बड़े प्यारभरे स्वर में बोला:

"यही मेरी लड़की है। बहुत ही खुशमिज़ाज और नटखट है। अल्लाह ने इसे सारी खूबियाँ दी हैं। अगर यह चाहे, तो फूल बन सकती है, चाहे तो उसी फूल पर गाती-चहकती बुलबुल भी। कभी यह कबूतर बनकर आसमान में उड़ने लगती है, कभी मछली की तरह नदियों में तैरने लगती है। पर अक्सर यह हिरनी के रूप में पहाड़ों और जंगलों में कूलाँचें भरती है। शिकार के समय आपको जो हिरन दिखाई दिया था, वह मेरी बेटी ही थी। उसको आपसे प्यार हो गया है, इस लिए वह आपको यहाँ खींच लायी है। यहाँ से आपका शहर क़रीब डेढ़ महीने के सफ़र की दूरी पर है।"

वही लड़की फिर बाहर आयी और इस बार शौकत ने शर्माकर आँखें झुका लीं। लड़की के पिता ने उसे प्यारभरे स्वर में झिड़कते हुए कहा:

"तू बड़ी नटखट है! तूने बेकार ही इस बेचारे नौजवान को तंग किया, तू इसको सीधे यहाँ ला सकती थी!"

लड़की फ़ौरन वहाँ से भाग गयी। बूढ़ा शौकत से बोला:

"बेटे, तुम्हारी तक़दीर में यहां आना बदा था। हम दोनों चाहते हैं कि तुम हमारी बेटी से शादी करके हमारे दामाद बन जाओ। हम सब यहाँ सुख-चैन से रहने लगेंगे!"

बूढ़े की ज़िंदगी की कहानी और उसकी आपबीती सुनकर शौकत मन-ही-मन उसकी प्रशंसा कर उठा। उसे इस बात पर भी बहुत खुशी हो रही थी कि बूढ़े की सुंदर बेटी उसपर मुग्ध होकर, हिरन का रूप धारण करके खुद ही उसे यहाँ खींच लायी। पर फिर भी उसने बूढ़े के सुझाव पर अपनी ओर से कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया।

उसी वक़्त लड़कियों ने आकर कहा कि खाना तैयार है। शाहज़ादा, बूढ़ा, उसकी पत्नी सनोबर और सब लड़कियाँ साथ खाना खाने बैठे। बूढ़े ने एक लड़की से कहा:

"सय्यारा से जाकर कहो कि वह अपने होनेवाले पति से शरमाये नहीं और यहाँ आ जाये!"

सनोबर ने टोका:

"नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं, वह बेचारी फिर भी शरमायेगी!"

शाहज़ादे को बूढ़े की पत्नी की बात पर मन-ही-मन गुस्सा आने लगा। उसे इच्छा हुई कि वह किसी लड़की से कह दे:

"जाओ, उसे यहाँ ले आओ!"

पर ऐसा करना अनुचित था इस लिए वह चुप रहा। इतने में एक लड़की ने हिम्मत करके उसके मन की बात कह ही दी:

"हमें चाहिए कि हम उसका संकोच दूर करने में उसकी मदद करें। वह भी आकर हमारे साथ बैठे। उसे यहाँ ले ही आना चाहिए!"

जिस दरवाज़े में से वह सुंदरी कई बार भागती हुई निकली थी, वह दूसरे आँगन के बग़ीचे में खुलता था, जो बाहरवाले आँगन से छोटा तो था, पर उससे बहुत ज़्यादा सुन्दर था। इस आँगन में "हिरनी", सुंदरी सय्यारा के लिए एक भव्य महल बनवाया गया था। वह उसमें रहती थी और अपनी सखियों और दासियों के साथ हंसी-मज़ाक़ करती रहती थी। उस लड़की ने सय्यारा को सब के साथ आकर खाना खाने के लिए कहा। "हिरनी" सुंदरी बोली कि उसे शर्म आती है, इस लिए वह नहीं आयेगी। दूसरी लड़कियाँ उसे मनाने लगीं, अंत में वह मान गयी और दरवाज़े की ओर बढ़ी। उस समय सब लोग आँगन में बैठे खाना खाते हुए आपस में ज़ोर-शोर से बातें कर रहे थे, केवल शाहज़ादा ही "हिरनी" सुंदरी के बारे में सोच रहा था और बार-बार उसकी नज़र दरवाज़े की ओर उठ जाती थी। सय्यारा शर्म से लाल हुई, सिर झुकाये और इतनी सकुचाती हुई उनकी तरफ़ आ रही थी, जैसे उसका बस चला, तो वह कबूतर बनकर वहाँ से आसमान में उड़ जाये। किसी तरह वह शाहज़ादे के पास तक पहुँची।

"सलाम!" उसने सकुचाते हुए कहा और दूसरी लड़कियों के बीच में बैठ गयी। तरह-तरह के पकवान परोसे जाने लगे और सब बड़े मज़े से खाने लगे। वह क्षण शाहज़ादे को इतना मधुर प्रतीत हो रहा था, मानो उसके साथ प्रकृति भी खुश होकर कह रही हो:

"बधाई हो!"

लगता था जैसे बुलबुलें, तोते, फ़ाख़्ताएँ भी खुशी से शादी के गीत गाने-चहकने लगे थे। खुशी का यह वातावरण शाहज़ादे और सय्यारा पर भी अपना असर दिखाने लगा और वे लोग एक दूसरे से नज़रें लड़ाते हुए कल्पना में मधुर एवं प्रगाढ़ चुंबन लेने लगे। खाने के बाद सय्यारा ने आँखों ही आँखों में शाहज़ादे से विदा ली और अपने महल में लौट गयी। परी सनोबर भी शाहज़ादे और सय्यारा के बीच बढ़ते प्रेमपूर्ण संबंधों को देखकर मन-ही-मन बहुत प्रसन्न हुई। बूढ़ा और शाहज़ादा बैठे आपस में बातचीत करते रहे। शाहज़ादे ने बूढ़े से पूछा:

"आपने उस पोशाक का क्या किया?"

"मैंने उसे संभालकर रखा है।" बूढ़े ने जवाब दिया।

तब शाहज़ादे ने कम-से-कम एक नज़र उस पोशाक को देख लेने की इच्छा प्रकट की। बूढ़े ने अपनी पत्नी सनोबर की ओर देखा, जिसने होंठ भींचकर और भौंहों के इशारे से इसके लिए मना किया।

"बेटे, तुम्हारे लिए यही बेहतर होगा कि तुम उस पोशाक को न देखो!" बूढ़ा बोला।

शाहज़ादा उनके यहाँ कई दिनों तक रहा। वह रोज़ सय्यारा की सहेलियों के साथ मिलता

रहा और सय्यारा से तो वह एक क्षण के लिए भी अलग नहीं हुआ। चाँद-सी सुंदर सय्यारा की मीठी-मीठी बातों और उसके भले व्यवहार ने शाहज़ादे को इतना सम्मोहित कर लिया था कि वह स्वयं भी सय्यारा के साथ अपना भावी जीवन बिताने के लिए तैयार हो गया। बूढ़े और उसकी पत्नी को भी इस बारे में अब कोई संदेह नहीं रह गया था, इस लिए वे शादी की तैयारियों में लग गये। एक बार सनोबर और उसकी सहेलियाँ कबूतरों का रूप धारण करके आस-पास के स्थानों का भ्रमण करने उड़ गयीं। बूढ़ा अकेला रह गया। शाहज़ादे ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाकर बूढ़े से वह पोशाक दिखाने का आग्रह किया। बूढ़े ने बहुत टालमटूल की, पर शाहज़ादा उसको मनाता रहा और अंत में बूढ़ा मान ही गया। बूढ़ा घर के अंदर से एक पोटली लेकर आया और शाहज़ादे के सामने रख दी। शाहज़ादे ने उसे फ़ौरन खोल डाला और वह पोशाक निकालकर देखने लगा। पोशाक वास्तव में बेशक़ीमती थी और बहुत ही सुंदर ढंग से सिली हुई थी।

"मैं सय्यारा को यह पोशाक पहनाकर देखूँगा," शौकत ने अपने मन में सोचा। पोशाक को उलट-पुलटकर देखते समय अचानक शाहज़ादे की नज़र उस पोशाक के सीने के हिस्से पर बनी शाहज़ादी माहेसितारा की तस्वीर पर पड़ गयी। वह वास्तव में इतनी ख़ूबसूरत थी कि उसकी ख़ूबसूरती के आगे सय्यारा की ख़ूबसूरती भी शाहज़ादे को फ़ीकी लगने लगी। अगर माहेसितारा अपने तेज़ प्रकाश से सारे कमरे को रोशन करनेवाली मशाल थी, तो सय्यारा उसके सामने टिमटिमाता हुआ चिराग़ लग रही थी। शाहज़ादे को माहेसितारा की ख़ूबसूरती का इतना नशा चढ़ा कि वह बेहोश हो गया। उसे जब होश आया, तो अपने चारों ओर बूढ़े, उसकी पत्नी और लड़कियों के उदास चेहरे नज़र आये। उसने परी सनोबर को बूढ़े से गुस्से में कहते सुना:

"मैंने इसे यह पोशाक दिखाने को मना किया था। अब देखिये, आपने क्या कर दिया है?!"

बूढ़ा फ़िक्र में डूबा नज़र आ रहा था। सबसे ज़्यादा दुखी सय्यारा थी, वह बेचारी तो रोने लगी।

शाहज़ादे को आँखें खोलते देख सब बेहद ख़ुश हुए, पर अफ़सोस, यह ख़ुशी थोड़ी देर ही रह सकी। आख़िर माहेसितारा ने शाहज़ादे का दिल हमेशा-हमेशा के लिए जीत लिया था। इस लिए अब उसे सय्यारा की ओर देखने तक की भी इच्छा नहीं रही थी, उसके प्रति तो वह इतना उदासीन हो गया कि उसके सामने ही वही पोशाक एक बार और दिखाने का हठ करने लगा। अलबत्ता इस बार उसकी बात नहीं मानी गयी। पर इस तरह शाहज़ादे का रुख़ बदलना असंभव हो चुका था। वह दुःख के सागर में खोया गुमसुम रहने लगा। उसकी यह हालत देखकर सब घबरा उठे। सबसे बड़ी ठेस बेचारी सय्यारा को पहुँची थी।

कुछ दिन बाद शाहज़ादा बूढ़े से बोला:

"मेरा घोड़ा मुझे दीजिये! मैं जाऊंगा..."

बूढ़े ने एक बार फिर उसकी विनती अस्वीकार कर दी और उसे मनाने की हर कोशिश

करने लगा। सनोबर भी बहुत दुःखी थी। कई बार तो वह अपना गुस्सा रोक न पायी और बूढ़े को उस ग़लती के लिए भिड़कती रही। कुछ दिन और गुज़रे। शाहज़ादा अब जाने के लिए पहले से भी ज़्यादा उतावला हो गया था। सय्यारा ने उसका दिल बहलाने की हर कोशिश की, मनाती और रोती रही, पर शाहज़ादे का दिल अब उसमें कहाँ रह गया था। उसके दिल में तो शाहज़ादी माहेसितारा बसी थी। एक बार शाहज़ादे ने जाने का पक्का निश्चय करके अपना घोड़ा माँगा। जब उसे घोड़ा देने के लिए मना कर दिया गया, तो वह बोला कि वह बिना घोड़े के भी चला जायेगा। बूढ़ा समझ गया कि अब शाहज़ादे को और ज़्यादा देर रोकना असंभव है, इस लिए उसने घोड़ा लाकर उसकी लगाम शाहज़ादे के हाथ में थमा दी। शाहज़ादे ने बड़े प्यार से अपने घोड़े को थपथपाया, उस पर काठी कसी और बूढ़े से बोला :

"आपने ही वह पोशाक मुझे दिखाई थी। मैं जानता हूँ कि इस पोशाक की वजह से आप किसी समय कितनी मुसीबतें उठा चुके हैं। और इसमें मेरी कोई ग़लती नहीं कि शाहज़ादी माहेसितारा की तस्वीर देखते ही मैं भी उसके प्यार में पागल हो गया हूँ। मुझे अब उसके पास जाना है। इसलिए आप कृपा करके मुझे वहाँ पहुँचने का रास्ता समझा दीजिये।"

बूढ़ा बोला :

"बेटे! तुम शायद ही वहाँ तक पहुँच सकोगे... वह देश बहुत दूर है, रास्ते बहुत ख़तरनाक हैं। इस लिए मैं तुमसे एक बार फिर कहता हूँ कि तुम अपना इरादा बदल दो।"

शाहज़ादा अपने निश्चय पर डटा रहा :

"ठीक है, अगर आप मुझे वहाँ जाने का रास्ता नहीं बताना चाहते, तो मैं ख़ुद ही ढूंढ़ लूंगा!"

बूढ़े ने सोचा :

"अगर मैं इसे माहेसितारा के देश का रास्ता नहीं बताता हूँ, तो यह किसी मुसीबत में पड़कर अपनी जान गंवा बैठेगा।"

इस लिए उसने उसे हिन्दुस्तान पहुँचने का ऐसा रास्ता समझाया, जो कम ख़तरनाक था। शाहज़ादे ने मार्मिक शब्दों में बूढ़े, सनोबर और सब लड़कियों को अतिथि-सत्कार और उनके प्यारभरे व्यवहार के लिए धन्यवाद दिया और सफ़र पर चल पड़ा।

वह बहुत दिनों तक चलता ही रहा। रास्ते में उसे पानी की एक बूंद भी न मिली, और तो और एक दिन घोड़े से भी हाथ धोना पड़ गया।

एक दिन अचानक मौसम बिगड़ गया। आकाश में काले बादल छा गये, तेज़ हवा चलने लगी और तूफ़ान आ गया। चारों ओर गहरा अंधेरा छा गया। कुछ घंटों के बाद अंधेरा धीरे-धीरे छंटने लगा, पर अचानक दूर आसमान में रेत के चार बगूले उठते दिखाई दिये। वे शाहज़ादे की ओर ही बढ़ रहे थे। पेड़ों के झुरमुट के पास आकर बगूले जादू की तरह ग़ायब हो गये और उनमें से चार देव निकले। हर देव का सिर बादलों को छू रहा था और उनके

नथने गुफ़ाओं जैसे थे, शाहज़ादा डर के मारे पेड़ के शिखर पर चढ़ गया। देव चश्मे के पास पहुँचकर आराम करने के लिए लेट गये। नौजवान, कोई आवाज़ न हो, इस लिए एक मोटी डाल से चिपटा बैठा रहा। अचानक एक देव बोला:

"भाइयो, हमें किसी तरह फ़ैसला कर लेना चाहिए।"

दूसरे देव ने टोका:

"मुझे तो यह असंभव-सा दिखाई देता है।"

"क्यों?"

"इस लिए कि जो मैं लेना चाहता हूँ, उसे तुम ले लेना चाहते हो और उसी चीज़ को बाक़ी दोनों भी अपने लिए रखना चाहते हैं। ऐसे में हम सहमत हो ही कैसे सकते हैं?!"

पहला देव कुछ देर चुप रहकर बोला:

"ऐसी हालत में हमें एक ऐसे निष्पक्ष आदमी की ज़रूरत है, जो हमारी दलीलें सुनकर ख़ुद हमें यह कहकर बांट दे: यह तेरा है, यह दूसरे का, यह तीसरे का और यह चौथे का। जिसे जो दिया जाये, उसे बिना कोई विरोध किये ले लेना पड़ेगा।"

यह सुझाव बाक़ी देवों को भी पसंद आया, इस लिए उनमें से एक बोला:

"यह तो बहुत ही अच्छा सुझाव है, पर ऐसा निष्पक्ष आदमी हम कहाँ ढूंढ़ पायेंगे?"

"ऐसा आदमी ढूंढ़ना बहुत ही आसान काम है, हम अभी ढूंढ़ लेते हैं।" और वह पेड़ के शिखर की ओर मुंह उठाकर चिल्लाया:

"ऐ, आदमी, उतरकर हमारे पास आओ!"

शाहज़ादे को काटो तो ख़ून नहीं। देव थोड़ी देर बाद फिर बोला:

"हम तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचायेंगे। तुम उतरकर हमारा बंटवारा कर दो, फिर हम सब तुम्हारी मदद करेंगे।"

शाहज़ादा उतरता तो क्या, डर के मारे उसकी ज़बान ही ख़ुश्क हो गयी थी। देव इन्तज़ार करते-करते ऊब गये, तो उनमें से एक ने लेटे-लेटे ही हाथ बढ़ाकर शाहज़ादे को पकड़ लिया और ज़मीन पर लाकर रख दिया। देवों ने उसके साथ न बुरा व्यवहार किया, न कोई धमकी दी, बल्कि बड़ी नम्रता से उससे बातें करते रहे। इससे ख़ुश होकर शाहज़ादे ने उनसे पूछा:

"मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?"

एक देव बोला:

"हम चार भाई हैं। हमारे पिता हमें वसीयत में एक टोपी, एक क़ालीन, एक तीर-कमान और एक सोने की चिलमची छोड़ गये हैं। हम चार साल से आपस में बहस कर रहे हैं, पर किसी तरह इन चीज़ों को बाँट नहीं पा रहे हैं। इस लिए अब यह काम तुम करो!"

शाहज़ादे को बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये देव इतनी मामूली चीज़ें भी आपस में बाँट नहीं पा रहे हैं। उसकी हैरानी देखकर एक देव बोला:

"ये सब चीज़ें मामूली नहीं, जादूई हैं। जो यह टोपी सिर पर रखेगा, वह दूसरों को दिखाई नहीं देगा। और कोई अगर इस क़ालीन पर बैठकर कहे, 'उड़ो!' तो यह क़ालीन

उसे उड़ाकर सारी दुनिया का चक्कर लगा सकता है। अगर कोई इस चिलमची में पानी डालकर किसी चीज़ की इच्छा करे, तो वह चाहे जैसी भी क्यों न हो, फ़ौरन उसके सामने आ जायेगी। यह तीर इस कमान से छोड़े जाने पर तुम जहाँ चाहो वहाँ जाकर लगेगा और जिस चीज़ में लगेगा, वह लाकर तुम्हें दे देगा।"

इन चीज़ों को चारों भाइयों के बीच में कैसे बाँटे, शाहज़ादा बहुत देर तक सोचता रहा और अंत में बोला:

"मैं ये चारों चीज़ें ईमानदारी से आपके बीच में बाँटे देता हूँ। मैं टोपी को एक नंबर पर रखता हूँ, क़ालीन को – दूसरे, चिलमची को – तीसरे और तीर-कमान को – चौथे नंबर पर रखता हूँ। मैं इस कमान से चार तीर छोड़ूंगा। आप चारों एक साथ उनके पीछे भागेंगे। जो कोई तीर लेकर मेरे पास सबसे पहले आयेगा – उसे मैं टोपी दे दूँगा। दूसरा तीर लेकर आनेवाले को – क़ालीन, तीसरा तीर लेकर आनेवाले को – सोने की चिलमची और चौथा तीर लेकर आनेवाले को – मैं तीर-कमान दे दूँगा।"

चारों देवों को यह सुझाव बहुत पसंद आया। शाहज़ादा चार तीर लेकर एक ओर खड़ा हो गया।

"सुनो, मेरे तीरो, तुम चारों उड़कर दूर चले जाओ और तुममें से एक भी इन देवों के हाथ नहीं आना। जब तक ये देव थककर ज़मीन पर न गिर पड़ें, तुम उड़ते ही जाना, उड़ते ही जाना!" शाहज़ादा बहुत धीमी आवाज़ में बोला और एक के बाद एक उसने चारों तीर चारों दिशाओं में छोड़ दिये। देव तीरों के पीछे भागे। सारी जादुई चीज़ें शाहज़ादे के पास ही रह गयीं। हर क्षण का मूल्य समझते हुए शाहज़ादे ने तुरंत क़ालीन बिछाया और उस पर बैठकर बोला:

"मुझे शाहज़ादी माहेसितारा के शहर उड़ा ले चल!"

क़ालीन शाहज़ादे और उसके सामान के साथ उड़ चला। कुछ देर बाद जादुई क़ालीन एक शहर में उतरा। शाहज़ादे ने क़ालीन को लपेटकर अपनी बग़ल में दबा लिया। शहर को अच्छी तरह देख लेने के बाद शाहज़ादे ने सराय में एक कोठरी किराये पर ली। कमान और टोपी उसने एक कील पर टाँग दिये, क़ालीन और चिलमची आले पर रख दिये। शाहज़ादे ने क़ाफ़ी समय से मुंह में रोटी का एक टुकड़ा भी न डाला था, न ही घर का बना हुआ कुछ खाना खाया था। वह सूखकर काँटा हो गया था और भूख के मारे उसका दम निकला जा रहा था। वह पेट भर के खाना चाहता था, पर उसकी जेब में एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। कुछ देर बाद वह चिलमची लेकर बाहर आँगन में आ बैठा। आँगन के बीचोंबीच बने हौज़ में से चिलमची में पानी भरकर वह कोठरी में घुसा और पानी की ओर देखकर बोला:

"मुझे फ़ौरन सोने की अशरफ़ियों से भरी एक बोरी चाहिए!"

पलक झपकते ही उसके पैरों के पास अशरफ़ियों से भरी बोरी आ गिरी। शाहज़ादे ने दिल खोलकर ख़र्च किया – कई दिनों तक अच्छी तरह खाया-पिया और आराम किया। उसने ठाठदार कपड़े बनवाये और अच्छे हकीमों से इलाज कराकर बिलकुल ठीक हो गया।

एक बार जब शौकत अपनी कोठरी में सो रहा था, उसे नींद में कोई संगीत सुनाई दिया। नींद पूरी खुलने पर उसने ध्यान से सुना – तुरहियाँ और शहनाइयाँ बजने की आवाज़ें आ रही थीं। "रात को तुरहियों और शहनाइयों की क्या जरूरत पड़ी? शायद ही इस वक़्त किसी को अपना त्योहार मनाने की सूझी हो?" शाहज़ादे ने सोचा। वह उठ खड़ा हुआ और कपड़े पहनकर बाहर निकल आया। उसने देखा – सराय की छत पर बैठे बाजा बजानेवाले एक साथ चालीस तुरहियाँ, चालीस शहनाइयाँ, चालीस नगाड़े और चालीस नक़्क़ारे बजा रहे हैं। संगीत का शोर दसियों मीलों तक गूंज रहा था, पर आस-पास कोई खड़ा नज़र न आ रहा था। उस कान फाड़ देनेवाले संगीत से बचने के लिए शाहज़ादा अपनी कोठरी में जाकर लेट गया, पर उसे नींद न आयी। मुल्ला ने सुबह की नमाज़ की अज़ान दी। शाहज़ादा भी वज़ू के बाद मसजिद में पहुँच गया। उसने सबके साथ नमाज़ पढ़ी। इमाम रोज़ सुबह नमाज़ियों को देर तक धार्मिक पुस्तकों में से पढ़कर उपदेश सुनाया करता था। पर आज वह जल्दी से आमीन कहकर बाहर भागा। नमाज़ी भी उसके पीछे-पीछे भागे। सब मसजिद से बाहर आ गये और उनके साथ-साथ शाहज़ादा भी। क्या बूढ़े और क्या जवान, सारी भीड़ इतनी तेज़ी से एक ही दिशा में भाग रही थी, मानो उन्हें बाज़ार को देर हो रही हो। मसजिद से निकलनेवाले लोग भी इस भीड़ में शामिल हो गये। उनके साथ-साथ शाहज़ादा भी चलने लगा। लोगों की बातों से मालूम पड़ा कि कल एक और बहादुर नौजवान शाहज़ादी माहेसितारा के साथ शादी करने की इच्छा से आया है। अब उसे माहेसितारा की शर्तें पूरी करनी थीं। बाजों का शोर बढ़ने लगा। बादशाह इस नौजवान की दर्दनाक मौत अपनी प्रजा को दिखाकर एक सबक़ सिखाने का इरादा रखता था। इसी लिए लोगों की भीड़ बादशाह के महल की ओर बढ़ी चली जा रही थी। दरवाज़े खुले और सारी भीड़ मैदान में भर गयी।

कुछ देर बाद अठारह-उन्नीस साल का एक सुंदर नौजवान निकलकर मैदान के बीच में लटके नगाड़े के पास पहुँचा और वहीं रखे डंके से उसने उस पर कई बार चोट की। उसी समय दीवार पर टंगे कटे सिरों के नीचेवाला दरवाज़ा खुला और उसमें से सफ़ेद रेशमी कपड़ों में लिपटी कई सुंदर लड़कियाँ निकलीं। वे उस सुंदर नौजवान को घेरकर अपने साथ ले गयीं। दरवाज़ा फिर बंद हो गया और लोग बेचैनी से नौजवान के भाग्य के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगे। एक घंटे बाद दरवाज़ा खुला और उसमें से एक जल्लाद उसी लड़के का सिर हाथ में लटकाये निकला। लोगों को दिखाते हुए उसने वह कटा सिर ऊपर उठाया और दीवार पर कील से टाँग दिया। लोगों के रोने-बिलखने की आवाज़ों से आसमान गूंज उठा, बहुत-से बूढ़े-बुढ़ियां इस दर्दनाक घटना को देखकर बेहोश हो गये। लोग काफ़ी देर तक वहीं खड़े रहे और फिर वापस लौटने लगे। शौकत अपनी आँखों से यह दर्दनाक घटना देखने के बाद और यह विश्वास हो जाने के बाद कि माहेसितारा का महल यहीं है, अपनी सराय लौट आया। अच्छी तरह हर बात का भला-बुरा सोचते हुए, अपना स्वास्थ्य और आत्मबल बढ़ाते हुए शौकत कई दिनों तक इसी कोठरी में रहा। अंत में उसने शाहज़ादी माहेसितारा के महल में जाकर नगाड़े पर चोट करके अपनी क़िस्मत आज़माने का निश्चय किया। दोपहर की नमाज़ के बाद वह

अपनी कोठरी में आया और अपनी कमान गले में लटका ली। चिलमची, टोपी और क़ालीन लपेटकर उसने अपनी बग़ल में दबा लिये और माहेसितारा के महल की ओर चल पड़ा। महल के पास पहुँचकर वह दरवाज़े में घुसा। पर उस मैदान में, जहाँ पिछली बार दसियों हज़ार लोग जमा थे, इस वक़्त उसको छोड़कर कोई न था। शाहज़ादा नगाड़े के पास पहुँचा और डंका उठाकर उस पर चोट करने लगा। उस समय माहेसितारा अपनी चालीस ख़ूबसूरत सहेलियों के साथ महल में नाच-गाने और हंसी-मज़ाक़ में व्यस्त थी। माहेसितारा के पिता सोच में डूबे हुए अपने महल में लेटे हुए थे। सहसा नग़ाड़े की आवाज़ गूंज उठी।

"और कौन मरने आ पहुँचा है?" माहेसितारा ने गर्वपूर्वक हंसते हुए पूछा।

"किसी अभागे बाप का बेटा ही होगा," बादशाह बेचैन हो उठा।

सारे महल में तहलका मच गया। अंत में माहेसितारा के महल में से एक आदमी दरवाज़ा खोलकर मैदान में आया। वहाँ कोई आदमी लगातार नग़ाड़े पर चोट किये जा रहा था।

"अरे, भई! तुम नग़ाड़ा क्यों बजा रहे हो?" माहेसितारा के नौकर ने पूछा।

शाहज़ादा बोला:

"मैं शाहज़ादी माहेसितारा को प्यार करता हूँ और उनसे मिलकर बात करना चाहता हूँ!"

वह नौकर महल में माहेसितारा के पास जाकर बोला:

"शाहज़ादी साहबा! मैदान में एक भिखारी आया हुआ है। उसकी गरदन में कमान लटकी है और काँख में पुराने कपड़ों की पोटली दबी है। वह बोला: 'मैं शाहज़ादी माहेसितारा को प्यार करता हूँ और उनसे मिलकर बात करना चाहता हूँ'!"

शाहज़ादी माहेसितारा ने कहा:

"मुझे ऐसे लोगों से नफ़रत है! जाओ, अपना काम करो!"

शाहज़ादा नग़ाड़े के पास खड़ा इंतज़ार करता रहा। क्योंकि वह आदमी फिर बाहर आता दिखाई नहीं दिया, उसने फिर नग़ाड़ा बजाना शुरू कर दिया। माहेसितारा ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया, पर उसके पिता ने अपनी बेटी से प्यार करने की हिम्मत करनेवाले आदमी को लिवाने के लिए अपने एक नौकर को भेजा। नौकर बाहर साधारण कपड़े पहने हुए एक आदमी को देखकर मज़ाक़िया ढंग से हंसा और उसे महल के अंदर ले आया।

दरवाज़े में से होकर वे लोग विशाल मैदान में आये, जहाँ हर चीज़ संगमरमर की बनी थी। चारों ओर नक़्क़ाशी का बहुत सुंदर और बारीक काम हो रहा था। नौकर शाहज़ादे को सामने कुछ ऊंचाई पर बने हुए महल की ओर ले आया। उस महल के दरवाज़े के दोनों ओर तगड़े और ख़ौफ़नाक पहरेदार खड़े थे। दरवाज़ा खुला और वे एक विशाल कक्ष में घुसे। कक्ष के फ़र्श पर लाल क़ालीन बिछे थे और दीवारों पर चमकीले रंगों में शेर, चीते, बघेरे और कई डरावने अजदहे बने हुए थे। इस जगह भी ख़ौफ़नाक पहरेदार खड़े थे। कक्ष के दायीं ओर के दरवाज़े में से नौकर शाहज़ादे को एक गलियारे में ले आया। इस लंबे गलियारे में भी दोनों ओर हथियारबंद पहरेदारों की क़तार खड़ी थी। गलियारे के अंत में ज़री का पर्दा लटका

हुआ था, जिसे उठाकर पहले नौकर अंदर घुसा और फिर इजाज़त मिलने पर शाहज़ादे को भी अंदर ले गया। यह बादशाह का स्वागत-कक्ष था, जो बड़े शानदान ढंग से सजा था। सामने सोने के तख़्त पर एक आदमी बैठा था, जिसकी दाढ़ी खिचड़ी थी। उसने शाहज़ादे को बैठने के लिए इशारा किया और बड़े नम्र स्वर में बोला:

"आइये, बैठिये!"

शाहज़ादे ने अंदाज़ लगाया कि यह आदमी माहेसितारा का पिता ही हो सकता है, इस लिए उसे बतायी गयी जगह पर नहीं बैठा। उसने पहले वहीं खड़े-खड़े आदरपूर्वक सिर भुकाया। सिर ऊँचा करके वह दो क़दम आगे बढ़ा और फिर सिर भुकाया। इस तरह जब तक शाहज़ादा बादशाह सलाम के पास न पहुँचा, हर दो क़दम बाद रुककर सात बार सिर भुकाता रहा और फिर बादशाह का हाथ चूमकर सात बार भुका और अपनी पहलीवाली जगह पर जा खड़ा हुआ। बादशाह के दुबारा कहने पर ही वह उसकी बतायी हुई जगह पर जाकर बैठा। बादशाह सलाम शाहज़ादे की शिष्टता और विनम्रता से बहुत प्रभावित हुआ और अपने तख़्त पर से उठकर उसके पास आ बैठा। उसके बाद बादशाह ने नौकरों को दस्तरख़ान लगाने के लिए कहा। दस्तरख़ान पर तरह-तरह के स्वादिष्ट खाने और पकवान परोसे गये। बादशाह नौजवान का अतिथि-सत्कार करने लगा। खाना खा चुकने और दस्तरख़ान हटाये जाने के बाद बादशाह ने उससे पूछा कि वह कौन है और किस लिए आया है। शाहज़ादे ने संक्षेप में अपना परिचय दिया और मुख्य कारण बताने से पहले बोला:

"ऐ बादशाह, अगर आप मुभ पर नाराज न हों तो मैं अपने दिल का राज आपको बताऊँ!"

बादशाह की इजाजत मिलने पर शाहज़ादा आगे बोला:

"सच्चा प्यार करनेवाले लोग बादशाहों को अपने दिल की बात निडर और निस्संकोच होकर बता देते हैं। अल्लाह ने आपको एक ऐसी बेटी दी है, जिसकी खूबसूरती की धूम सारी दुनिया में मची हुई है। और दुनिया के हर कोने से उसके प्यार में डूबे बहादुर नौजवान उसके साथ शादी करने की तमन्ना से यहाँ आ रहे हैं। मैं भी ऐसे ही प्रेमियों में से एक हूँ। मैं शाहज़ादी माहेसितारा की हर शर्त पूरी करने और आपका दामाद बनने की इच्छा रखता हूँ।"

बादशाह सलाम बोला:

"मेरे बेटे! अल्लाह ने मुझे बेटी नहीं, एक मुसीबत दी है। तुम एक खूबसूरत नौजवान हो और मैं नहीं चाहता कि तुम भी इस मुसीबत के शिकार बनो। वह लड़की नहीं, जल्लाद है, जो प्यार-मोहब्बत के बारे में कुछ समभना भी नहीं चाहती। अगर तुम शादी ही करना चाहते हो, तो मैं माहेसितारा से भी ज़्यादा सुंदर लड़की तुम्हारे लिए ढूंढ़ सकता हूँ। तुम्हारे लिए माहेसितारा से न मिलना ही अच्छा रहेगा!"

शाहज़ादा माहेसितारा के पिता के मुंह से यह बात सुनकर सोच में पड़ गया: "भला,

कोई बाप अपनी सगी बेटी के बारे में ऐसी बात कह सकता है, यह शायद मेरा इम्तिहान ले रहा है।" फिर वह बादशाह से बोला:

"सारी दुनिया शाहज़ादी माहेसितारा की ख़ूबसूरती की ही नहीं, उनके दिल की भी तारीफ़ करती है। लगता है, आप ऐसी बातों से मेरे प्यार की आग को बुझा देना चाहते हैं!"

इस पर बादशाह ने जवाब दिया:

"नहीं, मुझे ग़लत मत समझो, मेरे मेहमान! अल्लाह ने उसे ख़ूबसूरती ज़रूर दी है, पर उसे दिल नहीं दिया। उसे कोई भी तो पसंद नहीं आता है। दुनिया के हर कोने से बड़े-बड़े शाहज़ादे, राजकुमार और सेनापति उसके प्यार में पागल होकर यहाँ आ चुके हैं। उन सबको मैंने मनाने और उनका इरादा बदलने की कोशिश की, पर कोई भी नहीं माना। और वे सब माहेसितारा की शर्तें पूरी न कर पाने के कारण अपने प्राण खो बैठे। वे सब मेरे दिल पर अपनी छाप छोड़ गये हैं और मुझे अकसर सपनों में भी दिखाई देते हैं। कुछ दिन पहले ही एक और शाहज़ादा भी मौत का शिकार हुआ। उसको मिलाकर दीवार पर टंगे सिरों की संख्या दो हज़ार तक पहुँच चुकी है। या, अल्लाह, आख़िर इसका अंजाम क्या होगा! देर-सबेर अल्लाह भी इस ख़ूबसूरती पर ज़रूर नाराज़ हो उठेगा। यह जल्लाद लड़की या तो जल्दी से जल्दी किसी से शादी कर ले, नहीं तो अच्छा होगा कि ख़ुद ही मर जाए!"

इस तरह बादशाह ने शाहज़ादे को कितना ही क्यों न मनाया, पर वह अपनी बात पर अड़ा ही रहा और बोला:

"सच्चा प्यार करनेवाले के लिए मौत कोई मायने नहीं रखती है! मैं चाहे उसकी शर्तें पूरी कर सकूँ या नहीं, पर कम-से-कम मरने के पहले उसे एक नज़र देख ज़रूर लेना चाहता हूँ। उसके बाद मैं ख़ुशी से मरने को तैयार हूँ।"

अंत में जब बादशाह समझ गया कि प्रेमी उसकी कोई भी दलील मानने को तैयार नहीं है, तो उसने उसे माहेसितारा के पास ले जाने का हुक्म दिया। लेकिन लड़कियों ने आकर माहेसितारा का यह जवाब सुनाया: "मेरे पास भिखारियों से बात करने के लिए समय नहीं है!"

"मोहब्बत की गिरफ़्त में पड़े बादशाह और भिखारी में कोई अंतर नहीं होता!" बादशाह ने जवाब दिया और नौजवान को माहेसितारा के पास ले जाने को कहा।

लड़कियों ने सिर झुकाकर बादशाह का हुक्म स्वीकार किया। वे शौकत को पहले एक बहुत बड़े कक्ष में से ले गयीं, जिसके अंत में एक दरवाज़ा था। दरवाज़े में से निकलकर वे एक लंबे गलियारे में घुसे, जिस में दोनों ओर हथियारबंद लड़कियाँ खड़ी थीं। गलियारे के दायें दरवाज़े से होकर वे लोग एक बड़े कमरे में घुसे, जिसमें कई दरवाज़े थे। लड़कियों की मुखिया इनमें से एक दरवाज़े में घुसी और अंदर आने की इजाज़त मिलने पर वापस आकर बोली:

"आइये, मेहमान, अंदर चलिये!"

उस समय अंधेरा होने लगा था। शाहज़ादा कक्ष के अंदर पहुँचा। कक्ष की दीवारों पर

बहुत ही भव्य काम हो रहा था, फ़र्श पर लाल रंग के क़ालीन बिछे थे और उन पर अतलस और ज़री के गाव-तकिये लगे हुए थे। कक्ष के बीचोंबीच कई रेशमी पर्दे लटके हुए थे और उनके पीछे से निकल रही तेज़ रोशनी से सारे कक्ष में उजाला हो रहा था। थोड़ी देर बाद पर्दों के पीछे से आवाज़ आयी :

"आपका स्वागत है, मेहमान! आइये, बैठिये!"

शाहज़ादा अत्यंत शिष्टतापूर्वक धन्यवाद देते हुए बैठ गया। इसके बाद लड़कियों ने उसके आगे दस्तरख़ान बिछाया और उस पर तरह-तरह के खाने परोसकर शाहज़ादे को खिलाया। दस्तरख़ान हटा लेने के बाद एक बार फिर पर्दों के पीछे से आवाज़ आयी। यह शाहज़ादी माहेसितारा ही थी। अब मालूम पड़ा कि कक्ष में व्याप्त तेज़ प्रकाश की किरणें उसके चेहरे से ही फूटी पड़ रही थीं, जो इतनी प्रखर थीं कि अंदर घुसनेवाले किसी भी आदमी की आँखें चौंधिया सकती थीं। इसी कारण हर अंदर आनेवाले आदमी और शाहज़ादी के बीच में सात पर्दे पड़े थे। माहेसितारा बोली :

"प्यारे मेहमान, आपकी तशरीफ़-आवरी का सबब क्या है?"

शाहज़ादे ने जवाब दिया :

"प्यारी माहेसितारा! क्या मैं आप ही की आवाज़ सुन रहा हूँ... मेरा सपना सच हो गया! मैं सिर्फ़ इस आवाज़ पर ही क़ुर्बान होने के लिए तैयार हूँ! मैं आपको प्यार करता हूँ। या तो आप मेरी हो जाइये, या फिर मेरी जान ले लीजिये!"

इस तरह का प्रणय-निवेदन सुनकर माहेसितारा बोली :

"प्यारे मेहमान, आप जवान भी हैं और ख़ूबसूरत भी। मैं आपको सलाह दूंगी कि आप मुझसे शादी करने का ख़्याल छोड़ दें, क्योंकि ऐसी इच्छा रखनेवाले हर आदमी को मेरी एक शर्त पूरी करनी होती है। अगर मेरी शर्त पूरी हुई, तो मैं शादी कर लूंगी, नहीं हुई – तो उस आदमी का सिर कटवा दूंगी। और मेरी शर्त पूरी करना बच्चों का खेल नहीं है, मुझे डर है कि आप भी यह शर्त पूरी नहीं कर पायेंगे और बेकार ही मारे जायेंगे!"

शाहज़ादा बोला :

"ऐ, मेरे दिल की मलिका, माहेसितारा! अगर मेरे एक नहीं, हज़ार सिर होते, तो भी मैं बड़ी ख़ुशी से उन्हें तुम्हारे लिए कटवा देता।"

"नहीं!" माहेसितारा ने टोका। "अगर आप शादी ही करना चाहते हैं, तो मैं आपके योग्य सुन्दर लड़की ढूंढ़ सकती हूँ!"

"पर प्रेमी तो तितली नहीं होता, जो एक फूल से उड़कर दूसरे पर बैठ जाये, और अगर ऐसा हो भी, तो फिर उसका प्यार क्या प्यार कहा जा सकता है?! मुझे आपसे सच्चा प्यार है और हमेशा रहेगा।"

माहेसितारा ने शाहज़ादे का इरादा बदलवाने की कितनी ही कोशिश क्यों न की, पर वह अपने निश्चय से डिगा नहीं। अंततः माहेसितारा बोली :

"ठीक है, आज रात आप महल में ही आराम करेंगे। कल शहर के सारे लोग इकट्ठे

11—231

हो जायेंगे। आप उन सबके सामने जाकर नगाड़ा बजायेंगे और फिर आपको महल के अंदर लाया जायेगा। आपको एक रात की मोहलत दी जायेगी, अगर इस बीच आप मुझे बोलने के लिए मजबूर कर सके, तो मैं आपकी हो जाऊंगी!"

शाहज़ादे ने यह बात मान ली और रात को महल में रहा। दूसरे दिन नक़्क़ारख़ाने में बाजे बजने की आवाज़ से लोगों को पता चल गया कि शाहज़ादी से शादी का इच्छुक एक और नौजवान आ गया है। सब लोग मैदान में इकट्ठे हो गये। थोड़ी देर बाद मैदान के बीच में फटे-पुराने कपड़े पहने एक नौजवान आता दिखाई दिया, जिसने कांख में एक गाँठ दबा रखी थी। और उन लोगों में से किसी के दिमाग़ में यह बात आ भी नहीं सकती थी कि यह नौजवान एक शाहज़ादा है। नौजवान नगाड़े के पास पहुँचा और उस पर डंके से चोट की। लोग हैरत-भरी नजरों से उस गरीब आदमी की ओर देख रहे थे। फिर उनकी आवाजें सुनाई देने लगीं।

"क्या माहेसितारा ऐसे दीवाने से शादी करेगी?" एक आदमी बोला।

दूसरे ने हाँ में हाँ मिलायी, "माहेसितारा इस दीवाने को अपने पास भी नहीं फटकने देगी, इसे भगा देगी।"

एक आदमी, जो शायद कुछ सूक्ष्मदर्शी था, बोला:

"यह दीवाने के भेष में कोई सच्चा प्रेमी है।"

एक और आदमी सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कह उठा:

"हाय कितना कमसिन है, पर बेकार ही अपनी जान गंवा रहा है..."

दरवाज़ा खुला, उसमें से लड़कियाँ भागकर बाहर आयीं और शाहज़ादे को घेरकर महल के अंदर ले गयीं। लोगों से कहा गया कि वे दूसरे दिन सुबह आयें और सब लोग अपने-अपने घर लौट गये। शाहज़ादा पहले बादशाह सलाम के सामने रुका और उसे सिर झुकाकर सलाम किया, इसके बाद उसे माहेसितारा के पास ले जाया गया। शाहज़ादा अपनी कलवाली जगह पर पहुँचकर बैठ गया। सुंदरी माहेसितारा पर्दों के पीछे बैठी थी और शाहज़ादे को दिखाई नहीं दे रही थी। उसने शाहज़ादे का बहुत ही विनम्र और प्रेमपूर्ण शब्दों से स्वागत किया। शाहज़ादी की मीठी-मीठी बातें सुनते हुए शाहज़ादे को पता भी न चला कि समय कैसे बीता जा रहा है। आधी रात हो गयी।

"मेरी शर्त पूरी करने को तैयार रहिये, मैं मुंह बंद करती हूँ और आप मेरा मुंह खुलवाने को मजबूर कीजिये," शाहज़ादी ने कहा और चुप होकर लेट गयी। शाहज़ादे ने माहेसितारा का मुंह खुलवाने के लिए उससे तरह-तरह के सवाल पूछने शुरू किये, पर वह तो जैसे सुन ही नहीं रही थी। शाहज़ादे ने रोचक कहानियाँ सुनानी शुरू की पर शाहज़ादी के चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इसके बाद वह चटपटे चुटकुले सुनाने लगा, अगर कोई और होता, तो हंसते-हंसते उसके पेट में बल पड़ गये होते, पर शाहज़ादी की तो भौंहें भी न फड़कीं। शाहज़ादे ने क्या-क्या न किया – बाजीगरी के खेल दिखाये, मसखरे की तरह मुंह बनाया और अंत में नाचा और गाया भी। पर शाहज़ादी माहेसितारा चुप लेटी रही।

"कहीं यह सो तो नहीं गयी?" शाहज़ादे ने मन में सोचा और ध्यान से सुनने लगा।

कुछ सुनाई नहीं दे रहा था। मालूम पड़ा कि वह सोयी नहीं है।

"ठीक है, अगर तुम सो नहीं रही हो, सिर्फ़ सोने का बहाना कर रही हो, तो मैं भी कम नहीं हूँ," शाहज़ादे ने मन-ही-मन कहा और पैर फैलाकर लेट गया। थोड़ी देर बाद माहेसितारा उठी और पर्दा हटाकर चुपके से झाँकी – शाहज़ादा आँखें बंद किये लेटा और उसकी सांस समान गति से चल रही थी।

"बेचारा, यों ही डींग मार रहा था! यह तेरे बस का काम नहीं है, कल तुझे मरना ही पड़ेगा और तेरा कटा सिर दीवार की शोभा बढ़ायेगा!" शाहज़ादी ने सोचा। शाहज़ादे ने आँखों को थोड़ा-सा खोलकर शाहज़ादी की ओर देखा ... हाय, वह इतनी सुंदर और आकर्षक थी, बिलकुल परियों जैसी, कि शाहज़ादा बड़ी मुश्किल से बेहोश होते-होते बचा! इस बीच माहेसितारा ने पर्दा गिरा दिया और सामनेवाले दरवाज़े में से होकर दूसरे कमरे में चली गयी। उसके जाते ही कक्ष में अंधेरा छा गया। पहले तो शाहज़ादा हैरत में पड़ गया, पर एक क्षण बाद ही उसने होश संभाला और उठ खड़ा हुआ। उसने जादूई टोपी पहन ली और बाक़ी चीज़ें काँख में दबाकर, पर्दा हटाकर उसी दरवाज़े में घुस गया, जिसमें से होकर माहेसितारा गयी थी। पूनम के चाँद-सा प्रकाश फैलाते हुए जहाँ-जहाँ माहेसितारा गयी – शाहज़ादा भी बड़ी आसानी से उसके पीछे-पीछे चलता रहा। अंत में वह एक कक्ष में पहुँचा जिसकी दीवारों पर तरह-तरह के अस्त्र-शस्त्र टंगे हुए थे। माहेसितारा ने यहाँ अपने ऊपरी कपड़े उतारकर योद्धा के कपड़े पहने और काँटेदार कमंद लेकर बाहर निकल गयी। उसके पीछे-पीछे शाहज़ादा भी परछाईं की तरह चल रहा था। थोड़ी देर बाद उसने अपने को एक बहुत बड़े बाग़ में पाया। माहेसितारा पेड़ों के बीच में से होती हुई बाग़ की ऊंची दीवार के पास पहुँची। कमंद दीवार पर फेंककर वह उसे पार कर गयी।

शाहज़ादे ने अपना जादूई क़ालीन खोला और पलक झपकते ही दीवार पार कर गया। उसने देखा कि माहेसितारा पवन गति से उड़ती जा रही है, उसका एक क़दम सौ मील के बराबर था। इस तरह वह लगभग एक घंटे तक उड़ती रही। इसके बाद उसने बड़ी तेज़ी से किसी अहाते की दीवार फाँदी। शाहज़ादा भी उड़कर दीवार पार कर गया और उसने क़ालीन को लपेटकर फ़ौरन काँख में दबा लिया। जिस ओर माहेसितारा गयी थी, वहाँ एक घर में दीया टिमटिमाता हुआ नज़र आ रहा था। शाहज़ादा दूसरों के लिए अदृश्य था, इस लिए वह बड़ी आसानी से माहेसितारा का पीछा करता रहा। माहेसितारा दरवाज़ा खोलकर अंदर घुसी। कोई बुढ़िया बोली :

"अच्छा, तुम आ गयीं, मेरी बेटी माहेसितारा, तुम्हारी सहेलियाँ इंतज़ार करते-करते तंग आ चुकी हैं।"

माहेसितारा ने बुढ़िया को सलाम किया और कपड़े बदलकर सिंगार करने के बाद भीतरी कक्ष में गयी, जो बहुत ही क़ीमती चीज़ों से सजा था। इस कक्ष में पूनम के चाँद-सी सुंदर दो लड़कियाँ बैठी थीं। उन दोनों ने माहेसितारा के पास पहुँचकर उसका अभिवादन किया। उनमें से एक ने उलाहना देते हुए कहा :

"बता, सहेली, आज इतनी देर से क्यों आयी?"

माहेसितारा मुस्कराकर बोली:

"सुनो, सहेलियो, मेरे पास महल में एक दीवाना आया और कहने लगा: 'मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूँ!' कल से वह मेरा सिर खपा रहा है। उसे सुलाकर मैं तुम्हारे पास आयी हूँ। कल उसका सिर काट दिया जायेगा। तुम भी कल आकर नज़ारा देखना!"

"बेचारा!" एक लड़की कह उठी और हंसने लगी। बुढ़िया इस बीच पूछ बैठी:

"पुलाव तैयार है, परोसूं क्या?"

"हाँ, जल्दी से, नहीं तो हमें वैसे ही देर हो रही है!" एक लड़की बोली।

बुढ़िया पानी लेकर आयी और उसने सब लड़कियों के हाथ धुलाये, इसके बाद वह एक बड़ी तश्तरी में घी में तर पुलाव, जिसमें ढेर सारा माँस डाला हुआ था, लेकर आयी। बुढ़िया भी दस्तरखान के सामने बैठ गयी और उसके बाद उनके लिए अदृश्य शाहज़ादा भी बैठ गया। सब पुलाव खाने लगे। शाहज़ादा उत्तेजित और खुश था। वह मन-ही-मन सोच रहा था, मानो वह अपनी पत्नी के साथ बैठा खाना खा रहा है। शायद इसीलिए वह पुलाव पर टूट पड़ा। हर गस्सा, उसकी उंगलियाँ छूते ही, अदृश्य हो जाता था। पुलाव इतनी तेज़ी से ख़त्म होने पर एक लड़की बोल उठी:

"माँ, पता नहीं क्यों, हमारा पेट ही नहीं भरा, क्या आज तुमने पुलाव कम बनाया था?"

"नहीं, बेटी! मैंने आज उतने ही चावल चढ़ाये थे, जितने रोज़ पकाती हूँ। वैसे पेट तो मेरा भी नहीं भरा। शायद तुम बहुत ज्यादा भूखी थीं, इस लिए पुलाव पर उस दीवाने की तरह टूट पड़ी थीं, जिसने तीन दिन से कुछ न खाया हो!"

लड़कियाँ खिलखिलाकर हंस पड़ीं। बुढ़िया ने दस्तरखान हटाया और चाय लेकर आयी। अभी सब एक-एक प्याली चाय पी भी न पायीं कि माहेसितारा बोल उठी:

"हमें फ़ौरन चलना चाहिए, हमारी मलिका इंतज़ार करते-करते ऊब गयी होगी!"

सब लड़कियाँ उठकर बाहर निकलीं और एक स्वर्ण खटोले पर बैठ गयीं। उनमें से एक ने चक्का घुमाया और खटोला धीरे-धीरे उठने लगा और फिर बहुत तेज़ी से आसमान में उड़ चला। शाहज़ादी का पीछा करते-करते शाहज़ादा अब हर बात का आदी हो चुका था। उसने भी फ़ौरन अपना क़ालीन खोला ओर उसपर बैठकर उड़ते हुए लड़कियों का पीछा करने लगा। थोड़ी देर बाद लड़कियों का उड़न-खटोला नीचे उतरने लगा और शाहज़ादा भी उनके पीछे-पीछे नीचे उतरने लगा। उत्सुकतावश उसने नीचे झाँककर देखा तो उसे एक जगह काफ़ी तेज़ रोशनी दिखाई दी। लड़कियों ने अपना उड़न-खटोला उधर घुमाया और वहाँ पहुँचकर उतर गयीं। शाहज़ादा भी उसी जगह उतरा। शाहज़ादे ने चारों ओर नज़र घुमाकर देखा और अपने को एक बहुत बड़े बाग़ में पाया, रोशनी भी वहीं से आती दिखाई दे रही थी। लड़कियाँ उड़न-खटोला वहीं छोड़कर तेज़ क़दमों से बाग़ के अंदर घुस गयी। शाहज़ादे ने अपना क़ालीन लपेटकर काँख में दबाया और जादूई टोपी की वजह से किसी को दिखाई दिये बग़ैर

लड़कियों के पीछे चल पड़ा। इस बाग़ की खूबसूरती में संगमरमर की इमारतें, जिनके गुंबद और कंगूरे सोने से मढ़े थे, चार चाँद लगा रही थीं। बाग़ में से कई दिशाओं में रास्ते जा रहे थे। बाग़ के बीच में दो नहरें थीं, जिनमें से एक में दूध-सा सफ़ेद पानी एक दिशा में बह रहा था और दूसरी में उसकी विपरीत दिशा में हर पचास क़दमों की दूरी पर संगमरमर के खंभे खड़े थे, जिनके ऊपरी सिरे पर मोतियों जैसा प्रकाश चारों ओर फैल रहा था। लगता था सारा बाग़ बहुत तेज़ रोशनी से दमक रहा है। नहरों के किनारे-किनारे तरह-तरह के सुंदर फूल खिले हुए थे और उन पर बैठी बुलबुलें और तरह-तरह की सुंदर चिड़ियाएं गा-चहक रही थीं। उस बाग़ की खूबसूरती में अत्यंत विलक्षण पेड़ भी चार चाँद लगा रहे थे। बाग़ के रास्ते पर चलते-चलते लड़कियाँ एक खुले मैदान में पहुँचीं। वहाँ फ़र्श अत्यंत सुंदर संगमरमर का था, चारों ओर सोने की कुर्सियाँ पड़ी थीं और एक ओर सोने का सिंहासन था। कुछ क्षण बाद सहसा सुंदरियों का एक झुंड पेड़ों के पीछे से निकला और वे सब कुर्सियों पर जा बैठीं। उनमें से जो सबसे सुंदर थी वह सोने के सिंहासन पर जा बैठी।

"अरे, माहेसितारा भी अपनी सहेलियों के साथ यहाँ आयी है!" एक लड़की कह उठी।

लड़कियों ने पहले बहुत नीचे सिर झुकाकर सोने के सिंहासन पर बैठी मलिका का अभिवादन किया और इसके बाद चारों ओर बैठी सुंदरियों का। मलिका और लड़कियाँ भी थोड़ी देर चुप रहीं, उसके बाद मलिका ने पूछा:

"प्यारी बहन माहेसितारा, आज तुम्हें देर कैसे हुई? आज तुमने हमें बहुत इंतज़ार कराया..."

माहेसितारा बोली:

"यह सच है, कि हम लोग देर से पहुँचे, पर अगर आप इजाज़त दें, तो मैं वजह बताऊँ। एक दीवाना मेरे प्यार में पागल हो गया है। कहता है: 'मैं तुम्हें बेहद प्यार करता हूँ, तुम्हारे बिना मैं मर जाऊंगा!' मुझे उसे सुलाने के लिए चाल चलनी पड़ी। कल आप उसकी मौत का नज़ारा देख सकती हैं।"

मलिका उत्तर से संतुष्ट होकर मुस्करा दी। इसके बाद माहेसितारा और उसकी खूबसूरत सहेलियाँ भी सोने की कुर्सियों पर बैठ गयीं। लड़कियाँ आपस में हंसी-मज़ाक़ करती गपशप करने लगीं। थोड़ी देर बाद मलिका की इजाज़त से उन्होंने नाचने का खेल खेलना शुरू किया। यह बाग़ परियों के इस देश के बादशाह की सुंदर बेटी बादिआ का था और यहाँ सिर्फ़ परियाँ रहती थीं। काली-काली आँखों और बादाम-सी पलकोंवाली जो सुंदरी सोने के सिंहासन पर बैठी थी, वही बादिआ परी थी।

लड़कियों के एक दल ने तरह-तरह के वाद्यों पर मधुर धुन छेड़ी और सब आनन्द से सुनने लगीं। संगीत के बाद लड़कियों ने गाने गाये और नाचीं। उसके बाद कुछ देर का मध्यांतर हुआ। दो-दो, तीन-तीन करके लड़कियाँ बाग़ में घूमने निकलीं। केवल माहेसितारा ने ही घूमने जाने से इनकार कर दिया।

"सहेलियो! मैं बहुत थक गयी हूँ, थोड़ी देर सुस्ताना चाहती हूँ। तुम लोग बाग़ में

टहलो, उतनी देर मैं पलंग पर हो लूंगी!" यह कहकर माहेसितारा बाग़ से चल दी। अपने पलंग के पास पहुँचकर वह उस पर लेट गयी। शाहज़ादा भी वहाँ पहुँच गया। वह जादूई चिलमची में पानी भरकर लाया और उसमें देखते हुए बोला:

"मेरी रूह माहेसितारा के बदन में चली जाये और उसकी रूह मेरे बदन में आ जाये!" उसने जो कहा, वही हुआ। शाहज़ादा माहेसितारा का रूप धारण करके बाग़ में वापस पहुँच गया। इस समय तक मध्यांतर समाप्त हो चुका था और सब लड़कियाँ वहाँ इकट्ठी हो गयी थीं। माहेसितारा रूपी शाहज़ादा उसकी कुर्सी पर बैठ गया। फिर से नाच-गाना शुरू हुआ।

"अच्छा, अब माहेसितारा नाचेगी!" एक लड़की बोली। सबने तालियाँ बजायीं। माहेसितारा रूपी शाहज़ादा बहुत सुंदर ढंग से नाचने लगा। लड़कियों में से किसी ने भी इससे पहले अपने देश में इतना सुंदर और आकर्षक नाच नहीं देखा था। जब नाच ख़त्म हुआ, तो सब देर तक तालियाँ बजाती रहीं। इसके बाद कोई बोल उठी:

"अच्छा, अब माहेसितारा एक गाना भी सुनायेगी!"

"माहेसितारा" ने फ़ौरन आगे निकलकर गाना शुरू कर दिया। और उसने गाना भी इतनी सुंदर और आकर्षक आवाज़ में गाया कि लड़कियाँ सब कुछ भूलकर उसका गाना सुनती रहीं। सब संगीत की लहर में डूब गये। लड़कियाँ ख़ुशी से तालियाँ पीटते हुए "माहेसितारा" से बार-बार गाने का अनुरोध करने लगीं। अंत में मलिका ने "माहेसितारा" को अपने पास बुलाया और बोली:

"माहेसितारा, तुम इतना सुंदर नाचती और गाती हो, तुम्हारी आवाज़ इतनी मधुर और आकर्षक है और तुम अभी तक चुप रहती थीं, अपनी प्रतिभा हमसे छिपाये हुए थीं। मैं तुम्हारे नाच और गानों से इतनी ख़ुश हूँ कि तुम्हें इसी वक़्त सिर से पैर तक सोने से ढक देना चाहती हूँ। पर, अफ़सोस, मेरा ख़जाना यहाँ से दूर है। मेरी प्यारी बहन, फिर भी मैं तुम्हें कुछ इनाम देना चाहती हूँ। लो यह नयी पोशाक, जो मैंने आज ही सिलवायी है, मैं, इसे तुम्हें इनाम मे देती हूँ।"

यह कहकर मलिका ने अपनी बेशक़ीमती पोशाक "माहेसितारा" को पहना दी और उसके माथे को चूम लिया। सब मलिका की उदारता से बड़े प्रभावित हुई और ताली बजा उठीं। उसके बाद फिर मध्यांतर हुआ। शाहज़ादा जल्दी से बाग़ में से निकलकर पलंग के पास पहुँचा और चिलमची में पानी भरकर बोला:

"मेरी रूह मेरे बदन में आ जाये और माहेसितारा की रूह माहेसितारा के बदन में और वह जाग उठे!" शाहज़ादा अभी अपने सिर पर जादूई टोपी रखकर अदृश्य हुआ ही था कि उसकी कही हुई बात पूरी हो गयी। माहेसितारा उसी क्षण उठ खड़ी हुई।

"अरे, यह क्या हुआ! मैं इतनी देर तक सोती रही, जल्दी से भागना चाहिए।" उसके मुंह से निकला और वह उठकर बाग़ की ओर भागी। मालूम पड़ा, बाग़ में अभी तक मध्यांतर चल रहा है और सब लड़कियाँ बाग़ में घूम रही हैं। यह देखकर माहेसितारा बहुत ख़ुश हुई।

"बहुत अच्छा हुआ, मुझे देर नहीं हुई," उसने मन में सोचा और मध्यांतर के बाद

सब लड़कियों के साथ अपनी जगह पर जाकर बैठ गयी। मनोरंजन कार्यक्रम शुरू होने के पहले एक लड़की बोल उठी :

"माहेसितारा अब एक नाच और दिखाओ!" फ़ौरन सब तालियाँ बजाने लगीं। माहेसितारा कहने ही वाली थी कि उसे नाचना नहीं आता कि मलिका उसे मनाते हुए बड़े प्यारभरे स्वर में बोली :

"इसका मतलब है, बहन, तुम्हें नाचना नहीं आता था, तब तो तुमने हमें ऐसा नाच दिखाया, अब नाचकर दिखाओ कि वास्तव में तुम कैसा नाच सकती हो! खूब मज़ा आयेगा!"

माहेसितारा को उठकर आगे आना और नाचना पड़ा, पर इस बार किसी कारण से उसके नाच में कोई आकर्षण नहीं दिखाई दिया, इसके अलावा वह भौंडा भी लग रहा था। तब लड़कियाँ कहने लगीं :

"अच्छा तुम अब नाचना छोड़ो और गाना सुनाओ!"

माहेसितारा ने गाना शुरू किया, तो उसकी आवाज़ फटने लगी, इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि उसका गाना भी किसी को पसंद नहीं आया। मलिका सदाशयता दिखाते हुए बोली :

"प्यारी बहन, माहेसितारा! अभी थोड़ी देर पहले तो तुमने इतना सुंदर नाच दिखाया और इतना सुंदर गाया था! लगता है मध्यांतर के दौरान घूमते समय तुम्हें ठंड लग गयी है, तुम्हारा गला भी बैठा हुआ लग रहा है। पता नहीं इस बार तुम्हारा नाच भी अच्छा नहीं रहा..."

माहेसितारा आश्चर्यचकित रह गयी और बोली :

"दीदी, मैं ख़ुद नहीं जानती कि यह क्या हो रहा है।"

इसके बाद दूसरी लड़कियों ने गाया और नाच दिखाया। जब रात समाप्त होनेवाली थी और हर तरफ़ से चिड़ियों के चहचहाने की आवाज़ें आने लगीं, तो सब लड़कियों को अपने-अपने घर लौटने की इजाज़त मिली। माहेसितारा तथा उसकी दोनों सहेलियाँ और लड़कियों से विदा लेकर बाग़ से बाहर निकलीं। वे तीनों अपने उड़न-खटोले पर बैठीं और उड़ चलीं। उनके पीछे शाहज़ादा भी अपने जादूई क़ालीन पर उड़ने लगा। लड़कियाँ बुढ़िया के घर पहुँचीं और उड़न-खटोला वहीं छोड़ बुढ़िया से विदा लेकर अपने-अपने घर रवाना हो गयीं। शाहज़ादा फिर माहेसितारा का पीछा करने लगा। वे दोनों अब महल के नज़दीक पहुँच रहे थे।

शाहज़ादा माहेसितारा से पहले महल में घुस गया और अपनी जगह पर जाकर लेट गया और जैसे गहरी नींद सो रहा हो, खर्राटे भरने लगा। माहेसितारा ने एक कमरे में जाकर मर्दाने कपड़े उतारकर घर के कपड़े पहन लिये। उसने देखा नौजवान गहरी नींद में सो रहा है। वह काफ़ी देर तक उसको अफ़सोसभरी नज़रों से देखती रही।

"आह! मेरे अभागे दीवाने प्रेमी! तू कितना भोला और लाचार है, मुझे तुझ पर तरस आता है! तुझे अपने सिर कटवानेवालों के साथ होड़ नहीं करनी चाहिए थी। कल तू भी मारा जायेगा!" माहेसितारा ने कहा और जाकर अपने बिस्तर में लेट गयी।

थोड़ी देर बाद शाहज़ादे ने आँखें खोलीं, अंगड़ाई ली और गहरी साँस खींचकर छींका

जैसे उसकी नींद अभी-अभी खुली हो। इसके बाद वह उठ खड़ा हुआ और अपनी प्रियतमा की ओर देखकर कहने लगा। माहेसितारा को अभी नींद नहीं आयी थी और वह मन-ही-मन अभागे प्रेमी पर हंस रही थी, उसका इरादा बाद में उसकी खूब हंसी उड़ाने का था। इस बीच शाह़ज़ादा बोला :

"ऐ, मेरी ज़िंदगी, मेरी प्यारी, मेरी खूबसूरत माहेसितारा! मैंने कितना आश्चर्यजनक सपना देखा।" और उसने अभी-अभी माहेसितारा के साथ हुई सारी बातों के बारे में विस्तार-पूर्वक सुनाना शुरू कर दिया ...

माहेसितारा शाह़ज़ादे के सपने का क़िस्सा सुनकर समझ गयी कि इस बार उसका पाला एक ऐसे आदमी से पड़ा है, जो दूरदर्शी है और पहले से ही उसके विचारों का पता लगाकर उनके बारे में बताने और उसके साथ प्रतिद्वंद्विता करने की क्षमता रखता है। ऐसे आदमी को धोखा देना और सज़ा देने का ख़याल भी मन में लाना उसके स्वयं के लिए ख़तरनाक हो सकता है। इस लिए वह पर्दा हटाकर शाह़ज़ादे के पास आयी और बोली :

"ऐ, मेरे खूबसूरत बहादुर नौजवान, तुम्हारी आवाज़ में अजीब आकर्षण और मिठास है! बहुत-से खूबसूरत नौजवान मेरे प्यार में पागल होकर मेरे पास अपने सिर कटाने आये और मैं अपनी सुंदरता के कारण ख़ूनी शाह़ज़ादी के नाम से मशहूर हो गयी। अपने सारे प्रेमियों को मैंने अपनी खूबसूरती पर हमला करनेवाला समझा और उन सबके सिर कटवा दिये। इस महल में क़दम रखनेवालों में से कोई भी मेरी शर्त पूरी न कर सका और कोई भी यहाँ से ज़िंदा वापस नहीं गया। तुम भी प्रेमी हो। पर अगर मैं खूबसूरती की शाहज़ादी हूँ, तो तुम प्रेमियों के बादशाह हो और हमारे बीच हुए मुक़ाबले में जीत प्रेमियों के बादशाह की हुई ... ऐ मेरे बादशाह, मेरे बहादुर प्रेमी, तुमने मेरा दिल जीत लिया!"

शाहज़ादी और शौकत प्रगाढ़ आलिंगन में बद्ध हो गये।

इस तरह शाह़ज़ादे ने माहेसितारा की शर्त पूरी करके अपना सपना सच्चा कर लिया। आकांक्षाओं की कलियां खिलकर फूल बन गयी और उनका अभिनंदन करते हुए बुलबुलें, तोते और फ़ाख़्ताएं गा उठीं। माहेसितारा अपने सोने के पलंग पर सो रही थी, पर अकेली नहीं ...

हमेशा जब भी कोई प्रेमी सुंदरी माहेसितारा की शर्तें सुनकर उन्हें पूरा करने की कोशिश करता था, तो सारे शहर और महल के लोगों के दिल दहल उठते थे। सब अपने मन में दर्द छिपाये प्रेमी की क़िस्मत के फ़ैसले का इंतज़ार करते रहते थे। इस बार भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही शाह़ज़ादा शौकत महल के अंदर घुसा, लोग घबरा उठे।

"बेचारा, पता नहीं कल तुझ पर क्या बीतेगी!" यह बात उन हज़ारों लोगों के मुंह से बरबस निकल गयी, जो अपनी नींद और चैन खो बैठे थे। सबसे ज़्यादा दुःख महल के नौकरों को हो रहा था, जो कटे सिर देखते-देखते उकता चुके थे और सहानुभूति के साथ शाह़ज़ादे की जीत की दुआ माँग रहे थे। दिन निकला। जल्लाद भी जाग चुका था। वह बड़ी शान से टहल रहा था और बार-बार ख़ून में सनी तलवार निकालकर बड़े मज़े से उसकी

धार तेज़ करके म्यान में डाल लेता था। यह घिनौने चेहरेवाला जल्लाद बड़ी उत्सुकता से सुबह होने का इंतज़ार कर रहा था और उसे यह सोचकर बड़ा आनंद आ रहा था कि वह डरे हुए शिकार की गर्दन कैसे काटेगा।

महल के सामने का चौक लोगों से भर गया था। माहेसितारा के प्रेमी का महल से बाहर निकलने का समय हो गया, पर वह अभी तक दिखाई नहीं दे रहा था। लोग आपस में काना-फूसी करने लगे:

"अगर उस नौजवान ने शाहज़ादी माहेसितारा की शर्तें पूरी कर दी होतीं, तो वह अब तक जीत की ख़ुशी में चिल्लाता हुआ बाहर आ गया होता। यानी वह शर्तें पूरी नहीं कर सका है और अंतिम क्षणों में उन्हें पूरी करने की कोशिश कर रहा है। पर वह शायद ही ऐसा कर पाये। इसका मतलब है कि आज उसका कटा सिर भी दीवार पर ठोक दिया जायेगा।"

सब बुरे अंजाम का ही इंतज़ार कर रहे थे। आंगन में काम करनेवाली लड़कियाँ रोने लगी थीं, उन्हें लग रहा था कि कुछ ही क्षणों में शाहज़ादे का कटा हुआ सिर उन्हें दिखाई पड़नेवाला है... पर अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था। इस अजीब बात की सूचना लड़कियों ने बादशाह को दी, वह भी हैरत में पड़ गया। कुछ समय और बीता, पर न शाहज़ादा दिखाई दिया और न ही उसका कटा सिर... जल्लाद भी खड़ा-खड़ा उकता चुका था। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा, आँखों में ख़ून उतर आया और वह ख़ूंख्वार जानवर की तरह अपने शिकार पर झपटने के लिए दाँत पीसने लगा। लोगों ने शाहज़ादे को ज़िंदा बाहर निकलते देखने की उम्मीद छोड़ दी थी, वे यही सोच रहे थे कि अभी नहीं तो थोड़ी देर बाद जल्लाद कटा सिर लेकर बाहर निकलनेवाला है। समय बीतता जा रहा था, न शाहज़ादे की कोई ख़बर थी और न ही माहेसितारा की। बादशाह वास्तव में घबरा उठा। अंत में वह धैर्य खो बैठा और उसने लड़कियों को माहेसितारा के कक्ष में, उसकी इजाज़त के बिना ही, जाकर पता लगाने का हुक्म दिया कि वहाँ क्या हो रहा है। ऐसा ही किया गया। लड़कियाँ धीरे-से दरवाज़ा खोलकर माहेसितारा के कक्ष में घुसीं। नौजवान अपनी जगह पर नहीं था। उन्होंने जल्दी से पर्दा हटाकर देखा, तो शाहज़ादे और माहेसितारा को एक दूसरे की बाँहों में लिपटे पाया।

"शाहज़ादी माहेसितारा के प्रेमी ने उसकी शर्तें पूरी कर दीं!" सब लड़कियाँ ख़ुशी से चिल्ला उठीं। एक लड़की फ़ौरन भागकर बादशाह सलाम के पास पहुँची और उसे यह ख़ुश-ख़बरी दी। बादशाह की प्रसन्नता की सीमा न रही, उसने फ़ौरन अपने ख़ज़ाँची को बुलवाकर उस लड़की को सिर से पैर तक सोने से ढकने का हुक्म दिया। तुरंत महल में और फिर सारे शहर में शहनाइयाँ बज उठीं, लोग ख़ुशी से पागल हो उठे। ख़ुशी की यह लहर महल के चौक से शुरू हुई, जहाँ लोग शाहज़ादे की क़िस्मत के फ़ैसले का इंतज़ार कर रहे थे। शहनाइयों और बाजों की आवाज़ सुनकर वे दंग रह गये, पर थोड़ी देर बाद ही कारण समझ में आने पर सच्चे दिल से ख़ुशी मनाने लगे। सब शाहज़ादे शौकत और शाहज़ादी माहेसितारा की तारीफ़ करते हुए अपने-अपने घर लौट गये। सिर्फ़ अकेले जल्लाद को ही इस ख़ुशख़बरी से ख़ुशी नहीं

12—231

हुई। शहनाइयों और बाजों की आवाजों से माहेसितारा और शौकत की नींद खुल गयी। बादशाह सलाम ने सबसे पहले नवविवाहितों को बधाई दी, बेशक़ीमती कपड़े शाहज़ादे को पहनाये और उसके बाद अपने देश के सारे लोगों को माहेसितारा और शौकत की शादी की खुशी में चालीस दिन की दावत दी, खज़ाना खोलकर अपना सारा सोना-चाँदी प्रजा में बाँटना शुरू कर दिया।

पति-पत्नी के रूप में शौकत और माहेसितारा का जीवन सुख-चैन से बीता।

पिता की अंतिम इच्छा

एक आदमी के तीन बेटे थे। जब उसका अंतिम समय निकट आया, तो उसने बड़े बेटे को बुलाया और बोला :

"बेटा, मेरे मरने के बाद क्या तुम तीन रात मेरी क़ब्र के पास गुज़ार सकते हो?"

"नहीं, मैं क़ब्र के पास नहीं सो सकता," बड़े बेटे ने जवाब दिया।

उस आदमी ने अपने मंझले बेटे को बुलाकर यही सवाल किया, पर उसने भी ऐसा करने से इंकार कर दिया। तब उस आदमी ने सबसे छोटे बेटे को बुलाकर पूछा :

"बेटा, क्या तुम मेरे मरने के बाद तीन रात मेरी क़ब्र के पास सो सकते हो?"

छोटा बेटा बोला :

"पिता जी, अगर आप चाहें, तो मैं तीन नहीं सौ रातें आपकी क़ब्र के पास गुज़ार सकता हूँ।"

अपने बेटे के ये शब्द सुनकर पिता ने शांति से आँखें मूंद लीं और यह संसार छोड़ दिया। पिता को दफ़नाने के बाद छोटा बेटा शोक मनाता हुआ क़ब्र के पास ही बैठा रहा। आधी रात बीते वहाँ एक सफ़ेद घोड़ा आसमान से उतरकर आया। घोड़े पर पूरा साज़ था और सब तरह के हथियार उस पर बंधे थे। घोड़े ने सरपट दौड़ते हुए क़ब्र के तीन चक्कर लगाये। छोटे बेटे की नींद खुल गयी। वह घोड़े को पकड़कर पूछने लगा :

"तुमने सरपट दौड़ते हुए मेरे पिता की क़ब्र के तीन चक्कर क्यों लगाये?"

"मैं कभी तुम्हारे पिता का वफ़ादार घोड़ा था और इस समय तुम्हारे पिता को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए आसमान से उतरकर आया हूँ," घोड़े ने जवाब दिया और वहाँ से वापस आसमान में ग़ायब होने से पहले उसने अपनी अयाल के कुछ बाल अपने दांतों से तोड़कर लड़के को दे दिये।

"अगर तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत आये, तो तुम मेरा एक बाल जलाना और मैं फ़ौरन तुम्हारे पास आ जाऊँगा," घोड़ा जाते-जाते बोला। दूसरी रात भी छोटा बेटा अपने पिता की क़ब्र के पास बैठा रहा। ठीक आधी रात के समय तक काला घोड़ा आसमान से उतरा और उसने भी सरपट दौड़ते हुए क़ब्र के तीन चक्कर लगाये। लड़के ने काले घोड़े को पकड़कर पूछा:

"तुम आसमान से क्यों उतरे और तुमने मेरे पिता की क़ब्र के तीन चक्कर क्यों लगाये?"

"मैं कभी तुम्हारे पिता का वफ़ादार घोड़ा था और मुझ पर सवारी करने में उन्हें बड़ा मज़ा आता था। उनके मरने के बाद मैं आसमान से अपना फ़र्ज़ पूरा करने के लिए उतरा हूँ, तुम भी मुझे याद रखना," घोड़े ने कहा और अपनी लंबी अयाल के कुछ बाल अपने दांतों से तोड़कर लड़के को दिये और जाते-जाते बोला:

"अगर तुम पर कोई मुसीबत आये, तो मेरा एक बाल जलाना, उसी क्षण मैं तुम्हारे पास पहुँच जाऊँगा।"

छोटा लड़का तीसरी रात भी पिता की क़ब्र के पास बैठा रहा। ठीक आधी रात के समय एक लाखी रंग का घोड़ा, जिस पर पूरा साज और हथियार थे, आसमान से उतरकर आया और सरपट दौड़ते हुए उसके पिता की क़ब्र के तीन चक्कर लगा गया। लड़के ने घोड़े से पूछा:

"तुमने क्यों सरपट दौड़ते हुए मेरे पिता की क़ब्र के तीन चक्कर लगाये?"

"मैं तुम्हारे पिता की सेवा कर चुका हूँ। जहाँ भी वे जाना चाहते थे, उन्हें फ़ौरन वहाँ पहुँचाने के लिए मैं हमेशा तैयार रहता था। अब वे इस दुनिया में नहीं रहे, इस लिए मैं अपना आखिरी फ़र्ज़ पूरा करने के लिए आसमान से उतरकर आया हूँ," यह कहकर घोड़े ने अपनी अयाल के कुछ बाल अपने दांतों से तोड़कर लड़के को दिये और ग़ायब हो गया।

लड़का चौथी रात भी अपने पिता की क़ब्र के पास बैठा रहा। पर उस रात कोई नहीं आया। अपने पिता की अंतिम इच्छा का असली मतलब समझकर छोटा लड़का क़ब्र के पास से उठकर घर आ गया। पिता जो कुछ छोड़ गये थे, उसे तीनों भाइयों ने आपस में बाँट लिया। पर यह सब ज्यादा दिन न चला, इसलिए तीनों चरवाहे का काम करने लगे। छोटा बेटा ईमानदारी से अपना काम करता था, पर उसके दोनों बड़े भाई अकसर दूसरों के जानवर बेच देते थे, पैसा खा-पी जाते थे, या उन्हें काटकर खा जाते थे। अंत में जब लोगों को गुस्सा आया तो उन्होंने तीनों भाइयों को अपने गांव से निकाल दिया। तीनों भाई वहाँ से निकलकर दूसरे गांव में चरवाहे का काम करने लगे। एक बार छोटा भाई ढोर चरा रहा था, तो बाकी दोनों भाई घूमने के लिए शहर चले गये। उन्होंने शहर में एक अत्यंत आकर्षक और दिलचस्प बात देखी। वहाँ के बादशाह के हुक्म से शहर की सबसे बड़ी मेहराब के सहारे एक चालीस सीढ़ियोंवाली चौड़ी नसीनी लगा दी गयी और उसकी सबसे ऊपरी सीढ़ी के पास बादशाह की बेटी के बैठने के लिए तंबू तान दिया गया और सारे शहर में यह एलान करवा दिया गया:

"जो कोई घोड़े, गधे या ऊंट पर बैठकर इस नसीनी की सबसे ऊपरी सीढ़ी तक चढ़ जायेगा और शाहज़ादी के हाथ से पानी का प्याला पीकर, उसकी अंगूठी लेकर नीचे उतर

आयेगा, उसके साथ शाहज़ादी की शादी कर दी जायेगी। बादशाह सलामत इस बहादुरी के कारनामे और शादी की खुशी में चालीस दिन की दावत देंगे।"

यह खबर बिजली की तरह सारे देश में फैल गयी। हज़ारों लोग अपने-अपने घोड़ों, ऊंटों और गधों पर सवार होकर शहर पहुँचने लगे। और बहुत-से बहादुर नौजवान चालीस सीढ़ियों-वाली नसीनी पर चढ़ने की कोशिश करने लगे। पर उनमें से कोई भी सबसे ऊपर की सीढ़ी तक न पहुँच पाया और कई तो गिरकर मर भी गये। दोनों बड़े भाइयों ने जी भरकर यह नज़ारा देखा और घर आकर अपने छोटे भाई को सुनाने लगे:

"अहा! आज शहर में हमने कितना मज़ेदार नज़ारा देखा!"

"आपने ऐसा कौन-सा मज़ेदार नज़ारा देखा, मुझे भी बताइये," छोटा भाई पूछने लगा।

"बादशाह के हुक्म से चालीस सीढ़ियोंवाली एक नसीनी लगायी गयी है। अगर कोई अपने घोड़े पर बैठकर आखिरी सीढ़ी तक चढ़ जायेगा और शाहज़ादी के हाथ से पानी का प्याला पीकर और उसकी अंगूठी लेकर नीचे उतर आयेगा, तो बादशाह उसके इस बहादुरी के कारनामे की खुशी में दावत देगा और अपनी बेटी की शादी उस बहादुर के साथ कर देगा। बहुत-से बहादुर नौजवान घोड़ों, ऊँटों और गधों पर सवार होकर ऊपरी सीढ़ी तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं, पर सफलता अभी तक किसी के हाथ नहीं लगी और कई तो गिरकर मर चुके हैं या अपाहिज हो गये हैं। कितना मज़ेदार तमाशा देखा हमने!"

"अच्छा तो कल आप लोग जानवर चराना और मैं शहर जाकर यह नज़ारा देखूँगा," छोटा भाई बोला। और बड़े भाइयों ने जवाब दिया:

"नहीं, अगर तू चला गया तो हम लोग भूखे रह जायेंगे।"

दूसरे दिन भी दोनों बड़े भाई नज़ारा देखने गये। उनका छोटा भाई शाम होने तक जानवर चराता रहा। उसके बाद उसने उन्हें पोपलर के एक बड़े पेड़ के नीचे जमा कर दिया और सफ़ेद घोड़े का एक बाल जलाया। फ़ौरन पूरे साज़ और हथियार से लैस सफ़ेद घोड़ा आसमान से उतरकर उसके सामने आ खड़ा हुआ। छोटा भाई घुड़सवार के कपड़े पहन और हथियार बांधकर सफ़ेद घोड़े पर सवार हो गया और शहर की ओर सरपट भाग चला। घोड़े को सीधे उस नसीनी के पास ले जाकर वह ज़ोर से चिल्लाया: "छू!" घोड़ा बड़ी तेज़ी से अड़तीसवीं सीढ़ी तक पहुँच गया, पर घुड़सवार ने घोड़े को मोड़ लिया और वापस उतर आया। वहाँ जमा लोगों की भीड़ में से कुछ ने आवाज़ दी: "अरे, नौजवान, एक बार 'छू' और कहो और तुम ऊपरी सीढ़ी तक पहुँच जाओगे!" पर तब तक वह जा चुका था। स्तेपी में लौटकर वह फिर से जानवर चराने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। दोनों बड़े भाई घर आकर बड़े जोश से उसे शहर में देखा क़िस्सा सुनाने लगे:

"आज एक स्तेपी के घुड़सवार ने नसीनी पर घोड़ा चढ़ाने की कोशिश की। कितनी फुर्ती से अड़तीसवीं सीढ़ी तक चढ़ गया वह! पर जब दो सीढ़ियाँ ही बाक़ी रह गयीं, तो उसने घोड़ा मोड़ लिया और नीचे उतर आया।"

"अरे, भई, अब तुम मुझे भी कम-से-कम एक बार तो शहर जाकर यह तमाशा देख लेने दो," छोटा भाई गिड़गिड़ाया, पर बड़े भाई फिर बोले:

"वाह रे वाह, अगर तुझे जाने दें, तो हमें खाना कौन खिलायेगा?"

रात बीत गयी। सुबह होते ही बड़े भाई फिर तमाशा देखने के लिए शहर चल दिये। छोटे भाई ने भरपेट चराने के बाद जानवरों को पोपलर के बड़े पेड़ के नीचे बाँध दिया। इसके बाद उसने काले घोड़े का एक बाल जलाया और पूरे साज और हथियारों से लदा काला घोड़ा आसमान से उतरकर फ़ौरन सामने आ खड़ा हुआ। छोटे भाई ने कपड़े बदले और हथियार बाँधकर काले घोड़े पर शहर की ओर दौड़ चला। लोगों ने देखा कि आज यह नौजवान जिस घोड़े पर सवार है, वह उसके कलवाले घोड़े से चालीस गुना बेहतर है। छोटे भाई ने नसीनी के पास घोड़े को लाकर एड़ लगायी और 'छू' कहा। घोड़ा पलक झपकते ही उनतालीसवीं सीढ़ी तक चढ़ गया, पर सवार ने वहाँ से घोड़ा मोड़ लिया और उस पर बैठा सीढ़ी से नीचे उतर आया। लोग चिल्लाने लगे: "अरे, भई, एक बार और 'छू' कहो और तुम्हारा घोड़ा तंबू तक पहुँच जायेगा!" शाम ढलने लगी थी, लोगों ने सोचा कि अब इससे ज़्यादा मज़ेदार तमाशा देखने को नहीं मिलेगा और सब वहाँ से अपने-अपने घर लौट गये। दोनों बड़े भाई घर लौटकर अपने छोटे भाई को बड़े जोश के साथ आज के नज़ारे के बारे में बताने लगे:

"आजवाला घोड़ा कलवाले से कहीं ज़्यादा अच्छा था। सवार के 'छू' कहने की देर थी कि वह पलक झपकते ही उनतालीसवीं सीढ़ी तक जा पहुँचा, पर उस बहादुर नौजवान ने खुद ही घोड़े को वहाँ से मोड़ लिया और नीचे उतर आया।"

छोटा भाई फिर अपने बड़े भाइयों की आरज़ू-मिन्नत करने लगा:

"आज तो कम-से-कम तुम लोग जानवर चरा लो, मैं भी शहर जाकर यह मज़ेदार तमाशा देखना चाहता हूँ।"

"अगर तू चला गया, तो हम लोग खायेंगे क्या?" बड़े भाई बोले और उसे शहर नहीं जाने दिया।

रात बीती और फिर सुबह हुई। दोनों बड़े भाई फिर शहर चले गये। छोटे भाई ने फिर जानवरों को भरपेट चराया और उन्हें पोपलर के घने पेड़ के नीचे बांध दिया। इस दिन उसने लाखी रंग के घोड़े का बाल जलाया और वह फ़ौरन पूरे साज-सामान और हथियारों से लदा आसमान से उतरकर सामने आ खड़ा हुआ। लड़के ने कपड़े बदले, हथियार बांधे और घोड़े पर सवार होकर शहर की ओर दौड़ चला। नसीनी का एक चक्कर लगाकर उसने कहा "छू!" और पलक झपकते ही घोड़ा चालीसवीं सीढ़ी पार करके शाहज़ादी के तंबू के सामने आ खड़ा हुआ। लड़के ने शाहज़ादी के हाथों से पानी का प्याला पिया, उसकी उंगली से अंगूठी उतारी और घोड़े पर बैठे-बैठे ही नीचे उतर आया। दोनों बड़े भाई लौटकर अपने छोटे भाई को पूरा हिसाब देकर सुनाने लगे कि कितने ऊंट, घोड़े और गधे उस नसीनी पर से गिरकर मर गये।

"पहला घोड़ा दूसरे घोड़े के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं था, पर आज हमने उसका तीसरा

घोड़ा देखा, जो दूसरे से भी कई गुना बेहतर था। उसने सब लोगों के सामने अपने घोड़े पर सवार होकर नसीनी का एक चक्कर लगाया और उसके एड़ लगाकर 'छू!' कहते ही घोड़ा बिजली की तरह दौड़ा और चालीसों सीढ़ियां पार कर गया। घुड़सवार घोड़े से उतरा, शाहजादी के हाथों से पानी का प्याला पिया और उसकी उंगली से अंगूठी उतारकर घोड़े पर बैठा नीचे उतर आया।"

छोटा भाई फिर बड़े भाइयों को मनाने लगा :

"आप लोगों ने कितना मजेदार तमाशा देखा, मुझे भी कम-से-कम एक दिन के लिए तो छोड़ देते, ताकि मैं भी एक बार ऐसा मजेदार नजारा देख लेता।"

भाई कहने लगे कि बादशाह सब लोगों को दावत दे चुका है और अब और कोई तमाशा नहीं होगा। तीनों भाई पहले की तरह ढोर चराने लगे। एक दिन उन्होंने यह एलान सुना :

"जिस नौजवान ने शाहजादी के हाथों से पानी का प्याला पिया और उसकी उंगली से अंगूठी उतारी है, वह फ़ौरन महल में बादशाह के सामने हाजिर हो जाये। बादशाह सलामत अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर देंगे और बहुत शानदार दावत देंगे।"

पर महल में कोई नहीं आया। तब बादशाह ने फिर एक बहुत बड़ी दावत दी और एलान किया :

"दावत में हर आनेवाला जब हाथ धोयेगा, तो मेरे आदमी उसके हाथों को बड़े ध्यान से देखेंगे और शाहजादी की अंगूठी नजर आते ही मुझे ख़बर करेंगे।"

बादशाह ने तीस दिनों तक अपनी प्रजा को खूब शानदार दावत दी और उन्हें भरपेट खिलाया और पिलाया। जब लोग हाथ धोते, तो बादशाह के आदमी बड़े ध्यान से उनके हाथ देखते, पर शाहज़ादी की अंगूठी पहने कोई आदमी वहाँ नहीं आया।

"और कोई बाक़ी तो नहीं रह गया?" बादशाह ने पूछा।

"बचे हैं तो सिर्फ़ स्तेपी के चरवाहे," वज़ीर ने जवाब दिया।

बादशाह ने फ़ौरन उन्हें भी बुलाकर खिलाने-पिलाने का हुक्म दिया। एक वज़ीर चरवाहों को बुलाने गया। और जब वे हाथ धोकर महल में घुसने लगे, तो बादशाह के आदमी ने छोटे भाई की उंगली में शाहज़ादी की अंगूठी पहचान ली। दोनों बड़े भाई आश्चर्यचकित रह गये :

"शाहज़ादी की अंगूठी हमारे छोटे भाई के पास कैसे पहुँची?"

तब छोटे भाई ने उन तीनों रातों का क़िस्सा सुनाया, जो उसने अपने पिता की क़ब्र के पास गुज़ारी थीं। बड़े भाई बहुत पछताये और कहने लगे कि अपने पिता की आख़िरी इच्छा पर कोई ध्यान न देने के कारण हमें यह सज़ा मिल रही है। उन्हें बस इतने पर ही संतोष करना पड़ा कि उन्होंने अपने छोटे भाई की शादी की दावत खायी।

चालीस दिनों तक दावत चलती रही और उसके बाद बादशाह ने अपनी बेटी की शादी उस चरवाहे के साथ कर दी।

एक महीना बीता कि अचानक बादशाह मर गया। प्रजा ने बादशाह के दामाद को अपना

बादशाह बना दिया। दोनों बड़े भाई यह देखकर फिर पछताने लगे :

"हमारी तो क़िस्मत फूटी है। हर उस आदमी का भी यही हाल होगा जो अपने पिता की अंतिम इच्छा पूरी नहीं करेगा।"

छोटे भाई की सारी आकांक्षाएं पूरी हुईं और वह सुख-चैन से राज करता रहा।

सुनहले देश का महावीर

किसी समय एक बूढ़ा रहता था। उसका इकलौता बेटा दस साल का था। बूढ़ा बहुत ग़रीब था, अधपेट खाकर और कपड़ों के नाम पर चिथड़े पहनकर गुज़ारा करता था। एक बार वह अपने बेटे को लेकर अपने धनवान पड़ोसी सलीमबाय के पास आया और रोता हुआ बोला :

"ज़मींदार साहब, हमारी मदद कीजिये। मैं और मेरा बेटा, आप जो भी हुक्म दें, करने को तैयार हैं। हम पर रहम कीजिये।"

सलीमबाय ने बूढ़े को सिर से पैर तक देखकर जवाब दिया :

"मेरे पास मुफ़्त का खाना नहीं है। तू पहले अपना पिछला क़र्ज़ चुका। अगर तू आजकल में मर गया, तो मेरा पैसा भी मारा जायेगा। जहाँ तक तेरे बेटे का सवाल है, तो वह किसी काम का नहीं है।"

बूढ़ा भौचक्का रह गया। उसने कांपते हुए पूछा :

"ज़मींदार साहब, मैंने आपसे कौन-सा क़र्ज़ लिया था? आपने तो मुझे कभी कुछ नहीं दिया!"

सलीमबाय बूढ़े को खा जानेवाली नजर से देखते हुए बोला :

"बकवास बंद कर, धोखेबाज बूढ़े! तू मुझे धोखा देना चाहता है?" सलीमबाय चिल्ला उठा और बूढ़े को कोड़े मारने लगा। बूढ़ा मार न सह पाया और ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी आँखों से आंसुओं की धारें फूट निकलीं। छोटा-सा रुस्तम कुछ समझ न पाया और अपने पिता से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगा। थोड़ी देर बाद होश आने पर बूढ़ा गिड़गिड़ाता हुआ बोला :

"अगर मैं भूल गया हूँ, तो मुझे समझाइये कि मैंने कब और कितना क़र्ज़ आपसे लिया था और अब मुझे कितना चुकाना है।"

रुस्तम अपने पिता की छाती से चिपटा पड़ा था। सलीमबाय ने लड़के को खींचकर एक ओर धक्का दे दिया और बूढ़े का गरेबान पकड़कर कड़े स्वर में बोला : "कान खोलकर सुन

ले, धोखेबाज़ बूढ़े! जब तेरी पत्नी मरी थी, तो लाश नहलानेवाली को पैसे किसने दिये थे? किसकी गाड़ी में तू बुज़ुर्गों को क़ब्रिस्तान ले गया था? चेहलुम के दिन सैकड़ों आदमियों को पुलाव किसने खिलाया था? तू भूल गया क्या कि तू और तेरा बेटा पुलाव पर कैसे टूट पड़े थे?"

लालची सलीमबाय के सफ़ेद झूठ पर बूढ़े को बहुत गुस्सा आया।

पर अपने बुढ़ापे और भूख के कारण वह कुछ भी न कर पाया। उसमें तो उठकर खड़े होने की ताक़त भी नहीं रह गयी थी। इसलिए वह फिर गिड़गिड़ाने लगा:

"ज़मींदार साहब, आपने ही तो कहा था, 'चेहलुम के दिन पुलाव मैं बनवाऊंगा, तू और तेरा बेटा भी आकर खा लेना।' हमारे ऊपर रहम कीजिये और मेरे बेटे रुस्तमजान को मत सताइये ..."

बूढ़ा यह कह ही रहा था कि वहाँ का इमाम दरवाज़ा खोलकर अंदर आया। सलीमबाय इमाम की ओर देखकर बोला:

"अगर तुझको विश्वास न हो तो, इनसे भी पूछकर देख ले।"

इमाम ने जी-हुज़ूरी के स्वर में सलीमबाय से पूछा:

"क्या मामला है? आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं?"

इस पर सलीमबाय बोला:

"पिछले साल ईद के मौक़े पर हमने मुहल्ले को जो पुलाव खिलाया था, उस दिन आपने इस बूढ़े की पत्नी के लिए दुआ मांगी थी या नहीं?"

इमाम सलीमबाय की बात का असली मतलब समझ गया और बड़े आत्मविश्वास के साथ बोला:

"बिलकुल ऐसा ही हुआ था। हमने इस दावत में बूढ़े की पत्नी के लिए फ़ातिहा पढ़ा था।"

सलीमबाय बूढ़े को घूरते हुए कहने लगा:

"सुना तूने? एक पड़ोसी की तरह मैंने तुझ पर रहम खाकर अपना पैसा खर्च किया, एक नेक काम किया, और तू, धोखेबाज़ बूढ़े, इस सबसे इनकार करता है!"

इमाम भी सलीमबाय की हां में हां मिलाते हुए नसीहत देने लगा:

"तुम ऐसी गुस्ताख़ी कभी मत करना, तुम्हें तो सलीमबाय का शुक्रगुज़ार होना चाहिए! चेहलुम के पुलाव का सारा ख़र्चा तुम्हें अपने ऊपर ले लेना चाहिए।"

बूढ़ा रो पड़ा।

"हम पर क्या पहले ही कम मुसीबत पड़ी थी! हमें रोटी का एक टुकड़ा तक तो मिलता नहीं, कभी पेट भर नहीं पाते और इस पर यह इतना बड़ा क़र्ज़ हमारे सिर पर लद गया," बूढ़ा बोला और रोते हुए रुस्तम को सीने से चिपटा लिया। "मेरे ग़रीब बेटे, मैं बूढ़ा हो गया, मेरी ज़िंदगी तो कट गयी, पर अब तेरा क्या होगा ..."

इमाम बूढ़े को घूरते हुए बोला:

"अरे बेवक़ूफ़, रोता क्यों है? ज़मींदार साहब तुझसे यह तो नहीं कह रहे हैं कि तू इसी वक़्त क़र्ज़ चुका। जब तेरे पास पैसा हो जाये, तब दे देना। बस इनकार मत करना। कुछ दिनों में तेरा बेटा बड़ा हो जायेगा, कोई काम सीखकर कमाने लगेगा, तब तू क़र्ज़ चुका देना।"

क़र्ज़ चुकाने के लिए इतना लंबा समय मिलने पर बूढ़ा आश्चर्यचकित हो गया, पर "हां" कहने के अलावा उसके पास कोई चारा न रहा।

इमाम ने बूढ़े की ओर देखकर कहा :

"पर 'हां' कहना ही काफ़ी नहीं होगा। पहले सलीमबाय से सुन ले कि तुझे उनका कितना क़र्ज़ चुकाना है और उसे अच्छी तरह याद कर ले।"

बूढ़ा पसोपेश में पड़ा चुपचाप सुनता रहा।

इमाम ने कागज़ और क़लम लेकर कुछ लिखा और शिष्टतापूर्वक ज़मींदार से बोला :

"जनाब, बूढ़े ने आपसे कितना क़र्ज़ लिया था?"

"पन्द्रह अशरफ़ियां," सलीमबाय ने जवाब दिया।

बूढ़े ने अपने जीवन में कभी एक अशरफ़ी को हाथ से छुआ तक नहीं था। इसलिए "पन्द्रह अशरफ़ियां" सुनकर ही बेचारा घबरा उठा। इमाम ने पन्द्रह अशरफ़ियों का क़र्ज़-पत्र बनाकर बूढ़े से अंगूठा लगाने को कहा। बूढ़ा "हां" पहले ही कह चुका था, इसलिए उसे क़र्ज़-पत्र पर अंगूठा लगाना ही पड़ा। इमाम के ज़ोर देने पर रुस्तम को भी यही करना पड़ा।

"अब तुम लोग जा सकते हो। तेरा बेटा बड़ा होकर कमाने लगेगा, तो चुका देगा," इमाम ने कटाक्षपूर्ण स्वर में कहा।

बूढ़ा और उसका बेटा सलीमबाय से रोटी का एक टुकड़ा मांगने आये थे, पर वहाँ से वे लौटे पन्द्रह अशरफ़ियों के क़र्ज़दार होकर।

घर की ओर जाते समय बूढ़े को उसका पड़ोसी सिद्दीक़ मोची मिला। सिद्दीक़ को अपनी मुसीबत का हाल सुनाकर बूढ़े ने पूछा :

"अब मैं किससे इंसाफ़ मांगूं?"

पड़ोसी एक गहरी सांस लेकर निराशापूर्ण स्वर में बोला :

"तुम जाल में फंस गये हो, अब कुछ नहीं किया जा सकता। इस शहर का हाकिम इस नीच सलीमबाय का दामाद है। अब तो बस एक ही रास्ता रह गया है कि तुम जो कुछ हो गया है, उसे मान लो!"

बूढ़ा अपने बेटे रुस्तम को सीने से चिपकाये रात भर सोचता रहा। तरह-तरह के विचार बूढ़े के दिमाग़ में आते रहे और इसके साथ-साथ भूखे बेटे की सिसकियां भी सुनाई देती रहीं। इतना दुःख बूढ़े के बर्दाश्त के बाहर था।

आधी रात हो चुकी थी, सब मीठी नींद सो रहे थे, पर बेचारा बूढ़ा आहें भरता हुआ तड़प रहा था। उसी समय फाटक ठेलकर तीन आदमी बूढ़े के सिरहाने आ खड़े हुए। उनमें से एक बूढ़े के लात मारकर बोला : "उठ, धोखेबाज!" बूढ़ा उतना डर से नहीं चौंका, जितना

इब्र "बिनबुलाये मेहमानों" के अप्रत्याशित व्यवहार से और कह उठा:

"आप लोगों को मुझसे क्या चाहिए?"

"घर ख़ाली कर! इसी वक़्त!" वह आदमी चिल्लाकर बोला।

बूढ़े को अब भी अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ और वह घबराकर बोला:

"आपको शायद ग़लतफ़हमी हो गयी है, यह घर तो मेरा है।"

तब दूसरा "बिनबुलाया मेहमान" बड़े कड़े स्वर में बोला:

"तू हमें धोखा नहीं दे सकता। हम शहर के हाकिम के नौकर हैं। तूने एक साल पहले यह मकान सलीमबाय को पन्द्रह अशरफ़ियों में बेचकर रक़म नक़द ले ली थी। ज़मींदार नेक हैं और अभी तक यही सोचकर इंतज़ार कर रहे थे कि तू मकान बिना कहे अपने आप ख़ाली कर देगा, पर तू धोखेबाज़ निकला।"

बूढ़े ने अपने सिर पर एक नयी मुसीबत आती महसूस करके रोते हुए कहा:

"मैंने मकान कभी नहीं बेचा और न ही बेचूंगा।" इस पर तीसरे आदमी ने एक काग़ज़ दिखाकर द्वेषपूर्ण स्वर में कहा:

"तू कहता है 'मैंने मकान नहीं बेचा'? और यह रसीद किस बात की है? इस पर तेरे और तेरे बेटे के अंगूठों के निशान हैं। हाकिम ने बहुत नाराज़ होकर कहा है, 'अगर वे लोग ख़ुद न जाना चाहें और ज़िद करें, तो उन्हें घसीटकर मकान से बाहर निकाल देना और काल-कोठरी में क़ैद कर देना'!"

यह हुक्म सुनकर बूढ़े के पैरों तले ज़मीन खिसक गयी। अपने बेटे रुस्तम को सीने से चिपटाये हुए उसे वह घर छोड़ देना पड़ा, जिसमें वह पैदा हुआ, इतने सालों से रहा और बूढ़ा भी हुआ था। बूढ़े का रोना-धोना सुनकर उसका पड़ोसी सिद्दीक़ और उसका सारा परिवार भी जाग गया। वे भागे-भागे बाहर आये। बूढ़े पर आयी नयी मुसीबत को देखकर उनकी आंखों में आंसू भर आये और अनायास ही उनके मुंह से एक ठंडी सांस निकल गयी। सिद्दीक़ की पत्नी ने बूढ़े को मक्का की एक रोटी दी और बोली: "अल्लाह आपको हर समय रोटी देता रहे।" बूढ़ा रुस्तम को पीठ पर लादकर पहाड़ों की ओर चल दिया।

बूढ़ा काफ़ी समय तक पहाड़ी रास्तों में भटकता रहा... चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ था, जो कभी-कभी रुस्तम के सवाल से टूट जाता था: "पिताजी, हम कहाँ जा रहे हैं?" बूढ़ा अपने बेटे को जवाब में कुछ नहीं कह पाता, क्योंकि उसे स्वयं मालूम नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है। थका-हारा वह आर्चा के झुरमुट में रुका। आर्चा के एक छोटे पेड़ के तने का सहारा लेकर वह बैठ गया और आंखें बंद करके कुछ सोचने लगा। जब उसने आंखें खोलीं, तो हक्का-बक्का रह गया – उसके सामने की पहाड़ी पर एक बहुत बड़ा भालू अपने बच्चे के साथ खड़ा था और उस पर हमला करने ही वाला था। दोनों भालू उनकी तरफ़ आने लगे। बेचारा बूढ़ा सांस रोककर पत्थर-सा बना वहीं खड़ा रह गया। उसकी ताक़त बिलकुल जवाब दे गयी थी और बचने का भी कोई रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। रुस्तम को सीने से ज़ोर से चिपटाकर बूढ़ा रो पड़ा। रुस्तम अपनी ओर बढ़ते हुए ख़ूंख्वार जानवरों को देखकर

डर के मारे चीख उठा। रुस्तम की चीख सुनकर बूढ़े ने आंखें मीचे हुए ही सोचा कि अब उसका बेटा बच नहीं पायेगा और बेहोश हो गया। पर भालू धीरे-से उनके पास पहुँचा, रुस्तम को बूढ़े की बाँहों में से सावधानीपूर्वक निकालकर उसका हाथ अपने बच्चे के हाथ में थमा दिया और बूढ़े को उठाकर अपनी मांद में ले आया।

सुबह सूरज निकला, बूढ़े ने आंखें खोलीं, तो देखा – उसका बेटा उसकी बाँहों में नहीं था। उसने घबराकर चारों ओर देखा – रुस्तम भालू के बच्चे के साथ एक कोने में बैठा शहद खा रहा था। बूढ़ा भौचक्का रह गया। उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। यह जानने के लिए कि वह जो देख रहा है वह सपना है या सच, उसने रुस्तम को आवाज़ दी। रुस्तम काफ़ी देर से बेहोश पड़े हुए अपने पिता की आवाज़ सुनकर फ़ौरन भागकर उसके पास पहुँचा और बोला :

"पिताजी, उठिये, थोड़ा शहद खाइये।"

"तुझे इससे डर नहीं लगता ?" बूढ़े ने भालू के बच्चे की ओर इशारा किया।

"यह मेरा दोस्त बन गया है," बेटा बोला। "इसकी माँ हम दोनों को यहाँ ले आयी है। आपको लिटाकर वह मुझसे कह गयी है : 'तुम लोग शोर मत करना, यह जितनी देर सोयें, सोने देना। मेरा बेटा तुम्हारा दोस्त है, तुम दोनों शहद खाओ, मैं अभी वापस आती हूँ'।"

बूढ़ा आश्चर्यचकित होकर रुस्तम को देखता रहा। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह रुस्तम की बात पर विश्वास करे या नहीं। इसी बीच स्वयं रीछनी भी आ पहुँची। उसके एक हाथ में रोटियाँ थीं और दूसरे में दूध से भरा तूंबा। रीछनी को देखते ही बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और उसने झुककर सलाम किया। रीछनी दूध और रोटी ज़मीन पर रखकर बूढ़े से बोली :

"बैठिये, आप तकलीफ़ मत कीजिये। मैं आपके लिए दूध और रोटी लायी हूँ। पहले खा लीजिये, फिर बातें करेंगे।"

रीछनी का अपने प्रति इतना प्रेमपूर्ण व्यवहार देखकर बूढ़े को बड़ा आश्चर्य हुआ। रीछनी ने बूढ़े से खाने के लिए फिर आग्रह किया और बोली :

"आप मेरे बारे में कुछ ग़लत न सोचिये। यहां के बहुत-से गड़रिये मेरे दोस्त हैं। वे लोग हाकिमों और ज़मींदारों की भेड़ें चराते हैं। यह दूध और रोटियां मैं उन्हीं से मांगकर लायी हूं।"

बूढ़े ने एक ठंडी सांस लेकर रीछनी को अपना दुखड़ा सुनाया। उसे सुनकर रीछनी बोली :

"आप अब मुझे अपनी बेटी समझिये और मेरे बच्चे को अपने बेटे का दोस्त मानिये। हम लोग यहां मिल-जुलकर रहेंगे।"

और वास्तव में वे सब चैन से वहाँ रहने लगे। बूढ़ा दिन में पहाड़ों में लकड़ी काटता और रीछनी रात को उसे उठाकर शहर के पास रख आती, जहाँ बूढ़ा उसे बेचता। इस तरह वे लोग अपनी जीविका चलाते रहे। रुस्तम रीछ के बच्चे के साथ खेलता-कूदता बड़ा होने लगा। गड़रियों ने एक बार रुस्तम को रीछ के बच्चे के साथ कुश्ती लड़ते हुए देखा और उससे बहुत

प्रभावित हुए। पाँच-छः साल में ही रुस्तम की ख्याति चारों ओर फैल गयी। कोई ऐसा पहलवान नहीं रहा था, जो रुस्तम का मुक़ाबला कर सके। उसकी असीम शक्ति और फुर्ती के कारण गड़रियों ने रुस्तम का नाम रीछपछाड़ पहलवान रख दिया था।

एक बार जब रुस्तम और उसके पिता शहर में लकड़ी बेचकर लौट रहे थे, तो रास्ते में उन्हें अचानक बानात का चोगा पहने हुए और चितकबरे घोड़े पर अकड़कर बैठा एक आदमी मिला, जो चाबुक घुमा रहा था। उसकी ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने रुस्तम से कहा :

"यही वह सलीमबाय है, जिसने हमारा घर छीनकर हमें बाहर निकाल दिया था।"

सलीमबाय ज़रूरत से ज़्यादा खुश नज़र आ रहा था, बड़ी शान से मूँछों पर ताव देता हुआ मुस्करा रहा था, और उसके चारों ओर भीड़ जमा थी। लोग सब कुछ भूलकर किसी चीज़ को देखे जा रहे थे।

अचानक रुस्तम को कराहने की आवाज़ सुनाई दी, जो जानी-पहचानी-सी लगी। रुस्तम भागकर भीड़ में घुसा, तो उसने देखा कि उसके भाई रीछ के बच्चे को शिकारियों ने पकड़कर ऊँट पर लाद रखा है। लोगों की बातों से मालूम पड़ा कि सलीमबाय अपने आदमियों के साथ जंगल में से रीछ के बच्चे को पकड़ लाया है और अब हाकिम को भेंट करना चाहता है। रुस्तम को बहुत गुस्सा आया। वह लपककर रीछ के बच्चे के पास पहुँचा, एक पल में ही उसने सारी रस्सियाँ तोड़ फेंकीं और अपने दोस्त को गले लगा लिया। सलीमबाय के शिकारी रुस्तम पर टूट पड़े, पर जो भी शिकारी उसके नज़दीक आया, उसे उसने सिर पर उठाया और घुमाकर दूर फेंक दिया। जिसने भी एक बार रुस्तम की ताक़त आजमा ली, उसने दुबारा उसके पास फटकने का ख़तरा मोल नहीं लिया। रुस्तम सलीमबाय की ओर लपका पर वह सिर पर पांव रखकर भाग निकला। रुस्तम रीछ के बच्चे को गोदी में उठाकर जंगल की ओर चला गया। जिन लोगों ने रुस्तम की असाधारण शक्ति, फुर्ती और बहादुरी देखी थी, वे उसकी तारीफ़ करने लगे। थोड़े दिनों में ही रुस्तम की ख्याति सारे शहर में फैल गयी।

सलीमबाय को रात को भी कंपकंपी आती थी और वह डर के मारे घर से बाहर ही न निकलता था। हाकिम ने गुस्से में आकर हुक्म जारी किया : "किसी भी क़ीमत पर उस पहलवान को पकड़कर मेरे सामने हाज़िर किया जाये, जिसने शिकारियों से रीछ के बच्चे को छीन लिया था।" पर किसी की भी हिम्मत नहीं हुई कि जाकर रुस्तम को पकड़े और अगर किसी को ज़बरदस्ती भेजा भी जाता, तो वह बिना कुछ किये वापस आकर कहता, "मुझे वह मिला ही नहीं।"

ग़रीब और भूखे लोग, जिन्हें शहर में खाने को कुछ न मिल पाता था, रुस्तम की शरण में आकर अपने को सुरक्षित महसूस करने लगे। वे सब रुस्तम के साथ जंगल में लकड़ी काटकर शहर में बेचकर गुज़ारा करने लगे। सलीमबाय को किसी ने बताया कि रुस्तम उसी बूढ़े का बेटा है, जिसे उसने उसका घर छीनकर निकाल दिया था। उन्हें यह भी बताया गया कि अब वे आज़ादी से पहाड़ों में रह रहे हैं और ज़मींदारों के अत्याचारों से तंग आकर शहर से भागने-वाले ग़रीबों को शरण और मदद दे रहे हैं। सलीमबाय यह सुनकर भड़क उठा और उसने

फ़ौरन शहर के हाकिम को सारी बात बताई। हाकिम ने एक सौ सैनिकों के साथ आर्चा के जंगल पर चढ़ाई कर दी। रास्ते में उसने अपने सैनिकों से कहा :

"जो भी रुस्तम को ज़िंदा पकड़कर लायेगा, उसके साथ मैं अपनी बेटी की शादी कर दूंगा और उसे सौ सैनिकों का अफ़सर बना दूंगा।"

हाकिम के सैनिकों के घोड़े हवा से बातें करते हुए दौड़ने लगे। अंत में वे आर्चा के जंगल के पास एक छप्पर में पहुँचे।

हाकिम बड़े घमण्ड के साथ अपने सैनिकों से बोला :

"हम लोग इस छप्पर में छिप जाते हैं, नहीं तो हमारे आने की ख़बर पाकर रुस्तम पहाड़ों में भाग जायेगा। हम लोग रात को हमला करके उसे पकड़ लेंगे।"

बूढ़ा अपने साथियों के साथ शहर में लकड़ी बेचने गया हुआ था। रुस्तम अपने दोस्त रीछ के बच्चे के साथ एक छोटी पहाड़ी पर सो रहा था। शीतल पुरवैया रुस्तम के चेहरे को छूते हुए बह रही थी और रीछ के बच्चे की मुलायम खाल का स्पर्श भी उसे मधुर लग रहा था। उसकी नींद खुली, तो उसने देखा – रीछनी उसे उठाकर कहीं ले जा रही है। रुस्तम ने उससे पूछा :

"क्या हुआ ?"

"तुझ पर हमला करके पकड़ना चाहते हैं। शहर का हाकिम अपने एक सौ सिपाहियों के साथ यहाँ आया हुआ है।"

एक सुरक्षित जगह में पहुँचकर रीछनी ने रुस्तम को ज़मीन पर उतार दिया।

"आप मुझे यहाँ क्यों लायी हैं?" रुस्तम ने पूछा।

"मैं तुझे बचाना चाहती हूँ," उसने जवाब दिया।

रुस्तम ने विरोध किया :

"आख़िर हम कब तक बेकार ही उन लोगों से डरकर भागते रहेंगे? चलकर उनका मुक़ाबला करना चाहिए!"

रीछनी रुस्तम को समझाने लगी :

"वे लोग बहुत ज़्यादा हैं और घोड़ों पर सवार हैं और हमारे दोस्त इस वक़्त शहर में हैं।"

उसी समय रुस्तम का दोस्त रीछ का बच्चा इधर-उधर हिलता-डोलता उनके पास पहुँचा। रुस्तम उसे देखकर बहुत ख़ुश हुआ।

रीछनी ने फिर रुस्तम को भागने के लिए मनाया, पर बहादुर नहीं माना। तब उसने पूछा :

"आख़िर तू क्या करना चाहता है?"

"हम ख़ुद ही दुश्मन पर हमला करेंगे!" रुस्तम बोला। रीछनी के बच्चे ने अपना मुंह ऊंचा उठाकर दिखाया कि वह कितनी बहादुरी से दुश्मन से जूझेगा और रुस्तम की कमर में बाहें डालकर कहने लगा :

"अरे, ये सैनिक हमारा क्या मुक़ाबला करेंगे, हम इन्हें अच्छी तरह मजा चखायेंगे!"

उसी समय उन्होंने पहाड़ की ढलान पर घुड़सवार सैनिकों को एड़ लगाते और तलवारें घुमाते हुए देखा। दुश्मन निकट आ रहे थे। अब रुस्तम को हाकिम, उसके सैनिकों और घोड़ों की आवाज़ें भी सुनाई देने लगीं। थोड़ी देर बाद सैनिक घोड़ों से उतरकर, पत्थरों के पीछे छिपते हुए रुस्तम की गुफ़ा की ओर बढ़ने लगे। अब और देर करना ठीक नहीं था। रुस्तम, रीछनी और उसके बच्चे ने बड़े-बड़े पत्थर उठाकर दुश्मनों पर फेंकने शुरू कर दिये। जमकर लड़ाई होने लगी। दुश्मनों पर पत्थरों की बौछार हो रही थी। कुछ दुश्मनों के सिर कुचल गये, कुछ की रीढ़ की हड्डियां टूट गयीं और बहुत-से कलाबाजियाँ खाते हुए नीचे तक लुढ़कते गये। रुस्तम और रीछ का बच्चा दोनों बहुत खुश हुए, क्योंकि दुश्मनों की संख्या लगातार कम होती जा रही थी। मगर रुस्तम का लगाया पत्थरों का ढेर खत्म हो गया। उसी क्षण दोस्तों ने देखा कि रीछनी भी कहीं ग़ायब हो गयी है। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। इस बीच हाकिम और उसके सैनिकों ने उन पर फिर से हमला कर दिया। रुस्तम सोंटा लेकर दुश्मनों पर टूट पड़ना चाहता था, पर उसी समय रीछनी आर्चा का मोटा तना उठाकर ले आयी। वह तने को घुमाते हुए आगे बढ़ी। तने की घातक चोटों से दुश्मन एक के बाद एक मरकर गिरने लगे। बचे हुए सैनिक और हाकिम सिर पर पैर रखकर भागे। दोस्तों के हाथ काफ़ी चीज़ें लगीं। हाकिम की लज्जाजनक हार और लड़ाई के मैदान से पीठ दिखाकर भागने की ख़बर लोगों को उसी दिन मालूम पड़ गयी। हाकिम कायरतापूर्वक अपने क़िले में जा छिपा। कुछ दिनों बाद हाकिम ने एलान कराया कि रुस्तम को ज़िंदा पकड़कर उसके महल में लानेवाले आदमी को वह उस आदमी के वज़न के बराबर सोना इनाम में देगा। इमाम की बूढ़ी मां, जो पोपली, गंजी और कानी थी, इनाम की लालच में आकर हाकिम के पास पहुँची और बोली:

"हाकिम, मैं इस छोकरे रुस्तम को पकड़कर तुम्हारे सामने हाज़िर कर सकती हूँ।"

"अगर तुम मेरा यह काम कर दो, तो मैं तुम्हारी सारी इच्छाएं पूरी कर दूंगा," हाकिम बोला।

बुढ़िया ने कहा:

"इस काम के लिए तुम मुझे पन्द्रह ऐसे वफ़ादार आदमी दो, जिनके चेहरे पर दाढ़ी या मूंछ का एक भी बाल न हो। जब मैं उस छोकरे को पकड़कर तुम्हारे सामने हाज़िर कर दूंगी, उस दिन से तुम बिना मेरी सलाह के हुकूमत का कोई काम नहीं करोगे।"

हाकिम ने बुढ़िया की शर्त मान ली। और दूसरे दिन ही बुढ़िया की अगुआई में पन्द्रह बिना दाढ़ी-मूंछवाले आदमी औरतों के भेष में पहाड़ों की ओर चल पड़े। बुढ़िया के हुक्म के अनुसार वे लोग रास्ते में आपस में बुरी तरह लड़ते-झगड़ते और मारपीट करते हुए चलने लगे। ख़ून में लथपथ और सारे शरीर पर खरोंचें और चोटों के निशान लिये हुए ये "औरतें" और "लड़कियाँ" आर्चा के जंगल में पहुँचीं। उनकी कराहने की दर्दभरी आवाज़ें सुनकर रुस्तम अपने सारे लकड़हारे दोस्तों के साथ उनके पास भागा आया और पूछने लगा कि उनकी यह

हालत किसने की। बुढ़िया अपने कपड़े फाड़ती हुई रुस्तम के पैरों से ऐसे लिपटकर रोने लगी, जैसे उसके ऊपर कोई बहुत बड़ी मुसीबत आयी हो। वह पत्थर पर सिर पीट-पीटकर रो-चिल्ला रही थी :

"अगर हमें रुस्तम नहीं मिला, तो वह ज़ालिम हम सबको मार डालेगा, बरबाद कर देगा! रुस्तम मिल जाये, तो वह हमारा दुखड़ा सुनेगा, सहानुभूति और प्यार दिखायेगा और हमें मरने से ज़रूर बचा लेगा। वह अगर एक बार भी दिखाई दे जाये, तो हम अपना दुखड़ा उसे सुनाकर जी हल्का कर लें!"

"आप मत रोइये। मैं ही रुस्तम हूँ। क्या हुआ? मुझे बताइये," रुस्तम बोला। उसी क्षण सारी पन्द्रह "औरतें" रुस्तम के पैरों में गिरकर रोने-चिल्लाने लगीं। बुढ़िया रो-रोकर कहने लगी :

"हमारी आंखों के तारे, रुस्तमजान, हमें इस ज़ालिम जल्लाद से बचा ले। तुझसे हारकर यह ज़ालिम अब हम लोगों से बदला ले रहा है। इस शहर के हाकिम ने, उसका सत्यनाश हो, हमें, हमारे पतियों और बच्चों को एक जगह इकट्ठे होने का हुक्म दिया और उसके बाद हम सबको डंडों से बुरी तरह पीटकर हमारे पतियों को काल-कोठरी में क़ैद कर दिया और बच्चों को पिंजरों में बन्द करके तपती धूप में लटका दिया। उसने हमारे घर छीन लिये और हम सबको स्तेपी में भगा दिया। अब हम क्या करें? किससे मदद मांगें?"

"बहनो, मत रोओ, धीरज रखो। तुम लोग हमारे साथ रहो। हम तुम्हारे पतियों और बच्चों को बचाने का कोई रास्ता ढूंढ़ेंगे।"

रुस्तम और उसके दोस्तों ने "औरतों" को दिलासा देकर खाना खिलाया और उनके रहने का इंतज़ाम किया। वे "औरतें" दिन में रुस्तम और उसके मित्रों के साथ लकड़ियां काटतीं और रात को अपनी-अपनी जगह पर जाकर सो जातीं।

एक बार जब रीछनी और उसका बच्चा कहीं दूर गये हुए थे और रुस्तम नींद न आने के कारण अकेला बैठा कुछ सोच रहा था, तो सिद्दीक़ मोची उसके पास आकर बैठ गया और कहने लगा :

"लगता है तुम अकेले बैठे ऊब गये हो। तुम चाहो, तो तुम्हें एक नीति-कथा सुनाऊँ?"

"बड़ी ख़ुशी से सुनूंगा," रुस्तम ने जवाब दिया।

सिद्दीक़ नीति-कथा सुनाने लगा :

"एक मोची था। वह पुराने जूतों की मरम्मत करता था और किसी तरह अपना पेट भरने लायक़ पैसा कमा लेता था। उसकी समझदार और सुंदर बेटी उसके जीवन का एकमात्र सुख और सहारा थी। हालांकि मोची बहुत ग़रीब था, पर फिर भी बहुत-से अमीर और ज़मींदार उसकी बेटी के साथ अपनी शादी तय करने के लिए अगुए भेजते रहते थे। मोची ने उनमें से किसी का भी प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया, क्योंकि वह जानता था कि उसकी बेटी को पड़ोसी के सुंदर और चतुर लड़के से प्यार है, जिसके साथ खेलती-कूदती वह बड़ी हुई थी। शहर के हाकिमों के ज़ुल्मों से तंग आकर बेचारे लड़के और उसके परिवार के लोगों को

एक दिन अपना घर छोड़ देना पड़ा। पिता और पुत्र ने पहाड़ी जंगल में शरण ली। समय बीतता रहा और वह लड़का सुंदर और शक्तिशाली युवक बन गया। उत्पीड़ित और ग़रीब लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण और प्रेमपूर्ण व्यवहार के कारण पहाड़ों के आस-पास रहनेवाले लोग युवक का बहुत सम्मान करते थे। वह असाधारण रूप से शक्तिशाली और साहसी था। उस वीर से घृणा करनेवाले दुश्मनों की उसके पास फटकने की भी हिम्मत नहीं होती थी। मोची और उसकी बेटी मन-ही-मन इस सज्जन और भले, बहादुर नौजवान पर गर्व करते थे। वे बड़ी उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा करते रहे थे, जब वह उनसे मिलने आयेगा। पर कई साल बीत गये और वह बहादुर उनसे एक बार भी मिलने नहीं आया।"

रुस्तम मोची की कहानी सुनकर दिल से कह उठा:

"उस बहादुर ने अच्छा नहीं किया।"

सिद्दीक़ मोची आगे सुनाने लगा:

"मोची की बेटी की ख़ूबसूरती के बारे में शहर के हाकिम ने भी सुना। अपनी चार पत्नियां होते हुए भी उसने मोची की बेटी को अपनी पाँचवीं पत्नी बनाने के इरादे से क़ीमती तोहफ़ों के साथ शादी का संदेश भेजा, पर मोची ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया। तब हाकिम के हुक्म से मोची के हाथ-पैर बाँधकर पानी में फेंक दिया गया, उसका घर जला दिया गया और उसकी बेटी को ज़बरदस्ती वहाँ से हाकिम के घर ले जाया गया। पिता को मछुओं ने बचा लिया, पर बेचारी बेटी, तरह-तरह की यंत्रणाएँ सहते हुए भी, उस नौजवान की प्रतीक्षा करती रही। कुछ समय मछुओं के साथ रहने के बाद उस लड़की का पिता उस नौजवान को लड़की का हाल सुनाने के लिए पहाड़ पर पहुँचा।"

रुस्तम की मनोदशा देखकर सिद्दीक़ मोची अपनी कहानी आगे सुनाना चाहता था, पर अचानक हाकिम की सतायी हुई "औरतों" में से एक दौड़ी आयी:

"रुस्तमजान, आपकी धर्म की मां मर रही है। वह आपको देखने के लिए तरस रही है, आप फ़ौरन चलिए।"

रुस्तम उठकर बुढ़िया के पास भागा। सिद्दीक़ मोची गंभीर मुद्रा में अपनी राह चल दिया। जब रुस्तम बुढ़िया के पास पहुँचा, तो वह अटक-अटककर सांस ले रही थी, जैसे सचमुच मर रही हो। रुस्तम उसके ऊपर झुका ही था कि दूसरी "औरत" बोली:

"मां, अब आप चैन से मर सकेंगी, आपका बहादुर बेटा आ गया है।"

'मरणासन्न' बुढ़िया ने हाथ उठाकर इशारा किया जैसे अपने आख़िरी समय में वह रुस्तम को गले लगाकर चूमना चाहती हो। रुस्तम का सिर झुकते ही बुढ़िया ने कोई ज़हरीली दवाई उसकी नाक से लगा दी। रुस्तम उसी वक़्त बेहोश होकर गिर पड़ा।

बुढ़िया फ़ौरन उठ खड़ी हुई और हुक्म देने लगी:

"इसको जल्दी से बांध दो!"

"औरतों" ने फ़ौरन रुस्तम को रस्सियों से कसकर बांध दिया और चारों ओर नज़रें दौड़ाकर पहले से ही तैयार रखी हुई एक डोली पर उसे डालकर शहर की ओर भाग निकले।

किसी महल में लाकर उन लोगों ने उसे देहरी के बाहर ही डाल दिया। उस घर में शानदार क़ालीनों और मख़मल की मुलायम गद्दियों पर रईस लोग बैठे थे और उनके सामने तोहफ़ों के तौर पर बेशक़ीमती कपड़े रखे हुए थे। जैसे ही बहादुर को लाकर दरवाज़े के पास फेंक दिया गया, हाकिम ख़ुशी से फूल उठा और बोला :

"ये बेशक़ीमती तोहफ़े आपके लिए ही हैं। हम उम्मीद करते हैं कि आप हमें ऐसा और भी मौक़ा देंगी!"

सलीमबाय फ़ौरन उठा और सीना फुलाकर, मूंछों पर ताव देते हुए बोला :

"कल हम सब लोगों को मैदान में इकट्ठा करके उनके सामने इस बाग़ी को फांसी पर लटका देंगे और वहीं आपको सिर से लेकर पैर तक क़ीमती तोहफ़ों से ढक देंगे।"

बुढ़िया ने एक व्यंग्यमिश्रित दृष्टि सलीमबाय पर डालते हुए कहा :

"अरे, ज़मींदार साहब, यह तो एक बहुत बड़ी ग़लती होगी। यह गांठ बांध लो कि इस छोकरे को लोगों के सामने किसी भी हालत में लाया नहीं जा सकता। फिर इस बाग़ी को कल तक ज़िंदा छोड़ना ख़तरे से ख़ाली नहीं। इसे होश में आने की देर है कि यह सारी रस्सियां तोड़कर आज़ाद हो जायेगा। इसे फ़ौरन ख़त्म कर देना चाहिए।"

शहर का हाकिम बोला :

"बुढ़िया, जैसा तुम चाहती हो, हम वैसा ही करेंगे! सब कुछ तुम्हारी ही मर्ज़ी से होगा।"

"अच्छा, ध्यान से सुनो," बुढ़िया बोली, "ऊंचे पहाड़ शैतान तेपा पर एक बहुत बड़ी खाई है, जिसका अंत किसी ने नहीं देखा है। उस खाई के घोर अंधेरे में बहुत-से राक्षस और अजदहे रहते हैं। आख़िर, उन्हें भी तो कुछ खाने को चाहिए..."

सब ज़ोर से हंस पड़े। "चालाकी में शैतान भी आपका मुक़ाबला नहीं कर सकता," एक अमीर कह उठा। ज़ालिमों की 'अदालत' ने रुस्तम को यह सज़ा सुनायी। उसे पहाड़ पर ले जाकर खाई में फेंक दिया गया।

रुस्तम जब पहाड़ पर रहता था, तो वह सुबह उठकर बांसुरी पर एक धुन बजाता था, जो गड़रियों को बहुत पसंद थी। इस धुन को सुनकर रुस्तम के लकड़हारे दोस्त अपनी-अपनी झोंपड़ियों से निकलकर अपना काम शुरू कर देते थे। बांसुरी की आवाज़ उनके लिए दिन निकलने की सूचक थी। पर आज दिन निकलने पर भी कोई आवाज़ न सुनाई दी। पहले तो लकड़हारों ने सोचा कि अभी दिन नहीं निकला, पर जब वे लेटे-लेटे उकता गये, तो अपनी-अपनी झोंपड़ियों से बाहर निकलने लगे। रुस्तम के पिता घबराये हुए उस टेकरी की ओर गये, जहां उनका बेटा सोता था। वहां उन्हें केवल रुस्तम की टोपी ही दिखाई दी। बूढ़ा और ज़्यादा घबराया और चारों ओर देखता हुआ ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ देने लगा, "रुस्तमजान!" उनकी गरजदार आवाज़ सुनते ही लकड़हारे दौड़कर उनके पास आये। सब बड़े परेशान हुए। "हमें रुस्तम को आस-पास की सारी जगहों में ढूंढ़ना चाहिए," उनमें से कोई बोला। सोच में डूबे हुए रुस्तम के बूढ़े पिता अचानक लपककर "औरतों" की झोंपड़ियों की तरफ़ भागे।

थोड़ी ही देर में वे हाथ में एक नासदानी लिये हुए वापस आये, जिस पर सुनहरे अक्षरों में कुछ लिखा था, जो शायद उसके मालिक का नाम था। बूढ़े ने कुछ समय तक नासदानी को ध्यान से देखा और बड़े रोषपूर्ण स्वर में बोला :

"दोस्तो, रुस्तमजान किसी की नीचतापूर्ण चाल का शिकार हो गया है। जो मुसीबतों की मारी "औरतें" रोती हुई हमसे शरण मांगने आयी थीं, वास्तव में औरतें नहीं थीं। वे मर्द थे, और यह इस नासदानी से साबित हो गया है। यह नासदानी सलीमबाय के भतीजे बूरी की है।"

लकड़हारों में से एक ने अटक-अटककर किसी तरह नासदानी पर लिखा हुआ पढ़ा और उसने भी बूढ़े के संदेह की पुष्टि कर दी।

रुस्तम उस अथाह खाई में पूरे एक दिन और एक रात सोता रहा। धीरे-धीरे जब उसे होश आया, तो उसने अपने को हाथ-पैर बंधे हुए किसी अनजानी जगह में पाया, जहाँ घोर अंधेरा छाया हुआ था। कहीं दूर से रोने-चिल्लाने और कराहने की आवाज़ें आ रही थीं। रुस्तम ने अपने शरीर पर कसकर बंधी हुई रस्सियों को तोड़ने की कितनी ही कोशिश की, पर उसे इसमें सफलता नहीं मिली। फिर भी उसने हिम्मत न हारी और अपनी कोशिशें जारी रखीं। अंत में उसके सीने पर बंधी रस्सी टूट गयी और थोड़ी ही देर में वह आज़ाद हो गया। वह फ़ौरन उस ओर बढ़ा, जहाँ से कराहने की आवाज़ें आ रही थीं। उसने पता लगाने का निश्चय किया कि वहाँ क्या हो रहा है। काफ़ी दूर चलने के बाद हल्की-सी रोशनी में उसे बायीं ओर एक गुफ़ा का मुंह दिखाई दिया, जो चक्की के पाट से बंद किया हुआ था। कराहने की आवाज़ें उसी गुफ़ा में से आ रही थीं। रुस्तम ने अपने कंधे से चक्की के पाट को सरका दिया। जैसे ही वह गुफ़ा के अंदर घुसा उसे अपने पैरों के नीचे आदमी की हड्डियां महसूस हुईं। वह साहसपूर्वक आगे बढ़ा। गुफ़ा के अंदर जाने पर उसे एक छोटा महल नज़र आया, जिसके बाहर मिट्टी का चबूतरा बना हुआ था। चारों ओर मिट्टी के बर्तनों में दीप टिमटिमा रहे थे और किसी भी क्षण बुझ सकते थे। चबूतरे पर बिछी हुई तरह-तरह के जानवरों की फटी-पुरानी खालें अब गलने लगी थीं। महल के सामने उसे एक अंधकारमय जगह दिखाई दी।

रुस्तम ने पास जाकर देखा, तो उसका दिल कांप उठा – बर्फ़ीले पानी से भरे एक बहुत बड़े मिट्टी के पात्र में एक सत्तरह बरस की लड़की क़ैद थी। उसके दोनों हाथ रस्सियों से दीवारों से बंधे हुए थे और उसकी चालीस चोटियां दीवारों पर लगी चालीस खूंटियों से बंधी हुई थीं। वह बड़ी मुश्किल से सांस ले पा रही थी और लगता था कि इतनी असह्य पीड़ा के कारण वह किसी भी क्षण मर सकती है। लड़की अनिंद्य सुंदरी थी। लगता था जैसे उसके चेहरे से आभा फूटी पड़ रही है और उसके आस-पास का अंधकार दूर हो रहा है। रुस्तम ने यह सोचने में समय व्यर्थ नहीं खोया कि यह लड़की कौन है और उसे क्यों इतनी असह्य यातनाएं दी जा रही हैं। उसने फ़ौरन सारी खूंटियां उखाड़कर लड़की को मुक्त कर दिया और एक लात मारकर मिट्टी के पात्र को उलट दिया। लड़की इतनी कमजोर हो गयी थी कि वह

खड़ी न हो सकी और ज़मीन पर गिर पड़ी। उसकी सांस इतनी धीमी चल रही थी कि लगता था उसके प्राणपखेरू उड़ चुके हैं। उसी समय वहाँ एक कुबड़ा, टेढ़े पैरोंवाला, बहुत लंबे बालोंवाला बौना आया, जिसके साथ लगभग सत्तर साल का एक बूढ़ा था। उस बूढ़े की नाक उसकी लाठी से भी लंबी थी और चेहरे पर इनेगिने बारह बाल थे। बौना पाताल की दुनिया के डाकुओं का सरदार था। बूढ़ा इमाम उसका सहयोगी था, जिसका काम लोगों के धन का पता लगाकर डाकू को उनके यहाँ डाका डालने के लिए भेजना था। डाकू उस लड़की को इमाम की मदद से उड़ाकर लाया था और उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था, जिसमें उसे सफलता नहीं मिल रही थी। गुस्से में आकर डाकू लड़की को मार डालना चाहता था, पर जैसे ही इसकी खबर बूढ़े इमाम के कान में पड़ी, तो वह लड़की को मनाने के लिए बौने के साथ आ गया। रुस्तम पर अचानक नज़र पड़ते ही डाकू ने बूढ़े को आंखों ही आंखों में कुछ इशारा किया और ठहाका मारकर बोला:

"लगता है, कोई मेरे गुस्से की परवाह किये बग़ैर इस लड़की को बचाने के इरादे से यहाँ आया है।"

रुस्तम चुपचाप खड़ा डाकू को देखता रहा।

"ऐ, छोकरे, तू कौन है? अगर अपना नाम बताये बग़ैर नहीं मरना चाहता, तो अपना नाम बता!" डाकू गरजकर बोला और रुस्तम की ओर बढ़ा। रुस्तम का छोटे-से बच्चे की तरह मज़ाक़ उड़ाने के इरादे से डाकू ने अपना हाथ उसके कान की ओर बढ़ाया, पर अचानक उसके सीने में एक इतना ज़ोर का घूंसा पड़ा कि वह तीन कलाबाज़ियां खाता हुआ बूढ़े से टकराया और उसे भी साथ में गिराता हुआ उसके ऊपर ही जा पड़ा। उठने की कोशिश में उसने बूढ़े को बिलकुल ही कुचल डाला... बौना किसी तरह उठा, उसका चेहरा गुस्से से विकृत हो गया। अपनी तलवार निकालकर वह रुस्तम की ओर लपका। रुस्तम पहले से ही वह मिट्टी का बड़ा पात्र सिर के ऊपर उठाये तैयार खड़ा था। रुस्तम ने पूरी ताक़त के साथ वह बर्तन डाकू के सिर पर दे मारा। डाकू ज़मीन पर गिर पड़ा और रुस्तम ने फ़ौरन उसकी तलवार उठाकर उसे मार डाला।

ख़ूबसूरत लड़की की लंबी बरौनियोंवाली आंखें थोड़ी-सी खुलीं और उसके सूखे होंठ थोड़े फड़फड़ाये कि रुस्तम ने तुरंत अपनी अंजलि में पानी भरकर उसके होंठों से लगा दिया। लड़की ने कुछ घूंट पानी पिया और भयभीत आंखों से रुस्तम की ओर देखकर पूछा:

"आप कौन हैं और यहाँ कैसे पहुँचे? मुझे मौत की सज़ा सुनाई गयी है। आप फ़ौरन यहाँ से भागकर अपनी जान बचाइये। अगर उन लोगों को मालूम पड़ गया कि आप मुझे बचाने आये हैं, तो ये आपको भी तड़पा-तड़पाकर मार देंगे।"

रुस्तम लड़की की ओर देखकर बोला:

"आप अब आज़ाद हो चुकी हैं।"

लड़की विस्मित होकर बोली:

"आप क्या मुझे कोई परियों की कहानी सुना रहे हैं? ऐसा तो हो ही नहीं सकता!

इतने सालों से उसके पंजों में फंसा एक भी आदमी यहाँ से ज़िंदा बचकर नहीं निकल पाया है। उस खून के प्यासे और भयानक आदमी को 'खूनी राक्षस' कहते हैं। इस राज्य में एक भी आदमी ऐसा नहीं है, जो उससे न डरता हो। नन्हे बच्चे तक उसका नाम सुनकर रोना बंद कर देते है, हज़ारों सैनिक भी उस नर-पिशाच का सामना नहीं कर सकते।"

लड़की ने घबराहट में अपनी कोमल उंगलियों से रुस्तम का हाथ छू लिया। वह बड़ी अधीरता से उसके बोलने की प्रतीक्षा कर रही थी।

"क्या इसी तलवार से वह डाकू पूरी सेना को मार भगाता था?" रुस्तम ने डाकू से छीनी हुई तलवार दिखाते हुए पूछा।

"यह आपके हाथ कैसे लगी?" लड़की ने फिर आश्चर्य व्यक्त किया।

रुस्तम लड़की का हाथ अपने हाथ में लेकर उसे गढ़े के पास ले गया, जहाँ डाकू और इमाम की लाशें पड़ी थीं। लड़की ने चैन की सांस ली। रुस्तम के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए वह सीने पर हाथ रखकर झुकी और लंबी बरौनियोंवाली आकर्षक आंखें झुकाकर बोली:

"सुनहले देश के महावीर, तुम धन्य हो!"

रुस्तम यह शब्द सुनकर आश्चर्य से पूछ बैठा:

"आपको कैसे मालूम पड़ा कि मैं सुनहले देश से आया हूँ? आप कौन हैं?"

"मेरा नाम तोंग गुली* है। आपके बारे में केवल मैं ही नहीं, यहाँ के सारे लोग जानते हैं, जो न जाने कितने सालों से आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस 'नर-पिशाच' को मारकर इसकी काली करतूतों से केवल आप ही हमें बचा सकते थे। आपका नाम रुस्तम है, आप लकड़हारे हैं, आप बहादुरी से जनता के शत्रुओं से लड़कर जनता की रक्षा करते हैं – ये सब बातें मुझे मेरे बाबा ने सुनाई थीं। चलिये, मैं आपको हमारे लोगों से मिलाती हूँ। यह मेरा सबसे पहला कर्त्तव्य है।"

वे दोनों शहर की ओर चल दिये। रास्ते में लड़की ने रुस्तम को अपने देश के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं।

सुबह होते-होते वे एक मैदान के पास पहुँचे, जहाँ लोगों की बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। लोगों के चेहरों से फ़ौरन मालूम पड़ गया कि उन पर बहुत बड़ी मुसीबत आनेवाली है। बहुत-से लोग रो रहे थे, कुछ बेबस होकर ज़मीन पर सिर पीटते हुए अपने कपड़े फाड़ रहे थे, कुछ बेहोश हो चुके थे और कुछ धैर्यवान व साहसी लोग अपने साथियों को दिलासा दिला रहे थे। आख़िर लोग क्यों इतने घबराये हुए थे? थोड़ी दूर एक टेकरी पर एक चौदह साल का लड़का और एक भेड़ खड़े थे। उनकी आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी। कुछ लोग रोते-बिलखते लड़के के पास जाना चाहते थे, पर बाक़ी लोग उन्हें उसके पास जाने से रोक रहे थे। रुस्तम यह सब देखकर आश्चर्यचकित रह गया और उसने लड़की से पूछा:

---

* तोंग गुली – ऊषाकाल में खिलनेवाला फूल।

"तोंग गुली, आखिर बात क्या है?"

तोंग गुली ने आंसू बहाते हुए जवाब दिया:

"अच्छा होता अगर मैं पैदा ही नहीं हुई होती, इससे कम-से-कम मुझे इतनी मुसीबतें तो न देखनी पड़तीं। दो साल से यह आम बात हो गयी है।"

रुस्तम "आम बात" से उसका आशय समझ नहीं पाया और फिर पूछ बैठा:

"तोंग गुली, तुम मुझे यह बात अच्छी तरह समझाओ।"

तोंग गुली ने किसी तरह अपने पर क़ाबू पाया और बताने लगी:

"पिछले कुछ सालों से एक अजदहा हमारे इलाक़े में आ गया है। ढोर खाकर उसने बहुत-से परिवारों को तबाह कर दिया है। लोग उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं पा रहे हैं। वह अजदहा उस सामनेवाली टेकरी के पीछे ही रहता है। एक बार तो यह अजदहा सीधा हमारे शहर में ही घुसनेवाला था, लोगों में भगदड़ मच गयी, न जाने कितने आदमियों को खा जाता। उसके रास्ते में एक लड़का और एक भेड़ छोड़कर ही लोग उसे शहर में घुसने से रोक पाये। तब से हर रोज़ यही करना पड़ता है। लड़के और भेड़ को खाने से अजदहे का पेट भर जाता है और वह वहीं से वापस लौट जाता है।

जिस आदमी की भी बारी आती है, उसे अपना बेटा देना होता है और जिसके कोई बच्चा न हो, उसे एक भेड़ देनी होती है। उस अजदहे को लड़का और भेड़ चढ़ाना ही 'आम बात' हो गयी है।

पिछले साल, लगभग इसी समय मेरी तेरह बरस की छोटी बहन चेर्रगुल भी इस अजदहे की शिकार हुई थी। और लगता है, आज किसी बड़े आदमी के बेटे की बलि चढ़ाई जा रही है – देखिये कितने लोग इकट्ठे हो गये हैं।"

अचानक भीड़ में हलचल मच गयी। बहुत-से लोग आसमान की ओर हाथ उठाकर मदद की दुआ मांगने लगे।

"हाय, हाय, अजदहा लड़के की ओर बढ़ रहा है," तोंग गुली की आवाज़ कांप उठी और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। रुस्तम ने नज़र घुमाकर देखा – एक काला भुजंग अजदहा धीरे-धीरे रेंगता हुआ लड़के की ओर बढ़ रहा था। भेड़ अजदहे की गंध पाकर छटपटा उठी। लड़का भी हृदयविदारक आवाज़ में अपनी मां को मदद के लिए पुकारते हुए छटपटाने लगा। पर लड़का और भेड़ दोनों ही सम्मोहित-से हुए वहीं खड़े रह गये। रुस्तम टेकरी की ओर लपका। इस बीच अजदहे ने लम्बी जीभ निकालकर अपने शिकार को मुंह की ओर खींचना शुरू कर दिया। जैसे ही लड़का अजदहे के मुंह तक पहुँचा, अजदहे के सिर पर एक ज़ोरदार चोट पड़ी।

अजदहा दर्द से पागल हुआ बड़े जोर से दहाड़ मारकर पीछे मुड़ने ही वाला था कि रुस्तम फुर्ती से उछलकर उसकी गर्दन पर सवार हो गया और उसका सिर अपने दोनों पैरों के बीच भींचकर तलवार के एक वार से ही काट डाला।

लड़का, जिसे अजदहा निगलनेवाला था, रुस्तम के गले से लिपट गया। लोग खुशी मनाने

लगे – उनके लिए आज का दिन एक बहुत बड़ा त्योहार हो गया, क्योंकि इसी दिन उन्हें अपने जानी दुश्मन से छुटकारा मिला था। भीड़ में से एक लंबे क़द का सफ़ेद दाढ़ीवाला आदमी निकलकर रुस्तम के पास आया और आंखों में खुशी के आंसू भरकर बोला:

"तुम महावीर हो, तुमने हमें इस बहुत बड़ी मुसीबत से छुटकारा दिला दिया, हमारे सारे दुःख दूर कर दिये। तुम कौन हो?"

तोंग गुली को होश आया और उसने देखा – लोग खुशी से पागल हो उठे हैं और रुस्तम को चारों ओर से घेरे उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। रुस्तम से सवाल पूछनेवाले आदमी ने तोंग गुली को सीने से लगा लिया और रोते हुए कहने लगा:

"मेरी बेटी, तू ज़िंदा है? तुझे उस गुफ़ा से बचाकर कौन लाया?"

तोंग गुली बोली:

"जिस आदमी ने आप सबकी जान बचाई, वही मुझे भी गुफ़ा से बचाकर लाया है। सुनहले देश का महावीर, जिसकी प्रशंसा के गीत आप गाया करते थे – लकड़हारा रुस्तम, आपके सामने खड़ा है। इसी ने उस 'खूनी राक्षस' और आदमखोर अजदहे को मारा है। सारी मुसीबतों से छुटकारा दिलाकर इसी ने हम सबको एक नयी ज़िंदगी दी है।"

सारे लोग रुस्तम की प्रशंसा करते हुए उसके साथ अपने शहर की ओर चल पड़े। लोगों ने बहुत दिनों तक खुशियां मनाईं। रुस्तम कुछ समय तक उन लोगों के साथ रहा, पर फिर उदास हो गया, क्योंकि वह जल्दी-से-जल्दी अपने बूढ़े पिता और दोस्तों के पास लौट जाना चाहता था। एक बार रुस्तम ने तोंग गुली के पिता को अपने पिछले जीवन का सारा क़िस्सा सुनाया और यह भी बताया कि किस तरह उस चालाक बुढ़िया ने उसके हाथ-पैर बंधवाकर उस अंधेरी अथाह खाई में फिंकवा दिया था। यह बताकर कि उसे अपने देश की कितनी याद आती है, रुस्तम ने पूछा कि यहां से वहां कैसे पहुँचा जा सकता है। बहुत देर तक सोच में डूबे बाबा ने एक गहरी सांस ली और रुस्तम की ओर देखकर बड़े उदास स्वर में बोला:

"मेरे बहादुर दोस्त, जब से यह दुनिया बनी है, एक भी आदमी यहां से सुनहले देश में नहीं पहुँच पाया है। हमारे बाबा-परबाबाओं से सुनी हुई कहानियों के अनुसार हमारे शहर से बहुत दूर एक चालीस पहाड़ नाम की ऊँची चोटी है। सुना है, उस चोटी पर से ही एक रास्ता सुनहले देश की ओर जाता है। उस रास्ते को हममें से किसी ने भी नहीं देखा है। हज़ारों लोग उस चोटी की ओर जा चुके हैं, पर कोई भी उस तक नहीं पहुँच पाया है। उनमें से कोई ज़िंदा वापस नहीं आया। रास्ता बड़ा खतरनाक है, क़दम-क़दम पर तरह-तरह के जंगली जानवर मिलते हैं। उस चोटी का नाम भी चालीस पहाड़ यों ही नहीं पड़ा है। वे चालीस चिकने और सीधे पहाड़ एक के ऊपर एक खड़े हैं और हर पहाड़ कई हज़ार हाथों से कम ऊंचा नहीं है। मेरे दोस्त, तुम वहां लौटने का इरादा छोड़ दो और हमारे साथ रहकर हमारे सरदार और सेनापति बनो। हमारा दिल तुम्हें छोड़ने को बिलकुल भी नहीं करता!"

रुस्तम अपने दोनों हाथ सीने पर रखकर आदरपूर्वक बोला:

"इसमें कोई संदेह नहीं कि आप बहुत ही नेक और भले आदमी हैं और मुझे इस दुनिया

के सारे ख़तरों और मुसीबतों से बचाना चाहते हैं। पर मेरे पिता और मेरे दोस्त तो सुनहले देश में हैं। पता नहीं, मेरे बग़ैर वे कैसे जी रहे होंगे? उनसे मिले बग़ैर मैं भी इस दुनिया में तड़पता रहूँगा और कभी सुखी न रह सकूंगा।"

बाबा ने रुस्तम की बात सुनकर न चाहते हुए भी उसे अपने देश लौटने की इजाज़त दे दी। दूसरे दिन उस शहर के सारे लोगों ने रुस्तम को विदाई दी। शहर के सबसे बड़े बुज़ुर्ग ने रुस्तम का माथा चूमकर अपने बाबा का पांच हाथ लंबा तीर कमानसहित उसे दिया और बोला :

"हमारी ओर से तुम्हें यह एक तुच्छ भेंट दे रहे हैं – रास्ते में यह तुम्हारी रक्षा करे।" रुस्तम ने हाथ हिलाकर शहर के लोगों से विदा ली और उस पहाड़ की ओर चल पड़ा। उसे रास्ते में कई रेगिस्तान, नदियां और छोटी-मोटी पहाड़ियां पार करनी पड़ीं। अंत में वह चालीस पहाड़ की तलहटी में आ पहुँचा। पहाड़ की ओर देखते ही उसका दिल धक-से रह गया। वास्तव में उस चिकने पहाड़ पर चढ़ पाना असंभव-सा लगता था। एक पहाड़ के ऊपर दूसरा पहाड़ इस तरह खड़ा था कि उसकी चोटी भी दिखाई नहीं दे रही थी। यह निर्णय ले पाना भी मुश्किल हो रहा था कि उस पहाड़ पर किस ओर से पहुँचकर चढ़ा जाये। अचानक दूर से एक दहाड़ आती सुनाई पड़ी। एक क्षण बाद ही उसे एक शेर इधर-उधर कंकर-पत्थर छिटकाता हुआ मुंह बाये रुस्तम की ओर भागता हुआ नज़र आया। रुस्तम ने एक ओर उछलकर शेर पर तीर का निशाना लगाना चाहा। पर शेर यह देखकर रुक गया और सिर झुकाकर रुस्तम से बोला :

"ऐ, नेक आदमी! मेरी मदद कर, मेरे बच्चों को मरने से बचा ले!"

रुस्तम ने शेरनी के सिर पर प्यार से हाथ फेरकर पूछा :

"मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ? तुम जो कहो, मैं करने को तैयार हूँ।"

शेरनी रुस्तम को इशारा करके चट्टान के पीछे लपकी। रुस्तम उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए एक गुफ़ा के मुंह के पास पहुँचा, जहाँ बैल जैसा एक बहुत बड़ा बिच्छू मंडरा रहा था। यह बिच्छू गुफ़ा में छुपे शेरनी के दो बच्चों को डंक मारना चाहता था। रुस्तम ने सीधे बिच्छू के सिर का निशाना लगाकर तीर मारा, जिससे वह बेहोश होकर एक ओर को लुढ़क गया। फिर उसने फ़ौरन अपनी तलवार से बिच्छू के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। शेरनी के बच्चे, जो अब तक डरकर गुफ़ा में छुपे हुए थे, भागकर बाहर निकले और अपनी मां से लिपट गये। शेरनी ने सिर झुकाकर रुस्तम के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। महावीर रुस्तम अब तक बुरी तरह थक चुका था और उसे वहीं नींद आ गयी। शेरनी अपने दोनों बच्चों को रुस्तम के पास छोड़कर गुफ़ा में उन सबके लिए कुछ खाना तैयार करने चली गयी। शेरनी के बच्चे आपस में खेलने लगे। उसी समय अपने मुंह में भेड़ दबाये शेर भी आ पहुँचा। रुस्तम को देखते ही शेर भेड़ छोड़कर दहाड़ता हुआ उसे मारने के लिए लपका, पर उसके बच्चे उससे लिपट गये और बोले :

"इस आदमी को छूइये भी नहीं, इसने हमें मरने से बचाया है।"

शेर यह सुनकर खड़ा का खड़ा रह गया। उसी समय शेरनी भी गुफ़ा में से निकली और शेर को सारा क़िस्सा सुनाकर उसे मरा हुआ बिच्छू भी दिखाया। शाम को जब रुस्तम की नींद खुली, तो उसने देखा कि बहुत-से शेर उसके चारों ओर पहरा देते हुए उसके जागने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन सब शेरों में एक शेर औरों से अलग ही नज़र आ रहा था – उसकी अयाल बहुत घनी थी, वह और सब शेरों से कुछ ऊँची जगह पर बैठा था। वह शेर उन पहाड़ों में रहनेवाले सब शेरों का मुखिया था। रुस्तम ने फ़ौरन उसके पास पहुँचकर उसका सादर अभिवादन किया। शेरों का मुखिया अपने दोनों पंजे रुस्तम के कंधों पर रखकर बोला :

"तुमने उस भयावने बिच्छू को मार डाला, जिसके डर से हम भागते-फिरते थे और इस तरह न केवल हमें, बल्कि हमारी आनेवाली पीढ़ियों को भी विनाश से बचा दिया। बताओ, बहादुर, तुम्हारी ऐसी कौन-सी इच्छा है, जिसे हम पूरा कर सकते हैं?"

रुस्तम सिर झुकाकर बोला :

"मैं अपने देश लौटकर अपने घरवालों और मित्रों से मिलना चाहता हूँ।"

"पर वे कहाँ रहते हैं?" शेरों के मुखिये ने पूछा।

"वे लोग सुनहले देश में आर्चा के एक जंगल में रहते हैं," रुस्तम ने जवाब दिया।

यह सुनकर शेर अपनी भाषा में आपस में कुछ सलाह-मशविरा करने लगे। रुस्तम जल्दी-से-जल्दी अपने देश लौटना चाहता था और बड़ी अधीरता से उनके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। थोड़ी देर बाद शेरों के मुखिये ने मुंह उठाकर जोर से दहाड़ मारी, जिससे सारा आकाश गूंज उठा। उसी समय एक छोटा-सा, पर मोटे-मोटे पंजोंवाला शेर दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा। आते ही वह अपने मुखिये के सामने सिर झुकाकर खड़ा हो गया।

"तुम इस नौजवान को चालीस पहाड़ की चोटी तक ले जाकर सुनहले देश का रास्ता दिखाओ और वहाँ से कुछ ऐसी चीज़ लेकर आओ, जिससे हमें विश्वास हो जाये कि तुमने इसे सही-सलामत वहाँ पहुँचा दिया," शेरों का मुखिया बोला। उस छोटे-से शेर ने एक बार फिर अपने मुखिये को झुककर सलाम किया और रुस्तम के पास आकर खड़ा हो गया। शेरों का मुखिया रुस्तम से बोला :

"मेरे बहादुर, तुम्हारी यात्रा बड़ी खतरनाक होगी। हमारा शेर तुम्हें एक ऐसी गुफ़ा में से लेकर जायेगा, जिसमें घोर अंधेरा होगा और उसका अंत भी नज़र नहीं आयेगा। तुम बिलकुल भी जिद न करना और जो कुछ हमारा शेर कहे, वैसा ही करना, नहीं तो कोई-न-कोई मुसीबत आ जायेगी। उसके बाद जैसे ही तुम सुनहले देश में क़दम रखोगे, हमारे शेर के ज़रिये हमें वहाँ से कोई चीज़ ज़रूर भेज देना, जिससे हमें मालूम पड़ जायेगा कि तुम सही-सलामत वहाँ पहुंच गये हो!"

रुस्तम इन सारी बातों को ध्यान में रखकर छोटे शेर की पीठ पर बैठ गया। बाक़ी सारे शेर भी गुफ़ा के मुंह तक रुस्तम को विदाई देने आये। उन्होंने अपना परंपरागत विदाई का नाच किया। छोटा शेर रुस्तम को अपनी पीठ पर बिठाये गुफ़ा में घुसा, थोड़ी देर एक जगह खड़ा रहा और फिर पवन वेग से उड़ चला। बीच-बीच में वह दहाड़ता भी रहा और उसकी

दहाड़ के जवाब में चारों ओर से कुछ आवाज़ें भी सुनाई देती रहीं। रुस्तम ने जानना चाहा कि ये आवाज़ें किसकी हैं:

"वनराज, ये रहस्यमय आवाज़ें किसकी हैं? मुझे कुछ बताओ तो सही।"

शेर बोला:

"मेरे बहादुर दोस्त, इस समय तुम्हारा सवाल पूछना ठीक नहीं। तुम चुप ही रहो, तो अच्छा होगा, नहीं तो तुम और मैं दोनों ही मारे जायेंगे।"

शेर अंधेरी गुफ़ा में दौड़ता रहा और वे रहस्यमय ख़तरनाक आवाज़ें चारों ओर से सुनाई देती रहीं – कभी किन्हीं अदृश्य चिड़ियों के गाने की आवाज़ आती, कभी किसी पीड़ाग्रस्त प्राणी के कराहने की, कभी पापियों के नाचने-गाने की तेज़ आवाज़ें सुनाई देतीं, जैसे वे तुरही और डफ़ की लय पर नाच रहे हों, कभी लड़कियों के सुरीले गाने सुनाई देते, कभी गुफ़ा को हिला देनेवाली बिजली की कड़क सुनाई देती। हालांकि रुस्तम को बहुत डर लग रहा था पर उत्सुकतावश वह फिर पूछ बैठा:

"वनराज, हमारे चारों ओर ख़ुशियाँ बनानेवाले और दर्द से तड़पनेवाले आख़िर ये कौन हैं?"

शेर ने फिर उससे प्रार्थना की:

"ख़ुदा के वास्ते, अपने दोस्तों की ख़ातिर अभी चुप रहो!"

रुस्तम समझ गया कि उसे शेर का कहा मान लेना चाहिए। वह चुपचाप शेर की पीठ पर बैठा अंधेरे में देखने की कोशिश करता रहा, पर उसे कुछ भी दिखाई न दिया। इस बीच शेर तीर की तरह उड़ता रहा। रुस्तम शेर की अयाल को कसकर पकड़े बैठा रहा। लगता था कि उनकी यात्रा का अंत ही नहीं होगा, पर शेर अचानक रुस्तम से बोला:

"मेरे बहादुर दोस्त, अब तुम अपनी आंखें बंद कर लो। और जब तक मैं न कहूँ, आंखें खोलने की हिम्मत मत करना। यह अच्छी तरह समझ लो कि अगर तुमने इस समय कोई ग़लती कर दी, तो उसके लिए तुम अपने ही नहीं मेरे दोस्तों के सामने भी ज़िम्मेवार होगे।"

रुस्तम आंखें मीचकर मज़बूती से शेर की गरदन से चिपक गया। शेर और ज़्यादा तेज़ी से भागने और इतने ज़ोर से दहाड़ने लगा कि रुस्तम को भी डर लगने लगा। नसों के तनाव और डर के कारण रुस्तम के चेहरे से पसीने की धारें छूटने लगीं और उसके सारे कपड़े भीग गये। न जाने कितनी देर तक शेर तीर की तरह उड़ता रहा। अचानक रुककर वह बोला:

"अब उतर जाओ!" रुस्तम आंखें मीचे हुए शेर की पीठ से उतर गया। "अब आंखें खोल लो!" शेर बोला। रुस्तम ने आंखें खोलीं, तो उसने अपने को पहाड़ की चोटी पर पाया। हवा में फूलों, हरे-भरे पेड़ों और घास की सुगंध तैर रही थी, तथा चश्मों का स्वच्छ पानी कलकल करता बह रहा था। लगता था जैसे कोई माली इन सब फूलों और पेड़-पौधों की संभाल करता था।

"क्या इन सुंदर बाग़ों और फुलवारियों में कोई रहता है?"

शेर इतना थक गया था कि वह इस सवाल का जवाब भी न दे सका। वह बिना कुछ

शहर का हाकिम अमीर लोगों, अपने सेनापतियों तथा अन्य प्रतिष्ठित अत्याचारियों से घिरा बड़ी बेफ़िक्री और घमंड से टहल रहा था।

सलीमबाय अपने लाखी रंग के घोड़े पर बैठा-बैठा शहर के हाकिम द्वारा विद्रोहियों को फांसी दिये जाने का हुक्म पढ़कर सुना रहा था। नगाड़े और ज़ोर से बजने लगे। जल्लादों ने क़ैदियों के गलों में फंदे डाल दिये। सलीमबाय फांसी के नज़ारे का आनंद लेते हुए अपनी चांदी की नासदानी में से एक चुटकी नसवार निकालने लगा। वह नसवार जीभ के नीचे* रखनेवाला ही था, कि एक ताक़तवर हाथ का धक्का उसे लगा और वह घोड़े पर से नीचे गिर पड़ा।

सैनिकों ने उस आदमी को पकड़ने की कोशिश की, पर उन सबको ऐसी मार पड़ी कि वे वहाँ से भाग पड़े। जल्लाद कुछ भी समझ न पाते हुए भागकर छुपने की कोशिश करने लगे, पर उनमें से कोई भी बच नहीं पाया। पेड़ के तने की चोट उनके सिरों पर पड़ने से वे सब वहीं ढेर हो गये। जनता पर जुल्म ढानेवालों और जल्लादों का इन दोनों बहादुरों – रुस्तम और रौशनी ने ही काम तमाम कर दिया। इस बीच भीड़ में से कोई चिल्ला उठा: "इस तरह सलीमबाय को घोड़े से सिर्फ़ रुस्तम ही गिरा सकता है!" चारों ओर से ख़ुशी की आवाजें आने लगीं: "हमारा बहादुर रुस्तम ज़िंदा है!", "हमारा बहादुर रुस्तम ज़िंदा है!" इस बीच बहादुर जनता के दुश्मनों को कड़ी सजा देते रहे। थोड़े समय बाद दोनों बहादुर क़ैद से छुड़ाये हुए अपने साथियों को लेकर वहाँ से चल दिये। मैदान में सिर्फ़ सलीमबाय, तीस जल्लादों और दो सौ सैनिकों की लाशें तथा फांसी के तख़्तों और पिंजरों के टुकड़े ही पड़े रह गये।

लोग अपने बच्चों को गोदी में लेकर रुस्तम के साथ आर्चा के जंगल की ओर चल पड़े। सिद्दीक़ मोची अपनी बेटी को लेकर रुस्तम के पास आया। उसने मुस्कराते हुए रुस्तम से कहा:

"तुम्हें वह नीति-कथा याद है, जो मैं तुम्हें सुना रहा था और उस बुढ़िया ने अपनी पन्द्रह 'औरतों' के साथ आकर हमारी बात बीच में ही काट दी थी?"

रुस्तम बोला:

"वाह, कैसे भूल सकता हूँ, मुझे अच्छी तरह याद है! और मुझे हमेशा इस बात का अफ़सोस रहा है कि मैं आपकी नीति-कथा का अंत नहीं सुन पाया। अब सुनाइये!"

सिद्दीक़ मोची ने कनखियों से अपनी बेटी की ओर देखा, तो उसने सब कुछ समझकर आंखें झुका लीं। सिद्दीक़ मोची बोला:

"तुम्हारे सामने खड़ी मेरी बेटी ज़ोहरा ही वह लड़की है, जो उस ज़ल्लाद के जुल्मों को सहते हुए भी पूरे विश्वास के साथ अपने नौजवान के लौटने की प्रतीक्षा करती रही।"

रुस्तम ने फ़ौरन ज़ोहरा की ओर देखा। उसके अनार जैसे लाल गालों को देखकर रुस्तम के दिल में एक अलौकिक और अज्ञात भावना उमड़ी, जिसे व्यक्त करने के लिए उचित शब्द न मिलने पर वह मौन खड़ा रहा।

---

* मध्य एशिया में नसवार खैनी की तरह भी इस्तेमाल की जाती है।

सिद्दीक़ मोची रुस्तम से कुछ सुनने की आशा कर रहा था। और बहादुर ने, जो खोया-खोया लग रहा था, धीमी आवाज़ में पूछा :

"उसका बहादुर नौजवान कौन है और कहाँ है?"

रुस्तम से कुछ क़दमों की दूरी पर उसके पिता खड़े थे, जो लगता था, सब कुछ अच्छी तरह जानते थे कि बात किस बारे में हो रही है। सिद्दीक़ मोची और बूढ़े ने एक दूसरे की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि डाली और मुस्करा उठे, इसके बाद मोची ने रुस्तम की ओर अनिमेष देखते हुए कहा :

"तुम जानना चाहते हो, वह नौजवान कौन है? वह वही है, जिसने पूछा था, 'उसका बहादुर नौजवान कौन है?'"

रुस्तम ने आगे क़दम बढ़ाते ही अपने पिता की ओर देखा। और उसके पिता ने भी मुस्कराकर सिद्दीक़ की बात का समर्थन कर दिया।

सुबह की शीतल मंद हवा से आर्चा के पेड़ों की सरसराहट सुहावनी लग रही थी, जैसे पेड़ भी अपने दोस्तों के वापस आने पर प्रसन्न हो रहे हों। आर्चा के जंगल में जहाँ कई दिनों से उदासी छाई हुई थी अब हंसी-खुशी की आवाज़ें गूंजने लगीं। और सुनहले देश के महावीर की मदद से अत्याचारियों से हमेशा के लिए छुटकारा पाकर लोग सुख-चैन से रहने लगे।

चालीस चोर और एक गंजा

बहुत समय पहले एक गंजा आदमी रहता था। एक बार वह अपने बैल को चराने के लिए चरागाह में छोड़ने जा रहा था। सहसा चालीस चोर निकलकर आये और उसका बैल छीनकर ले गये। दूसरे दिन गंजा अपने गधे को लेकर चोरों के पास पहुँचा और बोला :

"मेरे गधे की लीद की जगह रोज़ाना मुझे सोने की एक हज़ार अशरफ़ियां मिलती हैं।"

चोरों ने गंजे पर विश्वास करके उसे एक हज़ार अशरफ़ियां दीं और गधा ख़रीद लिया। सबसे पहले वे गधे को अपने सरदार के पास ले आये, जिससे वे बहुत डरते थे। सरदार को जब गधे की ख़ूबी मालूम पड़ी, तो वह उसे चौबीस घंटे खिलाता रहा। सुबह होते-होते उसे नींद आ गयी। जब उसकी नींद खुली, तो उसने देखा कि वह गधा तो दूसरे गधों जैसा ही है। पर फिर भी उसने यह ज़ाहिर न होने दिया कि उसके साथ धोखा हुआ है और कहने लगा :

"मैंने गधे को जहाँ बांधा था, वहाँ मुझे आज दो हज़ार अशरफ़ियाँ मिलीं।"

बाक़ी चोर भी बारी-बारी से गधे को खिलाने लगे। और तब तक खिलाते रहे, जब तक उन सबको यह मालूम न हो गया कि गंजे ने उन्हें बेवक़ूफ़ बना दिया।

उन्होंने गंजे को जान से मार डालने की ठानी। गंजे को उनका इरादा पहले से मालूम पड़ गया, पर वह बिलकुल भी नहीं घबराया। उसने एक भेड़ काटकर उसकी अंतड़ी में उसका ख़ून भरा और अपनी पत्नी के गले में उसे बांधकर बोला :

"मैं तुझसे जो करने को कहूँ, तू उसका बिलकुल उल्टा करना। फिर मैं तलवार का वार करूँगा और तू मरने का ढोंग करना, इसके बाद मैं डंडा मारूँगा और तू उठकर अपना काम करने लगना।"

उसने इतना कहा ही था कि चोर वहाँ आ धमके। चोरों का सरदार गरजा :

"तूने हमें धोखा दिया, हम तुझे जान से मार डालेंगे!"

पर गंजे ने ऐसा ढोंग रचा, मानो वह उन्हें मेहमान मानकर उनकी आवभगत कर रहा हो।

"चूल्हा जला!" उसने अपनी पत्नी को आवाज़ देकर कहा।

उसकी पत्नी ने फ़ौरन चूल्हे पर पानी छिड़क दिया और आग बुझ गयी। गंजा आग-बबूला हो उठा और अपने पिता की पुरानी तलवार उठाकर उसने अपनी पत्नी की गर्दन पर वार किया। तलवार का वार लगते ही पत्नी की गरदन से ख़ून के फ़व्वारे छूटने लगे और वह वहीं "मर गयी"। गंजे ने डंडा उठाकर कई बार पत्नी को मारा और उसकी पत्नी फ़ौरन "ज़िंदा" होकर अपना काम करने लगी। चोर यह नज़ारा देखकर हैरत में पड़ गये। उन्होंने सोचा कि डंडा जादुई है और उसे गंजे से जबरन छीनकर भाग गये। अपने अड्डे पर पहुँचकर उन्होंने अपनी-अपनी पत्नियों को मार डाला और फिर उन्हें डंडे से मारने लगे, पर वे मुर्दा ही पड़ी रहीं। चोरों को बहुत गुस्सा आया और उन्होंने गंजे से फिर बदला लेने की ठानी। पर गंजे ने फिर एक चाल चली। वह अपनी मां से बोला :

"आज चोर आयेंगे, पर उनके आने से पहले तुम क़ब्र खोदकर मुझे उसमें ज़िंदा ही दफ़ना दो।"

उसके घरवालों ने गंजे को दफ़ना दिया और उसके कहने के अनुसार उसमें एक छेद भी छोड़ दिया। चोर आये तो घरवाले बोले :

"गंजा आज मर गया। हमने उसे दफ़ना दिया है।"

चोरों को विश्वास नहीं हुआ। वे क़ब्र के पास पहुँचे और उसमें से धुआं निकलता देखकर उन्होंने सोचा : "इसका मतलब है – गंजे को उसके किये की सज़ा मिल रही है।" जब वे क़ब्र के पास शोर करने लगे, तो अचानक क़ब्र में से धुआं निकलना बंद हो गया। चोर एक-एक करके छेद में से अंदर झांककर देखने लगे। गंजा उनकी आंखों में पिसी मिर्च झोंकने लगा। "अरे, यह बदमाश धोखेबाज़ तो ज़िंदा है!" चोरों का सरदार चिल्लाया और उसने क़ब्र खोद डालने का हुक्म दिया। उन्होंने क़ब्र खोदी ही थी कि गंजा लपककर भाग पड़ा। चोरों ने

अपने घोड़ों पर उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया। उन्होंने उसे पीट-पीटकर अधमरा कर दिया और एक बोरे में बन्द करके नदी में फेंकने चले। पर उसी समय चोरों को तीतरों का एक झुंड दिखाई दिया और वे उन्हें पकड़ने के लिए चारों दिशाओं में भागे। इसके थोड़ी देर बाद ही बोरे में बंद गंजे के पास से एक सौदागर अपनी भेड़ें हांकता हुआ गुज़रा। गंजा बोरे के छेद में से सौदागर को देखते ही रोने-चिल्लाने लगा: "मुझे खान नहीं बनना, मुझे सेनानायक नहीं बनना!" सौदागर यह आवाज़ सुनते ही रुक गया और पूछने लगा:

"तुम कौन हो और बोरे में घुसकर क्यों बैठे हो?"

"मैं एक ग़रीब आदमी हूँ," गंजा बोला, "मुझे जबरन एक शहर का खान बनाना चाहते हैं। मैंने मना किया, तो मुझे बोरे में बांधकर जबरदस्ती उस शहर ले जा रहे हैं। मैं नहीं चाहता तो भी मुझे खान बनाना चाहते हैं।"

"अगर तुम खान नहीं बनना चाहते, तो मैं बनने के लिए तैयार हूँ!" सौदागर बोला और उसने बोरा खोल डाला। गंजा बोरे में से निकल आया और बोरे में उसकी जगह सौदागर ने ले ली। गंजे ने कसकर बोरे को बंद करके गांठ लगायी और सौदागर की भेड़ें लेकर चलता बना।

थोड़ी देर बाद चोर वापस आये। उनके हाथ एक भी तीतर न लगा था, इसलिए वे बहुत गुस्से में थे। बोरे को घोड़े पर लादकर वे नदी की ओर चल दिये। बोरे में बंद सौदागर बारबार चिल्लाता रहा: "मैं खान बनना चाहता हूँ, मैं सेनानायक बनना चाहता हूँ!" गुस्से में पागल चोरों ने सौदागर की खूब पिटाई की और उसे नदी में फेंक दिया।

एक बार जब चोर चोरी करके गंजे के पासवाली नदी के किनारे से गुज़र रहे थे, तो उन्होंने देखा कि गंजा बड़े मज़े से भेड़ें हांककर ले जा रहा है। चोरों का डर के मारे बुरा हाल हो गया, कांपते-कांपते उन्होंने गंजे से पूछा:

"अरे भई, हमने तो तुम्हें नदी में फेंक दिया था, और तुम यहाँ बड़े मज़े में ज़िंदा घूम रहे हो और भेड़ें चरा रहे हो।"

गंजा ज़ोर से हंसकर बोला:

"अरे, तुम लोग पूरे बुद्धू हो, तुमने मुझे फेंकते समय मेरे हाथ में डंडा भी नहीं दिया। मैं बड़ी मुश्किल से किसी तरह हांक-हांककर इन भेड़ों को नदी के तल से बाहर लेकर आया हूँ।"

चोरों को गंजे की बात पर विश्वास हो गया। वे गंजे की मिन्नत करने लगे:

"तुम हम सबको भी नदी में फेंक दो, हम भी वहाँ से भेड़ों के झुंड लेकर आना चाहते हैं।"

गंजा बोला:

"तो फिर चलो, सब एक-एक बड़ी लाठी हाथ में ले लो।

चोर फ़ौरन लाठियां लेकर गंजे के पास पहुँचे।

"अच्छा, अब इसी जगह से नदी में छलांग लगाओ!" गंजा तेज़ बहती नदी की ओर इशारा करके बोला। चोरों ने आपस में सलाह करके फ़ैसला किया:

"हममें सबसे ताक़तवर और बहादुर हमारा सरदार है। सबसे पहले वही नदी में कूदेगा। अगर वह न डूबा और वहाँ वास्तव में भेड़ों के झुंड दिखाई दिये, तो वह हमें भी बुला लेगा।"

चोरों का सरदार नदी में कूद गया और जैसे ही वह डूबने लगा उसने घबराकर हाथ ऊपर उठाया। चोरों ने सोचा कि सरदार उन्हें भी कूदने का इशारा कर रहा है और वे भी एक के बाद एक नदी में कूद गये। सबके सब नदी में डूबकर बह गये। गंजे ने चोरों से पीछा छुड़ाने के बाद उनके सारे चोरी के माल पर कब्ज़ा कर लिया और सारी ज़िंदगी सुख-चैन से जिया।